СЕРГЕЙ АНТОНОВ

ВЕСНА

Рассказы
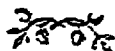
ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ
НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

सेर्गेय अन्तोनोव

कहानियां

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक: राजीव सक्सेना

चित्र प०य० कराचेत्सोव

कलेवर: ई०अ० लित्वीन्को

विषय—सूची

वसन्त

जब मै नन्ही सी थी तो मुझे शाम ढलते ही खुली खिडकी पर बैठ जाने और पास-पडोस के लोगो के सोने की तैयारी की आहट सुनने मे बडा मजा आता था।

घर मे लालटेने जल जाती, बरतन खडखडाती हुई माँ इधर से उधर भागती दौडती और बाहर; बस, खामोशी ही खामोशी होती।

और आज भी मै खिडकी पर बैठी हुई हू। मुंडेरे पर गमले मे जिरेनियम का एक पौधा रखा है, जिसकी पत्तियो मे सूराख है, खिडकी का परदा मेरे कंधो को स्पर्श करता उड रहा है और सडक के उस पार सामने के बगीचे में मेरी चाची एक डंडे से चटखनिया बंद कर रही है।

थोडी दूर और आगे सामूहिक फार्म के दफ्तर की खिड़की मे रोशनी दिखायी दे रही है: बैठक समाप्त हो गई है; दरवाजे भिडाने और लोगो के हसने तथा अपनी-अपनी राह जाने से पहले बरामदे मे बातचीत करने की आवाजे मुझे सुनायी दे रही है।

मै यहा यो बैठी हुई सुन रही हू और जब-तब खिडकी से एक तेज-सा झोका आकर जिरेनियम की पत्तियो को उलटकर चला जाता है।

लो, पिताजी आ रहे है, जूतो पर जमे कीचड को छुडाने के लिए पैर पटकते हुए—वे जिस तरह पैर पटक रहे है, उससे मै समझ गयी हू कि वे गुस्से में भरे हुए है। वे कमरे मे आ गये, बिना कुछ बोले बेंच पर बैठ गये और जेब से वोदका की एक बोतल निकाल ली। मा ने आह भरी और अचार लेने तहखाने मे चली गयी।

ल्योल्का—वह हमारी पशु-चिकित्सक है—चारखाने का रूमाल बांधे, पानी के गड्ढो को बिल्ली की तरह साव-धानी से पार करती हुई चली जा रही है। पहले वह चारखाने के रूमाल को सिर्फ इतवार के दिन या किसी उत्सव के दिन बांधा करती थी, लेकिन इधर कुछ दिनों से वह बराबर बांधती है। राह चलते वह लडकियो से बात-चीत करती जा रही है और मैंने उसे यह कहते सुना कि आज पिता जी को सामूहिक फार्म के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया।

मैंने कनखियो से एक नजर पिता जी पर डाली।

उन्होंने गिलास मे वोदका डाल ली, एक घूट पी, रोटी का एक टुकडा सूंघा और फिर दूसरी घूट पी।

मां, अपने हाथो को जामे के अन्दर समेटे हुए मेज के पास खडी है और दुखी नजरो से उनकी ओर देख रही है।

पिता जी ने कहा· "अखबार लाओ और सब लोग सुनो।"

उनकी आदत है कि जब वे पीने लगते है, तो अखबार—कोई भी पुराना अखबार पढ कर सुनाना शुरू

... है। और फिर माँ को और मुझको वह सुनना पड़-ना है, बिना कोई बाधा डाले हुए।

तो उन्होंने छोटी गोल मेज़ पर से अखबार ले लिया है, चश्मा चढ़ा लिया, लैम्प के और करीब खिसक आये और पढ़ना शुरु कर दिया "वह कई वर्षो तक एक प्रति-क्रियावादी दल का. . दल का . नेता था जिसका नाम... नाम था 'मिनसीतो'। समझ मे आया?" उन्होंने चश्मे के ऊपर से देखने के लिए अपना सिर बकरे की तरह झुकाकर हमसे पूछा।

"समझ गये," मा ने कहा और नजरो से यह नापा कि बोतल मे कितनी और बची है।

"और तेरी समझ में आया?"

"बिल्कुल समझ गयी, पिताजी," मैने सड़क पर जानेवाले लड़को की आवाज की तरफ कान लगाते हुए जवाब दिया।

यकायक, मानो किसी का हुक्म पाकर, वे इतनी जोर मे हँस पड़े कि उसकी गूज सड़क के एक छोर से दूसरे छोर तक सुनायी दे सकती थी, फिर वे तितर-बितर हो गये और चारो तरफ खामोशी छा गयी, लेकिन मैने सुना कि नया अध्यक्ष, कार्प सवेलिच के बेटे वास्का को चुना गया है।

पिताजी की आवाज़ फिर गूजी "समझ मे आया न?" और मैने कहा: "हा, पिताजी।" लेकिन मै सोच रही थी कि अब हमारा अध्यक्ष वही वास्का होगा, जो अभी ठहाका मार कर हस रहा था। अभी एक हफ्ते पहले ही वह फौज से वापिस लौटा है और उस दिन सवेलिच ने लगभग सारा दिन अपनी मुर्गी के एक बच्चे को पकडने में गुज़ार दिया था।

वास्का छोटे कद का है, मेरे ही बराबर और देखने मे ज़रा भी अच्छा नही है—बडी बडी हड्डिया और सीधा सपाट चेहरा। उसकी नाक ऊपर को मुडी हुई है और उसी तरह उसकी ठुड्डी भी—माने किसी ने उसके चेहरे पर नीचे से ऊपर की तरफ हाथ फेर दिया हो और सारा चेहरा फिर वैसे का वैसा ही रह गया हो। और वह कोई चतुर भी नही है। युद्ध से पहले, एक बार वह मेरी चाची की छत पर चढ गया और चिमनी के भीतर मुह डालकर भयानक बाते चिल्लाने लगा, ताकि लोग यह समझे कि कोई प्रेत बोल रहा है। मेरी चाची उस समय चूल्हे के पास खडी थी, सो वह घबराकर अधमरी सी हो गयी। इस तरह का आदमी भला कैसा अध्यक्ष होगा?

पिता जी ने कुछ देर पढा और फिर सो गये। हम भी सोने चले गये। मुझे वडी देर तक नीद न आयी क्योकि मेरे सिर मे दर्द था और इसीलिए मैं शाम की सभा मे नही गयी थी। काफी रात बीत गयी तो दर्द भी दूर हो गया और मै सो गयी। मै सोयी ही थी—या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा—कि उसी समय किसी ने दर-वाजा खटखटाया।

मा उठते हुये कुडबुडायी· "क्या ये लोग पागल हो गये है?"

पता चला कि मुझे सामूहिक फार्म के दफ्तर मे बुलाया गया है। मैने कपडे पहने और दौड पडी।

छोटे से कमरे मे बहुत से लोग जमा थे। वसीलि कार्पोविच (वास्का को लोग अव इसी नाम से पुकारते थे) पिता जी के स्थान पर वैठा हुआ था। मैने प्रवेश किया, तो लडकिया खिलखिला पडी· शायद मेरे चेहरे पर अभी भी नीद विराजमान थी। बूढा इवान भी आया हुआ था, वह हमारे पडोस मे काम करने वाले ब्रिगेड का नेता था। वह वरसाती जूता चढाये हुए था और मैने देखा कि उसके लम्बे कोट के नीचे से उसका गुलाबी धारीदार बनियाइन झाक रही है।

· "हलो", वसीलि कार्पोविच ने बूढे इवान से कहा, "कोट भी उतार डालो न।"

लडकिया फिर खिलखिलायी।

"तुम लोग किसी को सोने भी नही दोगे?" दरवाजे का सहारा लेते हुए इवान ने कहा। "यह भी क्या बढिया ख्याल है कि आधी रात को लोगो को चारपाई से बुला मगाओ।"

उसके बाद पाशा आयी। वह मशीन-ट्रेक्टर स्टेशन पर काम करने वाली ट्रेक्टर ड्राइवर है और ऐसी तरोताजा दिखायी दे रही थी मानो उसने चारपाई पर अभी पैर भी न रखा हो।

"सब लोग आ गये?" वसीलि कार्पोविच ने पूछा।

"हा", मेरे ब्रिगेड के चौडे कधोवाले ल्योशा ने कमरे मे घुसते हुए कहा, "जरा संक्षेप मे।"

"सक्षेप में ही कहूगा," वसीलि कार्पोविच ने बात शुरू की। "साथियो, हम लोग बोआई में पीछे क्यो है? दिन भर मे हम अपना कोटा आधा ही क्यो पूरा कर पाते है? आप लोग कर क्या रहे हैं? क्या हम जून तक बोआई करते रहेगे? क्या जनवरी में जाकर काटेगे? आप

लोंग वताइये, आइये, वोलिए। तमारा की नीद भगाने के लिए जरा उसे झकझोर तो देना।"

पहले तो कोई न वोला और फिर बोलना शुरू किया तो धारा प्रवाह और फिर एक घटे तक वे लोग वोलते रहे, पहले कुछ मतलव की बाते हुई, फिर वक-झक होने लगी और अत में वे मुझ पर टूट पडे। वसीलि कार्पोविच का वाप सवेलिच, जो मेरे ही व्रिगेड का सदस्य था, मुझ पर सबसे ज्यादा पिल पडा। वह साठ से ऊपर है, लेकिन वह हम कोम्सोमोल के सदस्यो के साथ काम करना चाहता था, मैंने उसे मौका दिया तो उसका यह फल मिला। ल्योशा मेरे पक्ष में जुट गयी और अपने काम के बारे में वात करने के वजाय हम एक दूसरे के दोष खोजने लगे

मैं कहना चाहती थी कि मेरे व्रिगेड में मुसीबत यह है कि उचित अनुशासन नही है, दो-तीन आदमी जरूर ही काम पर न आयेंगे, और काम मे यह जरूरी है कि हम सव प्राणपण से जुट जायं। मै यही कहना चाहती थी, लेकिन लोग तो मुझ पर टूट पडे और मै घवराकर बैठ गयी।

वसीलि कार्पोविच ने टोका: "अच्छा, वस वहुत हुआ, तुम लोगो की वात का तो ओर-छोर ही नजर नही आता। इवान तुम वोलो।"

इवान ने अपने बड़े कोट को ज़रा चारों तरफ से समेटा और गम्भीर बन गया।

कुछ दिन पहले ही उसकी तारीफ में एक लेख स्थानीय अखबार मे छपा था और उसका नशा अभी उस-पर बाकी था।

कुछ सोच-विचार कर वह बोला: "दोस्तो, मै तो इसे यो देखता हूं। यह ठीक है कि न्यूशा और उसका ब्रिगेड बोआई का काम खराब कर रहा है। उसके पिता जी जब तक अध्यक्ष थे, तब तक ऐसी बात कहना मुमकिन नही था, लेकिन अब तो कहना ही होगा। वे लोग बडे ढीले है, उनके हाथ-पाव तेजी से नही चलते। और फिर उनके काम की रफ्तार में भी कुछ गडबडी है। मिसाल के लिए, हमारा ब्रिगेड कोसोय मे बोवाई कर रहा है और हमारी रफ्तार है सत्तरह मिनट फी एकड, दो एकड के लिये चौतीस मिनट, वगैरह-वगैरह। उसका ब्रिगेड पहाड़ी ज़मीन पर काम कर रहा है—ट्रैक्टर नाचता-कूदता काम करता है। और उनकी रफ्तार क्या है? वही हमारी जैसी—सत्तरह मिनट फी एकड, वगैरह-वगैरह।"

दूर पर किसी रेल की सीटी की लम्बी आवाज दो बार गूज गयी। बाहर कोई मुर्गा बाग देने लगा और हर

आदमी हस पडा, क्योकि यह स्पष्ट था कि सीटी की आवाज को ऊघते हुए मुर्गे ने कुकुड़-कूँ समझ लिया था।

इवान ने कहा "इसमे हसने की क्या बात है? मै कह रहा था कि रफ्तार है सत्तरह मिनट फी एकड। मेरा ख्याल है कि न्यूशा को अपनी लडकियो की जरा लगाम कसना चाहिए, लेकिन हमें उनकी रफ्तार कुछ धीमी करना चाहिए।"

"यह कोई जवाब न हुआ इवान।" वसीलि कार्पोविच ने कहा। "यह सच है कि कोटा एक सा नही हो सकता। जरा तमारा को हिलाना। लेकिन हम करेगे यह कि कोसोय मे तुम्हारे लोगो की लगाम कसेंगे।"

यह सुनकर हल्ला मच गया। लेकिन वसीलि कार्पोविच उठा और बोलने लगा और सब लोग शान्त हो गये। उसने कुछ अधिक नही कहा, लेकिन जो कुछ कहा, मतलब की बात कही, मानो, उसे इस सामूहिक फार्म के बारे मे रत्ती-रत्ती भर बात मालूम है। अत में उसने कहा "हर आदमी सुबह ५ बजे खेत पर पहुच जाय, चूकना मत। और दिन का कोटा पूरा करना होगा, फिर चाहे चौबीस घटे लगातार ही क्यो न काम करना पड़े। न्यूशा जो कहना चाहती थी, वह सही था, लेकिन उसकी जबान पर ताला

ही पड गयीं। उसकी वात मै पूरी करता हूं उसके ब्रि-
गेड के हर व्यक्ति को सुवह पाच वजे ही काम पर पहुच
जाना है, कोई ढील न हो। मैं मदद के लिये खुद भी
सुबह पहुच जाऊगा और देखूगा कि मामला कहा गडवड़
है।"

पाशा ने कहा "जी, तुम्हारे विना हमारा काम ही
कैसे चलेगा?" और जव हम लोग वाहर निकले तो मैंने
वसीलि कार्पोविच से कहा कि उसकी मदद की जरूरत नही है
और इवान का ब्रिगेड तो उतना भी नही कर पा रहा
है, जितना हम कर रहे हे, हालाकि उसका ब्रिगेड समतल
जमीन पर काम कर रहा है।

पाशा ने भी कहा "हमारे सिर पर आज तक कोई
सवार नही हुआ और न हम होने देगे।"

-"अच्छा भाई।" वसीलि कार्पोविच ने कहा, "अगर
तुम लोग बुरा मानते हो, तो मै इवान के ब्रिगेड मे
शामिल हो जाऊगा। लेकिन न्यूशा तुम्हे यह देखना होगा
कि दो दिन के अन्दर तुम्हारा काम ढर्रे पर आ जाय,
चूकना मत।"

और वह चला गया। मैंने अपने कोम्सोमोल के मित्रा
और सवेलिच को साथ वैठाया और वही सडक पर यह

तय कर लिया कि दो-चार नेवाले खाकर, सीधे काम पर चला जाय।

मानो हमे तग करने के लिए हर चीज शुरू से ही बिगडने लगी। ट्रैक्टर ने चलने से इनकार कर दिया और पाशा रो दी। तभी हमे पता चला कि एक पूरे खेत मे अभी जुताई भी आधी ही हुई है। काम शुरू होते-होते दोपहर चढ आयी।

इतवार को हमने इवान के ब्रिगेड से भी अधिक बोआई की। हमने छ बजे शाम तक काम किया और फिर काम के बारे में सोच-विचार करने के लिए हम सब लडकिया मिलकर बैठी, यानी कि घर लौटते-लौटते शाम हो गयी। खेत मे अकेली रह गई बेचारी पाशा जो अपने ट्रैक्टर को पेचकश से ठीक कर रही थी, और उसका ६ बरस का भाई गरास्का उसके काम मे टाग अडा रहा था। मैंने अपना काम नापा और उसके पास गयी।

गरास्का बोला. "अच्छा पाशा, देखे कौन पहले स्पार्क प्लग मे पेच कसता है।"

पाशा गिडगिडायी "भगवान के वास्ते इसे यहा से ले जाओ। घोडे की मक्खियो की तरह यह दिन भर मेरे पीछे पडा है।"

मैंने गरास्का से वायदा किया कि मै उसे अपना ग्रामोफोन वजाने दूगी, ताकि वह मेरे साथ गाव लौट चले।

शायद इसलिए कि आज वसत का पहला दिन था या शायद इसलिए कि हमने बूढे इवान से अधिक काम कर डाला था, कारण कुछ भी हो, मै पहाडी पर ऐसी आसानी से चढ गयी, मानो नदी तैर कर पार कर ली हो। जव हम चोटी पर पहुचे, तो सारा गाव, वडी सडक और चारो ओर फैले खेत नजर आने लगे। जगल के उस पार घने वादल जमीन पर विछे हुए से लगने लगे, लेकिन सिर के ऊपर आसमान साफ था, वादल का एक भी टुकडा न था और नीलापन इतना गहरा था कि उसे देखने से, आखें दुखने लगती थी और इस नीलिमा की पृष्ठ भूमि मे कौओ की पात कोयले जैसी काली लग रही थी।

गरास्का वोला "अच्छा देखे एक टाग पर चलकर कौन सवसे पहले सडक पर पहुचता है।"

मैं एक टाग पर चलना शुरू करने ही वाली थी कि मुझे वसीलि कार्पोविच दिखायी दिया और मैंने इरादा वदल दिया।

खुला हुआ वडा कोट और टोपी तथा पुराने दस्ताने पहने वह लम्वे डग भरता हुआ चला जा रहा था, उसने

हमे देखा और दोराहे पर रुक गया। मैने सोचा कि हमने जितना काम किया है, उसके बारे मे शायद उसने सुन लिया है और इसलिए वह मेरी टुकडी की लडकियो की तारीफ करना चाहता है।

गुलेल से फेके गये पत्थर की तरह, तेजी से, गरास्का पहाडी पर से उतरा और मै उसके पीछे भागी।

हाफती हुई जब मै वसीलि कार्पोविच के पास रुकी तो वह बोला "मै तुमसे कुछ कहना चाहता हू।" और मुझे उसके स्वर से यह लगा कि वह मुझे झिडकने वाला है। और मुझे दुख हुआ कि मै उससे मिलने के लिए बच्चो की तरह दौड कर क्यो आयी।

वसीलि कार्पोविच ने कहा "क्या तुम्हे पता है कि तुम्हारी पद्रह एकड की जुताए असतोषजनक पायी गयी है?"

मैने कहा कि मुझे मालूम है।

"दो इच कम गहरी है। तुम क्या सोच रही हो? तुम कोम्सोमोल की सदस्या हो—हो कि नही? तुम्हे तो सोचना चाहिये कि पद्रह एकड की जुताई फिर से करने से कितना नुकसान होगा?

मैने कहा कि मै समझती हू। लेकिन वसीलि कार्पोविच के पास सूचना गलत थी। प्रधान कृषि विशेषज्ञ ने जिन

पद्रह एकडो की भर्त्सना की है, उनके लिये मै नही, तमारा जिम्मेदार है। मुझे इतनी ठेस लगी कि मेरा गला रूध गया और मैने एक शब्द न कहा, क्योकि अगर मै सफाई देने लगती, तो मै निश्चय ही फूटकर रो पडती। सारे रास्ते वह मुझ पर ही चोट करता रहा और कहता रहा कि यहा कोम्सोमोल की नियत्रण समिति कायम करने का सुझाव हमने ही दिया था और हम लोग ही उसके लिए कुछ नही कर रहे है, उलटे काम में मन नही लगा रहे है। उसके इस तरह झिडकने और ऐसे स्वर मे बोलने के कारण ठेस खाकर मै लगभग रोती हुई उसके साथ चली जा रही थी, लेकिन जब मैने देखा कि गरास्का को मेरी हालत पर दुख हो रहा है और वह मेरी तरफ इस तरह देख रहा है मानो मै कोई लगडी-लूली हू तो मै अपनी जबान पर काबू न रख सकी।

"हर कोई देख सकता है कि तुम इसलिए बौखलाये हुए हो कि हमने तुम्हारे लाडले ब्रिगेड से ज्यादा बोआई कर ली है," मै बोल उठी, "तुम इसीलिए हमारे काम में बाल की खाल निकाल रहे हो।"

"बकवास मत करो," उसने कहा।

"तुम्हारे लिए यह बकवास हो सकती है, लेकिन

मेरे लिए नही। तुम्हे अध्यक्ष हुए अभी डेढ घटा हुआ है। इस तरह दस्ताने चढाये हुए यहा चहलकदमी करने के वजाय, तुम यह जाकर क्यो नही देखते कि यहा हो क्या रहा है?"

उसने मुझे जवाब तो दिया, लेकिन क्या, यह न वताऊ तो अच्छा है।

मैंने कहा "मुझे डराने की कोशिश न करो, मै चाची नही हू कि भूत बन कर डरवा दोगे।"

तब तक हम सामूहिक फार्म के दफ्तर तक पहुच गये थे और वसीलि कार्पोविच ने मुझसे अदर आने के लिए कहा। मै गयी—और क्यो न जाती? और गरास्का भी अन्दर आ गया।

वसीलि कार्पोविच ने अपने दस्ताने उतारे और खीचकर मेज पर फेक दिये।

"वह गुस्से में है," मैंने सोचा।

उसने शुरू किया. "देखो बस आखिरी बार. " इतने मे टेलीफोन की घटी वज उठी।

वसीलि कार्पोविच ने चोगा उठाकर उसमे फूका और जोर-जोर से चीखना शुरू किया. "हैल्लो .. जिला कमेटी? हा, हा। मै जानता हू। पचास नही—पन्द्रह। हा, पन्द्रह

एकड, तो, तो क्या हुआ? हम उसे ठीक कर देंगे। क्या? जरा जोर से बोलो, मुझे सुनायी नही देता।"

वसीलि कार्पोविच ने फिर फूका, मानो उस चोगे को ठडा करने की कोशिश कर रहा हो।

"कौन? मै? मेरा दोष है? ठीक है, मै जिम्मेदारी के पद पर हू और जो लोग जिम्मेदारी के पद पर होते है, कभी-कभी उन्हे दोष देना ही पडता है। क्या? जल्दी ही, जैसे ही यहा का काम कुछ ठीक हुआ, मै आ जाऊगा। एक शब्द नही सुनायी देता। जरा दरवाजा तो बन्द कर दो." आखिरी वाक्य गरास्का से कहा गया था और फिर अपना खाली हाथ हवा मे झुलाता हुआ वह बडी देर तक बात करता रहा।

उसने चोगा रख तो दिया, लेकिन उस पर से हाथ उठाना भूल गया। किसी गहरी चिन्ता मे लीन वह बैठा रह गया और उसका एक दस्ताना डेस्क के किनारे पर लटक आया, न जाने क्यो मुझे याद आया कि वह अपने पिता के साथ अकेला ही रहता है और उसका घर कभी साफ नही रहता और शायद उसके फर्श की सफाई तो बड़े दिन के बाद से कभी हुई ही नही। और मुझे यह भी याद आया कि जिस दिन वसीलि कार्पोविच फौज से लौटकर घर

आया था, उस दिन उसका पिता सारे दिन मुर्गी के बच्चो के पीछे दौडता फिरता था।

मैंने अपने आपसे कहा: "हद हो गयी। तुझे जरा जबान तो सभालना चाहिए थी।"

"अच्छा, अब यहा से खिसको," अभी भी विचारो मे खोये हुए वसीलि कार्पोविच ने कहा।

मुझे चल देना चाहिए था, लेकिन मै फिर भी खडी रही।

"नाराज न होना," वसीलि कार्पोविच ने एक क्षण बाद कहा। "जहा कोम्सोमोल के सदस्य बने कि फिर हर चीज के बारे मे चिन्ता करनी ही पडती है। और तुमने जैसे आज काम किया, वैसे हर दिन ही करना है।"

पता नही किस मूर्खतावश मैंने कहा "वसीलि कार्पोविच, आपके दस्तानो मे छेद है।"

"कहा," वसीलि कार्पोविच ने अपने दस्तानो की तरफ देखा और जरा फुफकार कर कहा "अरे इससे क्या? मै कोई नृत्य-समारोह मे थोडे ही जा रहा हू।"

"लाइये, मै रफू कर दू।"

"फिक्र न करो। इससे क्या फर्क पडता है? तुम जाकर अपने काम के छेद ठीक करो।"

मुझे अपने ऊपर लाज भी आयी और मुझे चला जाना चाहिए था, लेकिन मै फिर कह बैठी "लाइये भी," मानो इन दस्तानो के बिना मै जिन्दा न रह सकूगी।

"अच्छा भाई, अगर इतना जिद करती हो तो।"

मैने दस्ताने ले लिये और गरास्का और मै घर चले गये।

घटे भर बाद कुछ लडकिया आ गयी और बूढे इवान के यहा जमाव के लिये पकड कर ले गयी। मैने रफू किये हुए दस्ताने उठा लिये और चल दी, हालाकि मै इतनी थकी हुई थी कि पीठ टूट सी रही थी। बूढे इवान का घर गाव मे सबसे बडा है और इसलिये कही और के बजाय, हम लोग अधिकतर वही जमा होते है। इवान की पत्नी और मेरी चाची, लुकेरिया इलीनिचना ने हमारा स्नेहपूर्वक स्वागत किया, लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि और भी लोग आ रहे है, तो वह भन्ना गयी।

"मै तुम्हे घुसने भी न दूगी," उसने कहा। "मै घुसने दूँ तो तुम मुझे बम गिराकर मार ही डालना। मेरा आदमी, भला क्या तमाशा किया करता है?"

मै उसे बातो में लगाकर खुश करने की कोशिश करने लगी और लडकियो ने मेज, चारपाई और आल्मारियो को विभाजन की दूसरी तरफ हटाना शुरू कर दिया।

मेरी चाची चिल्लायी "जाहिलो, वह भी कोई जगह है इन चीजो के रखने की। अगर इन चीजो से रास्ता रोक दोगी तो फिर मै आल्मारी पर रखे हुए "जग" को कैसे उतार पाऊगी? अच्छा आने दो उसे, अपना खाना खुद ही निकाल कर खायेगा तब पता चलेगा। मै जाती हू और यह शाम पडोसियो के यहा बिता दूगी, अच्छा यही सही। अरे मेज जरा बगल की तरफ मोडो। इस तरह वह दरवाजे से नही निकलेगी।"

हमने हर चीज बाहर निकाल दी और जहा आल्मारी रखी थी, वहा लहरियादार शीशे को छोडकर, सारा कमरा खाली कर दिया। हमने फर्श साफ कर दिया और खिड-की के नीचेवाले आधे हिस्से मे कुछ तख्ते ठोक दिये ताकि शीशे न टूटने पाये। हमने पीपो के अन्दर ताजा पीने का पानी भर दिया और दरवाजे के बाहर फूस बिछा दी।

मेरी चाची फिर चिल्लायी "अरे ये सारे लैम्प तुम लोग क्यो जमा कर रही हो। क्या मेरा घर फूकोगी? बताओ, पाच-पाच लैम्पो का क्या होगा? अच्छा यही सही, मै जाकर तुम्हारी रिपोर्ट कर दूगी। और इन सब को एक ही कोने मे क्यो लटका रही हो? उस कोने मे तो जरा भी रोशनी नही है।"

नौ बजे के करीव लोग जमा होने लगे। पहले वच्चे आये। वे लोग चूल्हे के पास फर्श पर वैठ गये और एक दूसरे को गिराते-लुढकाते खेलने लगे। तभी वूढे इवान काम से लौट आये। मेरी चाची ने पहले तो उन्हे जरा झिडका और फिर विभाजन के दूसरी तरफ उनके लिए खाना परोस दिया। ल्योल्का अपना चारखाने का रूमाल वाधे आयी और ल्योश्का भी आ गया — उसकी फौजी पेटी के पीतल के बकसुए पर इतनी पालिश थी कि वह सोने की तरह चमक रहा था। कमरा भरने लगा और लोग धुआ उडाने तथा सूरजमुखी के वीजे चवाने लगे और सारा कमरा शोर और घुटन से भर गया। ल्योल्का वाहर ओसारे में चली गयी और मैने घर लौट जाने का फैसला किया। लेकिन ग्रीशा अपना अकार्डियन उठा लाया था और "ज्वाल" तथा "रोवन वृक्ष" की धुनें वजाने लगा, हर आदमी गा उठा और मै भी रुक गयी। इस सगीत ने मुझे उदास वना दिया। किसी ने खिडकी खोल दी। ताज़ी हवा के एक झोके ने परदा उडा दिया और ठडे पानी की धारा की तरह कमरे में प्रवेश किया। मैने बाहर ओसारे में कुछ आवाजें सुनी। किसी की वाते छिपकर सुनना मेरी मशा नही थी, मगर मै खिडकी के पास बैठी हुई थी, जो ओसारे के करीव ही थी।

पाता। पता नही ऐसा क्यो है। यह बात नही कि कुछ बुजुर्गियत लद गयी है। कभी-कभी मुझे अपने से घृणा होने लगती है। दूसरे लोग हसते है, मजाक करते है और मै अपना मुह भी नहीं खोल पाता। दरअसल मै यही नही जानता कि क्या कहना चाहिये, विशेषकर अगर लडकी कही सुन्दर हो। मेरी जबान, बस, तालू में अटक कर रह जाती है।"

"तुम भी क्या मजेदार आदमी हो। जब तुम मुझसे बाते करते हो, तब तो जबान वहा नही अटक जाती?"

"नही। तुमसे मै आसानी से बात कर लेता हू। ऐसा लगता है, मानो लडकिया भी मुझसे घबराती है। अभी कुछ दिन पहले—लेकिन किसी से कहना नही, कहोगी तो नही?—मुझे एक खत मिला जिसमें कुछ कविता की गई थी। बडे सुन्दर ढग से लिखा गया था, जैसा कि किताबो में होता है। और उस पर हस्ताक्षर थे "तुम्हारी पडोसिन।" अपनी ही किसी लडकी ने लिखा था, लेकिन किसने लिखा होगा, यह मुझे नही मालूम। बहुत अच्छी तरह लिखा गया था और कविता भी सुन्दर थी।"

"सोचने दो, किसकी होगी, वह ब्लोक की होगी।"

"मुझे कैसे मालूम होता कि वह ब्लोक की थी।"

आगे मुझे सुनायी नही दिया, क्योकि बडे लोगो ने

बच्चों को खदेड़ना शुरू किया और बच्चे बेंचो और लोगों की टागो के बीच घुस गये और बहुत शोर मचाने लगे। आखिर उनसे छुटकारा मिला और एक डडा देकर ल्योशा को दरवाज़े पर तैनात कर दिया गया। जब सब शान्त हो गया, तब मुझे फिर सुनायी दिया:

"मै अदाज कैसे लगाता?"

"लगाना चाहिए था।"

"कैसे?"

मुझे लगा कि वे दोनो एक-दूसरे से किसी बात के लिए माफी माग रहे है। अब मुझे पता चला कि ल्योल्का अपना चारखान का रूमाल हर रोज क्यो बाधती है।

मै घर जाने के लिए विकल हो उठी, लेकिन मै फिर भी वे दस्ताने सभाले बैठी रही और जब सब लोग हस पडते थे, तो हस देती थी।

ग्रीशा ने जिप्सी नृत्य की धुन बजायी, ल्योशा ने अपना वर्दी का छोटा कोट उतार दिया, अपने बाल सवार लिये और सीधा खडा हो गया तो एक फुट और लम्बा नजर आने लगा, उसने बाहे फैलायी, उगलिया घुमायी और छोटे-छोटे तेज कदम रखकर बेंचो के घेरे के चारो ओर नाचने लगा और जो लोग उसके रास्ते मे खडे थे

वे कूदकर दीवाल से सट गये और जो लोग बैठे थे, उन्होंने अपनी टागे समेट ली। ल्योशा ने फर्श पर हलके-हलके एडी की थाप देते हुए घेरा पूरा किया और फिर अपनी बाहे फैलायी, जमीन पर बैठा; उछल पड़ा और इतनी तेजी से नाचना शुरू किया कि सब लैम्पो की लौ भभक उठी।

"रुक जा रे हत्यारे," मेरी चाची चिल्लायी, "रुक जा। ऐ शैतान, उछलकूद बन्द कर, वरना धस जायेगा धरती में!"

लेकिन ल्योशा न रुका और न अकार्डियन बजानेवाला रुका, जो बाजे के ऊपर लगभग लेटा हुआ था और मेरी चाची की बात की तरफ किसी ने कान भी नही दिया। विभाजन की दूसरी तरफ से बूढे इवान ने झाका।

हैरत के स्वर में मेरी चाची ने कहा. "जरा इनकी तरफ देखो। देखो, ये क्या कर रहे है। बस इसी क्षण रुक जाओ। अच्छा, यही सही, मै तुम सबको बाहर निकाल दूंगी।"

सगीत की लय पर लड़के ताली बजा रहे थे और ग्रीशा की सफेद उगलिया बाजे पर नाच रही थी और अगर किसी का चेहरा गम्भीर था, तो उन नयी-नवेली

पत्नियों का , जो अपने कोटो के सीने के भीतर वच्चों को वन्द किये ग्रीशा की ओर देख रही थी।

ल्योशा इतनी देर तक नाचा कि मैं ऊब गयी।

उसने आखिरी चक्कर लगाया; फिर एक पैर पर वैठकर दूसरी टाग सामने फैला दी और एक मुद्रा पेश कर दी। हर एक हस पडा और ताली बजाने लगा। मेरी चाची ने रूमाल लगाकर नाक वजायी। लेकिन नवेली पत्निया और उनके वच्चे उसकी तरफ ऐसे भक्ति भाव से ताकते रहे, मानो वह कोई भाषण देने जा रहा हो।

मैंने वाहर ओसारे मे से आवाज सुनी· "तुम्हे मेरा घर मालूम है न? तब तो तुम जरूर आओगे।"

"आठ बजे चूकना मत।"

मैंने अपने दल की लडकियो को याद दिला दी कि सुवह ४ वजे ही खेत पर पहुच जाय; तमारा से कहा कि दस्ताने वसीलि कार्पोविच को दे दे, और फिर घर चली आयी।

रात अधेरी और तारो से विहीन थी। मुझे सुनायी दे रहा था कि मेरे वागीचे में नगी शाखो के बीच हवा सीटी देती हुई भटक रही है और मा अधेरे मे मेरे लिए दरवाजा खोलने के लिए टटोलती चली आ रही है; उधर

दूर मेरी चाची के घर मे ग्रीशा ने एक और नृत्य-सगीत छेड दिया है और युवक-युवती इस तरह हस रहे है और मजाक कर रहे है मानो उनके पास, करने के लिए और कोई काम नही है।

अभी अधेरा ही था कि हम काम पर चल पडे। मुझे अपनी वाहो पर घोड़े की सास का अहसास हुआ—ल्योशा वीज लेकर खेतो की ओर जा रहा था। पाशा ने अपने ट्रेक्टर की सामने की रोशनी खोल दी और घोडे की आखे इस तरह चमक उठी, मानो विजली के लट्टू जल उठे हो। सवेलिच, उस रोशनी में ऐसा दिखायी दे रहा था, मानो किसी ने ऊपर से नीचे तक उसके ऊपर तक आटे का पाउडर मल दिया हो और घुलते हुए कुहरे मे उसकी छाया सीधी खडी थी।

सुवह से पहले ही हमे काफी काम करना था। ट्रेक्टर मे कोई खरावी नही आयी। गाडिया भी, एक के वाद एक, वीज लाती रही। लडकिया वोआई की मशीन मे वीज उडेल रही थी और सवेलिच को यद्यपि सिगरेट पीने की इच्छा हो रही थी, फिर भी वह तमारा के साथ जुटा था। भोर होते-होते हमने लगभग चार एकड मे वोआई कर दी।

गाडी से बोआई-मशीन तक घडा लेकर भाग-दौड करते हुए, सवेलिच भुनभुनाया. "अब आये और देखे हमारा काम। शर्त रही, हम दिखा देगे कि काम कैसे किया जाता है।"

छ बज रहे थे और अभी सूरज और चाद दोनों ही आसमान मे थे, तभी अध्यक्ष महोदय तशरीफ लाये।

सवेलिच ने लोमडी की तरह आखे मटकाते हुए कहा' "जरा गौर से देखिये, गौर से। शायद आप कोई सुझाव दे सके, कामरेड अध्यक्ष?"

वसीलि कार्पोविच जवाब दिये बिना मुडकर ट्रैक्टर की ओर देखने लगा। बोआई की मशीन भूरी मिट्टी के ढेलो के ऊपर सहज भाव से बढ रही थी, जब-तब उसके बड़े पहिये के लोहे को रिम सूरज की किरणों से चमक उठती थी और बगल की क्यारियो मे कौए इस तरह फुदक रहे थे, मानो हवा मे बहा जा रहे हों। हमने ट्रैक्टर मोडा और वसीलि कार्पोविच के करीब आ गये।

"कहिए, कैसा पसन्द आया," सवेलिच ने घमड भरे स्वर मे कहा। "तुम कुछ बोलते क्यो नही?"

"मुझे पसद नही," अध्यक्ष ने कहा।

"क्या? पसन्द नही?" सवेलिच ने ताज्जुब से कहा।

"तुम्हारे काम का बटवारा ठीक नहीं। ल्योशा भी मोर्चे पर बड़ी-बड़ी मशीनगनों को ढोने की [illegible] मेरा था और अब तुमने उसे एक औरत के काम में लगाया है। वह घोड़े पर चढ़ा घूम रहा है और नतालिया जान खपा रही है। इसीलिये बोआई की मशीन भरने में दस मिनट लग रहे हैं।"

वसीलि कार्पोविच ने नतालिया और सवेल्लिच को हुक्म दिया कि वे गाड़ी हांकें और लड़कों से कहा कि वे बो-आई की मशीन भरें।

सवेल्लिच को ठेस लगी।

वह बोला "मैं नहीं करूंगा। तुम क्या समझते हो? क्या मैं अपाहिज हूं?"

"यही करो बापू। तुम्हारे लिए यही काम आसान होगा।"

"मैंने कह दिया कि मैं नहीं करूंगा और अब नहीं ही करूंगा। तुम जाकर अपने दफ्तर में बैठो और यहां आने और हमारे काम में दखल देने के बजाय, कागजों पर दस्तखत बनाओ।"

"बहस नहीं, बापू। तुमने मुझे अध्यक्ष चुना है, तो जैसे मैं कहूं वैसे करना चाहिए।"

"अध्यक्ष। मैने तुम्हे अध्यक्ष चुना इसलिए कि जैसा तुम कहोगे, वैसा करूगा। सुन लो। मेरे लिए तुम अध्यक्ष नही हो। तुम मेरे बेटे हो, यह न भूल जाओ।"

"मै तुम्हारा बेटा हू, लेकिन अभी तुम नही मानोगे और गाडी नही चलाओगे तो मै तुम्हे निकाल दूगा।"

"क्या?"

"मै तुम्हे निकाल दूगा।"

"तुम? और मुझे?" सवेलिच मुह वाये रह गया। "क्या? तुम मुझे निकालोगे? जानते हो, किससे बाते कर रहे हो?"

"अरे, तुम लोग यहा क्या कर रहे हो," वसीलि कार्पोविच ने कहा। "अपना काम करो। यह घरेलू झगडा है।"

"अच्छा, तो तुम यह सोचते हो। अच्छा देख लूगा।" सवेलिच मुर्गे की तरह सीना तानकर टहलने लगा; फिर हताश भाव से उसने हाथ झुलाया और बोला. "अच्छा भई, चलो, ऐसे ही काम बिगाडो।"

बोआई हमने फिर शुरू कर दी। ल्योशा ने घड़े के बजाय बोरे से बीज उडेलने का फैसला किया और फिर उसने बोआई की मशीन रोके बिना ही, उसे भरने की

तरकीव निकाली, उसका साथ देना दूसरो के लिए मुश्किल हो गया।

काम का यह हिस्सा तेजी से चल निकला लेकिन इससे हमारा काम तेज नही हुआ, क्योकि गाडिया हमारा साथ न दे सकी। तमारा ने शिकायत की कि गाडी मे अनाज भरने मे बडा वक्त लगता है। गाडी के इन्तजार में ट्रैक्टर को रुक जाना पडता था और हालत पहले से भी वदतर हो गयी।

इस वात पर हम घटे भर परेशान रहे। नीले आसमान में कुछ वादल लटक आये थे और उनमें से एक के पीछे सूरज चमक रहा था। दूर की पहाडी पर, वाण की तरह लम्वा और पतला-सा बूढा इवान दिखायी दिया।

"ताक रहा है," पाशा ने मुह वना कर कहा। "ताक कर यह देखने की कोशिश कर रहा है कि हमने उससे अधिक काम तो नही कर लिया है।"

बूढा इवान वहा एक क्षण खडा रहा और फिर गायव हो गया, इस तरह, मानो धरती ने उसे निगल लिया हो। उसने ऐसे वक्त देखा था, जव हमारा ट्रैक्टर वेकार खडा था और मै घोडो पर, पाशा पर, और वसीलि कार्पोविच पर, झुझला रही थी। इस पर सवेलिच तेल

की टकी पर बैठा हुआ हमारा मजाक बना रहा था और आग मे घी डाल रहा था।

"वे जो ईंधन ढो रही है, उन गाडियो मे से, क्या एक गाडी हमे नही मिल सकती?" ल्योशा ने पूछा।

"किसी कीमत पर नही", वसीलि कार्पोविच ने कहा। "ईंधन के मामले मे भी तो हम लोग पीछे है। सिम्योन कहा है?"

"मेरा ख्याल है, हमेशा की तरह आपकी लारी के नीचे पडा हुआ होगा।"

"मै जब से फौज से लौटा हू, तभी से उसे वहा पड़े हुए देखता हू। अभी घसीट कर लाता हू।"

"मेरा ख्याल है, इससे कुछ न बनेगा। इस तरह हाथ-पैर फटकार कर तुम रास्ता थोड़े ही बना सकोगे। दो दिन पहले मुर्गी का बच्चा भी इस कीचड मे फस जाता।"

"यह बात दो दिन पहले थी। आज हम सब कुछ पार कर लेगे। याद करो जब हम तीसरे उक्रइनी मोर्चे पर लड रहे थे, तो कैसे कैसे रास्ते तै किये थे।"

"शायद वह कर सके" ल्योशा ने कहा, "जाओ, बुला लाओ। लेकिन उसमे बिजली का यत्र खराब है।"

वसीलि कार्पोविच गाव की तरफ चल चुका था और मै उसको ज़ोर लगाकर आगे बढ़ते और अगल-बगल उसके ओवरकोट के किनारे उड़ते देख रही थी। मुझे विश्वास था कि सड़क और बिजली का यत्र दुगम होने के बावजूद लारी यहा आ जायगी। और सचमुच, हम दुपहरी पारी खत्म कर भी न पाये थे कि मोटर पहाड़ी के किनारे प्रगट हो गयी। उस पर खूब ऊचाई तक बोरे लदे थे और ड्राइवर के बगल की सीट से वसीलि कार्पोविच बाहर कूद पडा।

लगभग दोपहरी हो गयी थी। बादल हट गये थे और सूरज की किरणें तिरछी होने लगी थी। जुती हुई जमीन की ताज़ी मिट्टी से भाप उठ रही थी। दूर, उधर खेत मे एक छोटी सी चीज चमकती हुई चकाचौंधिया रही थी, मानो किसी ने वहा शीशा रख दिया हो।

"जरा अपने अध्यक्ष की तरफ देखो। ऐसा लग रहा है मानो वह प्रार्थना कर रहा हो," पाशा हसी।

इस लडकी की आखें भी क्या है? वह तीर की तरह सीधे ट्रैक्टर चला रही है और फिर भी यह देख लेती है कि कहा क्या हो रहा है। मैंने देखा कि वसीलि कार्पोविच घुटनो के बल बैठकर बीज की गहराई की नाप कर रहा

। उसने एक जगह नापा, फिर बीज को मिट्टी से ढक दिया, उठ बैठा, कपडो से मिट्टी झाड़ दी और फिर दूसरी जगह चला गया। मै सोचने लगी कि वह इस तरह का कोट पहन कर आज रात को ल्योल्का से मिलने कैसे जायगा।

जब हम लोग वसीलि कार्पोविच के पास पहुचे तो ल्योशा बोल उठा: "यह बीज नही है, इस जमीन मे तुम अपना दिल बो रहे हो दोस्त।" अब मैने देखा कि क्या चीज इतनी चमक रही थी, वह एक छोटा सा काच था जो नाखून से बडा न होगा।

अध्यक्ष ने जवाब दिया: "बस देर नही। जब ग्रीष्म आयगा, तब तुम इस खेत के कोने-कोने मे अपने दिल को गाते-झूमते देखोगे। सिम्योन वहा क्या कर रहा है?"

मोटर लौटकर नही गयी थी। पसीने से तर सिम्योन उसके बगल मे खडा था और बकझक कर रहा था।

"मैने कहा था न, कि इसका बिजली का यन्त्र खराब है। अब सब ठप हो गया।"

"क्या कहते हो, क्या ठप हो गया? मेरे साथ आओ।"

आधी की तरह भागता हुआ वसीलि कार्पोविच पहाड़ी पर चढ गया और मुझे फिर विश्वास हो गया कि

विजली का यन्त्र चाहे विल्कुल खराब हो जाय, वे लोग मोटर चला कर ही रहेगें।

"लो, वह फिर झाक रहा है," पाशा ने कहा।

"झाकने भी दो। इस वक्त तो यहा कुछ झाकने लायक चीज भी है," मैने कहा, लेकिन मै फिर आश्चर्य कर रही थी कि पाशा ने बूढे इवान को कैसे देख लिया, जब कि उस तरफ उसकी पीठ थी।

इधर हम बाते कर रहे थे और उधर वसीलि कार्पोविच और ल्योशा ने लारी को पहाडी के नीचे ढकेल दिया और मोटर फिर स्टार्ट हो गयी।

"मै घर जाऊगा क्या?" सिम्योन चिल्लाया।

"घर? अरे जाओ, हमारे लिए बीज और लाओ।"

"मै कैसे जा सकता हू? फिर स्टार्ट नही होगी।"

"वहाने न वनाओ।"

"इतना पेट्रोल खर्च करने की जिम्मेदारी कौन ओढेगा?"

"मै ओढ लूगा। वस, चल तो दो।"

वसीलि कार्पोविच ने दोनो हाथो से एक घडा उठाया और सिर पीछे फेक कर वडी तृष्णा के साथ पानी शुरू किया; पानी की बूदे मोती की तरह उसके ओवरकोट के ऊपर से लुढककर, बिना कोई निशान छोड़े, धरती पर

झर रही थी। उसकी इस तरह थककर चूर होने की हालत से मुझे ईर्ष्या सी हुई, मै खुद उस आनन्द का उपभोग करना चाहती थी और जिस तरह उसने माथे का पसीना पोछा, उसी तरह अपने माथे से पसीना झाड़कर अपने होठो से उस पानी को लगा लेना चाहती जिसमे टीन की गध आती है।

सवेलिच ने वसीलि कार्पोविच से लापरवाही के साथ पूछा "अच्छा, अव मुझसे क्या करने को कहते हो?"

"जो मैने पहले कहा था," वसीलि कार्पोविच ने अपनी आस्तीन से मुह पोछते हुए जवाब दिया। "और बस, अब कोई वडवड नही।"

"मुझ पर रोव न जमाओ। मै तुम्हारा बाप हू, हू कि नही?"

करीव-करीव शाम हो गयी थी। उसके चले जाने और ल्योल्का से मिलने का समय तो हो ही गया था, लेकिन वह अव भी खेतो पर दौड रहा था। कभी किसी घोडे की दिशा वदल देता तो कभी टायर पर चैन चढा देता और ज्योही मुझे यह ख्याल आया कि ल्योल्का अपना चारखाने-दार का रुमाल ओढे वैठी हुई इतजार कर रही होगी और छोटी सी चौकोर घडी देखने के लिए वार-वार

कलाई मोडती होगी, तो मुझे न जाने क्यों मजा आया। और शायद उस शाम काम करते हुए सारे समय मै मजा लेती रही और शायद मुसकराती भी रही, क्योंकि पाशा ने ट्रेक्टर पर बैठे-बैठे मुह मोडा और कहा·

"तुम्हारी शकल से लगता है मानो कोई तुम्हारे तलुवे गुदगुदा रहा है।"

आश्चर्य है कि वह लडकी अपनी पीठ के पीछे होने वाली बात भी देख लेती है।

हम देर से घर गये। चाद उदय हो गया था। वसीलि कार्पोविच भी हमारे सबके साथ ही वापिस लौट रहा था। और उसके ओवरकोट के दोनो छोर उड रहे थे और शायद उनमे से किसी छोर से मेरा हाथ छू गया था।

हमने गाव मे प्रवेश किया। हर चीज चादनी मे नहायी हुई लग रही थी—सडक, बाडे, छप्पर, मकानो की सीढिया—मानो नीली बर्फ गिरी हो। ल्योल्का की खिडकी में रोशनी जल रही थी। वसीलि कार्पोविच उससे आगे बढता गया और जब मै अपने बरामदे में चढ रही थी तब मुझे सुनायी दिया कि वह जूते की ठोकर मार कर अपने घर का दरवाजा खटखटा रहा है।

मै बरामदे मे उस समय तक खडी रही, जब तक

मैने उसके लिए सवेलिच को दरवाजा खोलते, फिर बंद करते और चटखनी चढाते न सुन लिया, फिर मै भी घर मे घुस गयी।

हर रोज हम पहले से भी ज्यादा वोआई कर रहे थे। काम खत्म करने के वाद हम मिलकर बैठते और अपने काम के वारे मे वाते करते। हमारे कोम्सोमोल की वैठको मे भाग लेने के लिए सवेलिच हमेशा आता और हम सबसे ज्यादा शोर मचाता। हमने शानदार तरीके से वोआई समाप्त की—जिले मे हम लगभग प्रथम रहे।

मेरे ब्रिगेड का काम देखने के लिए वसीलि कार्पोविच लगभग रोज आता, लेकिन अव उसने हमे हुक्म देना वद कर दिया था। उसकी कोई आवश्यकता भी न थी। उसने जो काम जिसे सौपा था, उसे लोग वखूवी कर रहे थे; घोडे उसके कथन के अनुसार ही वीज ढो रहे थे और लारी भी काम कर रही थी।

अव वह मेरे काम मे गलतिया नही निकालता था और एक दिन जव मै तमारा को उसके काम के वारे मे समझा रही थी, तो उसने कहा·

"काम का यही तरीका है, लाल कपोलवाली। तुम्हे .." यकायक उसने वात खत्म कर दी और चाल गया। मै

बडी देर तक उसे जाते हुए देखती रही और आश्चर्य करती रही कि आखिर वह क्या कहना चाहता था, लेकिन मैं कुछ अदाज न लगा सकी और जब मैं घर पहुची तो मैने शीशा देखा। सच, मेरे कपोल लाल हो रहे थे। चुकन्दर की तरह लाल। आज से पहले मेरा ध्यान इस तरफ क्यो नही गया था?

देखते-देखते गर्मी का मौसम आ गया।

एक शाम बूढा सवेलिच मेरे पिताजी से मिलने आया।

अपनी टोपी रखने के लिए जगह तलाशते हुए उस ने कहा "तुम्हारा दरबा है भरपूर। खूबसूरत और आराम-देह। लेकिन हमारा घर? मेज-अल्मारी का कोई खाना खोलो कि बस मक्खिया टूट पड़ेंगी। हमारे घर में यह भी गध नही आती कि वहा कोई रहता है। बस रेलवे स्टेशन जैसी गध आती है। ऐसी ज़िदगी से मै ऊब गया हू।"

मैं लेट गयी थी; मा गाय दुहने चली गयी थी; पिताजी और सवेलिच बिना लैम्प जलाये, वहा बैठे हुए थे। तदूर के पीछे कोई झीगुर झी-झी कर रहा था। पिताजी और सवेलिच ने सिगरेट पीना शुरू किया।

पिताजी बोले. "तुम्हारे घर में जरूरत है एक औरत की।"

सवेलिच ने कहा. "यही तो मै भी कहता हू। भगवान जानता है, मै न जाने कितनी बार यह बात वास्का से छेड चुका हू, लेकिन वह मेरी बात उडा देता है और काम के कोटो, ट्रेक्टरो वगैरह की बात करने लगता है। वह मेरे बस का नही है।"

"मेरा ख्याल है, उसे इसके लिए फुर्सत नही मिल ती।"

"उसे फुर्सत नही है, मेरा सिर। वह साथ रहता है। उस ल्योल्का के, जो हमारे पशु देखती है। जानते हो उसे? तीन महीने से वह उससे मिल-जुल रहा है, लेकिन वात कुछ नही बनती।"

"शायद वह उसे प्यार नही करता।"

"तो वह उसके साथ क्यो रहता है? कहता है कि वह उसे पढने के लिए किताबें देती है—हुह।" सवेलिच ने हाथ झटके और फर्श पर तम्बाकू थूक दी। "लडका पचीस का हो गया है, लडकी सुन्दर है। पढी लिखी है, स्वतन्त्र है—और वह वहा किताबे पढने जाता है। जब मैने इसके बारे में पूछा तो कहता है कि आदमी मे

खूबसूरती ही सब कुछ नही होती। और मै यह सोचता हू—ओहो आपके कितने ऊचे विचार है।"

"आजकल के नौजवानो को समझना टेढी खीर है," पिता जी बोले।

"यही तो मै भी कह.ा हू—इन्हे कौन समझे। बताओ तो आदमी मे खास चीज फिर क्या होती है? सुनो, मैने अपनी पत्नी से कैसे शादी की थी—भगवान उसकी आत्मा को शाति दे। मै कुछ दिनो उससे मिलता रहा, ईमानदारी और निश्छलता के साथ, और ज़ाहिर है कि ऐसा वक्त आया जब या तो मुझे उसे छोड देना चाहिए था या शादी कर लेनी थी। मेरे पिता ने उससे शादी कर लेने को कहा। इसलिए मै ईमानदारी और निश्छलता के साथ, उसके माता-पिता से मिलने गया और उसका हाथ मागा और उन्होने इजाज़त दे दी और उसे बुलवाया। वे लोग खुद बाहर चले गये। और तुम यकीन कर सकोगे? मुझे लगा कि मै उसे प्यार नही करता। इतने दिनो जब तक वह मेरे साथ घूमती-फिरती थी, मुझे वह अच्छी लगती थी, लेकिन जब शादी का वक्त आया तो मैने महसूस किया कि मै उसे प्यार नही करता और बस। क्या बटन जैसी नाक,

हबशियाना मोटे होंठ, और सबसे बुरी बात यह कि जब वह हँसती थी तो उसके ऊपर के मसूढ़े दिखायी देने लगते थे और उसके मसूढ़े थे पीले-पीले। ताज्जुब है कि जब मैं उसके साथ इश्क लड़ा रहा था तब भला यह बातें क्यों न देख पाया? मैंने एक बार फिर उसकी तरफ देखा मैंने सोचा कि नहीं, इसके साथ मेरा बेड़ा पार न हो सकेगा। मैं घर आया और किसी से एक शब्द भी न कहा। अपने मा-बाप से कुछ कहते डर लगता था। और फिर दूसरे दिन क्या होना बदा था—उसका चाचा मर गया। वह एक मिल का मालिक था और उस मिल को वह उसके पिता के नाम कर गया। मैं एक सप्ताह तक रुका रहा और एक बार फिर उससे मिलने के लिए गया। और तुम मानो, न मानो, उसकी नाक बटन जैसी न लगी, होंठ भी कुछ ऐसे मोटे न थे और उसके हँसने पर मसूढ़े दिखायी देने के बारे में मैंने सोचा कि भई, इसमें क्या बड़ी मुसीबत है, मेरे साथ रहेगी तो मसूढ़े दिखाने के मौके भी कम ही आयेंगे। इस तरह सारी बातें बदल गयीं। और उससे मुझे सबक मिला कि धन से ही आदमी खूबसूरत होता है। पहले लोग सोचा करते थे कि धन ही सबसे बड़ी चीज है।

लेकिन आजकल क्या चीज मुख्य है, यह बता सकना मेरे लिए तो मुश्किल है।"

दोनो चुप हो गये और उनकी सिगरेटो की दो लाल आखें जल उठी और फिर जहा मेज रखी थी, वही कोने मे बुझ गयी।

सवेलिच ने फिर शुरू किया "वह क्या चाहता है, यह तो वह खुद भी नही जानता। मै अभी उसके पास जाऊगा.. "—और एक लाल आख अधेरे मे टपक गयी—".. मै जाकर उससे कहूगा कि उसे शादी करनी ही पडेगी। भला कही आदमियो मे गृहस्थी चलती है।"

"लेकिन अगर वह न करना चाहे तो?"

सवेलिच ने तुरत जवाब दिया "अगर वह नही करना चाहता, तो मै खुद अपनी शादी कर लूगा।"

लगता था कि उसके मुह से जो निकल गया है उससे वह खुद घबरा गया है, लेकिन एक क्षण सोचने के बाद उसने फिर वही बात दुहरा दी

"मै खुद अपनी शादी कर लूगा। जरूर कर लूगा। तुम क्या समझते हो कि मेरी उमर खतम हो गयी है?"

"तुमसे शादी कौन करेगा?" पिता जी ने पूछा।

"क्या फर्क पडता है? मान लो, मै ग्रिगोरियेवना से

शादी कर लू। उसके लिए भी तो अकेले रहना आसान नही है, जैसे कि मेरे लिए। और मै जा रहा हू और अपने अघ्यक्ष महोदय से इसी दम यह बात कहे देता हू।"

सवेलिच ने बैंच से अपनी टोपी टटोलकर उठा ली, सलाम कहा और दरवाजा सावधानी से बद करके चला गया और पिता जी वही बैठे रहे और वह लाल आख उस अधेरे मे जलती-बुझती रही। झीगुर की झी-झी के अलावा कमरे मे पूरी तरह नीरवता थी और यह झी-झी मुझे इतनी सता रही थी कि उसे कुचल देने में मुझे सतोष ही होता।

मा लौट आयी। वह खाना परोसने लगी और पूछने लगी कि सिरका कहा है। हमने भोजन किया और सोने चले गये, मगर झीगुर अभी भी झी-झी कर रहा था, और मै न सो सकी, मुझे गुस्सा आ रहा था सवेलिच पर, जो वसीलि कार्पोविच को शादी करने के लिए मजबूर करना चाहता है, उसी तरह जैसे जार के जमाने मे मा-बाप किया करते थे।

अगला दिन गुजर गया और दूसरा दिन भी गुजर गया और मुझे मालूम न हो सका कि अपने बेटे से सवेलिच की बातचीत का परिणाम क्या हुआ। तीसरे

दिन शाम को ल्योल्का दरवाज़े मे गुजरी और मैं उसे बुलायें बिना न रह सकी।

ल्योल्का ने रुककर कहा "हल्लो"। अब क्या कहू, यह मेरी समझ मे न आया और ल्योल्का अपना सिर एक तरफ मोडे हुए मेरी बात का इतजार करती खडी थी।

"लोग कहते हैं कि तुम्हारे पास बहुत सी किताबें हैं," मैने कहा, क्योकि इससे बढिया बात मुझे ढूढे भी न मिली। "एक किताब मुझे भी दोगी क्या?"

"अच्छा भई, मेरे साथ घर आओ और जो पसद हो, चुन लो।"

जब मै उसके साथ चली जा रही थी, तो नजर बचाकर उसकी तरफ देख लेती थी और मैने ईर्ष्या का अनुभव किया, क्योकि वह इतनी सुन्दर थी, जैसे कोई अभिनेत्री।

आधा रास्ता पार कर लेने के बाद, उसने पूछा "मेरी किताबो के बारे में, क्या वसीलि कार्पोविच ने बताया था?"

"नही, वह मुझसे क्यो बात करेगे?"

"मै समझती थी कि तुम और वह मित्र हो।"

"हम और मित्र? खेतो के अलावा मेरी उनसे कभी भेट भी नही होती।"

"और मैं तुम्हे उससे दोस्ती करने की सलाह भी न दूगी। वह इस योग्य ही नही है। मै उससे भली भाति परिचित हू। वह मेरे साथ रहा करता था मै उससे बाते करने का प्रयत्न करती थी, लेकिन वह गुमसुम बैठ जाता था और मेजपोश मरोडा करता था और कभी कोई बात कही तो वही "लगी गोली।"

ल्योल्का का कमरा इतना साफ-सुथरा था कि मुझे कोई चीज छूने मे भी डर लगता था। उसने तलस्तोय का "कजाकी" नामक गल्प-सग्रह आलमारी से निकाला और मुझे दे दिया।

"न्यूशा बैठो न।" उसने कहा। "मैने सोचा कि शायद यह कमरा ही ऐसा है, जहा उसे बेचैनी अनुभव होती है, इसलिये एक दिन मै उसे घुमाने ले गयी। तुम सोचोगी कि मेरे ऊपर उसकी यह महानतम कृपा थी। खलिहान पार करके हम उस जगह पहुचे जहा जमीन ऊबड-खाबड है। मै उसे अपने बारे मे बताती रही, लेकिन वह झाडियो की ओर दृष्टि गडाये रहा और बडे भोंडे ढग से बूट की एडी रगडकर जमीन मे गड्ढे बनाता रहा। बडी सुहानी शाम थी, कोयले गा रही थी और अत मे मुझे लगा कि उस पर कुछ प्रभाव पड़ना आरम्भ हुआ

है। वह चहक उठा और विना "लगी गोली" दोहराये बाते करने लगा। मुझे तो इस सब पर विश्वास ही नही होता था। मै समझी कि अब हम एक-दूसरे को समझ सकेगे। मैने उसे श्लोक के कुछ उद्धरण सुनाये और उसने बडे सुन्दर ढग से दाद दी। और तभी यकायक, वह जमीन में एक गड्ढे की तरफ इस तरह आख गड़ा कर देखने लगा मानो उसने कोई भूत देखा हो। मेरी तो जान ही निकल गयी। फिर उसने मेरी तरफ भयावनी दृष्टि से देखा और चिल्लाया. "बूढे इवान के घर तो जाओ दौडकर, और मेरे लिए एक खुर्पा ले आओ। दौडो, भागो।" जो बात मेरे दिल में चुभ गयी, वह भी उसकी "दौडो, भागो," मानो मै कोई रगरूट थी और वह कोई अफसर। स्वाभाविक ही था कि मै उलटे पैरो लौट गयी और घर वापिस आ गयी।"

"खुरपा वह किस लिये चाहता था?" मैने पूछा।

"बात यह थी कि उसने कुछ कच्चा कोयला खोज निकाला था। वह आनन्द से पागल हो उठा था। यह अवश्य हुआ कि वह बाद में मेरे पास आया और क्षमा मागी और पूरे एक घटे तक बैठा-बैठा यह सफाई देता रहा कि कैसे उसने सड़क से आधी मील दूर पर कच्चा

कोयला देखा था जब कि इनके लाने के लिये गाडिया ग्यारह मील दूर जगल पार जाया करती है। मुझे लगा कि मेरा दिमाग फट ही जायगा।"

"लेकिन क्यो? यह तो बडी दिलचस्प बात है।"

"इसमे दिलचस्प बात क्या है?"

"सोचो दूसरे कामो के लिए अब कितने ही घोडे खाली हो जायगे। वे लोग..."

"देखो, अब तुम व्याख्यान देना शुरू मत करो", ल्योल्का ने मुसकरा कर कहा।

"अच्छा भई। लेकिन, काम उसने शानदार किया। और खुद भी वह क्या शानदार आदमी है।"

"ओहो, सचमुच? लेकिन तुम्हारे बारे मे उसका ऐसा ख्याल नही है," ल्योल्का ने कहा।

"नही है?"

"न तुम्हारा तो वह मजाक बनाता है।"

"क्यो?" मैने पूछा और मेरा दिल बैठा जा रहा था।

"यह कहना कठिन है। तुम्हे उस साथी की याद है, जो परसो जिला कमेटी की ओर से यहा आया था? वसीलि कार्पोविच उसे हमारे गेहू की फसल दिखाने खेतो पर ले गया था। मेरे पास भी कोई काम न था, इसलिए मै भी चली गयी थी। वे इतनी दूर तक गये कि मै तो

थक कर चूर हो गयी और अत मे वसीलि कार्पोविच उसे तुम्हारे खेत पर ले गया और तुम्हारा मजाक उडाते हुए तुम्हारी चर्चा करने लगा।"

"मेरा मजाक क्यो उडाता है?" मैने पूछा। "मीटिग में तो उसने मेरे काम की सराहना की थी।"

ल्योल्का ने क्या जवाब दिया, मुझे याद नही और मेरा ख्याल है कि मैने चलते समय उसे सलाम भी नही किया। आधी दूर पहुच गयी थी तब मुझे ध्यान आया कि उस किताब को मै ल्योल्का की मेज पर ही छोड आयी थी, लेकिन मै लौट कर नही गयी और जैसे ही घर पहुची बिस्तरे में घुस गयी और सतर्क रही कि मा मुझे रोती न देख ले।

दूसरे दिन मै "स्तखानोवाइट" कार्यकर्त्ताओ के सम्मेलन मे भाग लेने वोलोग्दा गयी। शाम को जब स्टेशन ले जाये जाने के लिए मै कार मे इतजार कर रही थी, तभी वसीलि कार्पोविच आया। वह कार के नज़दीक तक आया, फिर चारो तरफ इस तरह देखा मानो किसी के देख लेने का डर हो और फिर थोडा सा हसा और एक फूल मेरी तरफ बढा दिया और धीरे से बोला

"चाहिए?"

"नहीं, कामरेड अध्यक्ष, मुझे नहीं चाहिए," मैंने ज़ोर से कहा ताकि ड्राइवर सिम्योन सुन ले, "इसके देने वाले की तरह इसमें भी बहुत से कांटे हैं।"

और कार चल पड़ी। मैंने पीछे की खिड़की झाँक कर देखा, लेकिन धूल के बादलों के कारण मैं वसीलि कार्पोविच को न देख सकी।

वोलोग्दा में हम चार दिन रहे। चौथे दिन मैंने सम्मेलन को अपने खेत के काम के बारे में बताया। मेरे भाषण के बाद, जिला कमेटी का वह व्यक्ति, जो हमारे खेत देखने आया था, मंच पर आया और बोला। पता चला कि वह फौज में वसीलि कार्पोविच का दोस्त रहा है—एक साल तक वे दोनों एक ही टुकड़ी में रहे थे। वह बड़ा खुश-मिजाज व्यक्ति था और जब वह युद्ध की चर्चा करता था तो वह भी बड़ी जिंदादिली के साथ करता था, उसमें भयानकता जरा भी नहीं होती थी। उसने कहा कि उसे दुख है कि हमारे फार्म पर वह ज्यादा [illegible] और वसीलि कार्पोविच से [illegible] "[illegible]" [illegible]

"मोर्चे से लौटने के बाद वसीलि घर पर कैसी जिंदगी बिता रहा है?" उसने पूछा। "सामग्री का पूरा भण्डार तो होगा? काटे-छुरी, नहाने का टब वगैरह?"

मैने कहा कि वैसे वसीलि कार्पोविच मजे में है, लेकिन युद्ध-काल मे उनकी मा का देहान्त हो गया था और अब उनको और उनके पिता को अपनी घर गृहस्थी चलाने मे बडा परेशान होना पडता है।

"इसका इलाज आसान है। उसके लिए हम लोग एक पत्नी खोज लेगे।"

"कौन?"

"यह बात तो मुझसे ज्यादा, तुम्हे जानना चाहिए। तुम्हारे यहा कोम्सोमोल की वह लडकी कौन है, जो एक दिन मे अपने कोटे से तीन गुना अधिक काम कर लेती है? वह मुझे तुम लोगो के खेतो पर ले गया था और मुझे गेहू दिखाया था और तुम्हारे यहा के किसानो के बारे में बड़ी डून की हाकता था, इतना कि..."

"उस लडकी के बारे में वह क्या कहते थे?"

"बड़ी तारीफ करता था। उसने कई लोगो की तारीफ की लेकिन मतलब यह की दूसरो कि तारीफ तो उसने गद्य

मे की और जब उस लडकी की चर्चा करने बैठा तो कविता बोलने लगा—बस, बल्लियो उछलने लगा।"

वह व्यक्ति जरा हसा और कोई बात याद करके उसने आखे मटकाई।

"हमारे साथ जो लडकी थी, वह ईर्ष्या से इतनी जल-भुन गयी कि अपने नन्हे-नन्हे सफेद दातो से अपने चारखाने का रूमाल के चिथडे-चिथडे करने लगी।"

यह बात उसने बहुत लक्ष्य करके कही और मेरी तरफ इस तरह देखा कि मै घबरा गयी और मैने उससे आगे बात करने की हिम्मत भी नही की—इस डर से कि कही वह उस बात को न समझ जाय, जिसे जानने से उसे कोई सरोकार नही।

किसी तरह मै सम्मेलन के समाप्त होने का इतजार करती रही और स्टेशन पर ट्रेन का इतजार भी खामोशी से करती रही, लेकिन ज्योही मै अपने स्टेशन पर उतरी, मै अपने गाव की तरफ जानेवाली मोटर के आने तक सब्र भी नही कर सकी और पैदल ही चल पडी।

जब गाव पहुची तो रात हो गयी थी। हमारे घर की खिडकी से रोशनी आ रही थी। मै अन्दर गयी और देखा कि पिता जी और सवेलिच पी रहे है। मा यह

बडबडाती टहल रही थी कि उनका सिरका उठाकर जाने कौन ले गया है। मैंने कुछ न कहा. . क्योकि अपने कपोलो की लाली दूर करने के लिए मै सारे महीने सिरका पीती रही थी। मै कुछ न बोली, क्योकि मै वसीलि कार्पोविच से मिलने के लिए और उससे यह कहने के लिए आतुर थी कि फूल स्वीकार करने की बात को लेकर वह बुरा न माने।

ग्यारह बज गये थे। इस समय घर से निकलना और इस तरह उससे मिलना सम्भव नही था, इसलिए मैने बहाना सोचा।

"कहा जा रही हो?" मा ने पूछा।

"बस अभी आती हू। मुझे एक पत्र वसीलि कार्पोविच तक पहुचाना है।"

सवेलिच ने एक घूट भरते हुए दुखित स्वर मे कहा "वसीलि कार्पोविच तो चला गया है।"

मेरा दिल टूट गया है।

"चले गये?"

"चला गया। उसकी तरक्की हो गयी। उन्होने उसे आज जिला केन्द्र के लिए बुला लिया। अच्छा अध्यक्ष था, क्यो न?" मुझे ऐसा लगा कि सवेलिच ने यह सवाल

आज शाम पहली बार नही किया था और न पिता जी ने पहली ही बार उत्तर दिया "बहुत अच्छा अध्यक्ष था।"

मैने सिर पर शाल डाली और दौड चली। चाद चमक रहा था। सारा गाव, एक सिरे से दूसरे सिरे तक साफ दिखायी दे रहा था। हर चीज पूरी तरह खामोश थी। न एक भी कुत्ता भौंक रहा था और न एक भी पत्ती खडक रही थी। और न एक भी आदमी दिखायी दे रहा था, मानो सारा गाव जिला केन्द्र के लिए चला गया हो। मै दौड पडी, फिर चलने लगी, चलती रही और फिर दौडने लगी कि सवेलिच का घर आ गया। खिडकिया खुली थी। मै एक खिडकी के पास गयी। आधे चाद ने मेरी ओर ताका, मानो कह रहा हो "तुम यहा क्या कर रही हो?" मै दूसरी खिडकी पर गयी और वहा से एक और खिडकी पर, और वही चाद मेरी ओर ताकता रहा, और मुझ पर हसता रहा। मै एक क्षण ठिठकी और फिर बाडे मे निकल आयी। ओसारे मे एक टोटीदार पात्र जिस रस्सी पर लटका था, उस पर अलसाया सा झूम रहा था। अर-गनी पर एक लत्ता झूल रहा था। मै चरमराती हुई सीढियो पर चढ गयी और दरवाजे पर एक ताला जडा हुआ देखा

मुझे लगा कि सवेलिच ने सच ही कहा था।

मेरा दिल बैठ गया। मैंने जंगला बंद किया और सपनों में खोयी हुई सी गांव के छोर तक चलती गयी। चलते-चलते मैं उस दोराहे तक पहुंच गयी जहां वसीलि कार्पोविच ने मुझे उन पंद्रह एकड़ों के लिए मिलाया था, मैंने पहाड़ी पार की और उस स्थान पर पहुंची जहां वसीलि कार्पोविच ने उस समय थकान से पूरी तरह चूर-चूर होकर घड़े में पानी पिया था।

हर तरफ़, दूर जंगल के किनारे तक फैला हुआ पका गेहूं हलके-हलके डोल रहा था। भारी बालियां मंद पवन के झोंकों में झूम रही थीं और मंद-मंद मर-मर स्वर में, एक झीनी सी गूंज के साथ, हलकी सी सीटी बजा रही थीं। डण्ठलों पर चांद की रुपहली किरणें जगमगा रही थीं और यकायक मुझे शांति और सुख का अनुभव हुआ।

"वास्या, उस फूल के बारे में तुम बुरा मत मानना। वह तो मेरी मूर्खता थी।" मैंने कहा और मुझे लगा कि मैं रो पड़ूंगी।

हलकी सी सर-सर ध्वनि के साथ गेहूं के ऊपर फिसलती हुई एक लहर मेरी ओर लपकी और मुझे लगा कि बालियां एक दूसरे को ठेलती और धकेलती मुझे छूने के लिए होड़ कर रही हैं।

१९४७

नया भोर

हम पुल के पास-बैठे थे। अलेक्सेय एक लट्ठे पर और मैं अपने टियोडोलाइट यन्त्र के डिब्बे पर। मै अपनी दिशा की तरफ जाने वाली कार पकडना चाहता था इसलिए सडक पर से नजर नही हटा रहा था।

सुबह के लगभग पाच बजे थे। पौ फट रही थी। भोजपत्र के वन के ऊपर आकाश में हलकी लालिमा छायी हुई थी लेकिन सूर्य अभी उदय नही हुआ था।

चिडिया अभी सो रही थी। कगारो के किनारे छितरे बसे हुए गाव के अतिम घर में आग जल रही थी और धुए के महीन रेशे शान्तिपूर्वक आसमान मे घुमड रहे थे।

समय समय पर हमे बाध की ओर से जहा बर्फ को डाइनामाइट से उठाया जा रहा था हलके धमाके सुनायी दे रहे थे। बहुत साफ सुनायी दे रही थी रेल के पहियो की घडघडाहट। मानो रेलवे स्टेशन निकट ही उस नीली पहाडी के पार हो। वास्तव मे वह दूर था और पहाडी के पार तो बिल्कुल नही, बल्कि उसकी विरोधी दिशा मे जगल के पास था वहा उच्च व्यवित की बिजली के तारो के खम्भे और ईंट के कारखानो की नयी चिमनी दिखायी देती थी।

रेल की घडाघड जारी थी। नन्हे झरने ढलाव पर गडगडाते वह रहे थे दूर पर धमाके गूज उठते थे। लेकिन इन आवाजों के बावजूद सारे वातावरण से भोर की शान्ति छायी हुई थी।

नदी, खेत, गाव के छप्परो, जगल की वृक्षावलि और अलेक्सेय तथा मुझ तक पर यह शान्ति छायी हुई थी और सूर्योदय को सूचित करनेवाली इस विचित्र, निष्पन्द

नीरवता को भग कर सकने वाला एक भी स्वर इस ससार मे नही था।

अलेक्सेय तेईस वर्षीय युवक था—भूरी आखे, सुनहरे केश, चौडे कधे और चेहरे का रग इतना निर्मल और उज्जवल, मारो वह अभी ही अपना चेहरा ठडे पानी से धोकर उठा हो। बड़े धीरे-धीरे अपनी गैती को लकडी की बेंट में फसाते हुए वह कभी-कभी एक नजर नदी की बर्फीली सतह पर डाल लेता था जिसका श्वेत सौदर्य अब काले धब्बो से नष्ट हो गया था। उसे इस पुल की देखभाल करने के लिए भेजा गया था। रात में उसने लोहे की मुडेर हटा दी थी और कोई पाच सौ गज़ दूर एक ऊचे स्थान पर उसने खम्भे और दूसरे हिस्से रख दिये थे ताकि नदी मे बाढ आये तो ये निशान बह न जायें। इस वर्ष नदी में पानी बहुत ऊचा उठने की आशका थी।

इस क्षण कोई काम न होने के कारण अलेक्सेय अपनी गैंती के लिए बेट छीलने बैठ गया और काम इतने धीरे कर रहा था कि देर तक चले। लकडी के मुडे हुए छीलन के टुकडे उसके पाजामे में उलझे हुए थे। उसकी टोपी एक कान पर तिरछी झुकी हुई थी और रूई की बडी के बटन खुले हुए थे।

"कोई कार नही आती" नदी की ओर बेचैनी से निगाह फेंक कर मैंने कहा।

"नही" अलेक्सेय ने अति-विश्वास के साथ सहमति प्रगट की।

"अगर बर्फ पिघल गयी तो मै इस नदी को पार भी नही कर पाऊंगा। क्यो, है न?"

"नही। तुम नही कर पाओगे।"

"अगर कार आने से पहले ही बर्फ पिघल गयी तो क्या होगा। मुझे यही बैठे रह जाना पडेगा और दो दिन तक यही सडना पडेगा।"

"हो सकता है तीन दिन तक।"

"लेकिन मै नही रुक सकता।"

"चिन्ता मत करो। दो कारे तो जरूर गुजरेगी। 'पहली पाच साला योजना सामूहिक फार्म' से सुपरफास्फेटस की खाद के लिए वास्का जरूर अपनी खडखडिया लेकर निकलेगा। वे बस आखिरी दम पर काम करते है। और ट्रैक्टर स्टेशन का डायरेक्टर भी तेल के लिए कार भेजता होगा। बडा सख्त आदमी है वह डायरेक्टर। अगर उसे कोई चीज चाहिए तो फिर चाहे बर्फ पिघले या न पिघले, वह तेल लाने के लिए हुक्म दे देगा और फिर कोई टाल नही सकता।"

अलेक्सेय धीरे धीरे बोल रहा था मानो वह बात करना नही चाहता और उसके एक एक शब्द के बाद मुझे अप्रैल के प्रात.काल की खामोशी सुनायी दे जाती थी। नमी और सर्दी थी। अभी सूरज उठा नही था और भूरे आसमान में तनिक-सा चाद गलता जा रहा था।

यकायक अपना काम रोक कर अलेक्सेय ने कहा· "वह आ रही है।"

"कौन?"

"मेरी पत्नी।" इतने अलस सुबह यहा और कौन आ सकता है?"

मैने कान लगाये। रेल गुजर चुकी थी। डायनामाइट के धड़ाके बन्द हो चुके थे। सिर्फ ढलाव पर बहकर नदी मे मिलनेवाले झरनो की बलबलाहट सुनायी दे रही थी।

"और वह बडी तेजी से आ रही है।" यह कह कर अलेक्सेय स्नेहपूर्वक हसा।

"तुम सिर्फ कल्पना कर रहे हो।"

"जरा ठहरो। एक क्षण के भीतर तुम भी कल्पना करने लगोगे। वह दूस्या ही है।"

और सचमुच पहाड़ी के पीछे से एक लडकी आती दिखाई दी जो कमर पर भेडकी सफेद खालका चुस्त कोट

और फेल्ट बूट पहने हुए थी और बूटो के ऊपर लाल रबर का एक और जूता चढाए हुए थी। वह रूमाल मे बाधे कोई चीज लिये चली आ रही थी। मै देख रहा था कि अलेक्सेय यह देखकर आनन्दित हो उठा था कि वह इतनी सुबह उठकर उसके लिए नाश्ता ला रही है लेकिन इस भाव को वह त्योरिया चढाकर मुझ से छिपाने का प्रयत्न कर रहा था।

"मैने समझा कोई और होगा। लेकिन निकली तुम," उसने अपनी पत्नी से कहा।

दूस्या को जरा भी बुरा न लगा।

"तुम्हें ठड लग जायगी। कमसे कम कालर के बटन तो लगा लो।"

"नही। मै नही लगाऊंगा। बर्फ पिघलने के वक्त हवा बढिया होती है। उससे मुझे कोई नुकसान नही होगा। बस जरा मजबूत ही बनायेगी" अलेक्सेय ने कहा, लेकिन इतने पर भी उसने कालर के बटन लगा ही लिये। "तुम क्या लायी हो।"

"तुमने जो कहा था। जरा उधर को हटो।"

"ऐसे ही ठीक है। तुम्हारी टागें अभी जवान हैं। तुम खड़ी रह सकती हो" अलेक्सेय ने कहा और खिसक कर बैठ गया।

दूस्या उसके बगल में बैठ गयी, रुमाल खोला और अपनी जेब से नमक की पुड़िया निकाली जो इस तरह बधी थी जैसे डाक्टर के यहा से कोई पाउडर बधकर आया है।

उसके सिर से लिपटे हुए शाल के कारण उसकी ऊची उठी हुई नाक और बच्चों-जैसी कौतूहल से भरी आखो के अलावा मुझे और कुछ नही दिखाई दे रहा था।

एक बर्तन और कुछ अन्य सामान निकाल कर उसने कहा. "देखो यह दूध है और यह रोटी और कुछ खूब उबले हुए अडे है। ध्यान रखना, अडो के खोल यही जमीन पर मत फेक जाना घर लेते आना।"

"भला मुझे अडे के खोल लेते आने की याद भी रहेगी।"

"और जल्दी करना, घर जल्दी आना।"

"तो तुम्हे मेरा अभाव खटकता है, क्यो?"

"मानो सोचने-विचारने के लिए मेरे पास और कुछ है ही नही। तुम बाहर होते हो तो कम से कम सिगरेट का धुआ तो घर मे नही मडराता।"

"अच्छा भाई" अलेक्सेय ने गम्भीर बनते हुए कहा।

"लेकिन आशका यही है कि मुझे यहा दो दिन और रुकना पड़ेगा।"

"क्यो?" दूस्या ने घबराकर कहा।

उसकी घबराहट इतनी आकस्मिक और हार्दिक थी कि अलेक्सेय हसे बिना न रह सका।

"तुम और तुम्हारे से मजाक," दूस्या ने हाथ नचाकर कहा। "तुम जरा भी पुरमजाक नही हो। और यह मत समझना कि तुमने मुझे डरा दिया है। मेरी बला से तुम यहा हफ्ते भर रहो। तुम सर्वेयर जी को खाने के लिए कुछ क्यो नही देते। वे भी शायद भूखे होगे।"

यह बात का रुख बदलने का प्रयत्न था लेकिन अलेक्सेय हसता ही रहा। मुझे भी इसमे मजा आया।

"क्या पाला पडा है," दूस्या ने किकर्त्तव्यविमूढ दशा में कहा। "जाहिर है, मै अब अकेले रात बिताने की आदी नही रह गयी हूं और मुझे डर लगता है। अच्छा अब मै जा रही हू।"

उसने मुझे अभिवादन किया और घर की ओर चल पडी। शीघ्र ही पहाडी के उस पार उसकी पदचाप विलीन हो गया।

"हमारी शादी हुए बहुत दिन हो गये। लगभग एक साल। लेकिन वह अभी भी एक मिनट अकेले रहना बर्दाश्त नही कर पाती।"

मै ने देखा अलेक्सेय कुछ और भी कहना चाहता था लेकिन वह निश्चय नही कर पा रहा था। मै ने भी अपनी सैंडविचे निकाली और हमने खाना शुरु कर दिया।

चीड के वन के ऊपर लाल सूरज का गोला लुढक आया था और हर चीज़ गुलाबी कुहरे में नहा गयी थी, जिसमें दूर पर खडे खम्भे और ईंट के कारख़ाने की चिमनी भी डूबी हुई थी।

"वह एक वीरागना है" यकायक अलेक्सेय ने कहा।

"मालूम तो मुझे भी ऐसा ही हुआ" मैने उसकी बात का मतलब समझे बिना ही कहा।

"नही, मेरा मतलब यह नही है कि वह बडी वीर या दुस्साहसी है। वह असली वीरागना है। समाजवादी श्रम की वीरागना यह उसका सितारा और पदक है।"

उसने इलास्टिक डोर से बधी हुई थैली खोली और मुझे "सोने का सितारा" दिया।

"मेरे पास यह हिफाजत से है। दूस्या हर रोज इसे अलग अलग जगह छिपा देती थी और फिर जब उसे

जरूरत होती थी तो मिलता ही नही था। एक बार उसने इसे एक खाली डिब्बे मे रखा, डिब्बे को टूटे ग्रामोफोन में रख दिया और ग्रामोफोन को एक बडे सदूक मे बिल्कुल तल मे रख दिया। फिर जब उसे एक सम्मेलन में भाग लेने जाना पडा तो यह उसे कही भी ढूंढे न मिल सका। उसने सारा घर उलट पुलट कर एक कर दिया। इसके बाद उसने उसे सभालकर रखने के लिए मुझे दे दिया।"

"यह उसे किस बात के लिए मिला था।"

"मोथे के लिए। तुमने कभी मोथे की खीर खायी है? नही खाई। खैर, तो इसी के लिए। इसी मोथे के लिए उसे यह मिला था। मोथा एक नाजुक पौधा होता है... न गर्मी बर्दाश्त कर सकता है और न सर्दी। ठंड मे जम जाता है और गर्मी में मुरझा जाता है। इसकी फसल कैसे बढे इसके लिए हमने तमाम दिमाग लडा मारा। साल मे तीन बार बोया, एक बार जब कि बर्फ पिघलने लगी, दूसरी बार थोडे दिनों बाद और तीसरी बार जब कि गर्मी लगभग आ गयी। कभी जल्दी बोने का नतीजा अच्छा निकलता कभी देर से... हर हालत मे मौसम पर दारोमदार था। त्योरस साल हमारे खेत को योजना के अनुसार आम पैदावार से पान्च गुना अधिक

मोथा पैदा करना था। हम सभी, यानी बोर्ड के हम सभी सदस्य... हैरान थे कि कैसे किया जायगा। दूस्या हम सब पर हसती थी। तब मै उसकी तरफ कोई खास ध्यान नही देता था। उसे महज एक नन्ही बच्ची मानता था जो हमेशा चपल दिखायी देती थी और कोम्सोमोल की बैठको में बदहवास की तरह बोलती थी। तो उसी दूस्या ने मोथा पैदा करने का ऐसा तरीका निकाला जिससे कि वह धूप बर्दाश्त करने लगा। उसने टहनीदार मोथा खोज निकाला। अब तुम्हे कैसे समझाऊ कि वह क्या होता है। लोम्बार्डी चिनार कैसा होता है। तुम्हे पता है। 'उक्रइनी रात' नामक एक तस्वीरवाला पोस्टकार्ड है और उस पर लोम्बार्डी चिनार का वृक्ष बना हुआ है। तो साधारण मोथा लोम्बार्डी चिनार जैसा लगता है। लेकिन दूस्या का टहनीदार है जैसे बलूत का पेड। उसकी टोपी पर छातानुमा पत्तिया होती हैं और उस छाते की साया में नीचे बालें लगती है।"

"यक कोई नयी किस्म है क्या?"

"बिल्कुल नही। वह उगता उसी बीज से है। हम राई या गेहूं की तरह इसकी बोआई घनी करते थे और इससे उसकी बाढ मारी जाती थी। लेकिन अगर उसको एक या डेढ फुट की दूरी पर पात मे बोया जाय तो उसमे टहनी

फूट निकलती है। और तव उसको हर मौसम में तीन वार वोने की जरूरत नही रह जाती। धूप से उसे कोई नुकसान नही होता। जव अपनी नयी योजना के वारे में हम लोग एक मीटिंग मे चर्चा कर रहे थे तो दूस्या उठ खडी हुई और उसने अपने नये तरीके के अनुसार सिर्फ एक वार जरा देर से फसल वोने की इजाजत मागी। उसने एक एकड मे इक्कीस वुशल पैदा करने का दावा किया।"

"मेरा ख्याल है तुम लोगो ने वडी खुशी के साथ उसे यह इजाजत दे दी होगी।"

"तो भाई मामला यह था। उस समय तक मैने उसके मोथे के प्रयोगो के वारे मे कुछ नही सुना था और किसी की लम्वी चौडी वात पर यकीन कर लू, यह मेरी आदत नही। ज्योही वह वात कह कर वैठी मै उठ खड़ा हुआ और उस पर वौछार करने लगा। मैने कहा हम लोग तो लोगो को यह सिखाने की कोशिश कर रहे है कि वोआई जल्दी की जाय और यह इजाजत माग रही है देर से वोआई करने की। हर आदमी जानता है कि मोथे को कितनी ही दूर दूर वोओ, तीन फुट दूर तक वोओ, तव भी वह धूप खाकर मुरझा जायेगा। आज इसने टहनीदार

मोथे की कल्पना की है कल यह छै पैरोवाली बकरी की कल्पना कर बैठेगी और हम से कहा जाता है कि इस बकवास के लिए हम उसकी पीठ ठोके।

"यकायक मेरा ध्यान गया कि लोग हस रहे है। इसलिए मैने अपनी बात और जोर से कही। भाषण देते वक्त अक्सर मै अपना हाथ सीने पर कोट के अन्दर चिपटा लेता हू ताकि उसे हिलाने डुलाने न लगू लेकिन इस बार मै भूल गया और ताकत भर जोर से हाथ हिलाने लगा। 'टहनीदार मोथा नामकी कोई चीज नही है।' मैने कहा।

"लोग और भी जोरो से हस पड़े! माजरा गडबड़ जरूर था। क्या ये लोग मुझ पर हस रहे है। मैने अपनी तरफ देखा। हर चीज ठीक थी। लेकिन वे लोग हसते ही जा रहे थे, खासतौर से बूढा स्तेपान। मैने सोचा कि उसे ठीक करना पडेगा।

"मै इतना हैरान हो गया था कि मै चुप हो गया और यह सोचता किकर्त्तव्यविमूढ खड़ा रह गया कि माजरा क्या है। पता चला कि दूस्या ने अपने घर के बगीचे में ड़ेढ फुट की दूरी मोथे के पौधे लगाकर देखा था कि नतीजा क्या होता है और इस तरह टहनीदार मोथा उसके

हाथ लग गया था। और जब मै भाषण दे रहा था तब वह उनमे से एक पौधे को गुलदस्ते मे रखकर ले आयी थी और उसको मेरे पीठ के पीछे मेज पर रख दिया था। मै कह रहा था कि टहनीदार मोथा जैसी कोई चीज नही होती और उधर वह गुलदस्ता रखा हुआ था जिसे मेरे अलावा सभी देख रहे थे। यकायक मै पीछे मुडा और तुम कल्पना भी नही कर सकते कि मेरी आखे किस तरह फट कर रह गयी।

"हमारे फार्म का अध्यक्ष इवान निकीफोरोविच हर आदमी की तरह अट्टहास कर रहा था लेकिन उसने शान्ति के लिये मेज ठोकी और कहा: 'कहे जाओ अलेक्सेय, बोले जाओ, इन लोगो की तरफ ध्यान मत दो।'

"दूस्या ने मुझे एक तरह बेवकूफ बनाया, इस पर मुझे उससे कुढ जाना चाहिए था, लेकिन न जाने क्यो बात उलटी ही हुई। उस शाम के बाद से मेरी नजरे उसी पर लगी रहती। लेकिन यह सब सुनते सुनते तुम ऊब गये होगे। वैज्ञानिक ढग से खेती करने मे तुम्हे क्यो दिलचस्पी होगी।"

मैने उसे अपनी कथा जारी रखने के लिए कहा।

"अच्छा तो। इसके पहले भी मै उसे हर रोज देखता था। कभी नाचते हुए और कभी हमारे खरबूजा उत्पादक

पवलूश्का के साथ उसकी साइकिल पर बैठ कर घूमने जाते हुए, लेकिन मुझे उन सब से कोई मतलब नही रहता था। लेकिन इसके बाद से तो मै उसके लिए पागल हो उठा। हालाकि शुरू मे मैने उसे यह महसूस न होने दिया।

"हमने उसके तरीके से बुआई शुरू की। जब कभी मुमकिन होता मै उसकी सहायता के लिए जाता। मैने उसके खेत पर सबसे बढ़िया घोड़े भिजवाये। ट्रैक्टर स्टेशन के लोगो से कह कर सबसे पहले उसके खेत पर मशीने भिजवायी आदि आदि। और मैने नाचना सीखा। शाम को जब हम लोग गाने के लिए इकट्ठे होते तो मै थोडी देर उसके साथ नाचता और फिर उसे घर छोड़ने जाता लेकिन अपने मन के भाव उस पर प्रगट नही होने दिये। पता नही उसने कैसे पता पा लिया लेकिन वह जान गई थी। जब कभी हम लोग अकेले पड जाते तो वह चौकन्नी हो उठती और एक शब्द न बोलती। मेरे साथ उसे एक बेचैनी सी महसूस होती। और फिर जब उसे मालूम ही हो गया था तो मेरे चुप रहने में ही क्या सार्थकता थी इसलिए मैने उससे साफ-साफ कह दिया जैसे कि एक कोम्सोमोल के सदस्य को कह देना चाहिये। और उसने कहा 'मै तुम से घबराती हू अलेक्सेय, तुम अपने विचारो

के पक्के हो और मैं अपने। हमारी कभी नही निभ सकती।'
और वह चली गयी। और उस इतवार को पवलूश्का फिर
अपनी साइकिल पर चढकर उसे घुमाने ले गया।

"मैंने सोचा कि मामला खत्म हो गया। अगर वह
मुझे पसद नही करती तो मैं कर ही क्या सकता हू?
मैंने नृत्य समारोहो में जाना बन्द कर दिया। शाम को मैं
घर ही बैठता और पढता। सारा समय पढता ही रहता
और मुझे ऐसा लगता कि दूस्या मेरे बगल में बैठी हुई है
और वही पुस्तक पढ रही है। एक तरह से मैं बावला
हो गया। बार बार मै शीशे में अपना मुह देखता। इतनी
जिदगी मे मैंने कभी शीशा नही देखा था लेकिन अब मैं
कभी अपनी नाक देखता, कभी आखें और कभी ओंठ और
सोचता: 'अलेक्सेय तुम अपनी बात के पक्के हो सकते हो
लेकिन बस यही तो है तुम्हारे पास।' यह बात मेरी मा
ने देख ली। 'बेटा इस तरह शीशे में तुम अपना मुह बार
बार क्यों देखते हो?' उसने पूछा। 'क्या मुहासे हो गये
है?' गाव की दूकान से मैंने एक टाई खरीदी। टाईयो का
शौक मुझे कभी नही था... गले मे क्या फासी पड़ जाती
है। लेकिन फिर भी मैंने खरीद ली। और शिक्षक के पास
भी गया तथा उस मनहूस से बाधने की कला सीखी।

आखिर मैने टाई पहनी और फिर शीशे मे देखा और मुझे लगा कि कोई खास सुधार नही हुआ मुझे याद है कि एक दिन हम कोम्सोमोल की बडी सभा मे भाग लेने शहर गये थे और जब हम लारी मे बैठे जा रहे थे तो मै हर साइकिल पर नजर दौडाता जाता था और जहा कही मुझे साइकिल दिखाई दे जाती तो मै दात पीसने लगता। साइकिल की झलक देख लेना भी मुझे बर्दाश्त नही होता। उस लडकी ने मेरी यह हालत कर दी थी।

"ग्रीष्म ऋतु आयी। मौसम गरम हो उठा। मै सुबह उठता, खिडकिया खोल डालता और हाथ बाहर फैला देता। मुझे ऐसा लगता मानो वह हाथ मैने गरम पानी में डाल दिया हो। दूस्या का मोथा लहलहाता हुआ दिखाई देता। और जब वह फूल उठा तो सारा खेत दूधिया नजर आता। चौंधिया देने वाली सफेदी। और तितलिया मडराती हुई। देखकर दिल बाग बाग हो जाता।

"एक दिन मै वहा उस समय गया जब दूस्या और उसकी साथी खेत मे घास-पास निकाल रही थी।

"'तुम यहा रोज रोज किसलिए आते हो?' दूस्या ने पूछा।

"आस्तीनें समेटे दोनो हाथो में घास-पास लिये वह मेरे सामने खडी थी और मुझको और मेरी टाई को देख रही थी। मैने देखा वह मुझ पर हस रही है। 'अच्छा तो यह बात है' मैने सोचा। 'जब अकेले में मिलती है तो एक बोल नही फूटता और दूसरो के सामने मजाक उडाती है। अच्छी बात है। मै बता दूगा कि मै इस खेत पर रोज रोज क्यो आता हू। कोई जान जाय इसकी मुझे चिन्ता नही है।' और मैने उसे अपनी बाहो में खीच लिया और चूम लिया। वह मुझसे जूझ उठी। उसने अपना सिर फेर लिया लेकिन मेरी गिरफ्त से निकलने में तो आदमी को भी लाले पड जाते।

"लडकिया ठीक मारती और हसती रही और मै उसे चूमता ही गया। जब मैने देखा कि वह रो ही देगी तो मैने उसे छोड दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था, बाल बिखर गये थे। उसकी रूमाल पीठ पर गले से झूल रही थी। 'देखो तुमने कितने पौधे कुचल डाले है। तुमने कितना नुकसान किया है' वह बोली। मैने कहा· 'कोई बात नही। जितना नुकसान किया है उससे ज्यादा फायदा भी किया है।' सचमुच मैने न जाने कितनी बार उनके काम में मदद दी है। हा, हा! बडी मदद की है!

ज्योही तुमने देखा कि हमारी फसल पिछले सब रिकार्ड तोड देगी तो अब तुम हमारी सहायता करने की डीग हाक रहे हो। लेकिन भूल गये मीटिंग मे तुमने क्या कहा था?' मैने उसका जवाब दिया होता लेकिन उसने मुझे बोलने ही न दिया। 'हमें तुम्हारी मदद की उतनी ही जरूरत थी जितनी कि मछली को छाते की होती है। हम तुम्हारे बिना भी किसी तरह काम चला लेगे। हमारी फसल देखते ही तुम हमारी खुशामद करने आ गये हो।' पता नही यह बाते वह मुझे चोट पहुचाने के लिए सुना रही थी या सिर्फ गुस्से में कह रही थी, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उसने मेरे मुह पर तमाचा मारा है। 'जबान सभाल कर बोलो दूस्या। वरना मै तुम्हारे पास भी न फटकूगा।' मैने कहा। 'चिन्ता न करो। मै तुम्हे अपने खेत पर अब एक कदम भी न रखने दूगी। दूसरों के काम का क्षेत्र खुद लेना चाहते हो!' यह और भी बुरी चोट थी। मेरी ज़बान से ऐसी कोई बात न निकल जाय कि जिस पर बाद मे मुझे पछतावा हो इसलिये मैने अपने ओठ इतने जोर से भीच लिए कि उनसे खून बह निकला। मैने उसका कघा उठाया और उसको हाथ में रखकर चल दिया। 'अब सचमुच सारा किस्सा खत्म हो गया और अब

मै इन लोगो की सहायता के लिए कभी कुछ न करूगा।'
मैने सोचा।

"किस्मत की बात कि उसी दिन लडकियो को पता चला कि मोथे पर पराग छिडकने के लिए उनके पास काफी मधुमक्खिया नही है और वे नदी के उस पार "विजय फार्म" से कुछ छत्ते मागने के लिए गयी। विजय फार्म वालो ने छत्ते देने से इन्कार कर दिया। हमारे अध्यक्ष खुद मागने गये थे, पवलून्का अपनी साइकिल पर चढकर गया था और दूस्या भी गयी थी, लेकिन फल कुछ न निकला। मैने देखा कि मामला काफी सगीन है। अध्यक्ष बक-झक रहे थे और दूस्या रो रही थी। लेकिन मै खुद कैसे जा सकता था। दूस्या समझती कि मै उसकी निगाहो मे फिर ऊचा उठने की कोशिश कर रहा हू। लेकिन दूसरे दिन मैने स्वय जाने का निश्चय कर ही लिया। मैने एक छोटी लारी ली और शाम को निकल गया। मेरे एक चाचा फ्योदोर निकीतिच मधुमक्खिया पालते है। उनके पास बारह छत्ते है। मै उनको रात के ग्यारह बजे तक यह समझाता-बुझाता रहा कि हम को छत्ते उधार देने मे खुद उनका लाभ है। मोथे का शहद सब से ज्यादा मीठा होता है। कभी वे सहमत हो जाते और कभी फिर मुकर जाते और

उन की पत्नी पेलगेया स्तिपानोवना तो बस एकदम खिलाफ मोर्चा जमाये हुए थी। अत में वे सोने चली गयी और मैने अपने चाचा को फुसला ही लिया। ड्राइवर ने और मैने मिलकर छत्तो को लारी मे लादा उन्हे लाये और उसी रात छत्तो को खेत मे रख भी दिया। मैने ड्राइवर को चेतावनी दी कि इन छत्तो को लाने वाला मै हू, यह बात वह किसी को भी न बताये खासतौर से दूस्या को तो बिल्कुल न बतावे। इस के बाद मै घर आया। मै इतना थक गया था कि कपड़े उतारे बिना ही चारपाई पर लेट गया और सो गया। मै कुछ ही देर सो पाया था कि कोई मुझे बुलाने आ पहुचा। मै आखे मलकर उठ बैठा। कमरे मे रोशनी थी। मा चली गयी थी लेकिन दूस्या मेरी चारपाई के बगल में खडी थी। और जिस तरह देख रही थी उस तरह उसने आज तक मेरी ओर नही देखा था।

"उसने कहा: 'अलेक्सेय ये मधुमक्खिया कौन लाया था?'

"मैने करवट लेते हुए कहा 'मुझे भला क्या मालूम।'

"वह बोली. 'अलेक्सेय नाराज मत हो। पेलगेया स्तिपानोवना आयी है'।

"'क्यो?'

"'अपने छत्ते वापिस लेने, वह गुस्से से उफान रही है।'

"'उसे मत ले जाने दो। वे उसके नही है, वे फ्योदोर निकीतिच के है।'

"'फ्योदोर निकीतिच भी आये है। वह भी खेत मे है।'

"'तो?'

"'तो क्या, वह उन्हे लारी मे लाद रहा है और वह गुस्से मे उफान रही है।'

"'मेरा ख्याल है कि वसीलि इवानोविच इन छत्तो को लाया होगा। उसे पकड लाओ और देखो कि वह कुछ कर सकता है या नही।'

"'वह कुछ नही कर सकता। उसने कोशिश कर देखी।'

"मै चारपाई से उछल पडनेवाला ही था कि दूस्या भुकी और अपने ठडे कपोलो को मेरे कपोलों पर रख दिया। और उसने मेरे कानो में फुसफुसाया. 'तुम बहुत शानदार व्यक्ति हो अलेक्सेय और बहुत ही सुन्दर, लेकिन इतने लोगो के सामने तुम्हे वह सब नही करना चाहिए

था।' और फिर वह द्वार पर मा से टकराते हुए वाहर भाग गयी।

"मैं चारपाई पर उठ कर बैठ गया। 'कम से कम आज उसे मेरी शक्ल अच्छी लगी।' मैंने सोचा। मा दूध लेकर आयी और मेरी तरफ यों देखने लगी मानो उसनें कोई प्रेत देखा हो। 'अलेक्सेय तुझे क्या हो गया है?' मा ने कहा। 'क्यो,' मैनें पूछा। 'जरा शीशा देखो,' मा ने कहा। मैंने शीशा देखा और अवाक रह गया। ऐसा गोरखधधा भला तुमने क्या देखा होगा। मधुमक्खियो ने जहा तहा काट आया था। मेरा होठ सूज आया था स्याही जैसा काला काला। दूस्या ने यह सब देखकर ही भाप लिया होगा कि मधुमक्खिया कौन लाया था। लेकिन वाह री चालाक लोमडी। एक शब्द भी नही कहा। मैंने मुह धोया और खेत पर चला गया। फ्योदोर निकीतिच थोडी देर पहले ही अपनी मधुमक्खिया लेकर चले गये थे और लडकिया वहा किंकर्त्तव्यविमूढ होकर सोच रही थी कि अब क्या होगा। उन्होने तदवीर निकाली—मोथे पर कृत्रिम तरीके से पराग फैलाने का फैसला किया। उन्होने चीथडो को एक डोर बाधकर फूलो के ऊपर हलके हलके फेरते हुए खीचा। इसका नतीजा ऐसा अच्छा हुआ मानो कि मधुमक्खियो ने

ही किया हो। लेकिन वैज्ञानिक खेती की इन सब बातों से तुम ऊब रहे होगे।"

अलेक्सेय चुप हो गया और अडे के खोल बीन कर उन्हे कागज के टुकडे में बाधने लगा। इस समय तक सूरज काफी चढ आया था। ईंट बनाने के कारखाने की चिमनी छिली हुई गाजर की तरह चमकती दिखाई दे रही थी और दूर तार के खम्भे आसमान पर कढे हुए लग रहे थे। नदी मे बाढ आ रही थी।

"लो कार आ रही है। यह वास्का है" अलेक्सेय ने कहा। कार की आवाज मुझे अभी तक सुनायी नही दी थी। लेकिन फिर भी मै सामान समेटने लगा। और शीघ्र ही कार नजर आ गयी। दुर्भाग्य से ड्राइवर के बगल मे आगे की सीट पर कोई पहले से ही बैठा था इसलिये मैने अपना साज सामान पीछे पटका और अलेक्सेय को सलाम कह कर पीछे चढ गया। बसत के खेतो और वनो से गुजरते हुए जब हम जा रहे थे तो बरबस मुझे यह ख्याल आया कि हमारे लोगो में कैसी नयी विशेषतायें विकसित हो रही है...

१९४९

लेना

१

उस दिन बडे भोर ही मेद्वेदित्सा नदी की बर्फ़ फटने लगी।

"ज़रा उधर तो देखो," केवट अनीसिम ने स्टवो नामधारी दस बरस के लडके से कहा, "बरस के इन दिनो में तो हम लोग अपनी स्लेज गाडियों से बर्फ़ पार

करते थे, लेकिन इस बरस नदी पर बर्फ अभी से टूटने लगी।"

ये लोग नदी के कगार से कोई पाच कदम दूर गाव के आखिरी घर के दरवाजे के सामने एक बेच पर बैठे हुए थे। उनके पास से ही बर्फ के बडे-बडे टुकडे एक दूसरे को ठेलते, किटकिटाते, गडगडाते और उछलते-कूदते, गदले सफेद झुण्ड में बडे चले जा रहे थे।

स्टबी बोला· "वेलीकि लूकि में जहाँ का मै रहने वाला हू, बर्फ इन्ही दिनो फटती है।"

"सो तो ठीक है। वहा तुम्हारे यहाँ मैदानी जमीन है, लेकिन यहा हम चोटी पर रहते है। हमारे यहा से नदिया चारो दिशाओ की तरफ बहती है। नन्हे-मुन्ने, उस तरफ वोल्गा है। इस तरफ द्विना है। मै तुम्हारे वेलीकि लूकि भी हो आया हू। तुम्हारे यहा तो बर्फ भी नही गिरती।"

"वाह रे! वाह! बिल्कुल नही गिरती," स्टबी बोला।

"अरे उसे भी क्या बर्फ कहते है कि एक गली मे कही जम गयी तो दूसरी मे गलने लगी। वहा तो लोग जाडे भर गाडियो से सफर कर लेते है। और यहा सात फुट वर्फ गिरती है। घरो के दरवाजे खोलना भी दुश्वार होता है।"

"ठीक है, जहा से मै आया हू, वह जग गर्म जगह जगह है।

"गर्म जगह हुई तो क्या हुआ। यहां भी कोई ज्यादा ठंड नही होती। और यहा आनेवालो की तादाद घटती ही जाती है। सो क्यो? इसलिये कि ऐसी जगह कोई दूसरी नही है। झीले, जगल हर तरह के जानवर..."

"देखो बाबा," स्टवी ने कहा, "वहा कोई खड़ा हुआ है और चिल्ला रहा है। हमें पुकार रहा है।"

अनीसिम ने हथेली से आखो पर छाया की और नज़रें दूर पर गड़ा दी।

उस पार पानी के किनारे पर एक आदमी खड़ा था और अपनी टोपी हिला रहा था।

"क्या पागल है," अनीसिम बोला। "हवा उसके खिलाफ है. फिर यहा सब तरह के जानवर है। मसलन जगली बकरे। बड़े दिन के पहले, अगर तुम बकरा मारो और उसे पकाओ, और बकरे के एक टुकड़े को भेड के गोश्त के पास रखो तो दोनो में फर्क बताना मुश्किल होगा।"

"वह अभी भी चिल्ला रहा है," स्टवी ने कहा। "वह अभी भी वही खड़ा है।"

"या ऊदबिलाव को ही लो। कभी-कभी झील के

किनारे तुम्हें घास सी तैरती नज़र आयगी। वही तैरता हुआ ऊदबिलाव मिल जायगा।"

"यह ऊदबिलाव कैसा होता है?"

"उसके खाल के बदले में तुम्हे ढेर भर रूपये, आटा, शक्कर या कपडा मिल सकता है। वह इस तरह की होती है।"

नदी को देखने के लिए सामूहिक फार्म के किसान आ रहे थे।

उनमें ग्रीशा था जो पहले छापामार-योद्धा था। भले स्वभाव का आदमी है, बस जरा बिगडैल है। स्टबी की मा दाशा भी आयी थी जो इतनी लजीली है कि ज़रा सी बात पर शर्मा जाती है। चार साल पहले वह अपने तीन बच्चो के साथ वेलीकि लूकि के पास के किसी स्थान से यहा आयी थी। उन्होंने अब अपना घर यही बना लिया है, यहा के आदी भी हो गये है और अब हमेशा के लिये यही टिक गये है। और वह दुबली-पतली महिला, ब्रिगेड लीडर मरीया तिखोनोवना आयी — भौहो तक अपने को शाल में लपेटे हुए।

"उधर कौन चिल्ला रहा है," मरीया तिखोनोवना ने बडे महत्वपूर्ण व्यक्ति की तरह सभी मौजूद लोगो की तरफ मुखातिब होकर पूछा।

"कौन जाने," अनीसिम ने जवाब दिया। "बंदर की तरह कभी इस और कभी उस पैर पर कूदता फिरता है।"

"वह कृषि विशेषज्ञ है जो जिला दफ्तर से आया है," ग्रीशा ने कहा। "वह या तो नये कोटे तय करने आया होगा या लेना के सामने शादी का प्रस्ताव रखने।"

कोई आदमी सामूहिक फार्म के अध्यक्ष पावेल किरीलो-विच को बुलाने जा पहुचा। शीघ्र ही वह सडक के मोड पर प्रगट हो गया। वह धूप सा उज्ज्वल कोट पहने था, जिस पर कधे की पट्टी और मेडल लगाने की जगह पर हरे धब्बे पडे हुए थे। वह अभी भी जवान था लेकिन छितरी दाढी के कारण उसके चेहरे पर बुजुर्गियत का भाव आ गया था। अपनी शक्ल को जरा रौबदार बनाने के लिए हाल में उसने दाढी बढाली थी, क्योकि अपने मातहत लडकियो को सभालना उसके लिए बडी मुसीबत हो रही थी। वे उसकी एक न सुनती थी। हमेशा बेवकूफ बनाती थी और किसी भी काम को गम्भीरतापूर्वक करने से इन्कार कर देती थी।

उसने दूर से ही कहा "तुम लोगो ने मुझे जरा जल्दी क्यो नही बुलाया। तुम लोगो की पल्टन की पल्टन यहा खडी है, लेकिन किसी से न हुआ कि आकर मुझे बता जाय। और

मै उसका तीन दिन से इतजार कर रहा हूं। वह वसत की बोआई के लिए आया है।"

अध्यक्ष नदी के किनारे तक गया वत्तख की तरह गर्दन फैलायी और पूरा जोर लगाकर चिल्लाया

"प्योत्र मिखा आ .आ...लोविच! हल्लो! जोर से बोलो।"

उसने एक हाथ अपने कान पर रखा और गले पर जोर लगाया, लेकिन तभी चौडे मुह, दवी नाक, लडके जैसी शक्ल की लेना नाम की लडकी आई और ग्रीशा उसे किनारे से नीचे ढकेलने की कोशिश करने लगा। वह इतने जोर से चीखी कि गाव के दूसरे छोर पर उसकी आवाज सुनी जा सकती थी।

"चुप रहो! नही रहोगी?" अध्यक्ष उबल पडा। "लेना यह चीखना-चिल्लाना बद करो वरना मै उठा कर फेक दूगा।"

"अच्छा जी, यह बात?" लेना ने कहा।

"यह बेवकूफी बन्द करो और कामरेड देमेन्तियेव क्या कह रहे है, उसे सुनो। जब नही होना चाहिये तब तो तुम्हारे कान जरा ज्यादा तेज हो जाते है। तुम्हे जो बात नही सुननी चाहिए, वही अक्सर सुन लेती हो।"

"अच्छा जी, यह बात?" लेना ने फिर कहा। बजुर्गों ने सलाह दी कि कृषि विशेषज्ञ के लिए गोरोदिश्च की तरफ से गाडी भेज दी जाय। पास मील दूर गोरोदिश्च मे नदी पर पुल है। ग्रीशा ने बताया कि बर्फ गलने के कारण पुल उतार दिया गया। दूसरे ने कहा कि अभी नही उतारा गया।

"वहस बद करो," अध्यक्ष चिल्लाये, "लेना सुनो तो, वह क्या कह रहे है।"

हर व्यक्ति खामोश हो गया। लेना ने ओठ भीच लिये और कान लगा दिये।

"तो वह क्या कह रहे है," अध्यक्ष ने पूछा।

"समझ में नही आ रहा है," लेना ने कहा "लगता है डाट पिला रहे है।"

"डाट? जरा फिर तो सुनो।"

"एक मिनट रुको। हा डाट ही है। बहुत जोरदार।"

अध्यक्ष फौरन सतर्क हो गया। लेना ने उसकी तरफ देखा और फिर हसी मे लोटपोट हो गयी।

"तो यह बात है! तुम मेरी हसी उडा रही हो!" अध्यक्ष तन गया। "यहा से दूर भागो! मेरा मजाक बनाने की जुरअत कैसे करती है!"

"तुम मुझ से क्या चाहते हो? क्या तुम्हारा ख्याल है कि मै रेडियो सैट हू कि बस दूर की बात भी सुन लू?" लेना ने कहा।"आगे चल कर तुम हुकुम दोगे कि बताओ, गोरोदेत्स मे लोग क्या बाते कर रहे है?"

अध्यक्ष महोदय की प्रेमिका गोरोदेत्स मे रहती है इसलिए सभी लोगो ने खीसे निपोर दी।

"तुम तो शैतान हो" अध्यक्ष ने अरुचि से थूकते हुए कहा। "तुम्हारे भेजे मे इतनी सी भी अक्ल नही है।" और वह गुस्से में भरकर किनारे पर इधर उधर टहलने लगा।"और देमेन्तियेव अभी भी गला फाडकर चिल्ला रहा है। अगर जरूरी बात है, तो वह खुद क्यो नही यहा आ जाता। बर्फ इतनी मोटी तो है ही, कि उसे सभाल सके।"

"अगर तुम इतने बहादुर हो तो खुद ही उधर क्यो नही चले जाते," लेना ने ज़रा हसकर कहा।

"मै चला भी जाऊगा। तुम क्या समझती हो कि मै हवाई जहाज का इतजार करूगा?"

"ऐसा न कर बैठना," मरीया तिखोनोवना ने कहा।

"फिक्र न करो वह यह नही करेगा," लेना ने कहा। "वह सिर्फ बहादुरी की बात कर रहा है। हमे डराना चाहता है"

अध्यक्ष ने उसकी तरफ नजर डाली। उसके चेहरे की मास-पेशिया चल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ कहने जा रहा है लेकिन तभी विना एक शब्द कहे वह एडियो के वल पर किनारे से उतरा, नाव के पास वर्फ में गडे हुए डडे को उखाडा, आखो से आरपार की दूरी नापी और एक तैरती हुई वर्फ की सिल पर कूद पडा।

"हमेशा यही गडवडी होती है," अनीसिम ने अपने आप ईश्वर वन्दना का चिन्ह वनाते हुए कहा। "जव तक लेना नही आयी थी हर चीज शान्त और खामोश थी लेकिन जिस घडी यह आ गयी, सारा मामला उलट-पुलट हो गया। और यह अपने को कोम्सोमोल का सदस्य कहती है!"

"उधर जाने के लिये मै ने उसे मजवूर नही किया," लेना ने घवराकर कहा, "वह खुद जाना चाहता था। मै ने उसे मजवूर नही किया।"

वितृष्णा से अनीसिम ने मुह फेर लिया और फिर उधर देखने लगा।

नर्म वर्फ के ऊपर पावेल किरीलोविच उस डडे को भाले की तरह पकडे हुए चला जा रहा था। ऊपर किनारे पर खडे लोगो को वह इस तरह दिखायी दे रहा था

मानो कोई अधेरे मे राह टटोलता एक तरफ से दूसरी तरफ ठोकरे खाता चला जा रहा हो। बर्फ के टुकडे किटकिटाते, चटखते, एक दूसरे पर चढने और गिरने के साथ सफेद फेन उछालते हुए बह रहे थे।

जब पावेल किरीलोविच बीच नदी मे पहुचा तो जरा तेज चलने लगा। और यह आवश्यक भी था। किश्ती से कोई पाच सौ फुट की दूरी पर भोज पत्र के झुरमुटो के पास नदी यकायक चौडी हो गयी थी। बर्फ के टुकडो को गुजाइश ज्यादा मिल गयी थी और पेडो की नगी टहनियो के बीच साफ पानी के काले चकते झलक रहे थे। पावेल किरीलोविच इसी चौडे स्थल की तरफ बहा जा रहा था, और इतनी तेजी से कि यद्यपि उस किनारे पर कृषि विशेषज्ञ गिरता पडता हुआ बराबर दौड रहा था, मगर पावेल किरीलोविच एक चौडी और गदली बर्फ की सिल पर चढकर अपना रास्ता बना रहा था। इस बर्फ खड के बीच मे एक छेद था जो कि उसके दूर से बहकर आने का चिन्ह था। स्पष्ट था कि यह बर्फ खंड गोरोदेत्स से तमाम रास्ता तय करके यहा तक आ पहुचा था। अध्यक्ष गिर पडा, फिर उठ बैठा और उस बर्फ खड पर एक छोर से दूसरे छोर तक लगडाते हुए चलने लगा। जाहिर

है, वह छलाग मारने का प्रयत्न कर रहा था। इस वर्फ खड और उसके आगे के वर्फ खड के वीच में तेरह फुट नही, तो कम से कम दस फुट का फासला था।

"वह तुम्हारे सामने ही है।", ग्रीशा चिल्लाया।

"मुह वन्द रखो," मरीया तिखोनोवना ने मुडकर देखे विना ही कहा।

अध्यक्ष को नदी की धारा भोजपत्र के झुरमुटो तक वहा ले गयी और उसको देख पाना अनीसिम के लिए और ज्यादा मुश्किल हो गया। वुड्ढे की आखे कमजोर थी ही, तिस पर सर्द हवा आसू ढरका कर अधा वना रही थी।

आखो को विश्राम देने के लिए अनीमिम ने उन्हे हथेली से ढक लिया। सव ठीक हो जायगा। अव वह किनारा कोई सौ फुट दूर ही तो रह गया है और धारा भी धीमी हो गयी है। पावेल किरीलोविच ने तेज धार पार कर ही ली है, इसको भी पार कर लेगा।

यकायक दाशा ने चीख मारी।

अनीसिम ने अपना हाथ झटक दिया। ग्रीशा और दो और लडके कगार से उतर कर भागे। पावेल किरीलोविच नदी पर कही भी नजर नही आ रहा था। छेदवाला वर्फ़

खड अभी भी दिखायी दे रहा था। मगर उस पर कोई नही था। किसी और वर्फ खड पर भी कोई नही दिखलायी दे रहा था। कुछ दिखाई दे रहा था तो सिर्फ उस किनारे पर इधर उधर डोलती हुई कृपि विशेषज्ञ की अकेली छाया।

"मेरी आखे तो मुझे धोखा देने लगी है," अनीसिम ने वच्चे की तरह कहा, मानो वह सचाई जानने से घवरा रहा है। "लेना, वह कहा है?"

"मै ने तो हसी मे वात कह दी थी," लेना वोली। वह डर के मारे इतनी सफेद पड गयी थी कि उसकी नाक पर तिल और भी स्याह लगने लगा था।

किसी ने उसकी तरफ नही देखा। हर आदमी ने उसकी तरफ से मुह फेर लिया। वह एक अजनवी की भाति अकेली थी। अनीसिम ने ठडी सास ली और एक कदम पीछे हट गया।

यकायक लोग चिल्लाये "अरे वह उधर है, वह उधर तैर रहा है।"

अनीसिम ने नदी की तरफ नजरें गडा दी। छेदवाले वर्फ खड के पास पानी मे कोई काली सी चीज नजर आ रही थी। सिर होगा। हा सिर ही है। पावेल किरीलोविच का सिर। वह अगले वर्फ खड तक तैर कर गया। उसके

किनारे पर हाथ रखा और कुहनी मोड़कर उस पर जोर देते हुए वह लटक गया। और मुड़कर पीछे देखने लगा। जाहिर है, उसे बहकर आने वाले दूसरे बर्फ खंडों से अपने कुचल जाने का डर था। अरे पावेल किरीलोविच तुम क्यों घबरा रहे हो। बर्फ खड तुम्हें कुचल नहीं सकते, क्योंकि पानी में उनका कोई वजन नही होता।

उस बर्फ खड पर चढने की कई कोशिशें विफल हो जाने के बाद अध्यक्ष किनारा पकड़े हुए कुछ देर बिना हिलेडुले पानी मे लटके रहे।

अनीसिम ने कहा "थक गया है।"

यकायक एक तख्ता लेकर कृषि विशेषज्ञ दौड़ पड़ा। अनीसिम को वह तभी दिखायी दिया जब उस छेदवाले बर्फ खड के पास गया। कृषि विशेषज्ञ ने तख्ता फेंका, अध्यक्ष के पास तक पहुचा, उसके हाथ पकडे और पानी से बाहर खीच लिया। और फिर वे वही खड़े होकर देर तक बाते करते रहे मानो वे दफ्तर मे हो। "ऐसी खुशी में वे सिगरेट क्यो नही पीते?" अनीसिम ने कहा। जब उन्होने बातचीत खत्म कर ली तो कृषि विशेषज्ञ और अध्यक्ष ने बर्फ खडो के बीच खुली जगहो के ऊपर तख्ता रखकर नदी पार करना शुरू किया।

किनारे पर आकर पावेल किरीलोविच जगल के धुधले ऐसे धब्बे की तरफ दौड पडा, जो सिगरेट के धुए की तरह धुधला नीला दिखायी दे रहा था। कृषि विशेषज्ञ थकित भाव से उसके पीछे चल दिया।

"वह वन रक्षक की झोपडी की तरफ गये है," अनीसिम ने कहा।

"अरी लोमडी! मरीया तिखोनोवना ने लेना की तरफ मुडकर सिर हिलाते हुए कहा। "तुम्हे अपने ऊपर शर्म नही आती। तूने एक भले आदमी को आज मार ही डाला होता। तू तो लोमडी बस, है, लोमडी। ऊपर से तू हसने की हिम्मत कर रही है?"

"तुम नाराज क्यो होती हो," लेना ने मुडकर कहा। उसकी आखे चमक रही थी," वह आखिर पहुच तो गया। कोई बडा नुकसान नही हुआ। वह डूब तो नही गया।"

"डूबा नही, वाह, क्या कहना है। और क्यो, इन दिनो में तुम्हे नदी मे घुसना पडे तो कोई खास नुकसान थोडे ही होगा।"

"उसको अब तबीयत भर वोदका पीना चाहिए," ग्रीशा बोल उठा। वह अभी भागकर लौटा था।

"वन रक्षिका तो है महिला। उसके पास क्या वोदका होगी।"

"वह! वह तो वोदका मे ऐसे चिपटती है जैसे गृप वत्ती मे भूत प्रेत।"

"तू इस बात पर खुश कैसे हो रही है, लेना?" मरीया तिखोनोवना ने अपनी बात जारी रखी। "तू हमेशा गाव को सिर पर उठाये रहती है। अब जरूरी यह है कि तेरी शादी कर दी जाय और घर बसा दिया जाय।"

"स्टब्री को जरा जवान हो जाने दो। मै उससे शादी कर लूगी," और सिर मटकाकर लेना घर की तरफ भागी।

"भरे जाडे मे यह लडकी अपने आदमी को नदी मे फेंक देगी।" अनीसिम ने कहा।

लेना को गये देर नही हुई थी। दस ही मिनट मे वह एक वोतल लेकर लौट आयी। पीछे पीछे उसकी मा भी अपने शाल के भीतर वाल घुसेडती हुई आ पहुची। वह दुवली-पतली, मगर सुन्दर औरत थी।

"अब किसको वर्फ पार करने भेजना चाहती हो," मरीया तिखोनोवना ने पूछा।

"इस बार मै खुद जाऊगी," और यह कह कर लेना कगार से उतर कर भागी।

"यह क्या है?" मरीया तिखोनोवना चिल्लायी और लहगा सभाले हुए लेना के पीछे दौडी। "इसी घडी लौटो। सुनती है?"

"छोड दो, तिखोनोवना," निराशा के भाव से हाथ हिलाकर लेना की मा ने आवाज लगायी। "तुम तो उसे जानती ही हो।"

लेना एक वर्फ खड पर चढ गयी।

"अरी मूर्ख, अपने साथ बास तो लेती जा," मरीया तिखोनोवना ने कगार पर इधर से उधर चक्कर लगाते हुए कहा। लेकिन लेना बर्फ खडो को पार करती बढी ही जा रही थी।

यह याद करके कि अध्यक्ष को धारा किस तरह बहा ले गयी थी उसने धारा की उल्टी दिशा मे तिरछे-तिरछे वढना शुरू किया। उसने दूसरे किनारे पर पडे हुए एक लाल पत्थर को ध्यान मे रख लिया और सोच लिया कि अगर वह उस पत्थर पर नजर जमाये वढती जायगी तो वह ठीक सामने पहुच जायगी। लेकिन अपने पैरो तले बर्फ की डगमगाहट से वह समझ गयी कि उस पत्थर पर नजर गडाये रहने का मौका नही मिलेगा।

उसके चारो तरफ हर चीज़ उठ गिर रही थी और

उस किनारे पर बने हुए वे मकान, दूर की नीली पहाड़िया और वह आसमान जिसमे दूर, कही दूर बादल छाये हुए थे। उसका सिर घूमने लगा।

वह सोचने लगी "मुझे इतनी जिद न करना चाहिए थी; अपने साथ एक बास तो जरूर लाना चाहिए था।"

"तिरछे बढकर पार करना उसके लिए असम्भव हो गया था, क्योकि बार बार उसके सामने खुले पानी के बड़े-बड़े चकते आ जाते थे। हर अगले बर्फ खड पर पहुचने के लिए उसको पाच छै दूसरे बर्फ खडो पर चक्कर काटकर पहुचना पडता था। और इसलिये शुरू से ही वह कभी पीछे घूमती और कभी आगे बढती और इस तरह अपने चारो तरफ देखने के लिए उसे मौका ही नही मिलता था। आसपास की चीजे बराबर ओझल होती रही। कभी नदी किनारा पीछे होता, तो कभी बगल मे, और शायद वहा खडी हुई औरते उसे घूर रही थी और यह सोचकर कि लेना सीधी दिशा मे क्यो नही बढती, वे हैरान हो रही थी—उसी तरह जैसे कि वे पावेल किरीलोविच के बारे मे परेशान थी।

लेना सावधानी से बढी। उन बूटो में फिसलने से बचना कोई आसान नही था। बर्फ खड चिकने थे और हवाओ ने उनको बुहार कर स्वच्छ कर दिया था। भूरी-

ी, हरी बर्फ के अन्दर जमे हुए वुलबुले नजर आ रहे थे और जहा वर्फ मे सीधी दरारे पडी थी वहा पतली-पतली, सफेद रेखाये दिखाई दे रही थी।

उसने लगभग दो तिहाई रास्ता पार कर लिया तो यकायक करीब तीन सौ फुट चौडे खुले पानी ने उसका रास्ता रोक दिया। कुछ मिनट पहले यहा इतना चौडा मुह नही था। अब क्या किया जाय। कुछ और बर्फ खडो के यहा आकर जमा होने का इतजार किया जाय या लौट चला जाय। वापिस कैसे जाय? ग्रीशा उस पर हसेगा। और फिर किनारे तक पहुचने के पहले अगर कोई धारा उसे खुले पानी की तरह वहा ले गयी तो वह और उसकी वोदका की बोतल, दोनो ही डूबते उठते ईलमेन झील मे पहुच जायगी।

वह हसी। जब डर लगता तो लेना हस दिया करती। एक क्षण सोचकर वह धारा के खिलाफ दिशा मे दौड पडी। खुले पानी के छोर पर दूर जाकर उसे एक बडा बर्फ खड दिखायी दिया . इस पर एक बास गडा हुआ था। जिसके छोर पर कुछ मूसा बधा हुआ था। वह दौड कर इस वर्फ खड के सामने पहुच गयी। यह बडा भारी वर्फ खड था। इतना कि अगर वह उस पर पहुच जाय तो

फिर दौडकर वह दूसरे किनारे पर ही पहुच जायगी। लेकिन दौड से शुरू करके उसने पूरी ताकत लगाकर छलाग मारी और बोतल को टूटने से बचाने के लिए कुहनी के बल उस बर्फ खड पर आ गिरी। वह उठ बैठी तो पहले उसके दिमाग मे वह बास उखाड लेने का ख्याल आया लेकिन अब उसकी जरूरत ही क्या थी। उसके दोस्त यह भी देख ले कि वह बास का सहारा लिये बिना भी बर्फ पार कर सकती है। अध्यक्ष को पानी मे डुबकी लगानी पडी तो इसके लिए वे खुद ही दोषी है। उन्हे तेज चलना चाहिए था। वे कोई हवाखोरी के लिए नही निकले थे।

जब वह किनारे के पास पहुची तो उसने छलाग मारी जिससे उसके जूतो मे पानी भर गया। और फिर पीछे कोई खास नजर डाले बिना ही वह जगल की तरफ दौड पडी।

२

पेडो के तनो के बीच से वन रक्षिका नतालिया की छोटी सी दो खिडकीवाली झोपडी नजर आ रही थी। गीली झाडियो से बचाने के लिए लेना ने अपनी पूरी स्कर्ट को पैरो से ऊपर समेट लिया और सीधी दरवाजे की

तरफ बढी। झोपडी के चारो ओर गलती हुई बर्फ की बूदो की आनन्दपूर्ण टप-टप गूज रही थी। खिडकी के शीशो पर उस चिथडे के निशान दिखायी दे रहे थे जिससे उन्हे पोछा गया होगा। पावेल किरीलोविच का सिकुडा हुआ जाघिया रेलिग पर धूप मे सूख रहा था।

घुसते ही लेना ने नतालिया को हसते-हसते बल खाते हुए और अपने स्कर्ट के छोर से आखे पोछते हुए पाया।

"क्या अध्यक्ष यहा है?" लेना ने पूछा।

"हा," नतालिया ने लाल-लाल चौडा चेहरा उठा कर कहा। "अरे खैर तो है," वह अवाक् रह गयी।

"क्या बात है?"

"मेरी हसी रोके नही रुकती और इससे इन्हे बुरा लगता है। और जितना यह मुह बिगाडते है उतना ही इन्हे देखकर और ज्यादा हसी छूटती है। यह कहते हैं मुझे पाजामा दो! अब तुम्ही बताओ मै कहा से लाऊ।"

"माजरा क्या है," इसी हैरानी को लेकर लेना अन्दर गयी।

पावेल किरीलोविच गर्म चूल्हे के नजदीक बैठा हुआ था। वह नतालिया का आधी बाह का ब्लाउज और धारीदार हरा स्कर्ट पहने हुए था।

"नतालिया कहा है?" उसने अपने नीले नीले पैर को आग की तरफ उठाये हुए ही चिड़चिड़े स्वर मे पूछा।

"दरवाजे पर," लेना ने कहा।

"वह इतनी लोटपोट क्यो हो रही है? अगर तुमने भी ठी . ठी . . ठी . ठी . . . ठी . . . की तो उठाकर बाहर फेंक दूगा।"

"मै क्यो ठी ठी करूंगी। मै तुम्हारे लिए कुछ दवा लायी हू। मरीया तिखोनोवना ने कहा है कि मै तुम्हारे पैरो पर उसकी मालिश कर दू।"

"मालिश कर दू," अध्यक्ष ने नाक सुडकी। "अच्छा ला, मुझे दे।"

कृषि-विशेषज्ञ प्योत्र मिखाइलोविच हलकी नीली आखोवाला पच्चीस वर्षीय युवक मेज के सामने बैठा था। उसने एक प्याले से शीशा टिका रखा था और दाढी बना रहा था। पतले कागज के टुकडे उसके चेहरे पर दो जगह प्लास्टर की तरह चिपके हुए थे।

"हलो, प्योत्र मिखाइलोविच," लेना ने कहा "या आज मुझसे नही बोलोगे?"

"हलो कामरेड जोरिना," कृषि विशेषज्ञ ने रूखी आवाज़ मे कहा, "तुम यहा, आ कैसे गयी?"

"अध्यक्ष के पीछे पीछे चली आयी।"

"डर नही लगा?"

"मौत के मुह में जाने के लिए यह सदा तैयार रहती है," पावेल किरीलोविच बोल उठा। "लेकिन जहा इसे जाना चाहिए, वहा नही जायगी। सुनो लेना, जिला कमेटी ने इनको हमे ठीक करने के लिए भेजा है। इसकी नौवत आ गयी है। 'लाल हलवाहा' फार्म ने हमे पछाड दिया है। पता है, वहा के कोम्सोमोल सदस्यो ने कितना गेहू पैदा करने का वायदा किया है?"

"कितना?"

"इकतीस वुशल फी एकड। और तुमने कितना वायदा किया है? साढे वाईस। मगर उनका अध्यक्ष भी क्या चालाक शैतान खोपडी है भाई।" पावेल किरीलोविच ने कृषि विशेषज्ञ की ओर मुडकर कहा। "एक हफ्ते पहले वह यहा से गुजरा था। मुझे राह में मिल गया और खोद खोद कर वाते निकालने लगा। कितना करोगे? कब तक करोगे? वगैरह। और मै भी क्या वेवकूफ हू? सव वक गया। और वह सुनता रहा और जादू टोने करनेवालो की तरह सी-सी फू-फू करता रहा, मानो कह रहा हो कि भाई हम तुम्हारी वरावरी कभी कैसे कर सकते है। धत् तेरे

की," और फिर वह लेना की ओर मुडा। "लाल हलवालो ने जोरदार फसल उगानेवाले दो ब्रिगेड बनाये और उनके बारे मे जिला केन्द्र को लिखा और उनके पत्र को सरकार के पास भेजे गये एक पत्र मे शामिल कर लिया गया है। लेकिन हम-तुमको शामिल नही किया गया। वे लोग कहते है कि हमारा-तुम्हारा जिक्र करना भी कलक की बात होती। सुना तुमने, कलक की बात होती। तुम कोम्सोमोल सगठन की मन्त्रिणी हो और कोम्सोमोल सदस्यो से आशा की जाती हे कि वे सब से आगे की पात मे रहेगे। क्यो, गलत कहता हू? क्यो, मै ठीक कह रहा हू प्योत्र मिखाइलो-विच?"

प्योत्र मिखाइलोविच ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

पावेल किरीलोविच उठ बैठा और मेज तक गया।

"अपने लडके लडकियो की बैठक आज ही बुलाओ और उन्हे बताओ कि लाल हलवाहे क्या कर रहे है। होड करनी है। गलत कहता हू? बात पी मत जाओ। कोई ऐतराज है?"

"नही, मै आज ही करूगी," लेना ने कहा तो, लेकिन वह डर रही थी कि कही उसका दाढी भरा चेहरा देखकर हसी न फूट पडे।

"तो फिर ठीक है। हस रही है। क्यो, हसने की क्या वात है? अरे, तू," और ठडी हवा मे चाबुक की तरह फटकार कर अध्यक्ष ने स्कर्ट उठाया और दरवाजा इतनी जोर से भिडाकर बाहर चला गया कि सारी झोपडी काप गयी। एक क्षण कमरे मे शान्ति छा गयी।

प्योत्र मिखाइलोविच ने तौलिया और हजामत का सामान अपनी अटेची मे रखा और अपने चेहरे पर लगी प्लास्टर की चिंदिया देखकर नाक भौ सिकोडी। फर्श पर एक चमकते हुए धब्बे को सफेद बिल्ली ने सूघा और फिर सिकुडकर चूल्हे के बगल मे बैठ गयी।

"तो, आप फसल की चिन्ता मे आये है, प्योत्र मिखाइलोविच।" आखिरकार लेना ने खामोशी तोडी।

"हा, पिछली बार तुम क्यो नही आयी?" प्योत्र मिखाइलोविच ने शीशे मे अपने चेहरे के प्लास्टर की तरफ घूरते हुए कहा। तुमने वायदा किया था। मैने तुम्हारे लिए एक घटे प्रतीक्षा की। यह कोई भलमनसाहत है।"

"ग्रीशा ने मुझे नही आने दिया प्योत्र मिखाइलोविच।"

"ग्रीशा कौन है?"

"हमारे ब्रिगेड मे काम करता है। चेचक मुह चेहरा है। तुम जानते हो उसे, वह छापामार-योद्धा रह चुका था।

उसने कागज का एक टुकडा फाडा और झटपट पता घसीट दिया। बाहर दरवाजे पर किसी के आने की आहट सुनायी दी।

लेना ने ठडी सास लेकर कहा: "ये लोग किसी को दो बोल भी नही बोलने देते।"

"नही जरा भी नही," प्योत्र मिखाइलोविच ने धीमे से फुसफुसा कर कहा। "लेना, मै बाहर चला जाता हू और फिर पीछे से तुम भी आ जाना।" और अध्यक्ष के प्रवेश का इतजार किये बगैर ही उसने टोपी पहनी और बाहर निकल गया।

"इन पर लोहा कर देना चाहिए," नतालिया ने प्रवेश करते हुए कहा। वह अध्यक्ष की पतलून लिये हुए थी।

"जो जी चाहे करो। लोहा करके सुखा दो, चाहे चूल्हे के पास लटका दो।" पावेल किरीलोविच ने कहा। वह उसके पीछे पीछे चला आ रहा था। "मुझसे यह सब बरदाश्त नही होता। मुर्गिया तक मुझ पर हस रही है। लेना, तुम गाव चली जाओ और कह दो कि वे गाडी भेज दें। पुल अभी उखाडा नही गया है।"

"मै तो नदी पर से ही वापिस जाऊगी।"

"कोशिश कर देखो!"

"तो क्या तुम्हारा ख्याल है कि दस मील का चक्कर खाकर जाऊगी।"

"भाड मे जाओ। तुम मत जाओ उनमे इतनी अकल तो होगी कि खुद गाडी भेज दे।"

पावेल किरीलोविच खिडकी से बाहर देखने लगा।

हाते मे जगह-जगह पानी भरा था जो सूरज की तरह चमक रहा था और बरामदे की भूरी ज़मीन पर मुर्गियो के पैरों के निशान से चित्रकारी का नमूना बन गया था। कुए तक साफ सुथरा टेढा मेढा रास्ता साप की तरह पडा हुआ था। और आगे भाडियो के झुरमुट थे और उनके बाद जगल था जो अभी भी शान्त और चित्र-लिखित सा मालूम हो रहा था।

कृषि विशेषज्ञ भाडियो के पास खडा था और सावधानी से एस्पेन की नुकीली पत्तियो की जाच कर रहा था। कभी-कभी वह बेसब्री के साथ खिडकी की तरफ नजर डाल लेता था।

"प्योत्र मिखाइलोविच वहा क्या कर रहे है?" अध्यक्ष ने पूछा।

"मुझे क्या मालूम," लेना ने उत्तर दिया।

अध्यक्ष ने लेना की तरफ एक सदेह भरी नजर डाली।

"अच्छा, तो तुम्हारी शैतानी फिर शुरू हो गयी। उनकी जगह अगर मै होता तो दो-एक बार, मै अच्छी तरह से तुम्हारी खबर लेता। उनके जैसे पढे-लिखे आदमी को एम्पेन के इर्द-गिर्द चक्कर काटते देखकर—जैसे कि वह मुर्गा हो—मेरा सिर चक्कर खाने लगा है।"

खिड़की खोलकर अध्यक्ष ने पुकारा: "प्योत्र सिल्वाइस्तोविच! मै तुमसे उस पुटाश का जिक्र करना ही भूल गया। एक मिनट के लिए अदर तो आओ!"

३

सामूहिक फार्म का दफ्तर स्टोरमैन के घर में था। तख्ते की दीवार खड़ी करके एक बड़े कमरे के दो हिस्सो मे बाट दिया था। आधे मे स्टोरमैन और उसका परिवार रहता था और दूसरे आधे हिस्से मे फार्म के मामले तय होते थे। कई किसानो ने अपने मकान बना लिये थे। मगर अभी भी रहने की जगह की बड़ी तगी थी। लड़ाई के पहले तोमुस्का ग्राम को अपने सौ घरो पर नाज था, जो सारी तरफ से सेब के बाग मे घिरे थे। गाव का एक छोर नदी को छूता था, तो दूसरा छोर पहाड़ियो को। फासिस्टो ने बायी तरफ का सारा भाग और दाहिनी तरफ

का एक हिस्सा जलाकर खाक कर दिया था, मगर सेब के कुछ पेड अभी भी बच रहे थे। और शरद की काली रात मे बीरान बगीचे में उनके टपको के ज़मीन पर गिरने की ध्वनि अद्भुत मालूम होती थी।

पावेल किरीलोविच, मरीया तिखोनोवना, दाशा और लेना की मा पेलगेया मार्कोवना बोर्ड की मीटिंग कर रहे थे। बाहर झुटमुटा था। लोहार ने हथौडा चलाना बद कर दिया था, गलिया खामोश थी और इस खामोशी मे साझ के हलके स्वर सुनायी दे रहे थे। नदी पर बर्फ की खड़खड़ाहट, किनारे पर किसी इजिन की हलकी फटफ़ट, झील पर जगली बत्तखो की आवाजे, और बडी कठिनाई से सुने जा सकने वाले इन स्वरों के कारण दुनिया और भी विशाल और विस्तृत महसूस होती थी।

इस समय दफ्तर मे कोई आनन्द नही था। फर्निचर के नाम पर सिर्फ एक बेंच, एक स्टूल और एक मेज थी जिसके तीन पैरो पर रोगन था और एक पर रोगन भी नही था। मेज एक गुट्ठे से ढकी हुई थी, जिस पर लिखे हुए आकडे चीटियो की तरह जान पडते थे।

बोर्ड ने अभी-अभी तमाम ब्रिगेडो के फसल के कोटे वढा देने का फैसला किया था।

विभाजन की उस ओर से एक बच्चे के रोने की आवाज आयी, झूले की चू-चू गूज उठी और उसके साथ एक औरत के उनीदे सगीत के स्वर आये

चुप भी हो जा मेरे लाल कि चुप भी हो जा!

रूठ न प्यारे, रो मत सो जा . !

मा की आवाज से ही मालूम हो रहा था कि धीरे धीरे वह खुद भी सोती जा रही थी।

"तो भाई," पावेल किरीलोविच ने कागजो को एक सवारे हुए ढेर मे रखते हुए कहा, "हमें मीटिग खत्म कर देना चाहिए। इस तरह दिल खोलकर बाते हमे पहले ही कर लेनी चाहिए थी। हम सब एक ही बात सोच रहे थे लेकिन उसे लिखित रूप मे देने मे घबरा रहे थे। हम किससे डर रहे थे? खुद अपने से?"

दाशा ने सिर हिलाया। मरीया तिखोनोवना ऐसी सीधी और निश्चल बैठी थी, मानो अपनी तस्वीर खिचा रही हो।

विभाजन की दूसरी ओर से फिर औरत की आवाज आयी

चुप भी हो जा मेरे लाल कि चुप भी हो जा।

अब तो रूठ न प्यारे अब तो रो मत सो जा !

"और यह मत भूलना कि कामरेड देमेन्तियेव कल हमारी मीटिंग मे आ रहे है," पावेल किरीलोविच ने अपनी वात जारी रखी, "सारा काम गम्भीरता और व्यवस्था-पूर्वक होना चाहिए। विना हाथ उठाये हुए कोई न वोले। और फसल के अलावा और कोई फिजूल की वात न की जाय। तुम जानते हो हम लोगो का क्या हाल होता है, वस, मेला जैसा शोरगुल होने लगता है। हर आदमी अपनी दून की हाकने लगता है। मिसाल के लिए अनीसिम को लो, कितनी वार वह खडा हुआ है और अपने लिए नया मकान वना देने के वारे मे हम लोगो को धन्यवाद दे चुका है। इस वार उसे इसकी इजाजत न दी जाय। कामरेड देमेन्तियेव के सामने यह वात शर्मनाक होगी।"

"उसकी जवान कौन रोक सकता है?" दाशा ने कहा।

"तो फिर उसे मीटिंग की सूचना ही न दो। उसके विना भी हमारा काम चल जायगा।"

विभाजन की दूसरी तरफ से आवाज आयी "ज़रा धीमे बोलो पावेल किरीलोविच। मै वच्चे को सुला नही पा रही हूं।"

"उसके पेट मे दर्द है," मरीया, तिखोनोवना ने कहा। "न्यूरा, कुछ गर्म बाजरा या और कुछ उसके पेट पर रखो।"

अध्यक्ष ने अपनी आवाज धीमी कर दी।

"और अब भाषणो के बारे में सुनो। मै पहले बोलूगा। संक्षिप्त भाषण। फिर पेलगेया बोलेगी। और फिर ब्रिगेड लीडर की हैसियत से मरीया तिखोनोवना तुम बोलो। फिर कोम्सोमोल का एक सदस्य बोलेगा। उनमे से कोन बोलेगा, इसका फैसला वे लोग कर रहे है। भाषण अच्छे करना, ताकि उनमे कुछ जान मालूम हो। अच्छा यह होगा कि पहले लिख लिया जाय।"

"मै बिना लिखे काम चला लूगी," मरीया तिखोनोवना ने आपत्ति की, "आखिर लिखने की क्या बात है?"

"सार्वजनिक भाषण कैसे देना चाहिए, यह तुम नही जानती। तुम कहोगी क्या?"

"यह तुम मुझ पर छोड दो। मै कहूगी कि हम चौंतीस बुशल फी एकड पैदा करने जा रहे है।"

"और फिर?"

"फिर क्या? बस हो गया।"

"मैने कहा था न? तुम हमारे फार्म की सबसे

बढिया ब्रिगेड नेता हो, मगर भाषण देना रत्ती भर नही जानती। तुम बोलो तो इस तरह कि लोगो मे जोश उमड जाय। बेहतर है कि मेरे कहे मुताबिक लिख डालो।"

"मै तो नही लिखूगी। भाषण लिखने के लिए मेरे पास फुर्सत नही है।"

"तुम कहो तो मै तुम्हारे लिए लिख दू।"

"मरीया, जिद न करो," पेलगेया मार्कोवना ने कहा, "अगर वह चाहता है, तो उसे लिख डालने दो।"

"भला वह क्या लिखेगा?"

"मै क्या लिखूगा?" पावेल किरीलोविच ने उठते हुए कहा। "तो सुनो। मै लिखूगा कि हम शरद की फसल मे इतना गेहू पैदा कर लेगे कि हमे इन मनहूस रोटी-कार्डो की जरूरत नही रह जायगी। मै लिखूगा कि हम इस भूमि से इतना उपजायेंगे कि समस्त मेहनतकश जनता को आनन्द होगा और पूजिपतियो पर तुषारपात, ताकि न सिर्फ हमारे बेटे-बेटी बल्कि खुद हम और तुम कम्युनिजम का स्वाद पा सके और. वगैरह, वगैरह।" पावेल किरीलोविच यह कहकर बैठ गया।

"वाह! यह हुआ न भाषण?", मरीया तिखोनोवना ने कहा। "अच्छा लिख डालना, मेरी बला से।"

नीली साझ उतर आयी। विभाजन की दूसरी तरफ बच्चा सो गया था, लेकिन उस औरत का शांतिमय स्वर अभी गीत गये जा रहा था:

पहना दूगी तुझको रेशम रेशम

घूम टहल आना यह नगरी चम चम...

और झूला चू-चूं बोलता जा रहा था।

४

दाशा ने मौके की आन निभाने में कोई कसर नही रक्खी। उसनें दफ्तर का फर्श झाडा, बुहारा और धोया; कही से पता लगाकर कुछ लम्बी बेंचे भी ले आयी, मेज पर लाल साटिन का कपडा बिछा दिया और पानी के लिए जग भी कही से ले आयी, यह जग कहा देखा है यह सोचते-सोचते पावेल किरीलोविच ने कुछ देर तक दिमाग खपाया और तब उसे याद आ गया.यह लोहार निकीफोर का था। निकीफोर से कोई चीज पा लेना आसान नही है। "दाशा भी खूब है," अध्यक्ष ने सोचा। "इस बार सभा में जरूर व्यवस्था रहेगी। कामरेड देमेन्तियेव भी देख ले कि हम लोग यहा कितने व्यवहार-कुशल है। हर कोई आ रहा मालूम पडता है। बैठने के लिए अभी कोई जगह

नहीं बची। इस वार इसकी ज़रूरत नही है कि लोगो को जमा करने के लिए हर एक दरवाज़ा खटखटाते दौड़ा जाय।"

लोग गम्भीर मुद्रा मे आ रहे थे, शान्ति से वाते कर रहे थे और सिगरेट पीने के लिए वाहर ओसारे मे चले जाते थे। "हर चीज़ साफ सुथरी होने का भी क्या ही असर होता है," अध्यक्ष ने अपनी मुसकराहट छिपाते हुए सोचा। नौ वजते ही वह उठ खडा हुआ और पानी के जग को पेंसिल से वजाया।

सभा आरम्भ हो गयी। जव मच समिति का चुनाव हुआ तो हमेशा-जैसी छेडखानी नही हुई। मरीया तिखोनोवना, पावेल किरीलोविच और कामरेड देमेन्तियेव मेज के पास अपनी जगहो पर वैठे। देमेन्तियेव अपनी स्कूली कापी मे कुछ लिखते हुए एक किनारे पर वैठे थे। मरीया तिखोनोवना हमेशा की तरह तनकर सीधी वैठी हुई थी और पलक भी नही मार रही थी। पावेल किरीलोविच ने उपस्थित लोगो पर नज़र दौडाई और परेशान दृष्टि से देखा। न जाने क्यो, जब वह मंच पर बैठता है तो वह परेशान दृष्टि से इधर-उधर देखता है।

अध्यक्ष की सक्षिप्त भूमिका के वाद कामरेड देमेन्तियेव

खडे हुए। उन्होंने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के विस्तारित फरवरी अधिवेशन मे फसल बढाने के बारे में स्वीकृत प्रस्तावो के विषय मे और जिले के दूसरे सामूहिक फार्मो मे क्या हो रहा है, उनके बारे मे चर्चा की। उन्होने बताया कि सभी गावो के सामूहिक फार्मो ने उन गावो मे भी जहा की मिट्टी के बारे मे कोई दून की नही हाक सकता, इस वर्ष फसल का रिकार्ड कायम करने का सकल्प किया है। जब उन्होने सामूहिक फार्मो के किन्ही किसानो का नाम लिया तो कमरे मे भर-भर स्वर फूट पडे। "कुवाकिन? कौन है वह?" "अरे वही इओन का दामाद!" "सुना तुमने, सिपातोव लौट आया है। लोग कहते है कि उसकी मा रोई कि आखे फूट जाये।" "वह तेरी कोरकिना है! उसकी तरफ कौन आखे उठाकर भी देखेगा?" अध्यक्ष ने पानी के जग को टुन-टुनाया। लेकिन कामरेड देमेन्तियेव लोगो के नाम गिनाते ही रहे और उन के बारे मे ऐसी बढिया बाते बताते रहे कि औरते, बूढे और बच्चे, सभी समान रूप से खुश हो उठे। जब उन्होने भाषण खत्म किया, तो देर तक तालिया पिटती रही।

अध्यक्ष ने अपने कागज पर नजर डाली और लेना की मा पेलगेया मार्कोवना को बुलाया। वह खडी हुई

और अपना भाषण पढ़ने लगी। जब उसने खत्म किया तो अध्यक्ष की तरफ नज़र डाली, मानो पूछ रही हो. "ठीक रहा?" अध्यक्ष ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

"साढे बत्तीस बुशल तुमने कहा है?"

"हा, साढ़े बत्तीस बुशल," पेलगेया मार्कोवना ने अपनी सीट पर सिकुडकर बैठते हुए कहा।

"हम लिख लेते है," अध्यक्ष ने कहा और यद्यपि जिस कागज पर नये कोटे लिखे हुए थे वह पिछली रात से ही उसकी जेब में पडा हुआ था, फिर भी उसने सामने रखे कागज पर पेलगेया मार्कोवना के नाम के आगे साढे बत्तीस बुशल लिख लिये।

मीटिंग व्यवस्थित तरीके से चल रही थी।

योजना के अनुसार लेना की मा के बाद मरीया तिखोनोवना की बारी आयी। वह सख्त औरत है जो फार्म की सर्वश्रेष्ठ ब्रिगेड लीडर की हैसियत से अपनी क्षमता को भली भाति पहचानती है। वह खडी हुई। बडे धीरज के साथ उस ने चश्मा पहना, हाथ भर की दूरी पर कागज़ सभाला और भाषण पढने लगी।

"साथियो! हमारे सामने समस्या है कि कम से कम समय मे हम युद्ध से पहले के उत्पादन स्तर को

हासिल कर ले। शरद की इस फसल पर हमे इतना गेहूं काटना है कि सोवियत सरकार के लिये राशन कार्ड को खत्म करना सम्भव हो जाय। प्रतिकूल.. " वह हकला उठी, "प्रतिकूल प्राकृ...प्राकृति ..यह तुमने क्या लिखा है, मेरी समझ मे नही आता?" उसने अध्यक्ष की तरफ नजर डालकर कहा, "यह क्या शब्द है?"

पावेल किरीलोविच छटपटा कर रह गया। श्रोताओ मे एक हंसी की लहर गूजकर चली गयी।

"जारी रखो, जारी रखो," अध्यक्ष ने कहा और न जाने क्यो, उसने पानी के जग को फिर बजा दिया।

"मै जारी कैसे रखू, जब कि मेरी समझ मे नही आ रहा है? मैने कहा था कि मुझे लिखे हुए भाषण की जरूरत नही है।" मरीया तिखोनोवना ने अपना चश्मा उतार कर रख दिया एक क्षण सोचा और कहा: "तो लडकियो! हमारे ब्रिगेड ने पैतीस बुशल फी एकड फसल पैदा करने का फैसला किया है..."

"यहा मर्द भी बैठे है," दरवाजे के करीब से एक आवाज आयी, "यह लडाई के जमाने की आदत नही जाती — लडकियो ये, लडकियो वो।

मरीया तिखोनोवना ने इस टिप्पणी पर ध्यान न

देते हुए बात जारी रखी "इसके लिए सख्त काम की जरूरत होगी। लडकियो, इस पर गौर कर देखो। फिर शिकायत न करना। मै इसके बारे मे तुम्हे बता चुकी हू या नही और मैने तुम मे से किसी को मजबूर नही किया। तो क्या तुम लोग राजी हो?"

"राजी है! राजी है!" बेंचो से आवाज़ आयी।

"तो ठीक है। हमने अब तक बडी मेहनत से काम किया है लेकिन अब हमे और भी सख्त मेहनत के साथ काम करना होगा। समझ लो। किसी तरह की शिकायत न हो। और कल से कोई एक दिन भी काम से गैर हाजिर न हो। कोई कुनमुनाहट न हो। ध्यान रहे, यह वायदा हम एक दूसरे के साथ नही कर रहे है। सारे देश के साथ कर रहे है। बस, इतना ही कहना है।"

"हम इसे लिखे लेते है," अध्यक्ष ने कहा और अपने कागज पर पैतीस का अक लिख लिया।

कोम्सोमोल के सदस्यो की तरफ से ग्रीशा को बोलना था। उसका नाम पुकारने के लिए अध्यक्ष उठनेवा-ला ही था कि उसकी नजर अनीसिम पर पडी जो मेज़ के करीब ही खडा हुआ अपनी रोयेंदार टोपी पर फूहड की तरह हाथ फेर रहा था। वह कैसे अन्दर आया और

कमरे की सामने वाली पांत तक घुस आया,—यह अध्यक्ष की कल्पना से बाहर था। सख्त हिदायत थी कि नौ बजे के बाद किसी को अदर न आने दिया जाय।

"तुम क्या चाहते हो?" पावेल किरीलोविच ने पूछा और महसूस किया कि मीटिग अव्यवस्थित होती जा रही है।

"आपकी मर्जी हो तो एक शब्द कहना चाहता हू..."

"तुम्हे अपनी वारी का इतजार करना चाहिए।"

"बस, एक छोटी सी बात है। मुझ जैसे बूढे आदमी को तुम इतजार करने के लिए न कहो! क्यो, प्यारे भाइयो .."

"रुको। मै न तुम्हे बोलने की इजाजत नही दी।"

बेंचो पर बैठे हुए लोगो ने विरोध किया: "बोलने दीजिये। आपके लिए क्या फर्क पडता है।"

अध्यक्ष बैठ गया और देमेन्तियेव की तरफ उसने अपराधी दृष्टि से देखा।

अनीसिम ने बोलना जारी रखा: "प्यारे भाइयो! आप लोगो ने मेरे लिए जो कुछ किया है, उसके लिए मै किस मुह से धन्यवाद दू। यहा, जिला केन्द्र के इस

आदमी के सामने मै आप लोगो को अपने मकान के लिए धन्यवाद देना चाहता हू। मेरी समझ मे आज भी नही आया कि यह सब कैसे हो गया। वह तो एक जादू सा था। .एक सपना . ," बूढे की आवाज़ लडखडा गयी।

"बस ना?"

"भगवान ने मेरी बुढिया को उठा लिया, दुश्मनो ने मेरे बेटो की जान ले ली। अगर तुम भले लोगो का सहारा न होता तो मै कहा का रहता? तुम लोग मेरे लिए बेटे-बेटियो के समान हो। लेकिन तुम लोग मेरे साथ ऐसा सलूक क्यो करते हो जैसा आज रात किया। क्या मुझसे कोई भूल हो गयी?"

बूढे अनीसिम का गला भर आया।

सफेद सिर तान कर वह सीधा खड़ा हुआ था। आखे आसुओ से चमक रही थी जो छलक पडे थे और झुर्रीदार कपोलो से बहकर नीचे टपक रहे थे, सभी लोग उसकी तरफ आखें गडाये इतनी खामोशी के साथ बैठे थे कि विभाजन की दूसरी तरफ सोये हुए बच्चे की सास के स्वर भी सुनायी दे रहे थे।

"बस ना?" अध्यक्ष ने फिर पूछा।

"नही अभी बस नही। तुम लोग यहा यह चर्चा

करने के लिये आये हो कि अनाज की फसल कैसे बढायी जाय। और मुझे बुलाते तक नही। जैसे कि मेरी कोई गिनती ही नही। लेकिन प्यारे भाइयो! मै सत्तर साल से किसान हू और शायद मै भी आपके काम मे हाथ बटा सकू। मै इस जमीन को, इस धरती मैया को, उतनी ही अच्छी तरह से जानता हू जैसे कि अपनी आत्मा को। मै बूढा हू, तो क्या हुआ? क्या मै इतना बूढा हूं कि बीज डालने या निराई का काम भी नही कर सकता। तुम लोगो के किसी ब्रिगेड मे मुझे क्यो न रखा जाय?"

"पिछली शरद में हम तुम्हे रखना चाहते थे, लेकिन तुमने इनकार कर दिया था," अध्यक्ष ने कहा।

"पिछले शरद मे मेरी हालत खराब थी, पावेल किरीलोविच! तुम्हे खुद याद होगा कि मुझे कैसा बुरा गठिया था। लेकिन अब बात अलग है। मै अपनी हड्डियो को धूप में तपा चुका हूं। अभी उस दिन मे इतना बडा लट्ठा लुढकाकर अपने झोपडे तक ले गया और मुझे कुछ भी महसूस नही हुआ। अगर तुम्हे मेरे काम के दिनो की तनख्वाह लगाने में बुरा लगता हो तो तुम्हें कुछ भी देने की जरूरत नही है। मै मकान के लिए लोगों का काफी देनदार हू। तुम लोग मुझे दाशा के ब्रिगेड में रख दो

या मरीया तिखोनोवना के ब्रिगेड मे, अगर उसे मजूर हो। मै नाव की खेवाई भी कर लूगा। गर्मियो में कोई ज्यादा खेवाई नही . "

"बस ना" अध्यक्ष ने हिम्मत की।

अनीसिम ने टोपी लगायी और चल दिया।

"उसे मेरे ब्रिगेड मे रख दो" मरीया तिखोनोवना ने कहा, "मुझे कोई उज्र नही।"

"तुम किस लिए कूद रही हो" अध्यक्ष ने लेना को सामने की पात की तरफ बढते हुए देखकर पूछा। "तुम्हारी वारी नही है। कोम्सोमोल के सदस्यो की तरफ से ग्रीशा को बोलना है।"

लेना ने कहा· "उसने अपनी जगह मुझे बोलने को कहा है," और सभी लोग हंस पडे हालाकि इस में हंसी की कोई बात नही थी।

"जरा ठहरो "

"साथियो" लेना चिल्लायी और यकायक मुसकरा दी। "ग्रीशा तुम मुझे हसाओ मत। तो साथियो, क्या आप लोग लाल हलवाहो को दो-एक सबक नही सिखायेंगे? अगर इस साल हम फसल का रिकार्ड कायम कर देंगे तो उन लोगो की अकल ठिकाने लग जायगी।"

"लगता है इस बार यह मुझे नीचा नही दिखायेगी" अध्यक्ष ने सोचा।

हम नौजवानो ने सारे मसले पर बात कर ली है और तै किया है कि पैतालीस बुशल फी एकड़ गेहूं पैदा करके रहेगे।"

"हम इसको भी लिख लेते है" अध्यक्ष ने पेंसिल उठाते हुए कहा लेकिन यकायक अधर मे ही उसका हाथ रुक गया. "कितना बताया तुमने?"

"पैतालीस बुशल।"

"तुम्हारा मतलब है पैतीस?"

सभी लोग हस पडे।

"फिर अपनी शैतानी पर उतर आयी। अगर तुम्हे कुछ कहना है तो होश की बाते करो। वरना बैठ जाओ।"

"जरा ठहरो। तुम्हे यह मजाक मालूम होता है; लेकिन हमने अखबारों मे पढा है कि अल्ताई के किसान क्या कर रहे है। उन्होने बोआई में बीजों की तादाद बढाकर अपनी फसल बढायी। हो सकता है, बुजुर्ग लोग इस का तजुर्बा करते डरते हो लेकिन हम नही डरते। और इसलिये हम इस सभा से इजाजत मागने आये है कि हमे जिला कृषि

विभाग द्वारा नियत किये गये बीज से डेढ गुना ज्यादा बीज बोने की इजाजत दी जाय।"

सामूहिक फार्म के किसानो मे मतभेद उठ खडा हुआ। आधे लोग जिनमें अधिकतर जवान थे कोम्सोमोल के सदस्यो को इतना बीज देने के लिए तैयार थे, दूसरे आधे लोग, जिनमें अधिकतर बुजुर्ग थे, इसके खिलाफ थे।

काफी शोरगुल, बातचीत और तर्क होने लगा।

पानी के जग की टनटनाहट किसी को नही सुनाई दी, सभा हाथ से बाहर हो गई।

"ऐ, तुम बैठ जाओ!" पावेल किरीलोविच अपने माथे से पसीना पोछते लेना पर चिल्लाया, "तुम अपनी बात कह चुकी। अब बैठ जाओ!"

लेकिन वह आगे की पात में एक कोने पर खडी ही रही और लोग उसके पास तक दौडते, चिल्लाते और हाथ हिलाते-डुलाते रहे।

लोहार निकीफोर सामने आ गया और लोगो के खामोश होने का इतजार करने लगा। लेकिन वे चुप न हुए, इसलिए वह दूसरो की आवाज को डुबाते हुए चीखने लगा।

"क्या इतना बीज हम इन लोगो को दे देंगे? मान लो, हमने दे दिया। तो दूसरे लोग क्या बोयेंगे? पत्थर?

हमारी बोआई का क्षेत्र बढ गया है कि नही? और हमारे पास फालतू बीज भी है क्या? उसकी चालाकी तो देखो, —खुद तो अपने हिस्से मे दो गुना ज्यादा ले लेगी और दूसरो के लिए कुछ नही छोडेगी। क्या ही शानदार ख्याल है। इस तरह तो कोई भी बेवकूफ ज्यादा फसल पैदा कर सकता है।" (अध्यक्ष ने सोचा "कही यह गाली गलौज न करने लगे।") "जरा आसानी से हासिल कर लेने की कोशिश तो करो। जहा तक मेरा सवाल है, मै उसे बीज नही दूगा!"

ग्रीशा चिल्लाया: "हमेशा की तरह फिर ठोक पीट कर रहा है," और जो लोग खामोश हो गये उन्होने फिर शोर करना शुरू कर दिया।

"आशा है आप हम लोगो को क्षामा करेंगे।" पावेल किरीलोविच ने देमेन्तियेव की तरफ झुक कर कहा, "यह लेना हमेशा कोई न कोई बखेडा खड़ा कर देती है। उसने शकल दिखायी कि हाय-तोबा मच गया।"

देमेन्तियेव ने कधे उचकाते हुए कहा· "इसमे माफी मागने की क्या बात है? हर चीज़ ठीक चल रही है। आखिरकार लोगो ने मुह तो खोला। अभी तक तो ऐसा लग रहा था कि लोग किसी की गमी मे शामिल हुए है।"

पूरी तरह हतबुद्धि होकर पावेल किरीलोविच ने अपना हाथ झुलाया और परेशान हाल शकल बना ली।

कोई दस मिनट तक शोर मचता रहा। कई लोगो ने सिगरेटें जला ली और नीला-नीला धुआ उनके सिर पर परदो की तरह लहराने लगा।

आखिरकार देमेन्तियेव खडे हो गये। सब खामोश हो गये।

"साथियो," उन्होने कहा, "क्या मै एक बात कह सकता हू?"

"जरूर कहिये," निकीफोर चिल्लाया।

"लेना ने दिलचस्प सुझाव पेश किया है। बिल्कुल अनूठा सुझाव है। आप लोग बीज के कोटे की ही बात किये जा रहे है। लेकिन यह कोटा कैसे तै किया जाता है? हम आपके यहा आते है, आपका काम देखते है, और उसके आधार पर कोटा तै कर देते है। यह आप ही लोग बताते है कि कोटा कितना होना चाहिए। यह ठीक है कि एक बार जब वह तय हो जाय तो, फिर बिना किसी खास वजह उसे तोडना नही चाहिये"

"यही तो बात है," निकीफोर ने टीका की।

"लेकिन लेना के सुझाव से हमे अच्छी खासी वजह मिलती है। खेती के ठोस तजुर्बे पर उसकी बुनियाद है और हमारी खेती दुनिया मे सब से ज्यादा आगे बढी हुई है। और आपको नये प्रयोग करने के लिए उससे अच्छे खेत नही मिल सकते जिस पर लेना का ब्रिगेड काम करता है। उसकी मिट्टी बडी बढिया है और जुताई भी होशियारी से की गयी है। मै ठीक कह रहा हू या नही?"

किसी ने जवाब नही दिया।

"किसी बात की जरूरत है तो इस काम को पूरा कर डालने के सकल्प की। और मै देख रहा हू कि ऐसा सकल्प है भी। इसी बात को लेकर लोहार और ग्रीशा मे हाथापाई की नौबत आ गयी थी। इसलिये मै सुझाव देता हू कि लेना के ब्रिगेड को डेढ गुना बीज दिया जाय।"

"इतना आयेगा कहा से?" निकीफोर ने पूछा।

"ये तुम्हारे ऊपर है। सामूहिक फार्म तो आप ही लोग है। अगर आपको यह विश्वास हो गया है कि ऐसा करने से सिर्फ आपके फार्म को ही नही पूरे सोवियत राज्य को फायदा होगा तो आप इसका भी उपाय निकाल लो। जहा तक मेरा सवाल है, मै भरसक आपकी मदद करूगा।

जिला कृषि विभाग और जिला पार्टी कमेटी भी मदद करेगी।"

अत मे तै हुआ कि बीज भडार का ठीक हिसाब लगाया जाय और जो कुछ बच रहे, वह सब लेना के ब्रिगेड को दे दिया जाय।

५

मीटिंग खत्म हो गयी।

छोटे-छोटे तारो से भरा हुआ आकाश गाव पर छा गया। कुछ-कुछ सेकेन्ड बाद सामूहिक फार्म के दफ्तर का दरवाजा खुलता और रोशनी बाहर फूट पडती। लोग सीढि-यो पर ठिठक कर अधेरे के आदी बनने की कोशिश करते और उनके लम्बे साये सडक पर तिरछे लेट जाते। लडके एक दूसरे को पुकार रहे थे।

निकीफोर की लडकी नास्त्या ने पुकारा: "लडकियो, तुम लोग कहा हो? मेरे लिए ठहरना।"

"हम लोग यहा है?" कही दूर से लडकी की आवाज बनाते हुए ग्रीशा ने जवाब दिया।

बूढे लोग मकानो की चहारदीवारी के किनारे-किनारे

एक पांत मे चुपचाप चले जा रहे थे। कुछ लोग अपने बगल मे स्टूल दबाये हुए थे।

दरवाजा अब और भी कम खुलने लगा, आवाजे खत्म हो गयी। और मकानो की खिडकियो मे रोशनी दिखायी पडने लगी। लोग अब भोजन करेगे और सो जायेगे।

देमेन्तियेव आज की रात पावेल किरीलोविच के यहा बिताने वाला था। उसके हाथ मे जेबी टार्च चमक उठी और उसके सामने रोशनी का एक लोला कभी बुझता कभी दमकता हुआ नाचने लगा।

"दाहिने बाजू चलो," पावेल किरीलोविच ने कहा। "इस तरफ कुछ कीचड है।"

"मीटिग बढिया रही," देमेन्तियेव ने कहा।

"कोई खास नही। हमारे यहा के लोग अभी यह नही सीख पाये है कि कैसे व्यवहार करना चाहिए। लेना हमेशा...।"

"क्या कहा?" पीछे से एक आवाज आयी।

"शैतान की बात करो और अच्छा, अपना रास्ता नापो," पावेल किरीलोविच ने एक तरफ हटकर रास्ता छोडते हुए कहा।

"लेकिन मै आप लोगो के साथ चलना चाहती हू।"

"क्या है?" कृषि विशेषज्ञ ने शीघ्रता से पूछा। उसकी जेबी टार्च बुझ गयी।

"छोडो भी," पावेल किरीलोविच जरा त्योरिया चढाकर भुनभुनाया। "चलो! था, आप उससे जो बात नतालिया के यहा कहने गये थे, वह पूरी नही हुई?"

"तुम जाओ," लेना बोली, "वे तुम्हारे यहा पहुच जायेगे।"

"हा, हा जाओ," देमेन्तियेव ने भी इशारे से कहा।

"अच्छा, आपको मेरा घर मिल भी जायगा। वह उधर कुए के उस तरफ जहा पेड है जहा वह रोशनी दिखायी दे रही है बस वही है। देखो?"

अधेरे मे न तो कुआ दिखाई दे रहा था, न पेड, मगर देमेन्तियेव ने हामी भर दी। पावेल किरीलोविच आगे बढ गया और कुछ देर तक उन्हे पावेल किरीलोविच के जूते कीचड मे छप-छप करते सुनायी दिये। नदी से नम झोका आया और बहते हुए बर्फ की अस्पष्ट ध्वनि ले आया मानो नीद मे कोई बडबडा रहा हो।

"तुम यहा खडे हो गये हो?" लेना ने पूछा, "चलो न।"

"पहले तुम चलो — महिलाऐं पहले!"

"यह नियम कब से हो गया कि मर्द औरतो के पीछे-पीछे चलें?"

"तहजीब है।"

"यही तहजीब है, तो यही सही। क्या तुम कल वापिस जा रहे हो?"

"हा"

अगर कोई समस्या उठे, तो क्या मै तुम्हे पत्र लिख सकती हू?"

"जरूर।"

"मै तुम्हारे घर के पते पर चिट्ठी भेजूगी, ठीक है? यह मत समझना कि मैने पता खो दिया है। यह देखो।" और लेना ने अपनी आस्तीन मे से कागज़ का एक पुर्जा निकाला और अधेरे में लहराया।

"ठीक है। घर के पते पर ही भेजना।" उसने कहा और हैरान होकर सोचने लगा: "यह अपने को और दूसरो को बेवकूफ क्या बनाया करती है। यह भी नही जानती कि वह मेरा पता नतालिया की खिडकी के पत्थर पर रखा छोड़ आयी थी। और मै कह दू कि वह पता इस समय मेरे थैले मे है तो क्या होगा।"

वे लोहार के मकान से गुजरे तो खिडकी से दिखाई

दे रहा था कि उसकी पत्नी केतली से चाय डाल रही थी। कपडे के शेड से ढका लैप मेज के ऊपर लटक रहा था और बाहर से उसकी गुलाबी रोशनी बड़ी सुहानी और राहत भरी लग रही थी।

"तुम कुछ बोलते क्यो नही प्योत्र मिखाइलोविच?" लेना पूछ बैठी।

"हा क्या कहू?"

"मुझे कुछ सलाह दो। मै अपना काम कैसे शुरू करू। सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है तुम जरूर कोई मुझ से कहना चाहते थे।

"मै तुम से क्या कहना चाहूगा?" देमेन्तियेव ने मन में कहा, "मेरे साथ यह खिलवाड बन्द करो मानो मे कोई बच्चा हू। लेना मै बच्चा नही हू। तुमसे मै यही कहना चाहता हू।" लेकिन बोला वह इस तरह: "तुम्हारे पास खाद काफी है?"

"अभी पता नही।"

"लो यह भी देखो। और वहा तुम चीख रही थी कि तुमने हर बात पर गौर कर लिया है," देमेन्तियेव ने कुछ चिढ कर कहा। "जरूरी यह है कि तुम अटकलबाजी जरा कम किया करो।"

"तो क्या इरादा ही छोड दू?"

"खुद फैसला करो। तुम्हे दस टन फी एकड खाद की जरूरत होगी। और तुम्हारे पास सिर्फ बीस गाये है।"

देमेन्तियेव ने बात यकायक खत्म कर दी मानो आगे कुछ सूझ ही न रहा हो। उसने मन मे कहा: "मै कह क्या रहा हूं। इस तरह मै उसका दिल क्यो दुखाना चाहता हू?"

नदी का किनारा आ गया था। नम हवा बर्फ और शीत की गध लेकर आयी। वह सारे गाव को चीरती हुई बगीचो को झकझोरती हुई और नये अधबने मकानो की खिडकियो को पार कर सीटी बजाती हुई बह रही थी। नदी पर वह सनसनाती और थपेडे लगाती जा रही थी मानो कोई अदृश्य हाथ बर्फ के टुकडो को इस तरह चुपचाप समेट रहा हो कि कही गाव वालो की नीद न टूट जाय।

"धन्यवाद," लेना ने कहा, "मुझे सावधान कर दिया, धन्यवाद।"

"जरा ठहरो," देमेन्तियेव ने हडबडा कर कहा," मुझे गलत न समझना। अपने साधनो का हिसाब-किताब लगा लो और फिर ठाठ से डेढ गुना बीज बोओ। अच्छा, नमस्ते... मै बहुत थक गया हू, लेना।"

लेना ने उदासी के साथ विदा ली और घर चली गयी। देमेन्तियेव नदी के ऊंचे कगार पर थोडी देर खडा रहा। नीचे पारदर्शी कुहरे से ढकी वर्फ वह रही थी।

आखिरी झोपडे की खिडकी खुली।

"कौन है?" अनीसिम की आवाज आयी।

"मै हू।" देमेन्तियेव ने जवाव दिया।

"अरे तुम हो? अन्दर आओ। वाहर वडी सर्दी है।"

"कोई हर्ज नही।"

खिड़की भडाक से वन्द हो गयी। पेडो के वीच हवा गुर्राने लगी। देमेन्तियेव ने अपने कोट का कालर ऊचा कर लिया और नदी की तरफ टकटकी वाध ली और उसे लगा, मानो वह तारो और धरती के साथ-साथ सपने जैसी मधुरता लेकर कही दूर उडा जा रहा है।

६

देमेन्तियेव ने सुवह छै वजे जाने का इरादा किया था। लेकिन पावेल किरीलोविच और उसने जव नाश्ता खत्म किया तो ग्यारह वज गये और तव वे ओसारे में निकले।

पावेल किरीलोविच ने धूप मे आखे मिचमिचाते हुए कहा: "जल्दी ही फिर आइयेगा। अगर आप न आये,

तो ट्रेक्टर स्टेशनवालो से शान्तिपूर्वक समझौता मुझसे न हो सकेगा। मै उनसे जरूर लड बैठूगा।"

"मै आऊगा। बस पाच छै फार्म और देखूगा। और जिला दफ्तर जाऊगा," देमेन्तियेव ने बरसाती कपडा निकालते हुए कहा।

सफेद मोजो से सुसज्जित भूरे घोड़े ने, जो उसकी छोटी सी बग्घी मे जुता हुआ था, बेसब्री के साथ आख के एक कोने से नजर डाली, मानो पूछ रहा हो: "आओ न! यहा खडे-खड़े कितनी देर बातचीत करते रहोगे?"

"और इस जुताई-निराई की मशीन के बारे मे उन्हे बताना मत भूलियेगा। उनसे कह दीजियेगा कि मै मामलो को डाले रखना नही चाहता। इसे लिख लीजिये भूल मत जाइयेगा।"

घोडा उछल-कूद करने लगा।

देमेन्तियेव ने सलाम किया और बग्घी मे सूखे कीचड़ के गिलाफ मे लपटी हुई सी सीढी पर एक पैर रखकर खडा हो गया। घोडा चल पडा।

"और उस पुटाश के मामले मे उन लोगो से जल्दी कार्यवाही करा दीजियेगा।" पावेल किरीलोविच ने बग्घी के मडगार्ड पर एक हाथ रखे-रखे, उसके साथ चलते-चलते कहा।

"करा दूगा।" देमेन्तियेव ने भूरा-भरी सीट को ठीक करते और एक पैर पर फुदकते हुए कहा। "रुक जा शैतान!"

उसने रास खीच दी, लेकिन घोडे ने दुलकी चाल चल देने के इरादे से सिर जोर से हिलाया-डुलाया, नकुओ से आवाज़ की और खुर उठा लिये।

देमेन्तियेव धम से सीट मे गिर पडा और कीचड़ उछालते हुए घोडा छलाग मार कर आगे वढ गया। अध्यक्ष ने अपना चेहरा पोछा, विदाई के लिए हाथ लहराया और घर में वापिस चला गया।

वग्घी धूप मे खडी हुई थी, इसलिए उससे चमडे, भूसे और ग्रीज की गर्म गध छूट रही थी। देमेन्तियेव सीट पर जम कर बैठ गया और रास छोड दी। घोडे ने एहसान प्रगट करते हुए सिर हिलाया, एक्सेल बज उठी, और कृषि विशेषज्ञ के मोजो पर कीचड उछलकर छाने लगा। बग्घी सडक के गड्ढो मे इधर से उधर दचके खाती हुई, डोल की तरह चू-चू करती वढी जा रही थी।

शीघ्र ही गाव का छोर आ गया। एक छोटे से पुलपर से पहिये गुजरे तो गडगडाहट गूज गयी। सूखी चढाई पर यहा-वहा कीचड के कुछ धब्बे पडे हुए थे। दोनो तरफ छोटी-छोटी भूरी पहाडिया थी। धूमिल ढलावो

पर कुछ चकत्तो को छोडकर, बाकी सभी जगह बर्फ गल चुकी थी, और वे धूसर और बदसूरत चकत्ते ऐसे जान पडते थे, मानो किसी ने राख छिडकदी हो। एक-दूसरे मे गुथी हुई छोटी-छोटी जल-धाराए सडक की तरफ दौड रही थी और टहनियो तथा पत्थरो के टुकडो के ऊपर सफेद फेन जमा हो गया था। देमेन्तियेव ने सूरज की तरफ नजर डाली। सूरज इतना तेज था कि बडी देर तक उसकी आखो के सामने काला धब्बा नाचता रहा और खेत-पहाडियो का दृश्य ओझल हो गया।

चढाई पार जगल आ गया।

वह पेडो के सायो के बीच चला जा रहा था जिनमे वसत की विशिष्ट स्वच्छता थी। सडक के दोनो ओर भूरी पत्तिया पडी हुई थी, जो जाडे भर सडती रही होगी। वरसात की बौछार की तरह, पख फुलाये हुए गौरैयो के झुण्ड सडक पर उतर आये और अपनी चहचहाहट से जगल को भर दिया। घोडे की टाप सुनकर वे एक साथ उड गयी और यकायक एक नगी एस्पेन इस तरह भर गयी मानो उसमे सफेद पत्तिया उग आयी हो, और उसकी टहनिया ऊपर-नीचे झूलने लगी।

वह खुले खेत में आ गया और यही से एक और सडक फूटी थी।

जिस जमीन मे लेना का ब्रिगेड काम कनता था, वह वायी तरफ था। देमेन्तियेव ने क्षण-भर सोचा और फिर रास खीच दी। तेज़ी से वग्घी ने एक पहाडी पार की, दूसरी भी पार की और तीसरी के ऊपर से लोग काम करते नजर आने लगे। नजदीक जाने पर देमेन्तियेव ने ब्रिगेड लीडर दाशा और ग्रीगा को पहचान लिया। कुछ दूर पर खाद से लदी हुई गाडी खडी थी। लेना और निकीफोर की वेटी नास्त्या, गाडी के पास वातचीत मे उलझी थी। घुटने तक कीचड मे घोडी खडी हुई थी। गाडी चलानेवाला लडका अपनी पूरी ताकत से नकेल खीच रहा था, लेकिन घोडी अपनी जगह से हिले-डुले विना गर्दन लम्वी कर के रह जाती थी। लेना और नास्त्या ने पहियो को धक्का देकर गाडी निकालने की कोशिश की। इससे भी कुछ न हुआ। देमेन्तियेव ने अपनी वग्घी रोकी।

दूसरी गाडी भी आ गयी। उसके पीछे ग्रीशा दौडा और उसको लगभग जमीन से ऊपर उठा लिया। घोडा लडखडा गया। उस चेचक-दाग योद्धा में सचमुच वैल जैसी ताकत है—इसका अदाज, उसका कद देखकर कोई नही लगा सकता।

"लो यह देखो," लेना ने रूआसे होकर कहा। "हमारी घोडी यहा ऐसे खडी है मानो उसे जमीन में गाड दिया गया हो।" वह घोडी के पास गयी और उसे खुर्पी से धसकाया।

"माश्का! उठ, उठ! आगे बढ प्यारी। तू मूर्ख लालमुडी किसी दीन की नही है!" वह चिल्लायी। "जोर लगाओ! अरे स्टबी, ऐसे कही जोर भी लगता है? और तुम नास्त्या, यहा मिट्टी के लोदे की तरह खडी-खडी क्या कर रही हो? देखो! वे लोग तो गाडी खाली भी करने लगे! पीछे से धक्का दो।"

थकी-मादी घोडी ने गाडी खीचने की एक और कोशिश की, मगर फिर भी थर-थर कापती हुई जहा की तहा खडी रही। लेना ने उसे खुर्पी की बेंट से मारा। बेट का निशान घोडी की काली और पसीने से तर पीठ पर साफ झलक आया। घोडी ने दीनतापूर्वक जमीन की तरफ देखा और पीली-पीली जीभ, साप की तरह, बार-बार निकाल कर हाफने लगी।

"ब्रिगेड-लीडर!" देमेन्तियेव ने पुकारा।

दाशा आयी, वह सफेद रूमाल बांधे बहुत स्वच्छ दिखायी दे रही थी, उसके स्कर्ट के किनारे अगल-बगल

नौ थे। देमेन्तियेव ने सोचा· "इन लोगो ने पौ फटने से पहले काम शुरू कर दिया होगा।"

लेना कब दबनेवाली थी, "हमे ऐसे घोडे देते हो, इसी को होड कहते हो? यह ईमानदारी नही है; क्यो न, प्योत्र मिखाइलोविच?"

कृषि-विशेषज्ञ ने इस बार भी उसको जवाब नही दिया।

उसने दाशा से कहा: "होड है, तो होड हो। लेकिन तुम्हे अपने घोडो की अच्छी देख-रेख करना चाहिए और देखना चाहिए कि उनका दुरुपयोग न हो। और अगर कोई इस बात को नही जानता, तो उसे यह बता देना तुम्हारी जिम्मेदारी है," और उसने अपने घोडे को थपथपाया।

"बेहतर हो कि आप अपने चक्रवर्ती घोडे को खोल दे और हमारा हाथ बंटाये," उसने लेना को पीठ पीछे चिल्लाते हुए सुना। "बैठ कर सिगरेट पीना और हुकुम जताना बहुत आसान है।"

उसके दिमाग मे यही ख्याल उठा: "वह बहुत क्रुद्ध है," और वह यह न समझ सका कि इस पर वह खुश है या दुखी।

वह कुछ ही दूर गया था कि उसने मुडकर देखा,

लेकिन खेत और उसमें काम करनेवाले लोगो का दृश्य एक भूरी पहाडी के पीछे ओझल हो गया था।

और अब फिर हर तरफ खेतो, पोखरो और जाड़े गेहू की फसलो के अलावा कुछ न रहा। उसे एक टेढा-मेढा चीड का वृक्ष मिला जिसकी शाखाए गाठदार थी। न जाने क्यो देमेन्तियेव को यह वृक्ष बडा प्यारा लगता है। हर बार जब वह शोमुष्का ग्राम आता है, तो यह पेड सडक के मोड पर खडा हुआ खामोशी के साथ उसका स्वागत करता है और ऐसा लगता है मानो वह उस गाव, मेदवेदित्सा नदी और लेना की तरफ का रास्ता बताता है।

इस बार इस वृक्ष ने बडी उदासीनता के साथ अपनी शाखाए हिलायी। मानो कोई अजनबी आ रहा हो।

"बढे चलो," देमेन्तियेव ने सिगरेट के आखिरी हिस्से को एक पोखर मे फेकते हुए अपने घोडे से कहा।

७

छै दिन तक ब्रिगेड ने सूर्योदय से लेकर रात चढे तक खेत मे खाद ढोकर लाने का काम किया। वे हमेशा की तरह अपने वक्त से काम करते रहने की हिम्मत नही कर सकते थे, जैसे कि दूसरे ब्रिगेड कर रहे थे। दूसरे

खेतो मे हमेशा-जितना खाद डाला जा रहा था, इसलिए उन्हे जल्दी करने की जरूरत नही थी। लेकिन यहा अतिरिक्त बीज डालने के लिए अतिरिक्त खाद डालना भी जरूरी था। ईमानदार लीडर के नाते दाशा अपने ब्रिगेड के हर सदस्य को उत्साहित करती रहती थी। खाद ज्यादा नही है, इसलिए अगर वे जल्दी न करेंगे, तो दूसरे ब्रिगेड सारी खाद हथिया लेगे।

तिस पर यह कि मौसम उनके प्रतिकूल हो गया। भोर आख खुलते ही लेना सबसे पहले खिडकी के पास जाती, लेकिन हर रोज उसे वही बात दिखायी देती: निश्चल और धूसर बादलो से भरा हुआ आसमान, और कुहरे के टुकडे इतने नीचे उडते हुए कि उनसे सहज ही मकानो की छते छू जायं। रात-दिन बारीक फुहार पड रही थी और भीगी हुई गौरैया किसी आड मे छिप कर शोकाकुल झाक रही थी। दोपहर में भी लोगो को लालटेन जलानी पडती थी। सडक सूखने लगी थी और ऊची जगहो पर बडी मजबूत थी, लेकिन अब वह फिर फुसफुसी हो गयी। घोडे थक गये थे। सामूहिक खेतिहर अब उन्हे तमाम रास्ता पार कराकर खेतो पर नही ले जाते थे, बल्कि सडक के किनारे पर ही खाद उतार देते थे। लेना, अनीसिम के पास गयी और उससे

कुछ डलिया बना देने के लिए कहा, ताकि ब्रिगेड सदस्य उनमें खाद भर कर खेतों पर ले जा सकें।

छै दिन तक यही होता रहा। सातवें दिन जब वे लोग काम कर रहे थे, वहां पावेल रिगीनोविच आया।

उसने दाशा को अलग बुलाया।

"मैं अपनी खनियानों से तुम्हें और अधिक खाद नहीं लेने दूंगा।" उसने अपने जूतों की परीक्षा करते हुए कहा। "तुमने काफी ले ली है। और कल वे घोड़े दूसरे ब्रिगेड के पास भेज दिये जायेंगे। तुमने अभी दूसरे सभी लोगों से ज्यादा खाद खेतों में डाल दी है।"

"आप दूसरों से हमारी तुलना क्यों करते हैं?" दाशा ने ताज्जुब से कहा। "हमें दूसरों से ज्यादा पैदावार करना है।"

"मैं तुम्हें और नहीं दूंगा। लो देखो यह चिट्ठी, जो अभी आयी है। वे हमसे कह रहे हैं कि हम चौदह बुशल बीज लाल हलवालों को दे दें। उनके पास काफी बीज नहीं है। जैसे कि हमारे ही पास है! इसलिए मैं तुम्हें कोटे से अधिक बीज भी न दे सकूंगा।"

"अध्यक्ष, क्या मजाक कर रहे हो?" दाशा ने शान्तिपूर्वक कहा। "पिछले एक हफ्ते से हम लोग अपनी

बोटी-बोटी किसलिए पानी में गला रहे थे? यह तो नही सोचने लगे कि इसका कुछ फल नही होगा? कृषि-विशेषज्ञ ने क्या बताया था?"

"इस चिट्ठी का जवाब तो कृषि-विशेषज्ञ को नही, मुझे देना होगा। आखिर मै बीज कहा से लाऊगा।"

"लेकिन, बोर्ड ने हमें इजाजत दी थी या नही?"

"तब दी थी, लेकिन अब नही देता। जिला कृषि विभाग हमारे पास सरकारी हुक्म भेज दे, तब हम उस पर विचार कर सकते है।"

"एक मिनट ठहरो। मै अपने लोगो को बुला लू। लेना!"

लेकिन पावेल किरीलोविच ने पीठ फेरी और बर्षा मे भीगे हुए कधे उचकाता हुआ गाव लौट गया।

८

उस दिन काम ठीक तरह न चल सका। रोज से जल्दी ही ब्रिगेड ने खेत छोड दिये और शाम को लेना के घर पर बाजाब्ता लिखित कार्यक्रम, कार्यवाही, आदि के साथ कोम्सोमोल की बैठक हुई। उन्होने फैसला किया कि जितना बीज आवश्यक है, वह अपने व्यक्तिगत भण्डारो से

जमा किया जाय। इसके बाद वे लोग अपने माता-पिताओं को राजी करने के लिए घर चले गये। यह काम आसान सिद्ध नहीं हुआ। पिछले साल सूखा पड़ गया था और कुछ किसानों की खत्तियां बसन्त तक खाली हो गयी थीं। इसके बावजूद भी अधिकांश नौजवानों को अपना काम बनाने में सफलता मिली। सिर्फ निकीफोर ही एक ऐसा आदमी था जिसे राजी नहीं किया जा सका। पहले नास्त्या ने उसे समझाया, फिर लेना ने। ज्योंही लेना के मुंह से "गल्ला" शब्द निकला, निकीफोर अखबार पढ़ने लगा और आगे बात सुनने से उसने इन्कार कर दिया। दो घंटे की बेकार कोशिशों के बाद लेना ने कंधे उचकाये, दूसरों ने जितने गल्ले का वायदा किया था, उसका जल्दी में हिसाब लगाया और तै कर लिया कि निकीफोर की सहायता बिना भी काम चल जायगा। लेकिन जब वायदा किये गये अनाज को सचमुच वसूल करने निकले, तो नया ही रंग दिखायी दिया। लोगों ने सुना कि निकीफोर ने इन्कार कर दिया है। तो वे भी दस बार सोच-विचार करने लगे।

"हम क्या भेड़-बकरी हैं?" माता-पिताओं ने अपने बच्चों से कहा। "हम अपना सर्वस्व निछावर कर दें, और वह मौज उड़ाये? तुम्हारी सौगंध, यह नहीं होने की।

९८ कोई देगा, तो हम भी देगे और बस बात खत्म हुई।"

इसलिए निकीफोर के पास फिर जाना पड़ा। ब्रिगेड के लगभग सभी सदस्य उसके पास हो आये। ग्रीशा ने उसको "अत.करण की दुहाई" तक दी। निकीफोर ने उसे अर्धचन्द्र दिखाकर बाहर कर दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

इतवार को लेना निकीफोर से मिलने गयी, यह तै करके कि चाहे दिन भर बैठना पड़े वह येन केन प्रकारेण उस से वायदा करा कर ही उठेगी। वह बड़े भोर ही जा पहुची।

निकीफोर मेज़ के सामने बैठा हुआ तश्तरी मे चाय डाल कर पी रहा था। बौनी बुढ़िया, जो उसकी बीवी है, चूल्हे मे आग जला रही थी। नास्त्या भी दूधिया चाय पी रही थी। एक केतली में खौलता हुआ पानी खलबला रहा था।

"नमस्ते," लेना ने कहा। "मज़े में तो हो।"

"नमस्ते," लुहार ने फौरन संभलते हुए जवाब दिया। "तुमने आल्योशा को कोयले लाते देखा या नही?"

"देखा तो था।"

"भला हो। कितनी देर हो गयी है।"

"विश्वास करिये, वह आ ही रहा है। मैं ने जरा कुछ कुलावे रखे देखे थे। क्या बढ़िया कुलावे हैं, मानो फैक्टरी में बने हों।"

"हुंह, फैक्टरी में?" निकीफोर ने कहा। "ये कुलावे तो मैंने कल ही तैयार किये थे।"

"तुम तो पूरे जादूगर हो चाचा निकीफोर। अब देखो तुमने मान्का को ऐसे नाल लगा दिये हैं कि वह घोड़ी उसके बाद बरसों छोटी लगने लगी। अब तो वह पांच बरस की घोड़ी की तरह दौड़ती है।"

"उसकी नालें छोटी थीं। नाल लगाने का ढंग भी क्या बढ़िया तरीका था। मुझे सब की सब बदल देनी पड़ीं। सामने के खुर थे बकरे के खुर की तरह। उनके लिए मुझे नये किस्म की नालें बनानी पड़ीं। फैक्टरी की नालें फिट नहीं बैठतीं। किसी काम की नहीं होतीं। बकरे की तरह के खुर तो थे।"

"अच्छा तो मैं चलूं।" लेना ने कहा।

"एक मिनट ठहरो," लुहार ने कहा, "थोड़ी देर और बैठो। कुछ चाय पियो।"

"धन्यवाद, मैं पीकर आयी हूं।"

"जरा देर और सही। ऐसी जल्दी क्या है?"

लेना वैठ गयी और नास्त्या की तरफ सवालिया नज़रो से देखा। क्या उसके पिताने गल्ले के वारे मे अपना इरादा वदल दिया है? लेकिन नास्त्या ने भौहे चढायी और सिर हिलाकर इनकार कर दिया।

निकीफोर ने पूछा: "तुम लोग इशारो-इशारो में क्या वाते कर रही हो? फिर गल्ले की वात? उसके वारे मे मै एक शब्द नही सुनना चाहता।"

"हमे अव और ज्यादा गल्ले की जरूरत नही है," लेना ने कहा। "जितनी जरूरत थी, उतना जमा कर लिया है। गुदीमोव ने हमे आधा वोरा दिया और ग्रीशा के पिता जी ने पूरा एक वोरा दे दिया।"

"हूं, वड़े रईस है," निकीफोर ने टीका की।

"मेरी मा ने भी आधा वोरा दिया है।"

नास्त्या ने लेना की तरफ आश्चर्य से देखा, लेकिन कहा कुछ नही।

"तो हर आदमी ने कुछ न कुछ दिया है?" निकीफ़ोर ने लेना पर सदेहपूर्ण दृष्टि डाल कर कहा।

"और नही तो क्या? दाशा तक ने एक वोरा दिया, जव कि उसके तीन वच्चे है। अगर वह इतना दे सकती

है, तो जाहिर है, मेरी मा को भी कुछ न कुछ देना पडा। आखिर दाशा के तो तीन-तीन बच्चे है।”

“और वे सब भूखे रहेगे।”

“नही, भूखे क्यो रहेगे?–उसके पास आलू काफी है। और सूखे कुकुरमुत्ते भी रहे हुए है। और उसके बच्चे कुछ ज्यादा नही मागते, वे सब समझते है। उन्होने लडाई का जमाना भी देखा है। पिछली रात उसने सब बच्चो को मिठाई का एक-एक नग दिया और वह स्टवी, है ना, जो तुम्हारे लोहारखाने के चक्कर काटा करता है, उसने सिर्फ आधा खाया और आधे को कागज मे बाध दिया। यह उसने अगले दिन के लिए बचा लिया।”

निकीफोर ने बेचैनी से सास खीची और चायदानी के ढक्कन को घने बालो से भरी उगली से दबाकर एक प्याला चाय और ढाल ली।

“तो गुदीमोव ने भी कुछ दिया, क्यो?” यकायक उसने पूछ डाला।

“सभी ने दिया। तुम्हे छोडकर, बाकी सभी ने। लेकिन सब ठीक ही हुआ। हम लोग तुम्हारे पीछे इतने लगे रहे, इस पर नाराज मत होना। अब तो हमें और अधिक की जरूरत भी नही है . नास्त्या, तुम्हे पता है,

स्टबी अपने घर पर लुहारी करने लगा है? उसने एक टूटी कुल्हाडी की निहाई बना ली है। और कही से उसे सडसी मिल गयी है।"

"तो मेरी सडसी वहा पहुच गयी है," निकीफोर ने मुसकुरा कर कहा।

लेना ने बात जारी रखी: "और वह सारे दिन हथौडाबाजी किया करता है। दाशा का तो सिर चक्कर खाने लगता है।"

"अगर उधार देने की बात होती," निकीफोर ने कहा। "लेकिन वैसे ही सारा अनाज दे डाला जाय, तो कोई कैसे..."

"हम लोग वापिस तो कर ही देगे। अध्यक्ष ने वायदा किया है कि ज्योही फसल आयगी, सारे का सारा वापिस कर दिया जायगा।" लेना ने कहा।

(और लेना ने सोचा "यह पते की बात है। मै अध्यक्ष से आज ही कहूगी कि शरद मे यह अनाज वापिस कर दिया जाय। वह राजी हो जायगा। हम उससे यह बात मनवा ही लेगे।")

"हमारा अनाज तो घटिया किस्म का है। बहुत बारीक।"

"हरेक का ऐसा ही है। हम उसकी छटाई करेंगे। अच्छा, नमस्ते।"

"एक मिनट ठहरो।" निकीफोर ने कहा, "बच्चो की मा, जरा जाकर देखो तो हमारे भण्डार मे कितना बचा है।"

उसकी पत्नी ने हकलाते हुए विरोध किया।

"लेकिन हमे और ज्यादा की जरूरत नही है," लेना ने कहा।

"क्या बात है? मेरे गल्ले की तुम्हे जरूरत नही, लेकिन और सबके गल्ले की जरूरत है?"

"क्यो, तुम्हारी क्या राय है, क्या ले लिया जाय," लेना ने नास्त्या की ओर मुडकर कहा।

"अगर दादा दे रहे है, तो जरूर ले लेना चाहिए।"

निकीफोर की पत्नी बाहर गयी। उधर दरवाजे पर किसी पुरुष की भारी पदचाप सुनायी दी।

"यह भला आदमी नाश्ते मे ही सारा वक्त उड़ा देता है," एक आवाज़ आयी। "अभी तक पहियो पर टायर नही चढाये है। इधर कुछ दिनो से हजरत ने दिमाग आसमान पर चढा लिया है, मानो बडे भारी सेनापति हो।"

लेना का कलेजा मुह तक आ गया।

अध्यक्ष ने कमरे में प्रवेश किया।

"तो ये लोग यहाँ जमे हैं। सभी एक जगह। लेना, तुम आज काम पर क्यो नही गयी? कभी तो तुम किसी के हटाये खेत पर से नही हटती, और कभी...।"

"वह तो जा रही रही थी," निकीफोर ने मामला शान्त करने के लिए कहा। "काम से आयी थी। अनाज के लिए।"

"अनाज? कौन सा अनाज?"

"अपने खेतो के लिए। मैं दो बोरे गेहू दे रहा हूं। यह तुम देखना कि मुझे वापिस मिल जाय। कोई छलछंद नही चलेगा।"

"क्या वापिस मिल जाय," अध्यक्ष ने निकीफोर की तरफ टकटकी बाधकर घूरते हुए कहा।

"लो, अल्योशा कोयले नही लाया," लेना ने कहा।

"जरा ठहरो। बात बदलने की कोशिश न करो... क्या तुमने गल्ला वापिस करने का वायदा किया है?"

"कौन सा गल्ला?"

निकीफोर की बीबी एक लकडी लिये हुए वापिस लौटी।

"बस इतना बचा है," उसने लकडी को बीच से पकड़कर कहा।

"जरा रुको, बच्चो की मा। कितना बचा है, यह फिर देख लेगे। यह लेना झूठ बोल रही थी। इस लडकी में जरा भी ईमानदारी नही है।"

९

उस रात लेना ने पक्की स्याही की पेंसिल को पानी में डुबो-डुबोकर यह खत लिखा.

कामरेड देमेन्तियेव,

यह पत्र तुम्हारी मित्र लेना जोरिना लिख रही है।

कामरेड देमेन्तियेव, हमने फैसला किया था कि हमारा ब्रिगेड हमेशा के मुकाबले इस बार डेढ गुना बीज बोयेगा और आपने इसकी इजाजत भी दे दी थी। लेकिन जब इसके करने का वक्त आया, तो अध्यक्ष ने रोडा अटका दिया और बीज देने से इनकार कर दिया। बीज डालने का वक्त आ गया है, मौसम बडा सुन्दर है, मगर वे हमको बीज नही देते। कृपया, जितनी जल्दी हो सके, आ जाइये या एक पत्र लिखकर उन्हे कह दीजिये कि वे अपना वायदा न तोड़ें।

आपकी मित्र,

लेना जोरिना।

लेना ने अखबारी कागज काटकर लिफाफा बनाया, गीली काली रोटी से उसे चिपकाया और तभी उसे याद हो आया कि कृषि-विशेषज्ञ के घर का पता तो वह नतालिया की खिडकी के पत्थर पर पडा छोड आयी थी।

हो ही क्या सकता था? उसे वह पत्र दफ्तर के पते पर ही भेजना पडा।

१०

मौसम कुछ गर्म होता जा रहा था। रोज़-ब-रोज़ धूप तेज होती जाती थी।

छिछली पोखरिया सूख गयी और अपनी जगह पर काले धब्बे छोड गयी। सडक के गढो मे जमा कीचड पर फुसफुसी पर्त जम आयी। पख फटफटाते और मोटर के भोंपू की तरह शोर मचाते हुए हस गाव पर विचरण करने लगे। लेकिन प्योत्र मिखाइलोविच की तरफ से कोई पत्र नही आया।

ट्रैक्टर स्टेशन से मशीने आ गयी, ट्रैक्टरो मे जुती हुई गाडियो मे धातुओ के बने पीपे आ गये और एक हरी-हरी बुआई-निराई की मशीन भी आ पहुची जो छोटे आकार के पहियो पर छोटा सा रेल का डिब्बा मालूम

होती थी। फिर यही ट्रैक्टर कुछ मोटर लारिया भी ले आये। रात मे उनकी हुकारो और खटपट से गूज जाता था और मकान इस तरह काप जाते थे, मानो उन्हे जूडीताप चढ आया हो। सुवह तक, ट्रैक्टरो के पहियो पर चढे हुए लोहे के पट्टो से सडक सुघड कतरो मे कट गयी और पोखरिया मोतियो की सीप जैसी हो गयी। ट्रैक्टर ड्राइवारो ने अपनी मशीने नदी के किनारे छोड दी। ग्रीस से लिथडी, चमडे जैसी पतलूने पहने हुए दो श्याम-वर्ण युवक, जो भाई मालूम होते थे, घर-घर जाकर लडकियो से परिचय वढा रहे थे और अपने मिकेनिको की आख बचाकर मिट्टी के तेल के वदले दूध ले रहे थे।

बोआई का समय आ गया था, लेकिन अभी तक न तो देमेन्तियेव आया और न उसने कोई पत्र भेजा।

नौजवानो ने अनाज-गोदाम के पास खुली जगह मे अपना बीज फैला दिया और उसके छिपे हुए जीवन-तत्व को जागृत करने के लिए पानी छिडक कर उसको फुलाया, ताकि मिट्टी से पौष्टिक तत्वो को खीच लेने की शक्ति उनमे पैदा हो जाय। अनाज-गोदाम के पास वादलो की तरह गौरैयो के समूह उमड पडे। उनसे छप्पर काले हो उठे। वे छप्परो से नीचे उडकर इस आशा से झपट्टा

मारती कि शायद कोई दाना चुराने मे वे कामयाब हो जाये, लेकिन लडके उन्हे डडे फटकार कर भगा देते।

उस बैठक मे जो वायदा किया गया था, उसे शायद देमेन्तियेव भूल गया था। लेना ने सोचा: "शायद वह मुझसे नाराज हो गया है, इसीलिए न तो वह आता है और न कोई पत्र लिखता है। अगर यह सच है, तो वह किसी काम का नही है। दोनो बातो को एक करके कैसे देखा जा सकता है? नही, वह किसी काम का नही है।"

लेकिन खेतो पर काम करते समय लेना इस निराशा को बराबर छिपाये रही। दूसरे साथियो पर उसे बडी दया आती थी। उन्होने इतनी मेहनत से काम किया कि हिसाब-किताब रखनेवाले एकाउन्टेट को दाशा के आकड़ो पर विश्वास ही न हुआ और दो-एक बार वह खुद देखने आया कि उन लोगो ने सचमुच उतनी ज्यादा खाद डाली है या नही। लेना जानती थी कि अगर वह खुद खोयी-खोयी और चिन्ता-ग्रस्त दिखायी देगी तो ब्रिगेड के दूसरे सदस्य फौरन भाप जायगे और उनका भी दिल टूट जायगा। इसलिए वह बराबर हसती रहती, मजाक करती और हुकुम जताती फिरती—वह इशारा देती फिरती कि उसने जिला केन्द्र को पत्र लिखा है और उसे कोई राज मालूम

है। सभी व्यक्ति, यहा तक चालाक दाशा भी, उस पर विश्वास करते थे। और वे सदेह भी क्यो करते? कृषि-विशेषज्ञ हमेशा ही लेना के पीछे-पीछे चक्कर काटता घूमता था।

एक दिन जब वे लोग घर जाने की तैयारी कर रहे थे, तब एक पोखरी मे जूते धोते हुए ग्रीशा ने कहा: "लो, हर चीज तो अब तैयार हो गयी है। एक-दो दिन में हम बोआई भी शुरू कर सकते है। लेना ही एक सहारा है। सब कुछ कर सकती है यह लडकी, और हम लोग हमेशा उसका साथ देगे। देखते है, जिला केन्द्र में किसी से दोस्ती होने से क्या लाभ होता है?"

और वे लोग, वे सभी, घर चले गये, रह गयी लेना और दाशा, जो कुछ आखिरी नाप-जोख करने के लिए ठहर गयी थी। लाल सूरज जमीन को छू रहा था।

लेना के पास आकर दाशा ने कहा: "अच्छा, तो आओ!"

लेना एक पत्थर पर बैठी हुई थी और उसके कधे उठ-गिर रहे थे।

"बात क्या है? क्या किसी ने तुम्हारा दिल दुखाया है? तुम्हारे दोस्त ने, क्या तुम्हारी बात नही रखी?"

लेना ने कोई जवाव नही दिया।

"तुम भी क्या जीव हो! यह वात तुमने मुझे पहले क्यो नही वतायी? दूसरो को नही वताया, यह तो मेरी समझ मे आता है, लेकिन तुम मुझसे तो कह सकती थी। रोना वन्द करो। तुम इतनी दुखी मत हो। मै जाऊगी और अध्यक्ष से वात करूगी। हो सकता है, अभी भी कुछ रास्ता निकल आये। एक उसकी ही चलती हो, सो नही है। वोर्ड के हम सदस्यो की भी तो आवाज है।"

११

कोई नही जानता कि दाशा ने अपने मन की मुराद कैसे पूरी कर ली, लेकिन यह सच है कि उसी रात दाशा ने लेना की खिड़की खटखटायी और आनन्दपूर्वक फुसफुस करके कहा.

"हमें बीज मिल जायगा। उसे लदाने के लिए अपने युवक-युवतियो को वडे भोर जुटा लेना।"

लेना एक क्षण न सो सकी। वेसब्री के साथ सुवह का इतजार करती रही और फिर ग्रीशा, नास्त्या आदि को वुलाने चली गयी। दो गाडियो में उन्होने घोडे जोते, भडारी को जगाया और अनाज-गोदाम पर पहुच गये।

बडी देर तक वह भडारी, अध्यक्ष की पर्ची के बिना, बीज देने से इनकार करता रहा। सभी ने एक स्वर से उसे विश्वास दिलाया कि पावेल किरीलोविच ने इजाजत दे दी है और थोडी देर मे वे खुद जायेंगे और इसकी पुष्टि कर देंगे, लेकिन इस बीज तुलाई और लदाई हो जाना चाहिए।

पहली गाडी पर बोरो का ढेर लगा ही था कि पावेल किरीलोविच आ ही गये।

"इसे उतार दो", अपने जूतो का अध्ययन करते हुए उन्होने कहा।

"क्या! तुमने ही तो हमे इजाजत दी थी।" दाशा ने हैरानी से कहा।

"मै कहता हू, इसे उतार लो।"

"तुम जानवर हो," लेना ने कहा और धीरे-धीरे उसके चेहरे का रग फक होने लगा।

"जानवर?" पावेल किरीलोविच ने यकायक चीख कर कहा। "अगर आप लोग उत्पादन बढाना चाहते है, तो इन नव आविष्कृत विचारो को छोड कर और लोगो की तरह पैदावार बढ़ाइये। नव आविष्कृत विचार अपने बस के नही है।"

"यह कहते हो, तुम?" लेना ने कहा।

"हा, मै कहता हू। क्यो, तुमने जिला केन्द्र को भी चिट्ठी लिख मारी। शिकायत कर दी कि मै बीज नही देता हू। अच्छा लो इसे पढो," और अध्यक्ष ने बडी तेजी से अपनी जेबे टटोलना शुरू किया और अत मे एक चमकता हुआ पत्तेशुदा कागज बाहर निकाल लिया।

लेना ने ज्योही खोला और देखा कि कितनी सफाई से टाइप किया हुआ है और टाइप किये हुए शब्दो तक पर कितने घसीट हस्ताक्षर है, त्योही वह समझ गयी कि मामला बिगड गया है। उस पर विशेष रोब पडा अस्पष्ट हस्ताक्षर का, जिसको एक ही अक्षर "उ" दस बार मिलाकर अत मे बडी खूबसूरती से लकीर खीच कर लिखा गया था। उसमे लिखा था:

> "शोमुश्का ग्राम के सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के नाम।
>
> आपके पत्र न... (खाली), जो यहा... (खाली) तारीख को प्राप्त हुआ, हम आपको सूचित करते है कि प्रस्ताव सख्या... (एक बड़ी लम्बी सख्या) के अनुसार इस बात की सख्त मनाही है

कि चुना हुआ वीज निश्चित परिमाण से अधिक वोया जाय। आप अपने सामूहिक फार्म के सदस्यो को इत्तला कर दें कि इस प्रस्ताव का उल्लघन किया गया तो कानूनन सजा दी जायगी।"

इसके वाद उस आदमी के दस्तखत थे जिसका नाम था "उ उ उ उ उ उ उ उउ"।

१२

उस दिन पेलगेया मार्कोवना वडी देर से घर लौट पायी। अनाज-गोदाम के पीछे सूरज डूव चुका था। कोने मे एक चूहा किसी चीज से खेल रहा था, यह साफ सुनायी दे रहा था। वह और लेना जिस मकान में रहती थी, वह नया ही था। ईंटो की नीव पर लट्ठे रखे हुए थे, और इस समय दरवाजे तक जाने के लिए तख्तो पर पैर रख कर जाना पडता था, क्योकि सामने का ओसारा अभी वन नही पाया था। अन्दर, नये लट्ठो की गध अभी भी हवा में झूम रही थी।

लालटेन जलाये विना, पेलगेया मार्कोवना चूल्हा जलाकर खाना वनाने मे जुट गयी।

"सो दूसरा भी छेद हो गया तुझ मे, ओ मनहूस,"

उसने बाल्टी से कहा, "अगर तू एक साल और चल जाती, तो तब तक दुनिया और बेहतर हो जाती। खैर, मैं अब खरीद लूंगी और तुझे छुट्टी दे दूंगी।"

पेलगेया मार्कोवना को अपने घड़े, चूल्हे या घर की किसी और चीज़ से बातें करने की आदत थी। अगर वह न करती, तो शायद बोलना भी भूल जाती; घर में कोई बात करने वाला भी तो नहीं था—ऐसा है जो पेलगेया मार्कोवना के सो जाने से पहले कभी घर नहीं आती।

पेलगेया मार्कोवना ने पानी भरा और एक मोटे लट्ठे को काटकर छोटे-छोटे टुकड़े करने लगी। एक के बाद एक वे एक पैर पर उछलकर, फर्श पर कूद पड़ते।

"तू भी शैतान है!" पेलगेया मार्कोवना ने बड़े प्यार से उस लट्ठे से कहा। "मेरी कुल्हाड़ी के नीचे तू हमेशा कोई गांठ कर देता है। तुझे शर्म नहीं आती। मैं तुझे उलट-पुलट कर दूंगी और सब शैतानी भुलवा दूंगी।"

उसने चूल्हे पर एक तिकोनी तिपाई रख दी, बर्तन में आलू भर दिये और फिर माचिस खोजने लगी।

माचिस का कहीं पता नहीं था। उसे खोजते-खोजते पेलगेया मार्कोवना ने उस तिकोनी तिपाई को यह बता डाला कि अगर मौसम ठीक रहा तो कल बुआई शुरू हो जायगी,

ट्रेक्टर-ड्राइवर जमीन की जाच करने आये थे, उन्होंने शरद में जुताई करनेवाले ड्राइवरो की गलती पकडी; कि वे गयी-गुजरी मशीनें लाये थे और भगवान की कृपा है कि सब कुछ ठीक-ठीक ही हुआ जाता है।

माचिस खोजने के लिए उसने चूल्हे के पीछे सोने की जगह पर हाथ डाला कि यकायक उसकी उगलियां किसी नर्म और गर्म चीज से छू गयी।

"बाप रे!" वह हाथ खीचकर चीख उठी। "कौन है?"

"मै हू, मा," लेना ने उनीदे स्वर में कहा।

"तूने मुझे किस कदर डरवा दिया! मेरा दम ही निकल गया होता। तू मुझे बता तो देती कि तू यहां है।"

"किसलिए बताती?"

"आज इतनी जल्दी तू कैसे घर आ गयी?"

"मैने अपना काम खत्म कर दिया। एक दिन के हिसाब से काफी था।"

"थक गयी है?"

लेना ने कोई उत्तर नही दिया। पेलगेया मार्कोवना सोच में पड गयी: "कोई बात जरूर है। लेकिन इस वक्त पूछने से कोई फायदा नही होगा। वह बतायेगी थोडे

थी। आखिरकार उसे माचिस मिल गयी और जितनी जल्दी से सम्भव हो सकता था, उसने आलू और कुछ दूध उबाल लिया। फिर उसने लालटेन जलायी और लेना को बुलाया। मेज ऐसी जीर्ण-शीर्ण थी कि वह दीवार के सहारे टिका देने से खड़ी रह सकती; उसके किनारे एक बेंच पर वे दोनों बैठ गयीं। लालटेन की पीली रोशनी उनके थके हुए चेहरों, कोने में खड़े हुए सन्दूक और कई तस्वीरों से भरे हुए एक फोटोफ्रेम पर पड़ रही थी। फासिस्टों से बचाने के लिए कई बार जमीन में गाड़कर रखने के कारण सन्दूक की धातु की पट्टियां कई जगह जंग खा गयी थीं। लकड़ी के रंग-बिरंगे फ्रेम में लगभग बीस तस्वीरें थीं—बड़ी भी और छोटी भी, कुछ तो डाक के टिकट के बराबर छोटी। अधिकांश पर गहरे धब्बे थे और लगता था कि यह फ्रेम भी गाड़ कर रखा गया होगा। लेना और पेलागेया मार्कोव्ना भोजन कर रहे थे और उनकी तरफ मजबूत बूटों में लैस उत्सुक-नयन घुड़सवार, भली भांति संवारी हुई दाढ़ीवाले कठोर वृद्ध, और अपनी गोद में पतले-पतले हाथ रखे हुए बूढ़ी महिलाएं उस फ्रेम से ताक रही थीं। दमकती हुई तस्वीरों में छोटी-छोटी नाकवाली लड़कियां अंगोरा के ऊन की चौखानेदार टोपियां

पहने थी, और छोटी-छोटी नाकवाले लडके, जिन्होने तस्वीर खिचाने के लिए काकेशस की पोशाके माग कर पहन रखी थी, अपनी मुसकान बिखेर रहे थे। एक तस्वीर लेना के बचपन की थी, जिसमे उसके जूडे लटक रहे थे और नगे गले मे पायनियर की टाई बधी हुई थी।

युद्ध के पहले यह बडा और घना सम्मिलित परिवार था, उनमे से जो कुछ बच रहा, वह इस समय बेंच पर मौजूद था। पेलगेया मार्कोवना आग की तरफ टकटकी बाध कर देखती रही। उसकी खूबसूरत काली आखो की गहराई मे एक नारी की वेदना झलकती दिखायी दे रही थी।

खामोशी के आलम मे उन्होने खाना खत्म किया। पेलगेया मार्कोवना सिर्फ एक बार बोली:

"कृषि-विशेषज्ञ की कोई खबर मिली?" उसने पूछा।

"वह बेकार का आदमी है। उसके हाथ-पाव ठडे पड गये है और शक्ल नही दिखाता," लेना ने कहा और उठकर चारपाई पर जा लेटी। "मै उसकी बात भी नही करना चाहती।"

पेलगेया मार्कोवना ने लालटेन बुझा दी। कुछ क्षण तक मिट्टी के तेल की दम-घोट गध हवा मे छायी रही। चादनी ने मेज पर सफेद वस्त्र बिछा दिया, और लोहे

का पात्र भी इस तरह सफ़ेद दिखायी देने लगा, मानो किसी ने उस पर दूध बिखेर दिया हो। कही दूर, शायद उधर नदी के किनारे, ग्रीशा अपना अकार्डियन बजा रहा था और कुछ लडकिया हस-गा रही थी। लेकिन लेना सो गयी थी। और चूहा फिर उस कोने मे किसी चीज से खेलने लग गया था।

पेलगेया मार्कोवना हौले से उठी और अपनी बेटी के पास जा पहुची। लेना गहरी नीद में सो रही थी और उसके केश तकिये पर बिखरे हुए थे। सोते हुए भी वह बडी चौकन्नी-सी मालूम पडती थी: उसकी आखे पूरी तरह मुदी हुई नही थी, मानों वह अभी भी ताक रही है और उसकी उगलिया इस तरह मुड़ी हुई थी, मानो वे कोई खुर्पी या कुदाली सभालने जा रही है। उसने किंचित सिहर कर करवट बदली। सावधानी से पेलगेया मार्कोवना ने उसके बालो पर हाथ फेरा। अब चूकि उसकी बेटी जवान हो गयी, इसलिए उसे अपना लाड-प्यार इस तरह छिपकर जताना पडता है। लेना इस मायने मे लड़कों की तरह थी कि वह मा के प्यार जतलाने को तनिक भी बरदाश्त नही कर सकती थी। इस व्यवहार पर मा को ठेस लगनी चाहिए, लेकिन जब लेना का हृदय कचन की

तरह शुद्ध है तो फिर उसे ठेस कैसे लग सकती है? उसे लाड-दुलार और प्रीत-प्रदर्शन से चिढ थी, लेकिन अगर उसके घर लौटने पर मा सोती हुई मिलती थी, तो वह चुपके से अधेरे मे ही भोजन कर लेती थी। और अगर मा जरा भी उदास हुई, तो फिर वह चाहे कितनी ही थकी हुई क्यो न हो, घरका सारा काम-काज अपने हाथो ही कर डालती थी।

इधर थोडे दिनो मे लेना का वजन कम हो गया था और उसकी आखो के सामने अधेरा छा जाया करता था। प्राण-प्यारी, तू इतनी सख्त मेहनत क्यो करती है? क्या तू अमीर बनना चाहती है, सबसे ज्यादा कमाना चाहती है? लेकिन यह तो तेरा स्वभाव नही है। तू अमीर नही बनना चाहती और न तू यह जानती है कि धन-सम्पत्ति क्या होती है। तुझसे कोई मागे तो तू आखिरी पैसा भी दे डालेगी। तो क्या तू यश चाहती है? कोई सरकारी तमगा? लेकिन तुझे घमण्ड तो छू नही गया और न तू कभी अपनी प्रशसा चाहती है।

तू क्या सपना देख रही है? वह क्या चीज है जो तुझे हर समय कठोरतम और असम्भव काम को कर डालने के लिए प्रेरित करती है? तू किस आधी मे बह रही है?

तू बह रही है और इतनी ऊची उड रही है कि तेरी बेचारी मा तुझसे बात भी नही कर पाती और न तुझे समझ ही पाती है...?

१३

शोमुश्का की राह मे देमेन्तियेव ने खीझ कर त्योरिया चढायी और दसवी बार यह निश्चय करने की कोशिश करने लगा कि लेना के साथ वह कैसा व्यवहार करेगा। क्या रूखा अफसरी रुख अख्तयार किया जाय, या चोटखाये हुए इसान की तरह किया जाय, अथवा उस क्षण हृदय जो आदेश दे, उसका पालन किया जाय, जैसा कि वह हमेशा करता रहा है?

एक चित्र पट की तरह धीरे-धीरे उभरते हुए खेतो के दृश्यो ने कृषि-विशेषज्ञ के विचारों का तार तोड दिया—औरते अपने रग-बिरगे रूमाल ओढे हुए थी, घोडे झटके के साथ हल खीच रहे थे, जुताई की भूरी लकीरे जाडई गेहू के हरे-पीले अकुरो से सवरी हुई थी। थोडी ही दूर पर ट्रेक्टर घडघडा रहा था और ड्राइवर के अगल-बगल, पाच लडके चढकर आ बैठे थे। एक के बाद एक गाव निकलते गये; पुरानी मटमैली इमारतो

के बीच नये मकानो के पीले लट्ठे, फस के घने छप्पर और सामने की फुलवाडिया तथा उनके रेगम मे चमकीले तख्तो के बने गेट दिखायी दे जाते थे। उसके बाद फिर वही खेत, किसान और ट्रैक्टर।

"खुराफात," देमेन्तियेव ने मन मे कहा और अपने को शान्तिपूर्ण नीले आकाश से ढकी हुई मेहनत मे जुटी दुनिया का एक हिस्सा महसूस करके उसे बडा आनन्द मिला। "उसकी नादान सनको की तरफ मुझे कोई ध्यान नही देना चाहिए। मै अपने रोष को क्यो उभाड रहा हू? मैने क्या कभी उसे गम्भीरतापूर्वक बताया है कि मै उसे प्यार करता हू? कभी नही। लेकिन इस बार मै कह ही डालूगा। निश्चय ही कहूगा।

और न जाने क्यो—शायद इसलिए कि चारो तरफ काम की गुनगुनाहट से खेत गूज रहे थे या शायद इसलिए कि उसके विचार आनन्दपूर्ण थे और सूरज चमक रहा था—पटा नही क्यो, प्योत्र मिखाइलोविच के हृदय में बडी शाति के साथ किसी मधुर सयोग की आवश्यम्भावी आशा जागृत हो गयी थी।

वह शोमुश्का के खेतो के पास आ पहुचा।

हल की लकीरो पर एक दृष्टि डालकर ही वह

समझ गया कि बुआई आज ही शुरू हुई है। और जैसा कि होता है, पहले दिन सारी चीजे आसानी से नही होती एक ट्रेक्टर बुआई की मशीन के साथ बेकार खडा था और उस पर कौए मडरा रहे थे। सडक-किनारे एक मोमजामे पर अस्त-व्यस्त दशा मे चार औरते पडी हुई थी।

प्योत्र मिखाइलोविच ने सख्ती से घोड़े की रास खीचते हुए पूछा: "आप लोग काम क्यो नही कर रही है?"

"करने को है ही क्या? ट्रैक्टर टूट गया है।"

"ड्राइवर कहा है?"

"शिकायत करने गया है। अध्यक्ष का कहना है कि बुआई शुरू नही होगी।"

देमेन्तियेव ने घोड़े को एड़ लगाया और आगे बढा। उसकी आखे अध्यक्ष को खोज रही थी। "शायद वह आराम से घर पर पडा होगा। मै सीधे उसके घर ही चला चलूगा", उसने सोचा।

पर अध्यक्ष घर पर नही था। सामूहिक फार्म के दफ़्तर मे भी वह नही था, न खलियान मे मिला न लुहार के यहा ही। जहा कही देमेन्तियेव गया उसे यही उत्तर मिला. "वह अभी अभी यहा था और उसी तरफ़

गया है।" कृषि-विशेषज्ञ ने अकेले ही खेतो में जाने का निश्चय किया कि अचानक किसी ने उसके पीछे से कहा:

"कामरेड देमेन्तियेव! मै तो आपको गाव-भर मे खोजता रहा हू। एम० टी० एस० वालो में और मुझमें फिर अनबन हो गयी।"

पसीने से तर और कीचड लगे कपडो के साथ अध्यक्ष ने लम्बी दास्तान सुनाना शुरू किया। लगता था कि एम० टी० एस० वालो ने आठ इंच की जगह सिर्फ सात इञ्च गहरा जोता, क्योकि उनका कहना था कि इस कीचट मे इससे अधिक गहरा जोतने में पेट्रोल बहुत खर्च हो जायेगा। देमेन्तियेव और अध्यक्ष खेतो में गये। सच था, जुताई अच्छी नही हुई थी। ऐसी जमीन में बोआई करने न देकर अध्यक्ष ने ठीक ही किया था। उन्होने एम० टी० एस वाले मैकेनिक को ढूढ निकाला, दिल के गुबार उसपर उतारे, आग्रह किया कि हलो को फिर से लगाया और चलाया जाय और धमकी दी कि यदि ऐसा न किया गया तो वह एक अधिकृत शिकायत-नामा लिख देंगे। इसके बाद उन्होने बीजो के लदान का निरीक्षण किया। देमेन्तियेव तो कभी परामर्श देता, कभी प्रशसा करता, फिर कभी धमकी देता हुआ इतना व्यस्त रहा कि

वह लेना को एकदम ही भूल गया था जबतक कि दिन न ढल चुका था और वह थकावट के मारे चूर होकर आराम करने के लिए न बैठा। तभी कोई अच्छी बात होने के आसार की झलक उसके मन मे फिर आयी। उसने चारो तरफ निगाह दौडायी। सूरज डूब रहा था। किसान खेतो से वापस घर जा रहे थे, परन्तु पहाडी के ऊपर एक ट्रैक्टर ऐसी कर्कश आवाज कर रहा था जैसे काठ के तख्तो पर कीले धडाधड ठोकी जा रही हो।

"कोम्सोमोल के सदस्यो का क्या हाल है?" उसने अध्यक्ष से पूछा।

"वही जो दूसरो का है। वे बुआई कर रहे है।" अध्यक्ष ने अपने जूतो का अध्ययन करते हुए उत्तर दिया।

"चलो, जरा देख आयें।"

"देखने को वहा क्या रखा है? दिन खत्म हो गया। सब लोग घर चले गये होगे।"

"तुम मेरे साथ नही जाना चाहते, तो मै अकेला ही चला जाऊगा।"

अध्यक्ष गाव लौट गया और देमेन्तियेव ने खेतो का रास्ता लिया। उसे किसी से मुलाकात की आशा नही

थी, वह सिर्फ यह देखना चाहता था कि जमीन कैसी तैयार की गयी है।

यकायक उसे लेना दिखायी दी। वह खेत के बिल्कुल दूसरे छोर पर एक छोटे से नाले के पास खड़ी थी, यह नाला मेद्वेदित्सा मे जाकर मिलता है। टागे फैलाये हुए, वह एक बोरे के ऊपर झुकी खडी थी और बोरे से बीज निकालकर सावधानी से जमीन मे बो रही थी। उसके पास ही स्टवी घुटनो के बल बैठा हुआ कुछ कर रहा था। देमेन्तियेव वहा पहुच गया। डूबते हुए सूरज की रोशनी में उसके केश ऐसे जान पडते थे, मानो दहक रहे है।

"बेटा, जरा दौड कर तो जाओ, और देखो अध्यक्ष कहा है," देमेन्तियेव ने कहा।

स्टवी चला गया।

लेना ने उसकी तरफ देखे बिना ही कहा: "तुम्हे क्या पता है कि अध्यक्ष कहा है?"

"हा, जानता तो हू, लेकिन मै तुमसे बात करना चाहता हू। लेना!"

"स्टवी!" लेना ने आवाज दी।

देमेन्तियेव ने त्योरिया चढा ली। स्टवी लौट आया था।

"क्या इरादा है?" लेना ने लडके से कहा, "चलो,

अपना काम करो।" फिर देमेन्तियेव की तरफ व्यंग्यात्मक दृष्टि डालकर वह बोली. "तुम कोई बात क्यो नही करते? तुम कह रहे थे कि कुछ कहना चाहते हो। कह डालो।"

युवक के हृदय में जितनी भी कोमल भावनाए उमड़ उठी थी, वे काफूर हो गयी।

"मै तो सिर्फ यही जानना चाहता था," उसने रुखाई से कहा, " कि डेढ गुना बीज पाने के लिए तुमने खेत की मिट्टी कैसी तैयार की है। लेकिन रहने दो, मै किसी और से पूछ लूंगा।"

"क्यो, क्या तुम्हे यह नही मालूम...?" लेना ने कहना शुरू किया, लेकिन कृषि-विशेषज्ञ यकायक उठ खडा हुआ और खेत पार करके नाले की तरफ चल दिया। वह किनारे-किनारे चल दिया और जब उसे निश्चय हो गया कि वह लेना की आखो से ओझल हो चुका है, तब एक पत्थर पर बैठ गया।

नाले के दूसरे किनारे ऊचे कगार पर बड़ी घनी झाड़िया थी, जिससे वह किनारा बिल्कुल स्याह लग रहा था; सिर्फ एक जगह झाडियो के बीच दरार से सूरज की आखिरी किरणे झाक रही थी, लेकिन उनकी रोशनी

इतनी तेज और चकाचौंध करनेवाली थी कि उस दृश्य में से उस पार कुछ देख पाना सम्भव नहीं था। देमेन्तियेव बड़ी देर तक किसी अदृश्य चिड़िया के भयभीत स्वर को सुनता रहा। पहाड़ियों के पीछे सूरज डूब गया। हर क्षण बीतने के साथ अंधेरा और खामोशी और बढ़ती थी और वह बड़े उदास भाव से चीखती रही—बुलाती रही और जवाब का इंतजार करती रही।

नाला भी सो गया। कृषि-विशेषज्ञ के सामने तरह-तरह की कल्पनाएं नाच उठीं और छिछले पानी के अंधेरे में विलीन हो जातीं। पानी बड़ी सुस्ती और अनिच्छा के साथ लुढ़क रहा था। किनारे पर झाड़ियों को चीर कर, जहां सूरज की एकाध किरण चमक रही थी, सिर्फ वहीं कुछ जीवन नजर आ रहा था। सैकड़ों गुलाबी चिनगारियां बड़ी तेजी से निकल कर नाच रही थीं मानो उस जगह पर ज्वाला की धारा, बिना किसी कोलाहल के, पानी में गिर रही हो।

यकायक देमेन्तियेव ने पानी में लेना की झाईं देखी।

"मैं थोड़ी सी जमीन अपने ढंग से बोना चाहती हूं। इसीलिए मैं अपने हाथ से बीज डाल रही हूं," उसने अपराधी जैसे स्वर में कहा।

"बोये जाओ," कृषि-विशेषज्ञ ने बिना कुछ समझे-बूझे जवाब दिया। और यह जानने की परवाह न की कि उसको हाथ से बोने की जरूरत क्यों आ पड़ी है।

"लेकिन यह मैं छिपा कर कर रही हू। ताकि कोई जान न पाये। प्योत्र मिखाइलोविच आप किसी से कुछ कहियेगा मत!"

कृषि-विशेषज्ञ ने कोई उत्तर नही दिया।

लेना उसके पास एक पत्थर पर बैठ गयी।

"क्या मैने तुम्हारा दिल दुखाया है?" उसने यकायक कहा।

"नही तो।"

"जरूर दुखाया है! मै जानती हू।"

"तुम्हारे कारण मैं अपना दिल क्यो दुखाऊगा?"

"कोई कारण तो है। मै जानती हूं।"

"क्या जानती हो?"

"जो जानती हू, सो जानती हू।"

दोनो पानी में झाकने लगे जहा उनकी शक्ले लम्बी-लम्बी और टेढी-मेढी झलक रही थी।

"तुम कैसे जानती हो?"

"बस, मै जानती हू। लेकिन तुम बुरा न माना

करो। अगर मेरी कुछ मजबूरिया न होती तो हम-तुम एक हो सकते थे। लेकिन मेरे लिए कोई और भी है।"

"कौन?"

"तुम उसे नही जानते। वह आजकल गोर्की नगर मे है। रेल से सात सौ तैंतीस मील दूर।"

गीली-गीली साझ उतर आयी थी। सूर्य-किरण, एक ऐसी मा की तरह चुपचाप खिसक गयी थी, जो लोरिया गाकर बच्चे को सुला चुकी हो और लैम्प बुझा गयी हो। झाडियो मे उस चिड़िया की पुकार बद हो गयी थी। पानी की वह चमचमाहट खत्म हो चुकी थी। कही कोई धडकन शेष थी तो स्याह जल-धारा पर, जहा मच्छड को पकडने के लिए कोई मछली उछल पडती थी और समतल सतह पर छोटे-छोटे गोलाकार वृत्त छोड जाती थी।

जब खामोशी पूरी तरह छा गया तो पीले हरे आकाश में एक चमकीला सितारा उदय हुआ।

"उसे गये क्या बहुत दिन हो गये?" देमेन्तियेव ने कुछ देर खामोश रहने के बाद पूछा।

"छे महीने या कुछ थोडा ज्यादा हुआ होगा।"

"और तुम उसे भूल नही सकी?"

"नही जी। मैं उसे भूल कैसे सकती हू?"

"खैर, मेरी शुभकामनाए तुम्हारे लिए है। मुझे तो कुछ ईर्ष्या ही अनुभव होती है।"

"फिक्र न करो। तुम्हे भी कोई मिल जायगा। इस दुनिया में मै ही कोई अकेली लडकी नही हू।"

"किसी को खोज पाना इतना आसान नही है, लेना! मै इतने वर्षो से इतजार कर रहा हू और अभी तक मुझे कोई नही मिला।"

"मिल जायगा। आज कल बहुत सी लडकिया फालतू है। जरूरत से ज्यादा।"

देमेन्तियेव ने सिर उठाया और लेना की तरफ देखा।

"मेरी तरफ क्या घूर रहे हो?"

"तुम फिर बाते बना रही हो। वह गोर्कीवाला लडका उसको भी तुमने गढ लिया है। तुम्हारे एक शब्द पर मै विश्वास नही कर सकता।"

"क्यो नही? अगर चाहो तो मै सबूत पेश कर सकती हू।"

"अच्छा करो।"

"लो, यह पत्र मैने उसे लिखाया था। मै अभी भेज नही पायी। क्या मै पढकर सुना दू?"

"हा।"

लेना ने एक मुडा हुआ कागज़ खोला और पढना शुरू किया :

"मेरे प्राणप्रिय वसीलि परमोनोविच..."

"इस इकत्तीस नम्बर के क्या मायने?"

"बीच मे टोको नही, वरना मै आगे पढना बद कर दूगी। 'मेरे प्राणप्रिय वसीलि परमोनोविच।' यह नम्बर मै हर चिट्ठी पर इसलिए डाल देती हू, ताकि वह इन्हे सिलसिले से रख सके। मै अपने सभी पत्रो पर नम्बर लिखती हू। 'मै तुम्हे ढेर के ढेर चुम्बन भेजती हू वा-

स्या—तुम्हारे होठो पर चुम्बन और तुम्हारी आखो की लम्बी-लम्बी बरुनियो पर भी चुम्बन। आज सुबह से ही मै तुम्हारी याद कर रही हू और वह जगल भी याद आ रहा है, जहा बारिश में हम-तुम एक भोज-वृक्ष के नीचे खडे हो गये थे और जहा तुमने अपना दिल खोल कर रख दिया था। इस समय अगर मै उस जगल मे पहुच जाऊ तो तमाम पेडो के बीच में उसी भोज-वृक्ष को पह-चान लूगी। आज सुबह जब मै जागी, तो मुझे ऐसा अकेलापन महसूस हुआ कि सारा काम छोडकर तुम्हारे पास गोर्की चले जाने की इच्छा हुई।

'लेकिन मैं अभी नहीं आ सकती। हम लोग बड़े व्यस्त हैं। हमने इस साल हमेशा से ज़्यादा बीज बोने का फ़ैसला किया था, लेकिन पावेल फ़िरसोविच हमें बीज नहीं देते...

"बीज नहीं देते?" आश्चर्य से देमेन्तियेव ने कहा।

नहीं, वह नहीं देता। जैसे तुम्हें यह सब मालूम ही न हो।... 'हमें बीज नहीं देते और हम लोग एक सप्ताह तक उंगलियाँ गलाते रहे, और इसीलिए हमें बड़ी कड़ुवाहट महसूस होती है। मैंने एक पत्र ज़िला केन्द्र को भी लिखा था और उनसे सहायता पाने की हर मुमकिन कोशिश की, लेकिन कुछ न हुआ। अगर तुम यहाँ होते...'

बाक़ी ख़त में कोई ख़ास बात नहीं है।" लेना ने काग़ज़ फिर मोड़कर रखते हुए कहा।

सुनो, लेना, मेरी समझ में एक भी बात नहीं आती। मीटिंग में तुम्हें बीज देने का फ़ैसला हुआ था कि नहीं?'

"हाँ, हुआ तो था, लेकिन तुम्हारे मनहूस कृषि-विभाग ने एक चिट्ठी भेज दी कि अगर ऐसा किया गया तो हमारे ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जा सकेगी।"

"वह चिट्ठी कहा है?"

"अध्यक्ष के पास।"

"मेरे साथ चलो, हमें उससे बात करना होगी।"

"क्या फायदा है? अब बीज बचे ही नही है। उसने हमारे सभी ब्रिगेडो को बाट दिया है।"

"आओ, साथ तो आओ!"

उसने लेना की बाह पकड ली और सडक तक उसे लगभग घसीटता हुआ ले चला।

अधेरा था। बडी देर तक वे लोग बिना कुछ बोले-चाले चलते रहे।

"चिट्ठी का गोर्की पहुचने मे कितना समय लगता है?" देमेन्तियेव यकायक पूछ बैठा और वह भी बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के।

"मुझे पता नही। चार या पाच दिन।"

"और यहा आने में?"

"मुझे क्या पता?"

"क्यो, क्या वह अपनी चिट्ठियो पर तारीख नही डालता?"

"वह मुझे पत्र नही लिखता।"

"क्यो?"

"मुझे नहीं मालूम! यहा से जाने के एक महीने बाद उसने मुझे एक पत्र लिखा था। लेकिन फिर कोई पत्र नही लिखा। सिवाय इसके कि इस गर्मी में उसने अपने पिता के नाम एक पत्र लिखा था। बस, और कोई नही। वह काम करता है। इस सब बातो की फिक्र करने के लिए उसको फ़ुर्सत ही नही मिलती।"

"लेकिन यहा पर भी तो वह मेहनत से काम कर-ता था, कि नही?"

"हां... आ...," लेना ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा।

"और फिर भी वह तुमसे मिलने की फ़ुर्सत निकल लेता था?"

"हा।"

"वह तुम्हे छोड कर क्यों चला गया?"

वह मुझे छोर कर नही गया। यह तो तुम्हे भी मालूम है कि यहा फसल खराव हो गयी थी। खाने को कुछ न था"

"तुम्हारे पास भी कुछ अधिक नही बचा था, लेकिन तुम तो यह गाव छोड़ कर नही भाग गयी।"

"मै?" वह थोडा सा हसी। "अगर सब लोग चले जायेंगे, तो इन खेतो पर कौन काम करेगा?"

"लेकिन वह तो चला गया।"

"हमेशा के लिए नही। उसने कहा था कि जमाना बेहतर होते ही वह आ जायगा।"

"जब जमाना बेहतर होगा?"

"हां, जब जमाना..." लेना रुक गयी और एक क्षण सोच मे पड गयी। "सुनो," उसने अपनी हथेली को उलट कर अपने माथे पर फेरते हुए कहा, "मुझे उलझाने की कोशिश मत करो... और जाओ, अध्यक्ष से अकेले ही बात कर लेना। वह अब बीज दे या न दे, मेरे लिए सब बराबर है। जाओ..."

१४

अध्यक्ष कुंवारा था। वह मरीया तिखोनोवना के मकान के एक कोने में रहता था, जिसे एक फीके-फीके परदे से अलहदा कर दिया गया था।

देमेन्तियेव पहुंचा तो काफी देर हो गयी थी। बूढ़े लोग सो गये थे, मगर अध्यक्ष कागज़ पेंसिल जमाये हुए मिट्टी के तेल के लैम्प की रोशनी मे सिर झुकाये बैठा था। सिरहाने लाल तकिये रखकर एक बिस्तर देमेन्तियेव के लिए लगा दिया गया था।

"थक गये हो?" पावेल किरीलोविच ने फुसफुस स्वर मे पूछा।

"हा।"

"दूध पियोगे?"

"नही, धन्यवाद।"

देमेन्तियेव बैठ गया और उस कोने की तरफ निगाह डाली, जहा बूढे लोग सो रहे थे। मरीया तिखोनोवना ने करवट वदली और एक लम्बी सास खीची।

"मै जरा सिगरेट पीऊगा," पावेल किरीलोविच ने उठते हुए कहा, "चलो, मेरा साथ देना।"

वे ओसारे मे निकल आये और सबसे पहली सीढी पर बैठ गये। सड़क के पार तिरछी दिशा मे किसी घर मे अभी भी रोशनी जल रही थी।

"ठड है," पावेल किरीलोविच ने कधे उठाते हुए कहा।

"कुछ है। तुमने लेना जोरिना की योजना क्यो विगाड दी पावेल किरीलोविच? क्या तुम्हे इसका दुख नही है?"

अध्यक्ष ने मन मे कहा, "मै जानता था।" उसने एक सिगरेट जलायी और देमेन्तियेव के सवाल का जवाब देने से पहले एक लम्वा कश लिया।

"कामरेड देमेन्तियेव, तुम मेरे बारे में कोई गलत धारणा न बना लेना। तुम बुद्धिमान हो और अपने काम के बारे में बडी जानकारी भी रखते हो, लेकिन मै तुम से ज्यादा दिन दुनिया देख चुका हू। मेरी बात सुनो और गुस्सा मत होना। मै यह नही कहता कि ये नव-आविष्कृत विचार दूर से देखने पर सही नही मालूम होते। लेकिन मै सामूहिक फार्म का अध्यक्ष हू, और अन्य बातो के अलावा मुझसे यह भी आशा की जाती है कि मै हुक्मो का पालन करूगा। यह कहना बडा आसान है कि 'इन्हे यह दे दो, उन्हें वह दे दो,' लेकिन अगर तुम मेरी जगह होते तो पेड की चोटी पर बैठे होते।"

"हरगीज नही।"

"अब तो तुम यही कहोगे। लेकिन जरा सोच कर देखो· तुम्हारे अनुसार, मुझे उन लोगो को उनके कोटे की हद से अधिक बीज दे देना चाहिए था। इसकी जवाब-देही कौन करता? अध्यक्ष ठीक है, इस वक्त तो जवाब देना शायद आसान होता। मै कर लेता। लेकिन कौन जानता है कि इस प्रयोग का कुछ फल भी निकलेगा या नही? और मान लो कुछ न निकलता, तो? अगर गेहू काफी पैदा न होता तो? कौन जवाब देता? यही

अध्यक्ष। और फिर यह मामला शायद इतना आसान नहीं होता।"

पावेल किरीलोविच ने एक और लम्बा कश खींचा, और उसका दुबला चेहरा सिगरेट की चमक से रोशन हो उठा।

"पावेल किरीलोविच!" देमेन्तियेव ने कहा, "ईमानदारी से सच बात बताओ — क्या तुम समझते हो कि खेत में हमेशा के मुकाबले डेढ़ गुना अधिक फसल हो सकती है?"

"शायद हो सकती हो। कोशिश दिलचस्प होगी।"

"तो, मेरा भी ख्याल था कि यह कोशिश दिलचस्प होगी। मैं इस कोशिश को कर डालने के लिए जरूर कोई न कोई रास्ता निकाल लेता।"

"यही तो गर्दन फसाने का रास्ता है," अध्यक्ष ने कहा। "शायद तुम को यह न मालूम हो, इसलिए बता दू, कि लड़ाई और सूखा के बाद, अब इस वर्ष हमारे पास बीज भी काफी नहीं है और इसलिए निश्चित परिमाण से अधिक बीज बोना कानून के खिलाफ है। यह सख्त जुर्म है।"

"और क्या यह जुर्म नहीं है कि एक ऐसी नयी योजना को पूरा करने में रुकावट डाली जाय जिससे पूरे देश का भला हो सकता हो? जरा मुझे माचिस दो।"

"बैठ जाओ। उत्तेजित मत हो। तुम्हारी क्या उम्र होगी?"

"पच्चीस वर्ष।"

"मैं पैंतीस का हू। और तुम मुझसे इस तरह बात करते हो, मानो मैं सोवियत राज्य का विरोधी हू। अरे भाई, मैं मोर्चे पर था और वहां से मैंने दो-एक बातें सीखी। जरा सडक पर जाओ, और जो पहला आदमी मिले, उससे पूछो कि मै किस तरह का अध्यक्ष हू। वह तुम्हे सब बता देगा। और लोगो से अपनी इज्जत करा लेना और उनसे हुकुम मनवा लेना कोई आसान काम नही है। स्कूल में यह नही सीखा जा सकता। क्यो तुम समझते हो कि इस मोटी और बजर जमीन पर यह फार्म चालू रखना कोई आसान बात है? क्या तुम समझते हो कि लडाई के थके-मादे अधभूखे लोगो से काम लेना आसान है? क्या तुम समझते हो कि पिछले साल जब इतना सा गेहू हुआ था तो परिस्थिति आसान थी?" अध्यक्ष ने उगलियो पर गेहू की मिकदार की गिनती अकित कर दी, हालाकि अधेरे मे उसका हाथ दिखायी भी नही दे रहा था। उसने आगे कहा, "क्या मेरे लिए यह आसान न होता कि मै उराल या साइबेरिया चला जाता, जहा लडाई नही हो रही थी? काश, तुम्हे मालूम होता कि मैने कितनी राते

आखो ही में काट दी और तदबीरे खोजने के लिए कितना दिमाग लडाया! तुम्हे यह पता होता, तो ऐसी बाते न कहते।"

सड़क के उस पार के घर मे भी रोशनी गुल हो गयी और रात और भी गहरी हो गयी।

पावेल किरीलोविच ने बात जारी रखी. "मोर्चे पर मैने एक बात यह भी सीखी कि हुकुमो का पालन होना चाहिए और उनकी इज्जत करना चाहिए, क्योकि उन्हे सोवियत सरकार और पार्टी देती है। मै हमेशा हुकुमो का पालन करता हू और मै तुम्हे भी यही सलाह देता हू कामरेड देमेन्तियेव। कृषि-विभाग ने कहा कि मै अतिरिक्त बीज न दू और इसलिए मैने नही दिया।"

"तो अब क्या करना चाहते हो—जमे रहोगे और अगूठा दिखाते रहोगे?"

"अगूठा दिखाते रहोगे? ऐसी बाते क्यो करते हो? तुम्हे मालूम हो कि मैने उन्हे अपनी जिम्मेदारी पर बीज दे ही दिया था, मगर तभी कृषि-विभाग से पत्र आ गया और मैने बीज वापिस ले लिया। क्या मुझे हुकुम का पालन नही करना चाहिए!"

"पत्र में क्या लिखा था?"

"मेरी बात मत टालो. मुझे हुकुम का पालन करना चाहिए या नही?"

"जरूर करना चाहिए। लेकिन अन्य कामो के अलावा तुम्हारा यह भी काम है कि नये प्रयत्नो का समर्थन करो, अपनी ताकत भर पूरा साथ दो, अगर वह सबकी भलाई के लिए हो, फिर चाहे कोई खतरा ही क्यो न मोल लेना पडे।"

"ये नारे मुझे न समझाओ। मै सब जानता हू।"

"मै कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हू और तुम भी हो। इसलिए ये शब्द हमारे लिए महज नारे नही है। ये हमारे ही शब्द है—तुम्हारे और मेरे।"

"तुम पार्टी के सदस्य हो?" पावेल किरीलोविच ने पूछा।

"हा।"

"अब लो, यही देखो। मै समझता था कि तुम अभी कोम्सोमोल के सदस्य होगे।"

पावेल किरीलोविच ने सिगरेट का आखिरी टोटा सडक पर फेंक दिया, जो वहा लाल आख की तरह चमकता रहा।

"खैर, तो यह बात क्या वही की वही अटकी है जहा से शुरू की थी? हम लोग क्या किसी नतीजे पर नही पहुचे?"

"प्योत्र मिखाइलोविच, मुझे यह कहना है. इस काम को खत्म कर देना सचमुच बुरा है, लेकिन मैं तो यही चाहूंगा कि इसका प्रयोग कोई दूसरा ही फ़ार्म करे।"

"यह भेद तुम कैसे कर सकते हो—यह फार्म, वह फार्म? क्या हम सभी मिलकर एक विशाल सामूहिक फार्म नही हैं? पावेल किरीलोविच, तुम और मैं इस तरह हाथ पर हाथ धर कर यह इतजार करते नही बैठे रह सकते कि हमारी जिदगी को आसान बनाने के लिए कोई और फार्म कोशिशे करे।"

"इससे मुसीबत कम होगी।"

"थोडी सी मुसीबत से, क्या तुम डरते हो?"

"तुम नही डरते?"

"नही। अपनी कसम नही। जब कोई आदमी थोडी सी मुसीबत से डरने लगे, तो समझ लो कि उसका बेडा गर्क होगा। और वह निश्चय ही मुसीबत मे फस जायगा—जिदगी से उसे जरा भी सतोष नही प्राप्त हो सकता। लेकिन जो व्यक्ति सम्पूर्ण जीवन को पुरानी चीज ढहा देने और नयी चीज़ का निर्माण करने मे लगा देता है, उसकी गति दूसरी ही होती है। विशेषकर, यदि वह किसी बात से डरता न हो। उसके रास्ते मे भी मुसीबते आ

सकती है, लेकिन उसे संतोष भी पूरा प्राप्त होगा। अगर तुम जनता की भलाई का काम करोगे और बुद्धिमानी से करोगे, तो जो भी हुकुम तुम्हे मिलेगे, उनसे तुम्हे उसमें सहायता ही मिलेगी।"

"मुझे विश्वास नही होता।"

"तुम किस दुनिया मे रहते हो, पावेल किरीलोविच? हमारे कानून कौन बनाता है? जनता। खुद तुम। तो फिर. ."

"लेना की हिमायत तुम बखूबी करते हो, क्यो?" अध्यक्ष ने मुसकुराकर कहा। "अगर लेना की बात न आ पडी होती, तो मेरा ख्याल है, तुम्हारे में ऊचे विचार शायद जागृत न हुए होते।"

"कमसे कम तुम्हारे ऊपर जरूर पागलपन सवार है," देमेन्तियेव चकित होकर बोला। "हम लोग — तुम और मै—एक दूसरे को नही समझ सकते। बात करने से कोई लाभ नही।"

"मै गलत कह रहा हूं क्या? मै कायर नही हूं। अच्छा भाई, मै अपने संकट-काल के लिए रखे गये अनाज मे से बीज ले लूगा। लेकिन तुम लेना के पीछे बेकार वक्त बरबाद कर रहे हो। यह बात, मै बहुत दिनो से तुमसे कहना चाहता था।"

"मै जानता हू।"

"जानते हो? तो अच्छा है। चलो सोये।"

"चलो।"

"लेकिन सुनो, तुम कृषि-विभाग से मेरे पास कोई पत्र भिजवा दो, ताकि कभी जरूरत आ पडे तो मै अपना वचाव कर सकू। क्या भरोसा है। श्श... हौले से—मरीया तिखोनोवना डाट देगी।"

और वे पजो के बल घर मे घुस गये।

१५

चार बजे सुबह पावेल किरीलोविच दाशा के घर गया और उसको लेना के ब्रिगेड के लिए अतिरिक्त बीज तुलवा देने के लिए कह दिया। लेना ने जब यह सुना, तव वह खेत मे काम कर रही थी और यकायक उसे अपने कानो पर विश्वास भी न हुआ। वह फौरन समझ गयी कि यह किसकी करामात है और देमेन्तियेव को धन्यवाद देने के लिए वह फौरन चल पडी। लेकिन रास्ते में उसे पता चला कि कृषि-विशेषज्ञ वडे भोर ही जिला केन्द्र के लिए रवाना हो गया है और अव कुछ दिनो उसके आने की आशा नही है। इसलिए वह फिर काम पर लौट आयी।

उन्होंने बुआई शुरू कर दी। बहुत दिनो से जिस बीज की आशा कर रहे थे, उसे अत में अपने हाथो मे पाकर युवक-युवतिया आनन्दमग्न थे। उस दिन दोपहर मे भोजन के लिए कोई भी नही गया। लेना घर लौटी तो रात चढ आयी थी और पेलगेया मार्कोवना ने उसे जी भर कर झिडका सारे दिन बिना खाये-पिये कही काम होता है? दूसरे दिन पेलगेया मार्कोवना ने दूसरी औरतो से शिकायत की और उस दिन उन्होने रसदार बन्दगोभी बर्तन भर कर पकायी और उसे कम्बल से लपेटकर, गाडी पर रखकर खेत भेज दी। लडकियो को कितना ही डाटो-फटकारो, मगर वे भोजन करने नही आयेगी।

गाडी आ गयी तो दाशा ने ट्रैक्टर रुकवाया और खाने के लिए आध घटे की छुट्टी कर लेने का अनुरोध किया।

ज़मीन पर मोमजामा बिछा दिया गया और सभी लोग बैठ गये। नास्त्या बर्तन पर झुक गयी और बडे चम्मच से परोसने लगी। हर एक को तली में से एक चम्मच गाढा शोरवा और ऊपर-ऊपर से दो चम्मच पतला शोरवा दिया गया। उन्होने ट्रैक्टर ड्राइवर को भी बुला लिया। वह बड़े रौब से टहलता हुआ आया और अपना

वर्तन सामने कर दिया, जो एक खाली टीन से बनाया गया था। वह ढक्कनदार, साफ सुथरा, चिकने किनारेदार था और उसमे नर्म मुठिया लगी हुई थी। लडकियो ने उसकी तरफ ईर्ष्या से देखा।

जमीन पर शोरवा रखकर ट्रैक्टर ड्राइवर टागे फैलाकर बैठ गया और घुटनो तक बूटो के सिरे से एक चम्मच खीचकर निकाल ली। चम्मच भी टीन की तरह देखने के काबिल थी। पूरी चम्मच पर तस्वीरे खुदी हुई थी—फूल और तीर सें बिधा हृदय, लच्छेदार अक्षर, बन्दूक, और कोई ऐसी शक्ल जो लडकी भी थी और मछली भी।

लेना नें ट्रेक्टर की तरफ सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा: "हमारा खाना खत्म होते ही ट्रेक्टर चालू हो जाना चाहिए।"

"फिक्र न करो। लडाई मे मै टैक चला चुका हू," ड्राइवर भुनभुनाया। निश्चय ही वह अपने को सभी उपस्थित लोगो से वल्लियो ऊचा समझता था। "और मेरे टैक मे भी यही मोटर था। हालांकि लडाई से इसे छुट्टी मिल चुकी है, लेकिन अभी भी घडी की सुई की तरह वरावर चलता है। केनिग्सवेर्ग तक सारा रास्ता जरा भी मरम्मत के बिना पार कर लिया था। मै इसे गोर्की से मोर्चे तक ले गया

था। देखो कैसा खडा है—बेचारा वियोग महसूस कर रहा है, क्यो न? गोर्की से बिछुड गया।"

यकायक लेना उठ बैठी और ट्रैक्टर ड्राइवर की तरफ अजीब निगाह से देखा।

"क्या बात है?" दाशा ने पूछा।

"कोई खास बात नही। मुझे खाने की जरा भी इच्छा नही है। मै जा रही हू, जरा नदी देखूगी।"

आश्चर्यचकित लडकियाँ उसके पीछे अपनी आखे दौडाती रह गयी।

"क्या हमेशा ही उसका यह हाल रहता है?" ट्रैक्टर ड्राइवर ने कहा। "क्या मनहूस चेहरा-मोहरा है।"

"जरा धीरज धरो। उस मनहूस चेहरे-मोहरे के पीछे तुम भी अपना दिल तडपा बैठोगे," ग्रीशा ने अपनी रोटी पर चिपके हुए तम्बाकू के रेशे झाडते हुए कहा। "तब तुम्हे सारा मजा मिल जायगा।"

मौसम स्वच्छ और गर्म था। गुलाबी बादल तेजी से आसमान पार कर रहे थे, सूरज उनके पीछे छिप कर या उनसे बाहर निकल कर ताक-झाक कर रहा था और मिट्टी बराबर अपना रग बदल रहीं थी—अभी मटमैली, अभी स्वच्छ और अभी फिर मटमैली। नदी से मद पवन

के झौके आ रहे थे जिन से चम्मचो मे शोरबा ठडा हो जाता था।

लेना को बहलाकर वापिस लाने के लिए दाशा गयी।

"इसमे तो कोई शक नही," नास्त्या ने उसास भर कर कहा, "कि लेना के साथ कोई गम्भीर बात हो गयी है। उसे तो बडा खुश होना चाहिए था कयोकि जो कुछ वह चाहती थी, उसे वही मिल गया है। लेकिन वह खुश नही है। वह दुखी है। तुम्हे नही जान पडता? पहले वह ऐसी नही थी। थी क्या?"

"कल मैने देखा कि उसके रूमाल के कोने गीले थे। वह रोती रही होगी," लूश्का ने अपने चारो तरफ निगाहे चुरा कर देखा। भेद-भरे स्वर मे बात करना और फिर सबकी तरफ निगाहे चुरा कर देख लेना, यह लूश्का की आदत थी। वह ब्रिगेड मे सबसे छोटी लडकी थी—नुकीली नाक और जूडे का सिरा इस तरह ऊपर की तरफ मुडा हुआ मानो किसी ने तार से बाधा हो। लडकियाँ उसे कबूतरी कह कर चिढाती थी।

"कल ही मै ने उसे रोते देखा था," उसने बात आगे बढायी, "लेकिन किसी से कहना मत।"

नास्त्या बोली "उसकी आखे बदल गयी है। मानो किसी ने पुरानी आखे निकाल ली है और नयी जड दी है। क्या ख्याल है, ऐसा क्यो है?"

"वह घबरा गयी है," लूश्का ने चारो तरफ निगाहे डाल कर कहा।

"घबरा किससे गयी है?" ग्रीशा ने पूछा।

"किसी से कहना मत। बीजवाली बात उसी ने शुरु की थी और अब वह घबरा रही है कि यह कैसे होगा। आखिरकार, जवाब तो उसी को देना पडेगा।"

"हम सब मिलकर जवाबदेही कर लेगे," ग्रीशा ने कहा।

नास्त्या ने उसास भर कर कहा "वजह यह नही है। विश्वास रखो कि आखिर अगर हम सब भी मुकर जाय तो भी वह डटी रहेगी।"

किसी ने कोई टीका नही की। लूश्का ने बिल्ली की तरह, भाप देती हुई चम्मच से शोरवे के आखिरी कतरे भी चाट लिये। ट्रैक्टर-ड्राइवर ने अपना शोरवा खत्म किया और थोडा और मागने लगा।

लूश्का ने यकायक कहा "उसे क्या हो गया है, यह मुझे मालूम है। लेकिन किसी से कहना नही, एक भी आदमी से न कहना।"

सभी लोग उसका मुह देखने लगे।

"कृपि-विशेपज्ञ ने उसे ठुकरा दिया है। असली रोग यही है।"

"तुम हो तो होशियार!"

"और नही तो क्या!"

ट्रैक्टर-ड्राइवर अपनी सुन्दर चम्मच को निरखते हुए बोला·"बेचारी को ढाढस बधाना ही होगा।"

"तुम से भी होशियार लोग उसे समझा चुके है और सब अपना सा मुह लेकर रह गये।"

"चलो, आज रात हम सब लोग उससे मिलने चले," नास्त्या ने कहा। "हम लोग जी भर बाते कर डालेगे और रो लेगे। चलोगी?"

ग्रीशा ने उछल कर कहा·"उसे धीरज बधाने का क्या ही बढिया उपाय है! पुरानी लेना को अपने असली रूप मे क्या तुम लोग देखना चाहोगे,घटे भर के भीतर ही?"

"वाह क्या बहादुर आदमी हो!" लूश्का ने चिढकर कहा।"क्या तुम सचमुच समझते हो कि तुम उसे खुश कर लोगे।"

लूश्का के हृदय मे ग्रीशा के लिए विशेप भाव था, लेकिन दुर्भाग्य से ग्रीशा को यह मालूम नही था।

वह कहता ही गया "मैं कर सकता हूं, तुम कर सकती हो और हम सब कर सकते हैं। आओ हम लोग जी-तोड काम में जुट कर उसे चिढा डालें। याद करो कि जब हम लोग खाद उतरवा रहे थे तो उसकी क्या हालत थी? उसका सारा शरीर लगभग काप रहा था।"

"मैंने उसमे कोई खास बात नही देखी," लूश्का ने चारो तरफ निगाह घुमा कर कहा।

ग्रीशा के सुझाव का किसी ने भी उत्साह से स्वागत न किया, लेकिन जब लेना पहले जैसी खामोश और खोयी-खोयी दशा में लौट आयी तो उसके सभी साथी पूरे उत्साह के साथ काम मे जुट गये और बीज की मशीन को भरने मे रिकार्ड कायम कर दिया। ग्रीशा गाडी तक दौड जाता और जोर लगाकर बोरा उठाते समय चिल्ला उठता। खेत पर रुपहली लकीरें छोडता हुआ ट्रैक्टर खडखड करता बढता जा रहा था। बीज का डिब्बा बद होते समय आवाज करता रहा और बोनेवालो के सिर पर कौवे मडराते रहे।

पडोस के खेत से पावेल किरीलोविच आ धमका। आज उसने न तो किसी को उपदेश दिया और न फटकारा। कुछ देर खडे रहने के बाद, उसने बुआई की जाच की, फिर बिना एक शब्द कहे मुड गया और चला गया। जब

वह सबकी आखो से ओझल हो गया, तभी वह सतोप के साथ धीमे से भुनभुनाया।

लेना और अधिक उत्साहित हो उठी। उसके कपोलो पर रंग झलक आया और वह ट्रैक्टर-ड्राइवर पर चीखने-चिल्लाने भी लगी। ग्रीशा ने उसकी तरफ देखा और फिर लूज्का की तरफ आख मारी।

बिना किसी आशा के, चार बजे के करीब दो गाडिया और आ पहुंची, जिनमे से एक को अनीसिम हाक रहा था। पता चला कि पावेल किरीलोविच ने उन्हे कोम्सोमोल ब्रिगेड के लिए भेजा है। आखिरकार युवक-युवतियो के प्रयत्नो से उसका भी दिल पिघल गया।

अब चूकि उनके पास पाच घोडे हो गये थे, इसलिए काम और भी तेज हो उठा। कभी-कभी पहली गाडी खाली ही हो पाती कि दूसरी गाडी भी आ पहुचती और दूसरी के बाद फौरन ही तीसरी भी आ धमकती। धूल और पसीने से लथपथ ग्रीशा ने आवाज लगायी "हुर्रा!"

लेना ने उसकी तरफ ऐसी कडी निगाह से देखा कि उस का काम थम गया।

"तुम यो गला फाड-फाड़ कर क्यो चिल्ला रहे हो," लेना ने व्यग्य से कहा और ग्रीशा ने देखा कि उसकी

आखो मे सुवह की पीर अभी भी छायी हुई है। "तुम चीखते हो, मानो कही फस गये हो। पाच के बजाय हमारे पास पन्द्रह गाडिया होती तो "हुर्रा" चिल्ला लेते।" और लेना फिर बीज की मशीन के पास चली गयी।

पावेल किरीलोविच फिर आ गया। स्पष्ट था कि वह दाशा को कुछ सलाह देना चाहता था, लेकिन तभी दूर पर उसे एक विचित्र गाडी नजर आयी और वह आखो पर छाया करके देखने लगा कि उसमे कौन आ रहा है।

गाडी कुछ नजदीक आ गयी तो देखा कि उसको "लाल हलवाले" फार्म का अध्यक्ष हाक रहा है।

"कहो भाई!" पावेल किरीलोविच ने आवाज़ लगायी। "शहर की क्या ताजी खबर है?"

घोडा रुक गया। नुकीली दाढी वाला एक चतुर आदमी रेलवे कर्मचारी जैसी टोपी पहने, टागे धनुपाकार लटकाये, गाडी के किनारे पर बैठा था। उसकी तेज आखें लोमडी की तरह छोटी हो गयी थी।

"बडी-बडी खबरें है, कहा तक कहूगा।" उस आदमी की आवाज मे विचित्र प्रकार का जवान लहजा था, कुछ हद तक उसे बचकाना लहजा भी कह सकते है।

"तुम्हारे यहा बुआई करने वाले लोग भी बड़े जीवट के है। क्या निकीफोर लोहारखाने में है?"

"हा"

"मै धुरे की कील बदलवाना चाहता हूं। इसने मुझे तग कर रखा है और अभी तो मुझे पूरे बीस मील और जाना है। पिछले हफ्ते ही मैने बनवायी थी, लेकिन टूट गयी। ये है अपने काम के तरीके!"

"चले जाओ। निकीफोर तुम्हारे लिए नयी बना देगा।"

रेलवे कर्मचारी जैसी टोपी पहने व्यक्ति ने क्लक की आवाज़ की ओर घोडा धीरे-धीरे चल दिया।

अध्यक्ष ने फिर पूछा "लेकिन खबर क्या है?"

"उन्होंने बाजार के पास एक नया सिनेमा घर बना दिया है। लोगो के रहने के लिए तो मकान नही है, और हम लोग सिनेमा-घर बना रहे है। ये है अपने काम के तरीके! और देमेन्तियेव को निकाल दिया गया है।"

"निकाल दिया गया?" लेना चिल्लायी और उसकी नाक पर गुलाबी बूंदें झलक आयी। "क्यो?"

"क्या पता? कुछ लोग कहते है कि वह इसलिए निकाला गया है कि उसने तुम्हारे फार्म के काम में दखलंदाज़ी की थी। उसे बिल्कुल निकाला नही गया है

लेकिन अब उसे दफ्तर का काम दे दिया गया है। अब कुर्सी पर बैठता है और कागजो पर दस्तखत बनाता है। अपने काम मे वह खूब होशियार है, इसलिए वे लोग उसे दफ्तर मे चिपकाये हुए हैं। ये है अपने काम के तरीके।"

लेना ने "लाल हलवाले" फार्म के अध्यक्ष को जाते हुए नही देखा और न पावेल किरीलोविच ही वहा से टला। एक के बाद एक घोडे आते गये — वलेत, झाल्का, जिप्सी, इगला। ग्रीशा कुछ चिल्ला रहा था। ट्रैक्टर खड़खडाता हुआ चला जा रहा था। लेकिन लेना को इन सबका कोई अहसास न था।

"यह कैसे हो सकता है?" मशीन की तरह बीज के डिब्बे में अनाज को समतल करते हुए लेना सोच रही थी। "प्योत्र मिखाइलोविच को अपने पद से हटा दिया गया क्योकि उन्होने पावेल किरीलोविच से कहा था कि मुझे बीज दे दिया जाय। दूसरे शब्दो में, यह मेरी वजह से हुआ। लेकिन उसने हमारे फार्म को नुकसान पहुंचाया है क्या? हमारा प्रयोग क्या इतना मूर्खतापूर्ण है कि इसके लिए किसी को निकाल दिया जाय? . खैर, हम उन्हे दिखा देंगे। हम उन्हे बता देंगे कि प्योत्र मिखाइलोविच सही थे। "लेना की आखे चमक उठी।" हम देख लेगे कि अंत

मे बाज़ी किसके हाथ नहती है। अभी तो उन्होने उसे मात दे दी है। लेकिन शरद ऋतु मे वह उन्हे मात दे लेगा। और उस "उ उ उ उ उ उ उ उ" को भी।" उसने अपने चारो तरफ देखा। ट्रैक्टर खामोश खडा था। गाडिया दिखायी नही दे रही थी। सूरज एक बादल के पीछे छिप गया था और खेत पर छाया पड रही थी।

"हम लोग कितने धीमे है! ग्रीशा चिल्लाता रहता है, कुछ नही करता, बस शोर मचाता है। अगर हमारे पास कुछ घोडे और होते तो हम आज ही सब काम निपटा देते। या अगर कार होती। लेकिन कार इस कीचड मे न चल सकेगी।"

अनीसिम सडक पर प्रगट हुआ। वह अपनी गाडी के साथ-साथ चल रहा था और रास घोडे की पीठ पर डाल दी थी। बोझा घसीटने के लिए घोडा जब जोर लगाता तो उस थके हुए जानवर का सिर कभी ऊपर और कभी नीचे हो उठता था। उसी क्षण खेत को धूप मे डुबाते हुए सूरज निकल आया, और लेना को यकायक प्रेरणा मिल गयी।

"टेकमैन, सुनो तो!" वह ड्राइवर के पास दौड कर जा पहुची और बोली। "हमें यह करना होगा। आज रात हम तुम्हारे ट्रैक्टर के साथ दस-गाडिया जोत देगे और सुबह तक हमारा सारा बीज यहा, इस सडक के किनारे

आ जायगा। यहा से बीज भरने के लिए दो घोड़े ही काफी होगे। हम सारी रात काम करेंगे।"

"क्या बढिया बात निकाली है?" ट्रैक्टर ड्राइवर ने ताना दिया। "गाडिया ढोने के लिए तुम्हे ट्रैक्टर कौन इस्तेमाल करने देगा?"

"अगर तुम नही करना चाहते, तो किसी और से करा लेगे। ग्रीशा, तुम ट्रैक्टर चला लेते हो, क्यो?"

"चला सकता हू।"

"तो आज रात इसे गाव वापिस ले चलो और इस टेकमैन को हम लोहारखाने मे बद कर देंगे, ताकि यह अपना मुह बद रखे।"

"चच्-चच्," हैरान ड्राइवर ने ग्रीशा के चौडे कधो की तरफ नजर बचाकर देखते हुए कहा।

१६

उन्होने उसी रात लदाई शुरू कर दी। और उन्हे टैक्टर-ड्राइवर को लोहारखाने मे बद भी नही करना पडा। ट्रैक्टर को वह स्वय गाव ले गया और उसमे गाडियो को जोता और बोरे ढोने तक मे सहायता की। अधेरा घना था। लेना गैराज गयी, एक लॉरी-ड्राइवर को जगाया, उसे

एक कार अनाज-गोदाम तक लाने के लिए मजबूर किया और कार की सामनेवाली बत्तिया खोलकर वहा खडा कर दिया। दाशा को छोडकर, ब्रिगेड के बाकी सभी सदस्यो ने लदायी मे मदद की। गोदाम की दीवालो पर बडी-बडी मानवीय छायाए आती-जाती दिखायी दे रही थी। अन्त में सात गाडियो की एक ट्रेन गाव से गुजर कर खेतो पर पहुच गयी और आश्चर्यचकित गाववाले, शोरगुल से जागकर, खिडकियो मे खडे ताकते रहे। लेना ट्रैक्टर के साथ-साथ दौड रही थी, उसका रूमाल सिर पर से उड गया था और पीठ पर खाली थैले की तरह लटक रहा था।

१७

ग्रीष्म की सुहानी रातो मे, जब घरो मे रोशनिया गुल हो जाती है और माता-पिता बडबडाते हुए लेट जाते है, तब गाव के लडके-लडकिया किसी सर्वप्रिय स्थान पर जमा होते है।

मरीया तिखोनोवना के घर के पास एक बडा लट्ठा पडा हुआ था जो साल-दर-साल धूप मे पडा रहने के कारण पूरी तरह सूख गया था। उसका रग रुपहली चमक लिये मटमैला सा था; जहा कभी शाखाए थी, वहा गाठे पडी

हुई थी और दरारे इस खूबसूरती से पडी हुई थी मानो किसी ने समझ-बूझकर उन्हे बनाया हो। उसका एक चौथाई भाग जमीन मे गडा हुआ था। इस लट्ठे और मरीया ति-खोनोवना के मकान के बीच की जगह मे घास की एक पत्ती भी नही उग सकी थी, क्योकि नाच के जूतो और स्लीपरो से वह जमीन लोहे की तरह सख्त हो गयी थी। उस लट्ठे और मकान के बगल में बनायी गयी बेंच के नीचे से कुछ धूल भरे जगली पौधे कातर भाव से झाक रहे थे। इस जगह को चार बडे भोज वृक्षो से घेर दिया गया, जिनके तले लताओ से ढके थे और यह चमत्कार की बात थी कि फासिस्ट विध्वस से यह सब बच गये।

बाईस मई को बहुत रात गये, गाव के युवक-युव-तिया इस स्थल पर जमा हुए। कुछ सर्दी थी। कभी-कभी हवा का झौका भोज-वृक्षा की पत्तियो को खडखडा जाता और फिर एक क्षण बाद दूर के बागीचे में उसके कटकट-फिरने के स्वर सुनायी देने लगते।

यकायक किसी ने माचिस जलायी और अधेरे मे मुट्ठी भर रोशनी प्रगट हो गयी। लूश्का ग्रीशा से छिटक कर हट गयी, मानो किसी ने डक मार दिया हो, वह जल्दी-जल्दी अपने सिर से रूमाल बाधने लगी और पहचाने न

जानेवाले चेहरों की चमकती हुई आखें तथा उनके होठों के बीच दबी हुई सिगरेटे उस उजाले की तरफ घूम गयी।

"लेकिन हम लोग थक गये है..." ग्रीशा का स्वर गूजा।

"थक गये हो! अभी तो बीस दिन भी नही बीते है और तुम अभी ही थक गये हो। इस तरह हम नही चल सकते," लेना ने कहा। "दाशा ने हमें क्या सिखाया है? कि सबसे जरूरी चीज है निराई करना। लूश्का के खेत मे इतनी घासपात है कि तुम्हे ऐसा लगेगा कि उसने बीज के बजाय घास बोयी है। मेरा ख्याल है कि हमे लूश्का के प्लाट को उससे ले लेना चाहिए।"

"मै नही छोडूगी।"

"क्या! तो तुम वक्त पर निराई क्यो नही करती? दो या तीन दिन मे गेहू ऊचा हो जायगा और तब मै तुम्हे उसे कुचलते हुए घूमने नही दूगी।"

"हम हाथ से निराई नही कर सकते। इस तरह कभी खत्म नही होगी।"

"तो अपने दातो से करो या मन चाहे जैसे करो। अगर तुम बिल्कुल नही कर सकती, तो मत करो। जरा ग्रीशा का प्लाट देखो—तालाब की तरह साफ है। उसमें

एक भी घासपात नही है। तुम्हे शर्म नही आती लूश्का? और वह तो लडका है।"

"चलने भी दो," ग्रीशा भुनभुनाया। "उसको मै सभाल दूगा।"

"अच्छा तुम करोगे, तुम?" लूश्का चिल्लायी। "तुम हाथ मत लगाना!"

लेना के ठीक सिर के ऊपर एक खिडकी खुली और उसमें से पावेल किरीलोविच का अस्त-व्यस्त सिर प्रगट हुआ।

"शैतानो! तुम लोग किसी को जरा आराम भी न करने दोगे?" उसने नीद की खुरखुरी आवाज में कहा।

"हम लोग कोम्सोमोल की मीटिंग कर रहे हैं," लेना ने कहा। "विघ्न मत डालो!"

"मै तुम्हे सुबह पाच वजे ही विस्तरे से खीच लूगा, तब तुम्हे मीटिंग का मजा मिल जायगा!"

"हम लोग खुद सुबह चार वजे उठेगे।"

पावेल किरीलोविच ने इसके माकूल जवाव के लिए दिमाग दौडाया, लेकिन उसे वडी नीद सता रही थी। उसने जभाई ली और खिडकी तडाक से बद कर दी।

"समझता था कि हमें डरा देगा।" लेना ने कहा। "तो फिर मै लूश्का का प्लाट लिए लेती हू।"

लूश्का ने ठुमकते हुए कहा. "तुम ऐसा कैसे कर सकती हो? तुम्हारे पास, वैसे भी सबसे खराब प्लाट है। उसमे हमेशा घासपात रहती है। किसी से पूछ लो। मेरे बगल मे नास्त्या का प्लाट है और वह भी खूब घासपात से भरा है।"

"अभी हम नास्त्या की चर्चा नही कर रहे है। लेकिन तुम्हारा प्लाट तो हमे ले ही लेना होगा। तुम्हे तो देना ही नही चाहिए था।"

"मै उसे नही छोडूगी।"

"अच्छा भाई, हम लोग वोट ले ले," अधेरे मे ग्रीशा की आवाज आयी।

सभी हस पडे। खिडकी एक झटके से दुबारा खुली।

"सभी लोग इसी दम यहा से न हटे, तो मै तुम्हारी मीटिग पर घडा भर पानी डाल दूगा," पावेल किरीलोविच ने कहा और उसके शब्दो का समर्थन धातु के बर्तन की खडखडाहट ने किया।

युवक-युवतिया मौन हो गये। लेना पजो के बल बेच से उठकर लट्ठे पर जा बैठी। खुली खिडकी मे पावेल किरीलोविच कुछ देर तक खडा रहा, लेकिन एक भी स्वर न वोला। एक और जमाई लेकर वह हट गया।

लेना ने कानाफूसी की· "ज़रा खामोश रहो। और ग्रीशा, अब कोई मजाक न छेड़ना। मज़ाक की कोई बात नही है।"

"मैं और मजाक? मैंने सिर्फ यही कहा था कि मसले पर वोट ले लिया जाय।"

"सब कुछ बिगाड़ने पर तुले हो?" लेना ने शुरू किया "इतने काम के बाद, इतने काम के बाद "

पास मे किसी की आहट सुनाई दी।

"ये कौन है?" नास्त्या ने पूछा।

"भापना मुश्किल नही है।" ग्रीशा ने कहा। "उसके पेट्रोल की गध मील दूर से मिल जाती है।"

"क्या मैं शामिल हो सकता हू?" ट्रैक्टर-ड्राइवर ने पूछा।

"हा, बीच मे मत बोलना। यह कोई प्रीत-भोज नही है।" लेना ने जवाब दिया और अपनी बात फिर शुरू की· "इतना काम करने के बाद, क्या तुम लोग इसे मझधार में छोड़ देना चाहते हो?"

"कौन बोल रहा है? लेना, तुम? मैं तुम्हारे पास बैठ सकता हूँ?"

"बैठ जाओ, लेकिन जरा उधर खिसको .. और उधर.. मुझे तुम्हारे ग्रीज की गध नही चाहिए। हा, तो सब लोग सुनो..."

"तुम लोग इतने गम्भीर क्यो हो?" ट्रैक्टर-ड्राइवर ने टोक दिया। "क्या तुम लोग अपना दिमाग काफी नही खपा चुके? चलो, एक गीत हो जाय।"

"तुम जरा उधर को खिसको दोस्त", ग्रीशा ने कहा।

"मुझसे पिड छुडाना चाहते हो?"

"ऐसी बात तो नही, लेकिन, अगर तुमने मुह बद न रखा, तो मै ऐसा घूसा जमाऊगा कि तुम हवा होकर सीधे अपने मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन वापिस पहुच जाओगे।"

"वाह, वाह! और कही मै ने तुम्ही पर जमा दिया तो?"

यह देखकर कि इस तरह झगडा बढ जायगा, लेना ने शीघ्रता से कहा: "रहने दो ग्रीशा। एक गीत क्यो न हो जाय? टैकमैन, तुम उधर खिडकी के नीचे बैठो और गाने की अगुआई करो।"

"अरे नही, मै तो तुम्हारे पास बैठूगा।"

"तो हम लोग नही गायेगे। उधर जाकर बैठो। चलो, मै तुम्हे सीट तक पहुचा दू।"

"ट्रैक्टर-ड्राइवर खिडकी के नीचेवाली सीट पर जा बैठा और दूसरे लोग यह चर्चा करने लगे कि कौन सा गीत गाया जाये।

"रोवन वृक्ष," नास्त्या ने सुझाव दिया।

"बहुत करुण है," ग्रीशा ने एक-एक के कान पर खिखियाते हुए कहा। "आओ हम लोग पानी ढोनेवालो का गीत गाये; याद है?"

"किसे न होगा? "वोल्गा-वोल्गा" फिल्म का है। तुम ऐसा एक गीत नही बता सकते, जो मुझे न मालूम हो," ट्रैक्टर-ड्राइवर ने कहा। "और न कोई आपेरा बता सकते हो।"

"जरा बढिया ढग से और जोर से," ग्रीशा ने कहा। उसे अचानक खासी का दौर-सा चल गया।

"मैने इसका गाना सुना है। उसे तुम्हारे सिखाने की जरूरत नही है," लेना ने कहा।

ट्रैक्टर-ड्राइवर ने गला साफ किया, बेच पर जरा और आराम से जम गया और ये हिदायते दी·

"पहली पक्तिया मै खुद गाऊगा और तुम लोग चुप रहना और जब मै त्रा-ला-ला-ला पर आ जाऊगा तो तुम लोग भी साथ देने लगना। होशियार?"

"मुझे अचरज की लगती बात
कि कैसे मुझ जैसा इसान..."

खिडकी घडाक से खुल गयी और एक घडा भर पानी गीले चिथडे की तरह जमीन पर आ गिरा।

"लो मजा चखो," पावेल किरीलोविच ने अधेरे में घूरते और किसी को भी न देख पाते हुए कहा। "अब गाओ तुम लोग अपना कोरस।"

एक कहकहा गुज उठा। कही दूर कोई कुत्ता भौकने लगा।

पहले तो किकर्त्तव्यविमूढ ट्रैक्टर-ड्राइवर ने घबरा कर चारो ओर देखा और फिर यह देखकर ग्रीशा को आश्चर्य हुआ कि वह भी दबी-सी और अपराधी जैसी हसी हस दिया।

"पावेल किरीलोविच, तुम्हे अपने पर शर्म आना चाहिए," लेना ने कहा। "हम लोग यहा काम की बात करने जमा हुए है।"

"क्या बढिया काम है! तुम्हारी चख-चख गाव के दूसरे छोर तक सुनायी देती है।"

"हम नही, यह टेकमैन कर रहा है। हम लोग अपने

खेत के बारे में बात कर रहे हैं। उसमे फिर घासपात भर गया है।"

"उस पर तुम लोग कल भी बात कर सकते हो। जाओ सोओ, और जितनी तेजी से हो सके, यहा से भागो। वह घासपात कैसा है?"

"जगली जई है, पावेल किरीलोविच, और हम लोग उसे अपने हाथो उखाड नही पायेगे।"

"तुम नही उखाड पाओगे, क्यो नही? मै तुम लोगो को उखाड दूगा! कल ही देखो कि इस बार एक भी घासपात न रह जाय। मै खुद देखने के लिए आऊगा।"

"तुम इतना शोर क्यो मचा रहे हो, पावेल किरीलोविच?" एक आवाज घर के अदर से आयी। "क्या मामला है?"

"कोम्सोमोल के लडके-लडकियो से मै फिर लड़ रहा हू मरीया तिखोनोवना।"

फर्श पर किसी के नगे पैरो की चाप पडने की आवाज आयी और फिर मरीया तिखोनोवना खिडकी पर प्रगट हुई।

"कौन है? कोई नही। मेरी कसम, पावेल, तुम जरूर सपना देख रहे थे।"

"कोई नही है? उनकी पूरी फौज वहा बैठी हुई है।"

कोई हिला-डुला तक नही। नौजवान लोग मरीया तिखोनोवना से बडा डरते थे।

"तुम जरूर सपना देख रहे हो, पावेल। एक चिडिया भी तो नजर नही आती। जाओ, सो जाओ। बेचारा, दिन भर के काम से कैसा थक जाता है।"

"मै कहता हू, वे सब वही बैठे है। वे छिप रहे है। उन्हे दाशा के खेत में घासपात मिला है"

"तो क्या हुआ? मशीन से उन्हे उखाड दिया जायगा!"

"क्या सचमुच?" एक भोज वृक्ष बोल उठा। "और साथ मे बीज भी सब उखड जायगा।"

"वह हमारी होड मे है।" एक दूसरे भोज वृक्ष ने ग्रीशा की आवाज मे कहा। "इसीलिए हमे ऐसी बुरी सलाह दे रही है।"

"तुम लोग कब समझदार बनोगे?" मरीया तिखोनोवना ने आह भरी। "जमीन क्या हम सबकी नही है? खेत मेरा है या तुम्हारा, इसमे मेरे लिए क्या फर्क पडता है? गेहू जब उग आता है तब उस पर किसी का नाम नही लिखा रहता।"

- "तुम क्या सुझाव दे रही थी?" पावेल किरीलोविच ने पूछा! "कल्टीवेटर इस्तेमाल किया जाय?"

"उस मशीन को, जिसमे पीछे कघे की तरह दात होते है, तुम क्या कहते हो, मै नही जानती। बीज, करीब साढे तीन इच गहरा बोया गया है और घासपात की जडे पाच या सात इच तक गहरी होती है। गेहू को छुए बिना घासपात निकाल देने के लिए बडी होशियारी की जरूरत होगी।"

"इसमे खतरा है," पावेल किरीलोविच ने कहा।

"हा, है। लेकिन कुछ तो करना ही पडेगा। मै कल वहा गयी थी और खेत देख आयी थी। अपने हाथो से इस घासपात को तुम कभी न निकाल सकोगे।"

"यही तो मै कहती थी," लूस्का बोल उठी, "लेकिन ये लोग मेरी सुनते ही नही।"

"सब लोग सुनो," पावेल किरीलोविच चिल्लाया।

नौजवान दल खामोश हो गया।

"पास आ जाओ। डरो नही।" पावेल किरीलोविच ने कहा। "कल हम लोग इसे कर देखे। अगर कुछ बिगडेगा, तो जबाब मै दे लूगा।"

युवको ने आपस में इस पर विचार किया और घर

चले गये। उन्हे शक था कि कल्टीवेटर कुछ काम दे सक-
ता है।

पावेल किरीलोविच वापिस चारपाई पर चला गया, लेकिन मरीया तिखोनोवना खिडकी के सामने खडी रही। उसे ऐसा महसूस हुआ कि कोई अभी भी उस लट्ठे पर बैठा है, हालाकि उधर नदी मे मेढको के टर्राने और भोज वृक्ष की पत्तियो के खड़खड़ाने के अलावा कोई और आवाज़ नही सुनायी दे रही थी। मरीया तिखोनोवना ने अपने हाथो से क्रास बनाया और बडी सावधानी से, एक बार मे एक तरफ का पल्ला बद करते हुए, खिडकी बद कर दी। इसके बाद वह अपनी गाय को देखने के लिए छपरे मे चली गयी। एक बार उसकी नीद टूट गयी, तो फिर अब रात भर नीद नही आयेगी।

उस लट्ठे पर लेना बैठी हुई थी।

उसने सोचा· "मुझे दाशा से बात कर लेना चाहिए। इस उपाय से कुछ भला न होगा। प्योत्र मिखाइलोविच से भी बात कर लेना बेहतर होगा। वह क्यो नही आ जाता? वह इतवार को आ सकता था। वह चिट्ठी ही क्यो नही भेज देता? कम से कम एक छोटा सा पत्र तो लिख ही सकता था। क्या हम लोगो को भूल गया है? या हम

लोग क्या कर रहे है, उसकी उसे चिन्ता नही है? या उसे शर्म आती है, क्योकि वह निकाल दिया गया है? इस क्षण वह कहा होगा? सो रहा होगा? काम करता होगा? या मेरी तरह उस पतले से, नन्हे से वक्र चाद की तरफ ताक रहा होगा?"

१८

२४ मई को उन्होंने खेत पर कल्टीवेटर चला दिया। दूसरे दिन घासपात के पौधे जमीन से लग गये और अगले दिन मुरझा गये और सूख गये। और गेहू कल्पनातीत गति से बढने लगा।

जितना ही वह ऊचा उठता जाता, उतने ही अधिक दूसरे ब्रिगेडो के किसान उसे देखने के लिए आते। यकायक ऐसे आश्चर्यजनक गेहू को उगाने मे हाथ बटाने के लिए हर आदमी बडा उत्सुक दिखायी देने लगा।

भरीया तिखोनोवना अक्सर आती थी और बडे काम की सलाह देती थी।

लेकिन लेना उस मा की तरह ईर्ष्यालु और असतुष्ट हो उठती थी, जिसको कोई दूसरी औरत यह सलाह दे बैठे कि उसको अपने लाडले सपूत का लालन-पालन किस

तरह करना चाहिए। वह अपने कोम्सोमोल के साथियों और अध्यक्ष के अलावा किसी को अपनी सहायता न करने देती थी—मिट्टी तक न छूने देती थी और किसी की वालटियरी सहायता लेने से उसे घृणा थी।

जून में बालें फूलने लगी।

मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन से बडा कृषि-विशेषज्ञ आया और जब उसने हर बाल मे गेहू के दानो की सख्या गिन ली तो आश्चर्य से सास रोक कर रह गया। मरीया तिखोनोवना ईर्ष्यालु हो उठी थी: इसे बूढा अनीसिम भी देख रहा था।

लेकिन लेना ने इस तरफ कोई ध्यान नही दिया। अक्सर जब काम के घटे खत्म हो जाते और सभी लोग गाव लौट जाते, तो वह खेत में ही रह जाती और रात घिरने तक, गेहू के इस सुनहरे समुद्र की तरफ अपलक निहारती वहा निश्चल खडी रहती।

ऐसे समय में उसके मन मे विचार उठते? वह सोचती कि अगले वर्ष हमारा सामूहिक फार्म सभी खेतो में बुआई का यही तरीका इस्तेमाल करेगा, वह सोचती कि मुझे उपज बढाने के और भी तरीके खोज निकालने चाहिए, वह सोचती कि प्योत्र मिखाइलोविच इस सफलता

के विषय में सुनकर कितने प्रसन्न होगे, वह लेना को धन्यवाद देगे और फिर उन्हे सारे जिले का सबसे बडा कृषि-विशेषज्ञ बना दिया जायगा।

वह आनदपूर्वक इन कल्पनाओ मे लीन रहती और उसे इसका जरा भी मान न था कि इस तरुण और कोमल गेहू के ऊपर गाज गिरनेवाली है।

१६

आधी रात गये लेना की नीद टूट गयी। कमरे में घुटन थी। उसने खिडकी खोल दी। परदा, खिडकी की सिल पर रखे हुए डिब्बे को गिरा कर, छत छूता हुआ उडने लगा।

उधर खेतो की तरफ, खलिहान के ऊपर भुके हुए बादल उडते चले जा रहे थे। पडोस का घर, उसकी वास की चहारदीवारी और एक मात्र एस्पेन का पौधा धुधले अधकार मे एकाकार हो गये थे। हवा के थपेडे हाते को पार कर एस्पेन की भाडियो मे इस तरह बलबला रहे थे, मानो वहा कोई चीज उबल रही हो।

तूफान घिर रहा था।

चद मिनटो मे हवा शान्त हो गयी और लेना को

जागी हुई मुर्गियो की मद-मंद, नीद-भरी कू-कू-कू सुनायी देने लगी। तभी उसे वर्षा आती हुई सुनायी दी। लो, किसी दूर के खलिहान पर उसकी टप-टप होने लगी, अव उसने सडक पार कर ली, अव वह सीढियो के करीव आ गयी, और अव पूरे ताव मे आ गयी। वर्षा ने गलगल करना शुरू कर दिया, फिर चाबुक की फटकार की तरह कुल्ली कर दी और ओसारे के पास थप-थप चोट करने लगी। खिडकी मे से गीली मिट्टी की गध उठी और तापमान गिर गया।

यकायक एक कौध ने खडिया से सफेद एस्पेन और उसके नीचे खडिया-सी सफेद घास को और तिरछी, तनी हुई, वर्षा की चादर को जनमग कर दिया। फिर सव-कुछ अधेरे मे डूव गया और गर्जना धीरे-धीरे खलिहानो के पीछे लुढकने लगी।

आधी चीखने लगी। पानी की गर्जना और भल-भल के वीच लेना को एक ऐसे स्वर का अनुभव हुआ जो वूदो की वौछार के समान तो नही था। वह इस तरह का सख्त और सूखा ठुमका था, मानो कोई पोरो की हड्डियो से कोई दरवाजा खटखटा रहा हो। लेना ने खिडकी से झाका। ओले। ओलो की सफेद गेदे ओसारे पर पड

रही थी और छिटक कर इस तरह दूर जा गिरती थी मानो वह रबर की बनी हो, और फिर इस तरह ढेर बन कर जमा हो जाती थी मानो कीड़े-मकोडे हो।

"मा!" लेना चिल्लायी।

"तू सोयी नही?" पेलगेया मार्कोवना ने सिर उठाकर पूछा। "क्या बात है?"

"उठ तो मा! देख, ओले गिर रहे है।"

पेलगेया मार्कोवना उछल कर उठ बैठी, खिडकी की तरफ दौड पडी, आवारा पर्दे को थाम लिया और आसमान की तरफ ताकती हुई खडी रह गयी।

"मा, अब क्या हो?"

"पागल न बनो। इसे क्या ओला कहते है? अरे, ये तो मटर से भी बड़े नही है। जरा आसमान की तरफ देख खुल रहा है। जल्दी ही सब ठीक हो जायगा। और ओले वाले बादल एक तरफ को है। उन से गेहूं को नुक्सान नही होगा।"

बिना हिले-डुले, आसमान ताकती हुई, पेलगेया मार्कोवना बडी देर तक खिडकी के पास खडी रही और इस तरह खडे हुए जितना ही समय बीतता जाता उतनी ही लेना की घबराहट बढती जा रही थी।

"मै जा रही हूं, मां!" अंत में वह बोल उठी।

"ऐसे मौसम मे?"

"मै अब बरदाश्त नही कर सकती। मुझे जाना ही होगा और खुद देखना होगा।" और लेना जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगी।

इस बीच ओले भी और बड़े, और बड़े होने लगे। कुछ तो चिड़िया के अडे के बराबर थे।

लेना अपना रूमाल लपेट रही थी कि ओसारे मे सीढ़ियों पर किसी की पदचाप सुनायी दी। दरवाज़ा खोला गया और भेड की खाल का कोट ओढे हुए अनी-सिम ने प्रवेश किया।

"लेना है?" अपना कोट कोने में फेंकते हुए उसने पूछा। "लेना, इसके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? एह, ऐसी बात कैसे हो गयी? क्या तुम खेत देख आयी हो?"

"मै जा रही हू।"

"मुझे भी साथ ले चलो। ग्रीशा चला गया लेकिन मै उसका साथ न पकड सका। और मुझे अकेले जाते डर लगता है—इस आधी-तूफ़ान से मुझे चिढ है।"

"ठहरो, बाबा," पेलगेया मार्कोवना ने कहा। "थोडी देर में सब शान्त हो जायगा।"

"मै कैसे रुक सकता हू? शायद हम लोग कोई रास्ता निकाल सके," अनीसिम ने हताश भाव से हाथ झुलाते हुए कहा। "ओलो को रोकने के लिए, पहले लोग खिडकियो से बाहर झाड़ू फेका करते थे।" उसने थोडी सी सूखी, आनन्दहीन हसी हस दी। "उन दिनो लोगो को कोई खास ज्ञान नही था।"

बाहर घोडो की टाप सुनायी दी। काठी से कोई कूदा और जल्दी-जल्दी सीढियो पर चढने लगा।

अनीसिम ने आहट पर कान दिया और कहा: "अध्यक्ष है।"

और सचमुच पावेल किरीलोविच ने कमरे मे प्रवेश किया। वह नीचे से ऊपर तक सराबोर था और उसकी चाल के साथ पतलून के पायचे किरमिच की तरह फट-फट कर रहे थे।

"तुम अभी तक सोयी क्यो नही?" उसने गुस्से से भर कर पूछा। "लेना, तुम अभी तक सोयी क्यो नही?"

"मै खेत तक जा रही हू।"

"मै इजाजत नही देता," पावेल किरीलोविच ने अपने बूटो पर नजर गडाये हुए कहा। "इसे मत जाने दो, पेलगेया।"

"मै क्या रोक सकती हूं।"

"मै कहता हू, इसे मत जाने दो।"

लेना चीख उठी: "क्यो नही पावेल किरीलोविच। क्या ओलो ने उसे ढेर कर दिया है?"

अध्यक्ष ने अपनी आखे उठायी।

"चारपाई पर जा लेटो, लेना," उसने अत मे कहा। "जाओ लेटो, मेरी बच्ची। मै अभी वहा नही गया हू। अब जा रहा हूं और तुम्हे भी बता जाऊंगा। हो सकता है, आधी ने उसे छुआ तक न हो। मगर तुम जाओ, लेट जाओ। तुम क्यो भीगने जाती हो? और अनीसिम तुम भी जाओ। तुम दोनो का दिमाग खराब हो गया है।"

पावेल किरीलोविच ने जल्दी से पीठ फेरी और बाहर चला गया। उसके पीछे-पीछे लेना भी बाहर दौडी और पेलगेया मार्कोवना अपनी बेटी के पीछे दौड गयी।

ओलो की चोट से कापता हुआ बलेत ओसारे मे खड़ा हुआ था। यकायक छलाग मारकर घोडा एक तरफ हट गया। एक खिडकी से झाड़ू बाहर आया और एक पोखरी मे फट से गिर गया।

हवा फिर तेज हुई और मकानो की दीवारो पर वर्षा की झडी की चोटें पडने लगी।

"तुम क्यों बाहर निकली?" पावेल किरीलोविच ने वलेत के बाल पकड़ते हुए पूछा और उछल कर काठी पर चढ़ गया। "वापिस जाओ।"

लेना ने पीछे हटकर दरवाजे में पैर रखते हुए पुकारा: "कितनी जल्दी आओगे?"

"बस, दस मिनट में।"

अध्यक्ष ने घोडे के गीले पुट्ठे पर थप्पड मारा और उड गया।

लेना और पेलगेया मार्कोवना दोनो घर के अदर चली गयी, जहा उन्होने अनीसिम को अपराधी जैसा चेहरा बनाये हुए चूल्हे के पास बैठे देखा।

"वह तुम्हे अपने साथ नही ले गया?" उसने लेना से पूछा।

"वह अभी लौट आयगा और हमे सारे हालचाल बता जायगा।"

सफर करने से पहले रूसी जिस तरह खामोश होकर बैठ जाते है, उसी तरह वे सब भी मौन बैठे थे। पाच, दस, पद्रह मिनट बीते; उनके चेहरो पर बिजली की पीली रोशनी खिलवाड करके चली जाती थी और बाहर तूफान गरज रहा था।

पावेल किरीलोविच नही लौटा।

आधा घंटा होते-होते लेना का धैर्य टूट गया। उसने फिर अपने कपडे पहन लिये और रूमाल लपेट लिया।

"सुनो, कोई आ रहा है क्या?" पेलगेया मार्कोवना ने पूछा।

लेना खिडकी की तरफ दौडी। फुहार अभी भी गिर रही थी।

पावेल किरीलोविच वलेत पर सवार बीच सडक में चला आ रहा था। खिडकी पर एक नजर डाले बिना ही वह लेना के घर को भी पार कर गया और शीघ्र ही कुहरे में समा गया।

"सब खत्म हो गया, मा, सब खत्म हो गया!" लेना रो पडी और चारपाई पर गिरी।

२०

ग्रीष्म का खुला हुआ दिन। अनीसिम अपनी झोपडी से निकला और आखे मिचमिचा कर मेद्‌वेदित्सा नदी की तरफ देखने लगा।

धूप मे नदी चमचमा रही थी।

बेंच पर बैठा हुआ स्टबी डलिया में से झरबेरिया चुन-चुन कर खा रहा था। झरबेरी के रस से उसकी

उंगलिया रग गयी थी और उन पर झरबेरी की छोटी-छोटी पत्तिया चिपक गयी थी जो सितारो सी चमक रही थी।

"बढिया है?" अनीसिम ने पूछा।

"वेलीकि लूकि की झरबेरिया अच्छी होती है," स्टबी ने जवाब दिया।

"मुझे न बताओ। तुम्हारे वेलीकि लूकि की झरबेरियो को भी मैं जानता हू। जरा हमारी रसभरियों को चख कर देखना। ऐसी रसभरिया, खास तौर से उस जगह की, जहा चीड के दरख्त अभी गिराये गये है, वैसी रसभरिया कही ढूढे भी नही मिलेगी। बडी-बडी मोटी-मोटी रसभरिया। भालू इन्हे बहुत पसन्द करते है।"

"बाबा, नाव के लिए कोई आवाज लगा रहा है।" स्टबी न कहा।

"रसभरी की झाडी के पास भालू इसान की तरह बैठ जाता है। वह सब रसभरिया नोच लेता है और पत्तिया थूक देता है. । तुम ठीक कहते हो, ऐसा लगता है, कोई बुला रहा है।"

अनीसिम दौडकर नाव के पास पहुचा, धार पार की ओर शीघ्र ही देमेन्तियेव को उसकी घोडा-गाडी समेत लेकर वापिस लौट आया।

नाव को रोकते हुए अनीसिम ने कहा: "तुम तो बहुत दिनो से हमें भूल गये, प्योत्र मिखाइलोविच। और पिछले हफ्ते हम लोग बुरी मुसीबत मे फंस गये थे।"

"मुझे मालूम है। मैने सुना था। लेकिन मै आ ही न सका। मै दूसरे जिले में था — कुछ पिछड़े हुए फ़ार्मों की जाच करने भेजा गया था।"

"तो यह बात थी। और ज़रा यहा तो देखो। लोग कहते थे कि तुम... तुम.. मै कैसे बताऊ?"

"कि मुझे निकाल दिया गया है?"

"इतना तो नही, लेकिन हा कुछ ऐसी ही बात थी।"

"उन्होने कोशिश तो की थी। तुम्हारी लेना के बारे में मेरा एक व्यक्ति से झगड़ा हो गया था। लेकिन हुआ यह कि वह निकाल दिया गया और मै बना रहा।"

"शुक्र है खुदा का।"

प्योत्र मिखाइलोविच ने घोडे को किनारे पर चढाया और जब वह ऊपर चढ गया तो लगाम खींच दी।

"और लोगो का क्या हालचाल है? वही पहले जैसा?"

"लेना? वही पहले जैसी है।"

"लेना ही क्यों? मै तो सभी लोगों के बारे मे पूछ रहा हूं।" प्योत्र मिखाइलोविच ने कुछ झेप कर कहा,

"तुम्हारे अध्यक्ष के क्या हालचाल है और मरीया तिखोनोवना कैसी है?"

लेकिन अनीसिम कहता ही गया. "लेना आज कल किसी के साथ दोस्ती नही रखती। और अब बिल्कुल गम्भीर हो गयी है। उसके दिमाग पर शायद कोई चीज छायी रहती है। क्या उसे बुलवा दू?"

"बिल्कुल नही।"

"लडके!" अनीसिम ने स्टबी से कहा। "जोरिना के घर तो जा भागकर और कह आ कि लेना से मिलने के लिए जिला दफ्तर से कोई आया है।"

स्टबी दौड गया।

प्योत्र मिखाइलोविच ने कहा. "वह आयगी नही।"

"हा, आयगी। कोई बहाना नही बना सकती। लाओ, मै यहा घोडा बाध दू। इसको झटका क्यो दे रहे हो? बिना मतलब उसकी रास को झटके नही देना चाहिए।"

देमेन्तियेव कही दूर ताक रहा था। पिछले वर्ष की अपेक्षा यह शोमुश्का ग्राम कितना बदल गया है! खंडहरो की जगह-पर, टट्टर की चहारदीवारी से घिरे हुए नये मकान बन गये है, जिनके सामने बागीचे है, चहारदीवारी के किनारे रंग-बिरंगे फूल खिल रहे है,

जहा कल तक घासपात भरी हुई थी। लम्बे-लम्बे खम्भो मे चिडियो के अनगिनत बसेरे बने हुए है। चौडी-चौडी गली हरी-भरी घास से भर गयी है, जिसमे आसमानी चमक है।

लेना तेजी से चल रही थी, इतनी तेजी से कि स्टवी उसका साथ नही दे पा रहा था। लेकिन ज्योही देमेन्नियेव की नजर उस पर पडी, उसने कदम धीमे कर दिये।

"तुम कितने गेहुआ पड गये हो प्योत्र मिखाइलोविच।" वह अभी कुछ दूर पर ही थी कि बोल उठी।

"धूप खायी है," देमेन्तियेव ने उसकी तरफ बढते हुए कहा।

और नजदीक आकर लेना ने कहा: "और तुम्हारी भौंहे ऐसी सफेद पड गयी है।"

"धूप में पक गयी" देमेन्तियेव ने जवाब दिया।

उन्हो ने हाथ मिलाये। स्टवी पास में खडा उन्हे उत्सुकता से देख रहा था। अचानक इन दोनें मे एक परेशानी और रुखापन कहा से आ गया?

"तुमने सुना प्योत्र मिखाइलोविच? हमारी सारी मेहनत बेकार हो गयी।"

"नही, नही गयी। तुम 'लाल हलवाला' फार्म देखने नही गयी क्या?"

"नही।"

"उन्होंने तुम्हारे तरीके से चालीस एकड़ मे बुआई की थी।"

"तुम्हे कैसे मालूम?"

"वायदा करो कि नाराज न होगी?"

"वायदा किया।"

स्टवी खड़ा ही रहा और सब सुनता रहा।

"पिछले वसन्त मे, जब मै वहा गया था, तो मैने इसके बारे मे उन्हे बता दिया था। क्षमा करना, मैने तुम्हारे विचारो को इस आजादी के साथ बरता।"

"यह कोई मेरा अपना विचार थोड़े ही था। इसको तो अल्टाई वालो ने सोच-निकाला था।"

"लेकिन इस इलाके मे उसका इस्तेमाल तो तुमने ही पहले किया था।"

"और 'लाल हलवाला' फार्म पर इसका नतीजा क्या निकला?"

"शानदार। मेरी आशाओ से भी ज्यादा। और उन्होंने उस खेत का नाम जोरिना खेत रख दिया है। मैने

तीन और फार्मों को यह बता दिया है और उनके यहा भी जोरिना खेत बनेगे। शरद मे तुम अपने बारे मे और अपने गेहू के बारे मे अखबारो मे चर्चा पढ लोगी। अब अध्यक्ष के साथ तुम्हारी कैसी पटती है?"

"ठीक निभ रही है। मुझे बेचारे पर रहम आता है, इतना भला आदमी और बिल्कुल अकेला," और लेना ने अपराधी जैसी नजर से देमेन्तियेव की तरफ़ देखा।

स्टबी अभी भी वहा खड़ा था और सुन रहा था।

धीरे-धीरे, मानो वह रास्ते मे किसी चीज को खोज रही है, लेना नदी के किनारे-किनारे बढ चली। देमेन्तियेव भी उसी तरह धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चल दिया। वे सडक पर पहुंच गये और एक दूसरे से बिना एक शब्द कहे उस पर मुड गये। पहाड़ियो की श्रृंखला, एक के बाद एक, क्षितिज तक फैली हुई थी और सड़क इन पहाडिया का चक्कर लगाते हुए बढी जा रही थी कभी किसी चोटी को छूती तो कभी घाटी मे उतर जाती। दूर, कही दूर, बिल्कुल आखिरी नीली-सी पहाड़ी पर टेढी-मेढी सफेद डोरे जैसी सड़क नजर आ

रही थी। वह क्षितिज को छू रही थी और पृथ्वी के छोर तक चली गयी थी।

और उस स्वच्छ, समतल और अनन्त मार्ग पर, लेना और देमेन्तियेव, कभी-कभी एक दूसरे से निगाहें मिलाते हुए, मगर एक दूसरे से एक शब्द भी बोले बिना, बराबर बढ़ते चले जा रहे थे।

१९४८
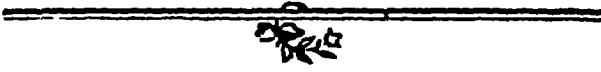
बरसात

१

पाशा, पोस्ट आफिस से जो चिट्ठियां लाया उनमें से एक केन्द्रीय प्रबन्ध विभाग से आयी थी। पत्र के शीर्ष स्थान पर यों लिखा था:

"कामरेड गूर्येव, वलोवाया नदी पर पुल के निर्माण-अध्यक्ष, ओत्रादनोये ग्राम के निकट।

आपके संदेश संख्या १४३०६, तारीख १८ जून के उत्तर में।

और उनके बाद निम्नलिखित संदेश था :

"इस तिमाही में आपके निर्माण-कार्य के लिए कोई और मोटर-लारी नहीं दी जायगी।

गणित के मामूली हिसाब से यह देखा जा सकता है कि अपनी योजना पूरी करने के लिए (और पेन्सिल से जोड़ दिया गया था : चाहे तो योजना से भी अधिक काम पूरा करने के लिए) आपके पास ज़रूरत से ज़्यादा लारियाँ हैं।

सिर्फ़ ग़ैरज़िम्मेदारी (और पेन्सिल से जोड़ दिया गया था : और दिये गये काम के प्रति पूर्ण उपेक्षा) के कारण ही यह हो सकता है कि बलोवाया पर पुल बनाने के लिए बालू, पत्थरों का चूरा और मिट्टी लाने के काम में आप हमेशा योजना से पीछे रहते हैं, जिसके फलस्वरूप जाड़े तक शायद उसके लिए कंक्रीट की नींव भी न पड़ सके और इसका मतलब होगा कि सारा निर्माण-कार्य वक़्त से पूरा न हो सकेगा।

आपको ठीक एक सप्ताह का समय दिया जाता है, जिसके अन्दर बलोवाया का पुल बनाने के लिए बालू, पत्थर का चूरा और मिट्टी लाने का काम आप निर्धारित योजना के अनुसार पूरा कर ले और उसके लिए मैं सुझाव देता हूं:

(क) सारी लारियां इसी काम के लिए इस्तेमाल की जाय।

(ख) खुदाई का काम दो शिफ्टो (पालियो) में किया जाय।

(ग) सामान के उतार-चढ़ाव का काम मशीनो से किया जाय।

(घ) गाड़ियो और घोडो के बारे मे आपको जो हुक्म दिये गये है, उनका आप पूरा उपयोग करे..."

सूची मे इसी तरह की दूसरी हिदायते भी दी गयी थी, जिनका पालन करना बडा आसान और सीधा-सादा था।

निर्माण-कार्य के अध्यक्ष की सेक्रेटरी वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने पूरा पत्र पढ डाला, डाक-वही मे इसके पाने की सूचना दर्ज कर ली और विचारो में डूब गयी।

उसने वर्षा के वारे मे सोचा, जो दो सप्ताह से रात-दिन झडी लगाये हुए थी; सावुन की तरह फिसलन भरी, गीली सडकें; पत्थरो के चूरो और गिट्टी से लदी हुई लारिया जो हृदय-भेदी कराहो के साथ सड़क पर घिसटती हुई चलती हे; ड्राइवरो के चेहरे जो सर्दी और सो न सकने के कारण नीले पड जोते; निर्माण-कार्य का अध्यक्ष इवान सेमियोनोविच, नन्हा सा, दमा से पीडित व्यक्ति, जो सिर से पैर तक कीच से सना होता; ज़िला कार्यकारिणी समिति के लोग जो काम के लिए सामूहिक फार्मो के घोडे देने से इनकार कर रहे थे, वह छोटा सा कमज़ोर पम्प जो पत्थर तुडाई मे लगा धक-धक करता रहता और जिसे लोग "मेढक" कहकर पुकारते थे—ये सभी उसके दिमाग़ में घूम गये।

आज की भोर वडी उदास-उदास और अंधेरी थी। जल्दी मे वनायी गयी वैरको की छतो पर वर्षा उछल-कूद कर रही थी। यहा दफ़्तर था। विभाजन की दूसरी ओर इवान सेमियोनोविच और वाये किनारे के काम के फोरमैन की ज़ोरदार आवाज़े आ रही थी।

"उसका दिमाग आज तमाम दिन खराव रखने के लिए यह काफी है", वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने सोचा।

"मैं उसे यह पत्र बाद में दिखाऊंगी।" उसने दराज खोली और पत्र को एक फोल्डर के अदर रख दिया जिस पर सुनहरे अक्षरो में "रिपोर्ट" लिखा हुआ था—यह फोल्डर युद्ध के अत मे उसने अपने पैसे से खरीदा था। फिर वह पेंसिलें बनाने बैठ गयी। इवान नेस्तियोनोविच को अपनी मेज पर अच्छी नुकीली बनी हुई रग-बिरगी पेंसिलें रखने का बडा शौक है।

प्रवेश द्वार के प्लाई वुड के पल्ले पर किसी ने इस तरह लात मारी कि वह भड़ाक से खुल गया और इस तरह कापता रहा मानो उसे जूड़ी चढ़ आई हो। कमरे में एक १८-वर्षीय लडकी ने प्रवेश किया जो पानी में पूरी तरह सराबोर थी और जिसके लम्बे बूटों में एक चाबुक खुसी हुई थी।

"अध्यक्ष अदर है?" लडकी ने पूछा।

"आप कौन है?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने हरी पेंसिल बनाते हुए पूछा।

"मै 'नवीन पथी' सामूहिक फार्म के गाड़ीवानो की ब्रिगेड-लीडर हू। कुरेपोवा नाम है। ओल्गा कुरेपोवा। अध्यक्ष हमें वापिस भेज दें। हम लोग कल घर चले जायेंगे।"

"यह काम अध्यक्ष नही किया करते," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने अध्यक्ष शब्द पर उचित जोर देने के लिए

आखे आधी मूदते हुए कहा। "इसके बारे मे आप को अपने फोरमैन से कहना चाहिए।"

"हमारे फोरमैन की अकल तो है मोटी—वह यह भी नही जानता कि घोडे को कैसे जोता जाता है। मैंने उसको कई बार बताया कि हमारे फार्म के अध्यक्ष ने यहा काम के लिए हमे सिर्फ पाच दिन की आज्ञा दी थी, लेकिन सात दिन हो गये है। मगर फिर भी हमे वह जाने नही देता। हमे अपने खेतो के लिए खाद की ढुलाई कराना है।"

"मै इस के बारे मे कुछ नही जानती। लेकिन ऐसी चीजो के लिए निर्माण-अध्यक्ष को परेशान नही करना चाहिए। वह बहुत व्यस्त है।"

"अगर वह व्यस्त है तो मै इतजार करती हू।"

और पानी चुआती हुई वह ब्रिगेड-लीडर एक बेच पर बैठ गई और अपने कपडो से पानी निचोडने लगी।

"यह दफ्तर है, टपता नही।" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने जरा सख्ती से कहा।

"फर्श तो साफ किया ही जायगा," लडकी ने कपडे निचोडना जारी रखते हुये कहा। "देखो कितना कीचड फैला हुआ है। जरा से पानी से कुछ नही बिगडेगा।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना अपने कमरे को एक महत्वपूर्ण दफ्तर की तरह व्यवस्थित रखने का प्रयत्न करती थी, ताकि आनेवालो के दिल मे अध्यक्ष के प्रति और उसकी देख-रेख में चलने वाले काम के प्रति सम्मान का भाव पैदा हो। वह खुद भी बड़े साफ-सुथरे और गौरवमय से, कलफदार ब्लाउज और उसके कालर मे पुरुषो जैसी टाई पहनकर आती थी जिसके अन्दर से कोई गुलाबी सी चीज झाकती रहती थी। उसके काले बालो में हलकी सी सफेद रेखाए थी और उन्हे वह जूडे मे बाधे रहती थी।

सफाई करने वाली पाशा, सेक्रेटरी महोदया का इतना रौब मानती थी कि वह दिन मे कम से कम तीन बार फर्श साफ करने आती थी। लेकिन वलेन्तिना गिओर्गियेवना के इतने प्रयत्नो के वावजूद इस कमरे का स्वरूप अस्थायी ही रहता। सेक्रेटरी की मेज और एक दूसरी छोटी बेंच के अलावा इस कमरे में कुछ न था और जब अध्यक्ष के कमरे मे कार्य के सबन्ध मे मीटिंग होने लगती तो यह बेंच भी यहा से उठा ली जाती। बिजली के लट्टू ने इस कमरे का सौंदर्य और भी खत्म कर दिया था, क्योंकि इसको तार के जरिए मेज के ऊपर लटका दिया गया था और इस तार को भी डोर से एक तरफ बाध दिया गया था

था कि अध्यक्ष इस बेकार के हिसाब-किताब से थकता क्यो नही है।

"क्या कहते हो, बारह?" इवान सेमियोनोविच उठा, पीतल के कप में से एक लाल पेंसिल निकाल ली और जोर से रिपोर्ट के ऊपर फेंक दी। नाराज़ कैसे होना चाहिए, इसका उसे रत्ती भर ज्ञान नही था और अपनी इस कमजोरी को वह हद से ज्यादा जानता था। "गिट्टी लाने का काम सिर्फ आठ लारिया कर रही है। इसका क्या जवाब है, कामरेड तिमोफेयेव?"

कुज्मिचोव और कुवायेव की ओवरहालिग हो रही है और स्तेपानोव, भोजनालय के मैनेजर को शहर भेजने गया है। इसकी आज्ञा खुद आपने ही दी थी .।"

"लो, यह देखो। मैने तो सिर्फ एक बार के लिए उसे इजाज़त दी थी, और वह रोज उससे जाता है।"

तिमोफेयेव ने कोई उत्तर नही दिया। वह खिड़की के बाहर उसी तरह ताकता रहा, मानो उसे अध्यक्ष की बातो की चिन्ता ज़रा भी नही है।

"अच्छा, तो ये ग्यारह हुई, बाकी पाच कहा है?" अध्यक्ष ने बात जारी रखी।

"बलोव और कोरकिना जर्जर हो गये है। अलेक्सेयेव

पेट्रोल लेने गया है। लेकिन लारियो को गिनने से लाभ ही क्या है? इस मौसम मे गिट्टी ढोने के लिए आप को नावो की जरूरत है, लारियो की नही।"

"ठीक। लेकिन वाकी दो कहा है?"

"एक, वायें किनारे वाले फोरमैन को दे दी गयी है... आपके हुक्म से।"

"यह क्यो?"

"मैने बताया न. . आप के हुक्म से", तिमोफेयेव ने दृढतापूर्वक कहा।

"और सोलहवी?"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी कि ये लोग सोलहवी के वारे मे भी चर्चा खत्म कर दे। दो दिन पहले इस जिद्दी तिमोफेयेव ने, अध्यक्ष के हुक्मो को ताक में रखकर इस लारी को अपने दोस्त के पास सैर के लिए भिजवा दी थी, क्योकि इस मित्र ने "मेढक" के वदले एक अधिक शक्तिशाली पम्प देने का वायदा किया था। वर्षा के कारण वह गाडी कही फस गयी और फिर न लारी मिली, न पम्प। वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने अपने अध्यक्ष की ओर देखा—गठा वदन, ठिगना कद, फूला हुआ परेशान चेहरा और वच्चे की तरह

नीली-नीली, भोली आखे। फिर उसने दाढी बढाये हुए, बेफिक्र तिमोफेयेव की तरफ देखा। उसने इन दोनो ही आदमियो की ओर देखा, जो उसकी ही तरह भली भाति जानते है कि मुसीबत की असली जड लारिया नही, यह मौसम है और जो दिल से यह मानते है कि यह बातचीत बेकार चल रही है। और यह सब देख-समझ कर वलेंतिना को दोनो पर ही बडी तरस आयी।

इवान सेमियोनोविच ने फिर जोर दिया: "हा, तो वह सोलहवी कहा है?"

"काम कर-रही है। ये आकडे ठीक नही है।"

"इनकी जाच कर ली जाय। वलेन्तिना गिओर्गियेवना, जरा सभी फोरमैनो की रिपोर्टें तो ले आओ।"

वलेतिना गिओर्गियेवना बाहर चली गयी, वह उतनी ही परेशानी महसूस कर रही थी जितनी कि उसका अध्यक्ष। भीगे कपडे पहने हुए ब्रिगेड-लीडर अभी भी बेंच पर बैठी हुई थी।

"जबतक हमें यहा से चले जाने का हुक्म नही मिल जाता, मै टलूगी नही," उसने कहा। "क्या आप समझते है कि हम कानून नही जानते? ऐसे "व्यस्त" अध्यक्ष हमने भी बहुत देखे है। एक बार कोई आलू के महकमे

का प्रधान हमारे फार्म के घोड़े लेकर अपना काम वनाने आया था। हमने उसे वह मजा चखाया था। जहां वह बैठता था, ठीक वही. .।"

"अपनी भाषा सभालिये, जनाव।" वलेन्तिना ने उसे बीच में ही टोक दिया और उसे चोट इस वात से ज्यादा लगी कि वह लडकी एक विशाल निर्माण-कार्य के अनुभवी इजीनियर की तुलना किसी आलू-वाले से कर रही है।

"क्या वात है?" इवान सेमियोनोविच ने दरवाजे तक आकर पूछा।

"यह मुझे आपसे मिलने नही देती," ब्रिगेड-लीडर ने कहा। "हमारा वक्त खतम हो गया है और हमारा खाना भी चुक गया है, और अब हमें अपने खेत के लिए खाद की ढुलाई करना है, लेकिन फोरमैन हमे जाने नही देता।"

"हुंह," इवान सेमियोनोविच ने कहा।

"ईमान से कहती हू। वह कहता है कि हमने अपना काम पूरा नही किया। गिट्टी के लिए अगर हमे मीलो दूर जाना पडेगा तो हम इतने समय मे योजना के अनुसार काम कैसे पूरा कर सकते है? और हर वार जब नाला पार करते है, तो चढाव पर हमें अपनी गाडी मे

एक घोडा और जोतना पडता है। ऐसे मौसम में गाडी चढाना कितना मुश्किल है?"

"हुह," इवान सेमियोनोविच ने फिर वही कहा।

"ईमान से कहती हू। नदी किनारे एक मील दूर पर भी गिट्टी है। अगर वहा से हमे गिट्टी लाने को कहा गया होता तो कल तक हमने दिये गये काम से दुगना काम कर दिया होता। क्या आप समझते है कि हम उन गिट्टी मिलाने वाली मशीनो को खामोश खडा देख सकते थे और हाथ पर हाथ धरे बैठे रह सकते थे।"

इवान सेमियोनोविच ने नरमी से कहा: "सभी तरह की गिट्टी काम की नही होती मेरी बिटिया! देखना होता है कि गिट्टी काफी सख्त है या नही। नरम पत्थर की गिट्टी से काम नही चलता।"

"यह आप जाने। खैर, आप खुद लिखेंगे या टाइप करायेंगे?"

"इतनी जल्दबाजी न मचाओ," इवान सेमियोनोविच ने ऊबड़-खाबड तरीके से उसके कधे पर थपथपाया मानो वह गर्म चूल्हा हो। "चलो, हम मित्रतापूर्वक काम करे और तीन दिन और एक दूसरे की मदद करे।"

"तीन दिन! हम लोग यह नही कर सकते।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने देखा कि वह किस तरह लडकी को समझा रहा है, उससे अपनी आत्मा की आवाज सुनने की अपील कर रहा है, हसी मजाक कर रहा है—हालाकि जिस तरह उसे नाराज होना नही आता, उसी तरह मजाक करना भी नही आता है। उसके खिचडी बालो और विश्वा-सपूर्ण मुसकान को देखकर सेक्रेटरी को यह महसूस हुआ कि उसके अदर इस जिद्दी लडकी के खिलाफ गुस्सा बढता जा रहा है।

आखिरकार इवान सेमियोनोविच ने हाथ झुलाया और हकलाते हुए कहा

"वलेन्तिना गिओर्गियेवना, हुक्म टाइप कर दो। मै किसी को जबर्दस्ती नही रोक सकता," और वह दफ्तर मे चला गया।

जब दरवाजा बन्द हो गया तो वलेतिना गिओर्गियेवना ने गुस्से से उबल कर कहा. "तुम्हे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। तुम खुद देख रही हो कि मौसम कितना खराब है, लारिया फिसल-फिसल जाती है, और अध्यक्ष महोदय पिछले कुछ दिनो मे कितने स्याह पड गये है। फिर भी तुम जाने की इजाजत मागती हो। पुल की जरूरत तो तुम्हे ही है, हमे नही," और उसके होठ कापने लगे।

इवान सेमियोनोविच का दफ्तर अब खाली-खाली और खामोश था। खिडकी की देहरी पर रखे गुलदस्ते से सूखे हुए फूलो की पखुडियां झर रही थी।

उसकी मेज पर पीतल के कप में खूबसूरती के साथ नुकीली पेंसिलें रखी हुई थी, जिनकी नोक ऊपर को थी।

जब इवान सेमियोनोविच बाहर होते तो वलेंतिना गिओर्गियेवना बडी खिन्न रहती। ऐसे मौको पर यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता था कि लोग उसमे दिलचस्पी महज इस लिए लेते है कि वह अध्यक्ष की सेक्रेटरी है। टाइप करने के लिए कुछ न था, दीवाल पर खट-खट कर के कोई नही बुलाता था, टेलीफोन की घटी कभी कमरे में नही बजती थी। और उसे यह चिन्ता भी सता रही थी कि इवान सेमियोनोविच पर मास्को मे अकेले-अकेले क्या बीत रही होगी तथा उनके लिए कागजात निकाल कर कौन रखता होगा।

भोजन के समय तक उसने दिन का काम खत्म कर दिया और फोरमैनो को याद दिला दी कि उनकी पक्षिक रिपोर्ट आने का समय हो गया है। इसके बाद वह कुछ ताजे फूल चुनने चली गयी।

पुल इस दफ्तर से मील भर दूरी पर बन रहा था, खामोश पानी को चीरकर झाकते हुए पुल के खम्भो को, ऊचे कगार पर खडे होकर, देखा जा सकता था। एक पर कोई काम नही हो रहा था और दो पर कारीगर लगे हुए थे और वलेन्तिना गिओर्गियेवना को वह वाक्य याद आ गया जो इवान सेमियोनोविच ने हाल मे लिखवाया था: "सामान की कमी के कारण, कक्रीट का सारा काम दूसरे और तीसरे खम्भो पर केन्द्रित किया जाय।"

ऊबड-खाबड ढेरो के ऊपर एक अस्थायी पुल नदी पर खिचा हुआ था। इवान सेमियोनोविच ने इस पुल की डिजायन दस मिनट के अदर सिगरेट के डिब्बे पर बना दी थी, और तब वलेतिना गिओर्गियेवना को पता था कि यह पुल थरथा कर गिर जायगा। लेकिन वह जमा हुआ खडा था और उस पर नदी के किनारे से खम्भो तक छोटे-छोटे ट्रक आते-जाते दिखाई दे रहे थे। वे नीव के लिए पत्थर, कक्रीट, धातुओ की पहिया, लोहे के कुन्दे, कीलें आदि ढोकर ला रहे थे, जिनकी सूची आदेश के साथ अठारह पृष्ठो मे लगी हुई थी। वे साटिन की तरह नये चीरे गये एक-इच मोटे तख्ते भी ढो रहे थे, जिनके लिए अभी कुछ दिन पहले वलेन्तिना ने टेलीफोन पर तार देने

के लिए चीख चीख कर कहा था "एक इची तख्ते फौरन उतरवाओ। उनके बिना कक्रीट का काम रुका है।"

वलेन्तिना ज्यो-ज्यो पुल के करीव पहुची, निर्माण-कार्य की मिश्रित और आनदपूर्ण गर्जन मे से अलग-अलग स्वरो को पहचानना सहज होता गया। दूसरे खम्भे पर कुदाली के फल गिरने की चमक के कुछ सेकड वाद उस की चोटो की स्पष्ट आवाज—जिसमे कीलो के सिर पर पहली चोट की मद्र ध्वनि से लेकर अन्तिम विजय सूचक नि-नाद तक, जब कील सिर तक अन्दर घुसेडी जा चुकी हो, स्वरो का सरगम शामिल था, आरे का क्रदन—जो उस समय तो हलका और अनिश्चित सा होता जव वह जिद्दी लोहा लकडी में घुसने से इनकार कर देता और उसे अगूठे से ठीक करना पडता था, लेकिन यह क्रदन उस समय जोर-दार और लगातार जारी हो जाता जव वह आरा हुकुम मान लेता और बुरादे की महीन फुहार सी छोडता हुआ तेजी पकड लेता; दक्षिणी किनारे पर ढेर ढोने वाली मशीनो की मनहूस थप्प-थप्प, कक्रीट मिलानेवाली मशीन मे पत्थरो की सिलो के चूर होने की रगड, जिसे सुनकर खून सूख जाय, किनारे पर लगे हुए इजिन की जल्द-जल्द छक-छक—कभी जोरदार और कभी हलकी, मानो वह

कभी दूर भाग जाती हो और फिर वापिस लौट आती हो, दाहिने किनारे पर लट्ठो की उतराई का चौका देने वाला गर्जन।

और इन सभी नियमित गर्जनो, गुनगुनाहटो, घन-घनाहटो का, जिसे इवान सेमियोनोविच ने कई दिन के हिसाव-किताव, तर्क-वितर्क, बहस और समर्थन के बाद चालू किया था, वलेन्तिना गिओर्गियेवना के साथ घनिष्ठ सम्वन्ध था, इसी लिए वह बडा सुख अनुभव कर रही थी। पुराने वुरादे के गुदगुदे गर्दे, पैरो के नीचे से खिसक कर लुढक जाने वाले लट्ठो और पाच टन की लारियो से वने गढ्ढो को पार करती हुई वह आगे बढ रही थी। कभी-कभी लोग उसे अभिवादन करते, जिनके चेहरो के वारे मे उसे कुछ याद नही है। वह बाये किनारे के कापते हुए कगार पर चढ गयी, फिर वह लोहे की मेहरावे लादने वाली नावो मे पास से गुजरी और अत में वह अपने परमप्रिय मैदान मे पहुच गयी जहा वटरकप और गुलवहार तथा कुछ छोटे-छोटे लाल फूल खिल रहे थे, जिन का नाम वह नही जानती।

इस मैदान के एक तरफ छोटी सी खाडी थी और दूसरी तरफ छोटे-छोटे देवदार वृक्षो का उपवन जिनकी

शाखाओ के अत मे नुकीले क्रास के चिन्ह बने हुए थे। जब हवा बह जाती तो फूल नत-मस्तक हो जाते और इस तरह सिर हिलाते मानो वे आख मिचौनी खेल रहे हो, और देवदार के वृक्ष विदूषक की तरह एक दूसरे के सामने शीश झुकाने लगते। निर्माण-कार्य की आवाजे यहा मुश्किल से ही सुनायी पडती; जब कभी कोई लट्ठा उधर से बह निकलता, जिसके सिर पर खडिया से नम्बर लिखा होता, तो उसे देखकर यह बोध होता कि कही नजदीक ही निर्माण-कार्य चल रहा है।

यहा फूल इकट्ठे करते हुए वलेतिना गिओर्गियेवना सपनो मे डूब गयी। वह सपना देखने लगी कि इवान सेमियोनोविच को केन्द्रीय प्रबन्ध विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया है और उसके दफ्तर मे सिल्क के परदे टगे हुए है तथा सेक्रेटरी को बुलाने के लिए घटी लगी हुई है, और पास के कमरे मे फायलें रखने की आलमारिया सजी हुई है और हर आल्मारी में बढिया फोल्डर रखे हुए है जो अपने आप बद हो जाते है, और वलेतिना गिओर्गियेवना ने पिछले वर्ष का कलेडर काटकर इन सभी फोल्डरो पर नम्बर चिपका दिये है; और इन फोल्डरो की सख्या इतनी अधिक है कि अगर काम के घटो के

-ाद इवान सेमियोनोविच को किसी खास कागज़ की जरूरत होती है, तो वे वलेंतिना को बुलाने के लिए कार भेजते है। सफेद तितलिया हवा मे कागज के छोटे-छोटे टुकडो की तरह उड रही थी और वलेन्तिना गिओर्गियेवना यह सपना देख रही थी। वह इवान सेमियोनोविच के साथ आठ वर्ष से काम कर रही थी और वह किसी और के साथ काम करने की कल्पना भी न कर सकती थी। इसके पहले दस वर्ष तक उसनें एक टेक्निकल प्रकाशन गृह के टाइप विभाग मे टाइप करने का काम किया था। युद्ध काल मे यह विभाग तोड दिया गया और तब वह फौज के हेडक्वार्टर मे गयी जहा उसने किसी भी हैसियत से काम करने की इच्छा प्रकट की। स्वयसेवक के रूप में उसे इजीनियरिग दस्ते के कैप्टेन इवान सेमियोनोविच गूर्येव का सेक्रेटरी बना दिया गया और तब से उसके साथ वह एक निर्माण-स्थल से दूसरे निर्माण-स्थल तक सफर करती रही। अपनी रुखाई-भरी आकृति और मेल जोल न करने की प्रवृत्ति के कारण वह अपने साथ काम करनेवालों में से किसी को दोस्त न बना सकी। उसके एक मात्र "प्रेम-काण्ड" का अत भी विचित्र था। मोर्चे पर आने वाले अखबार मे एक दिन एक मल्लाह का चित्र छपा जिसका

चेहरा प्रसिद्ध हवाबाज वलेरी चकालोव से बहुत मिलता-जुलता था। इस मल्लाह की वीरता से प्रभावित होकर वलेतिना गिओर्गियेवना ने उसके नाम पत्र की दो कापिया टाइप की। एक कापी उसने अपने पास रख ली और दूसरी उस अखबार की मार्फत उस मल्लाह के पास भेज दी। इस तरह पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। उस समय वलेन्तिना गिओर्गियेवना फौजी सडक विभाग मे तिखविन के पास काम कर रही थी और खलासी लेनिनग्राद के पास लड रहा था। उनके पत्र जल्दी-जल्दी और नियमित रूप से आते रहे। एक पत्र मे उस खलासी ने वलेतिना से उसका चित्र मागा था और वलेन्तिना ने आनर्स बोर्ड पर लगे हुए अपने चित्र को काट कर उसके पास भेज दिया और उसके उत्तर की प्रतीक्षा मे दिन गिनने लगी। उत्तर कभी न आया। इवान सेमियोनोविच को उसके सभी सीधे-सादे राज मालूम थे, उन्होने भी उसे बहुत समझाने का प्रयत्न किया कि सम्भव है कि वह मल्लाह मारा गया हो—हालाकि उन्हे खुद इस बात का विश्वास नही था।

काफी फूल इकट्ठे करने के बाद वलेन्तिना गिओर्गियेवना पानी के किनारे गयी और यह देखभाल करके कि कही कोई छिपकली तो नही बैठी है, वह एक लट्ठे पर बैठ गयी।

हलके नीले आसमान और लहराते हुए बादलो के प्रतिबिम्ब के कारण उस जगह पानी अगाध प्रतीत होता था। सतह पर तैरती हुई कुमुदिनी की सुनहली पत्तियो के चारो ओर कभी कभी हलके से घेरे उतरा जाते और किसी मछली के स्पर्श से सफेद फूल सिहर उठते। बडी-बडी मक्खिया एक दूसरे का पिछा करते हुए उड रही थी और उनके पख भनभना रहे थे। गर्म भाप से लदी हवा के कारण उस पार तट की रेखाए धुधली लग रही थी और उससे आगे कुहरे मे भाकता हुआ जगल नजर आ रहा था।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने इस सब की तरफ कोई ध्यान नही दिया। सावधानी से फूल चुनकर, वह गुलदस्ता बनाने मे जुट गयी और अपने काम मे इतनी लीन हो गयी कि उसे तिमोफेयेव के आने की आहट भी न मिल सकी।

"अध्यक्ष के लिए बना रही हो?" उसने पूछा।

"अध्यक्ष के दफ्तर मे रखने के लिए, "वलेंतिना ने उसके वाक्य को ठीक किया और तिमोफेयेव पर उडती हुई नजर डाली।

"जल्दी ही आ रहे है?"

"हां। शायद परसों।"

"तुम उन्हे बधाई दे सकती हो। मिट्टी उठाने के काम को हम लगभग निर्धारित समय तक ले आये है। मौसम खुले रहने का यही फायदा है।"

"मौसम की खबरो से लगता है कि कल भी दिन सुहावना रहेगा।"

"तुम इन फूलो के साथ बेरहमी से क्यो पेश आ रही हो, वलेन्तिना गिओर्गियेवना?"

"मेरी उंगलियाँ दुख रही है। पता नही क्यो। शायद, मानसिक पीडा है। या शायद बहुत अधिक टाइपिंग का नतीजा है," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उसके स्वर से पसीजते हुए कहा।

तिमोफेयेव घास पर बैठ गया और वलेन्तिना की गोद से जो फूल गिर गये थे, उन्हे उठाकर उसे देने लगा।

"तुम दाढी क्यो नही बनाते?" वलेन्तिना ने पूछा और लजा गयी, और यह सोचकर कांप उठी कि कही वह उसकी तरफ देखने न लगे।

"किसके लिए?"

"अपने लिए।"

तिमोफेयेव एक क्षण सोच मे पड गया और ठडी सास भर कर रह गया।

वह बोला: "क्या रखा है, और वक्त भी तो नही मिलता। अपने इस काम का कही ओर-छोर ही नजर नही आता। निर्माण-सामग्री वक्त से नही मिलती और अब उन लोगो ने पेट्रोल की आखिरी किश्त भी दे दी है। ट्रैक्टर किसी भी मौसम मे काम कर सकते है, लेकिन लारियो के लिए एक-एक मिनट कीमती होता है। कल उनसे काम न हो सकेगा।"

"सचमुच?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने सूखे स्वर मे कहा, क्योकि तिमोफेयेव के शब्दो मे उसे इवान सेमियो-नोविच की आलोचना की गध आयी।

"हा, सचमुच। हम सब लोग भले आदमी है, लेकिन हम लोग मिलकर काम नही कर रहे है। हम लोग एक मुट्ठी की तरह नही है, पाचो उगलियो की तरह अलग-अलग है। कोई दिमाग नही। हमारा दिल तो इसीलिए दुखता है।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कुछ खीझ के स्वर मे कहा: "बस धन्यवाद, अब मुझे और अधिक फूलो की जरूरत नही है।"

"अच्छा जाने दो।" तिमोफेयेव उठ बैठा और पुल की तरफ चला गया।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना उस समय तक बैठी रही जब तक तिमोफेयेव पहाडो के पीछे ओझल नही हो गया। फिर वह भी उठ बैठी और काम पर वापिस चली गयी। इस शाम काम बहुत थोडा था, इसलिए वह शीघ्र ही गाव लौट आयी, ब्लाउज पर लोहा किया, चेखव की कीताब पढी और फिर सोनें के लिए लेट गयी।

जब वह ऊघ रही थी, उसे यकायक ख्याल आया कि अध्यक्ष ने जाने से पहले उससे जो रिपोर्ट टाइप करायी थी, उसमें १२७ घन गज कक्रीट के बजाय, उसने १०७ घन गज टाइप कर दिया है। वह चारपाई से कूद पडी, जल्दी से कपडे पहनें और, हालाकि उसे अधेरे में डर लगता है, फिर भी वह दफ्तर पहुची और उस रि-पोर्ट की कापी पर एक नजर डाली। सभी कुछ ठीक था उसने १२७ घन गज कक्रीट ही लिखा था।

बडे सतोष की सास लेकर जब वलेन्तिना गिओर्गि-येवना घर लौटी, तो काफी देर हो गयी थी। उधर पुल पर, ढेर उठाने वाली मशीने मनहूसियत के साथ थक-थक कर रही थी।

३

दो दिन बाद इवान सेमियोनोविच वापिस लौटे और अपने साथ एक और व्यक्ति को लाये। वलेन्तिना गिओर्गियेवना तुरन्त इतने अधिक छोटे-बडे कामो मे व्यस्त हो गयी कि उसे उस दूसरे व्यक्ति की तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही न मिली। उसने सिर्फ इतना देखा कि जब वह कमरे में प्रवेश करता है तो अपने सिर को एक तरफ झुका लेता है और अपनी सूट कोट के नीचे एक वास्कट भी पहनता है। अगले दिन बडे भोर वह इवान सेमियोनोविच के साथ आया और इस बार उसने जरा अच्छी तरह उसको देखा। वह पैंतीस या अडतीस वर्ष का लम्बा और मजबूत व्यक्ति था और उसके बाल झड रहे थे। वह रग-उतरा काला कोट, वास्कट और पतलून पहने हुए था और पतलून के पायचे नकली चमडे के बूटो मे ठूसे हुए थे। वास्कट की जेब मे एक पैमाना-रेखक था। उसका चेहरा और हाथ इस तरह तावे जैसे रग के हो गये थे, मानो वह अभी-अभी किसी ग्रीष्म-विश्राम गृह से लौटा हो, उसकी उगलियो पर बड़े-बडे रोयें थे।

यह अजनवी इवान सेमियोनोविच के साथ दफ्तर मे

गया। इवान सेमियोनोविच ने दरवाजा बद करते हुए अप-नी सेक्रेटरी को आदेश दिया कि किसी को अदर न आने दिया जाय।

"बहुत अच्छा," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उत्तर दिया। काम की परीक्षा और निरीक्षण करने के लिए केन्द्रीय प्रबध-विभाग अक्सर लोगो को भेजता था, वह इस की आदी थी।

भोजन-काल के बाद वह "आग लगने से रोकने के उपाय" टाइप कर रही थी, तभी तिमोफेयेव आया।

उसने अध्यक्ष के कमरे की ओर आखो से इशारा करते हुए, फुस फुस कर पूछा "नया अध्यक्ष तुम्हे कैसा लगा?"

"क्या मतलब?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने अनभिज्ञ-ता प्रकट की।

"तुम अभी तक भाप नही पायी?" तिमोफेयेव ने आश्चर्य से कहा। "इवान सेमियोनोविच उसे हर चीज सुपुर्द कर रहे है।"

और यकायक वलेन्तिना गिओर्गियेवना की समझ मे आ गया कि इवान सेमियोनोविच ने उससे तमाम नक्शे, दस्तावेज और हिसाब-किताब की रिपोर्टे लाने के लिए क्यो

कहा था और क्यो यह आदेश दिया था कि किसी को अदर न आने दिया जाय। उसने टाइप करना जारी रखने की कोशिश की, लेकिन हर पक्ति में गलतिया होने लगी और अत मे हार मानकर बद कर दिया।

यह कोई पहला मौका नही है जब इवान सेमियोनोविच का तबादला एक निर्माण-स्थल से दूसरी जगह हो रहा है, लेकिन हर अवसर पर इस बात की जानकारी सबसे पहले वलेन्तिना गिओर्गियेवना को ही हुआ करती थी। अध्यक्ष उसे अपने कमरे मे बुलाते थे और बता देते थे कि फला दिन फला जगह जाना होगा और इसके बारे मे फिलहाल वह किसी से कुछ न कहे—साथ ही जाने की तैयारी करने के लिए हिदायतें दे देते थे।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना को यह बात अपमानजनक मालूम हुई कि इसकी जानकारी उसे तिमोफेयेव से हो रही है। नया अध्यक्ष जब चला गया तो वह निश्चयपूर्वक उठी और हमेशा की तरह दरवाजा खटखटाये बिना इवान सेमियोनोविच से बाते करने चली गयी।

इवान सेमियोनोविच लिख रहे थे। लेकिन अपनी हमेशा की कुर्सी पर न बैठकर, वे एक ओर एक स्टूल पर बैठे थे। वलेन्तिना गिओर्गियेवना के प्रवेश पर उन्होंने

एक नज़र उसकी तरफ देखा और अपना खिचडी सिर और नीचे झुकाकर एक शब्द कहे विना फिर लिखने मे जुट गये।

"इवान सेमियोनोविच, क्या हम लोग यहा से जा रहे है?" उसने पूछा।

धीरे-धीरे अध्यक्ष ने सिर उठाया और बेचैनी के साथ उसकी तरफ देखा।

"लगता है, जाना ही पडेगा," उसने कहा। "कोई चारा नही। मुझे केन्द्रीय प्रबन्ध कार्यालय मे टेक्निकल विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया है। निर्माण-कार्य के लिए शायद मै बूढा हो गया हू। कोई चारा नही। क्या मज़े की बात है, क्यो, बुढापा, विना चेतावनी दिये, न जाने कब सवार हो जाता है?"

और वे हलकी सी उदास हसी हस पडे।

"हम लोग कब जायेगे?"

"देखो, वलेन्तिना गिओर्गियेवना," अध्यक्ष ने अपने सामने रखे पत्रो को बडी सावधानी से शुद्ध करते हुए कहा, "मेरा ख्याल है कि इस बार मै अकेला ही जाऊगा। केन्द्रीय प्रधान कार्यालय के अध्यक्ष का कहना है कि निर्माण-स्थल से मै किसी भी व्यक्ति को अपने साथ न ले जाऊ। कोई चारा नही।"

मुझे भी नही?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने आश्चर्य से कहा।

"चलो देखा जायगा," इवान सेमियोनोविच उठे और उसके कंधे उसी तरह थपथपाने लगे जैसे उन्होंने उस ब्रिगेड-लीडर लडकी के कंधे थपथपाये थे। "तुम कुछ दिन यहा काम करो, फिर मै बुला लूगा। फिलहाल मै यह नही कर सकूगा। लेकिन मुझे बूढे आदमी के पीछे-पीछे फिरने से—और दम-घोटू शहर मे—फायदा ही क्या है?"

"मै नही जानती," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने चकित होकर कहा।

"निर्माण-कार्य मे दूसरी ही बात होती है," इवान सेमियोनोविच ने बात जारी रखी, "नदी, मैदान, जगल, ताजी हवा.."

दूसरे दिन अपना सामान बाधने के लिए इवान सेमियोनोविच घर ही रहे और नया अध्यक्ष, नेपैवोदा, दफ्तर मे आकर जम गया। वलेन्तिना गिओर्गियेवना दफ्तर आयी तो उसने उसे पहले से वहा बैठा पाया। दफ्तर का दरवाजा खुला पडा था।

"वलेन्तिना गिओर्गियेवना," नये अध्यक्ष ने उसके

नाम के एक-एक अक्षर को बडे सुघड तरीके से उच्चारित करते हुए बुलाया।

"हे भगवान, उसे मेरा नाम और पैतृक नाम पहले से ही मालूम है" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने चौक कर अपने आप से कहा और जल्दी न करने का प्रयत्न करते हुए दफ्तर के अन्दर गई।

नेपैवोदा अपने रोम भरे हाथ डेस्क पर टेके बैठा हुआ था और वह डेस्क उससे कही छोटा मालूम पड रहा था, जब इवान सेमियोनोविच उसके सामने बैठता था। नये अध्यक्ष ने सिर एक तरफ झुकाये हुए, उसकी तरफ देखा जिससे उसकी दृष्टि मे व्यग्य का आभास होता था।

"कहिए?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने सूखे स्वर मे कहा।

नेपैवोदा ने उसकी नाक की तरफ देखा—इतनी देर तक इतनी टकटकी लगाकर और ऐसी पैनी नजर से देखा कि उसे अपनी नाक की नोक पर दर्द महसूस होने लगा।

"ये रगीन पेंसिले, कृपा कर, यहा से उठा ले जाइए," नेपैवोदा ने कहा। "तस्वीरे बनाने के लिए मेरे पास फुर्सत नही। मेरे लिए एक पेंसिल काफी है।"

"बहुत अच्छा," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कहा।

"एक बात और। उस कोने मे एक हैड-वाशर लगाने के लिए कहो।"

"क्या चीज?"

"हैंड-वाशर। हाथ धोने का साज-सामान।" नया अध्यक्ष अपनी लम्बाई के साथ उठ खडा हुआ और उसकी छाया वलेन्तिना गिओर्गियेवना के पैरो पर पडने लगी। वह एक ओर को हटी। "और एक घडा या पानी का टब। साबुन और तौलिया मै खुद ले आऊगा।"

"यह हैड-वाशर मुझे कहा मिलेगा?"

"यह भी समस्या है! ये क्या मिलते नही? नही मिलते, तो उन्हे तेल का खाली टिन और छः इची कील लाने को कहो और मै खुद हैड-वाशर बना लूगा।"

"बहुत अच्छा," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कहा।

"और फिर इसे हुक्म के रूप मे टाइप कर दो।" उसने एक कागज़ का पुर्जा दिया, जिस पर घसीट लिखावट मे कुछ लिखा हुआ था। "इसे सभी विभागो के पास भिजवा दो। आज ही।"

और नेपैवोदा की आखो ने कहा, "बस। इतना ही काम है।" वलेन्तिना गिओर्गियेवना खिसक गयी।

वह अपनी मेज पर जा बैठी और उगलियो के सिरो पर के खोल चढाकर टाइप करने बैठ गयी·

"आदेश सख्या ६६

ओत्रादनोये, २६ जून १६ ..

वलोवाया नदी पर पुल-निर्माण-कार्य के अध्यक्ष ने, केन्द्रीय प्रबध कार्यालय के तारीख २१ जून १६ के आदेश सख्या ३७५१ ओ०क० के अनुसार, आज से कार्य भार सभाला. "

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उगलियो पर से रबर के खोल उतारे, तीनो कापियो पर "मूल से मिला लिया गया" लिखा और फूट-फूट कर रो पडी।

४

इवान सेमियोनोविच के चले जाने के बाद, निर्माण-स्थल की हर चीज में उलट-फेर हो गया। बायें किनारे के फोरमैन से लारी छीन ली गयी और उसे कक्रीट के काम का फोरमैन बना दिया गया, दाये किनारे के पास की खुदाई बन्द कर दी गयी, दायें किनारे के फोरमैन को

पत्थर तुडाई के काम का फोरमैन वना दिया गया और लगभग साठ कारीगरो को पत्थर की खान की तरफ जाने वाली सडक को सुधारने मे लगा दिया गया। ट्रैक्टर आदि अन्य मशीनो का चलना वन्द हो गया, क्योकि नये अध्यक्ष ने हुक्म दे दिया कि पाच टन पेट्रोल, किसी असाधारण स्थिति में इस्तेमाल करने के लिये, अलग रख दिया जाय। शेष के वाटने का काम तिमोफेयेव को सौंप दिया गया जो लारियो के अलावा किसी और काम के लिए पेट्रोल नही देता था। नये अध्यक्ष को, किसी तरह, नदी के किनारे वनी हुई गिट्टी की खान की खवर लग गयी थी—शायद यह वही खान थी जिसका जिक्र उस ब्रिगेड-लीडर लडकी ने किया था। उसने वहा से एक बोरा मिट्टी मगवायी, उसे अपने दफ्तर के फर्श पर फैला दिया और उसका नमूना विश्लेषण के लिए भेज दिया। उसने गिट्टी की खान से लेकर निर्माण-स्थल तक घोडो पर सवार होकर चक्कर लगाना शुरू कर दिया। कीचड और सीमेंट की गर्द से भरा हुआ, जब वह दफ्तर लौटता तो कमर से ऊपर सारे कपडे उतार कर वह अपनी सफाई करने मे जुट जाता और सारी दीवार को पानी के छीटे से भिगो देता।

चद घटे, जब वह दफ्तर मे बैठता तो दफ्तर के

दरवाजे बिल्कुल खुले पड़े रहते, वह हर एक से मिलता और उसे जब किसी चीज की जरूरत होती तो वह इवान सेमियोनोविच की तरह दीवाल पर खट-खट न किया करता, बस, पूरी आवाज़ से चिल्ला उठाता, "वलेन्तिना गिओर्गियेव-ना!" जिला कार्यकारिणी और जिलापार्टी के दफ्तर के लोग उससे मिलने के लिए आने लगे—जो पहले कभी नही आते थे। नेपैवोदा उनसे फौरन ही घुल-मिल जाता, वह उन्हे अक्सर टेलीफोन करता और दहाड मार-मार कर फोन पर हसता।

हालाकि नयी व्यवस्था मे तिमोफेयेव का महत्व बढ गया था, लेकिन फिर भी नया अध्यक्ष उसे हमेशा फटकारा करता। एक दिन अध्यक्ष ने पेट्रोल का पीपा धूप मे पडा देखा। उसने फौरन तिमोफेयेव को बुला भेजा और उसको पेट्रोल-घर के सामने यह वाक्य लिखकर टाग देने के लिए कहा "अगर पेट्रोल का एक पीपा एक दिन धूप में पडा रहे, तो जितना पेट्रोल उड जाता है, उससे तीन-टन बोझ ढोने वाली लारी पैंतीस मील चल सकती है।" तिमोफेयेव को इस पर विश्वास तो नही हुआ, लेकिन फिर भी उसने उसे लिखवाया और खुद अपने हाथो से टागा। अध्यक्ष ने "मेढक" को अदला-बदला की बात भी

पकड ली। उसने वह नया पम्प वापिस मगवा लिया और लाने का खर्चा तिमोफेयेव की तनखाह से कटवा दिया। उस बात पर बहस करने के लिए तिमोफेयेव आया, लेकिन अध्यक्ष ने उससे, दाढी बनाकर आये विना, बात करने से इनकार कर दिया। तिमोफेयेव दाढी बनाकर आया, मगर फिर भी फैसला टस से मस न हुआ।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना को लगा कि नये अध्यक्ष से सभी लोग उतने ही असतुष्ट है, जितना कि वह खुद, और उसी की तरह इवान सेमियोनोविच को वापिस पाने के लिए उत्सुक है। वलेन्तिना को इवान सेमियोनोविच की कमी बुरी तरह खटकती थी और एक दिन जब मास्को से प्राप्त हुए नक्शे पर टेक्निकल विभाग के अध्यक्ष की हैसियत से इवान सेमियोनोविच के हस्ताक्षर दिखायी दिये, तो उसे इतनी प्रसन्नता हुई मानो उसे खत ही मिल गया हो। बडी देर तक वह सोचती रही कि अपने आनन्द को किससे मिल कर बाटे और अत मे उसने पाशा को बुलवा भेजा।

"तुम यह दस्तखत पहचानती हो?" उसने बडे रहस्यमय स्वर मे कहा।

पाशा नही पहचान सकी।

"ये इवान सेमियोनोविच के हैं। वे अब मास्को में काम कर रहे हैं और निर्माण के काम के नक्शे देश भर में भेजते हैं।"

"अच्छा यह बात है," पाशा ने सावधानी से कहा और फिर जरा रुक कर पूछा "सफाई अभी कर दूं या थोड़ी देर बाद?"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना को उसके इस रुख से चोट लगी और उसने नक्शा अलग रख दिया, लेकिन जब तिमोफेयेव आया तो वह उसे फिर निकाले बिना न रह सकी।

"यह दस्तखत पहचानते हो?" वह पूछ बैठी।

"जरूर। बुड्ढा अब ठीक जगह पहुंच गया है। जरा, इधर तो दिखाना।" उसने नक्शे को गौर से देखा। "जरा देखो तो, उन्होंने हमारे लिए क्या योजना बनायी है. अलकतरा और बालू में मिश्रण की तह पांच इंच मोटी। उन के दिमाग का कोई पुर्जा जरूर ढीला पड़ गया है। इतना हम लोग कभी कर सकेंगे?"

"जाहिर है, टेक्निकल दृष्टि से यही आवश्यक होगा।" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने जरा सख्त स्वर में कहा। "इवान सेमियोनोविच जो कुछ करते हैं, पक्का करते हैं।"

यहा दाढी वनाये, मुसकुराता हुआ इस विश्वास के साथ खडा हुआ है कि ढुलाई का काम चाहे कितना भी दिया जाय, वह उन सोलह लारियो से पूरा कर देगा।

उस दिन वलेन्तिना गिओर्गियेवना के मन मे भयकर अभिलाषा जागृत हुई काश, कि फिर पानी वरसने लगे। दो असमान परिस्थितियो मे दोनो अध्यक्षो की तुलना करना न्याय सगत नही है। अगर पानी फिर वरसने लगे और लारिया फिर कीचड मे फसने लगे, गिट्टी की खानो मे फिर पानी भर जाय, और कक्रीट मिलाने वाली मशीन बन्द हो जाय, तव सभी को मालूम हो जायगा कि इवान सेमियोनोविच, नेपैवोदा की तुलना मे, कितने अच्छे है।

और वलेन्तिना गिओर्गियेवना वर्षा को प्रतीक्षा करने लगी।

सामूहिक फार्म के जिस किसान के यहा वलेन्तिना तथा अन्य दो लडकिया, जो नक्शा बनाने का काम करती थी, ठहरी हुई थी, उस किसान ने कहा कि अगर वतख एक पैर पर खडी होने लगे तो यह सर्दी और वर्षा की निशानी होती है।

सुवह काम पर जाते समय, जब वलेन्तिना गिओर्गियेव-ना बाडे को पार करती तो मन मे अपने आपसे घृणा

करती हुई, वह उन बतखो पर विशेष ध्यान देती। वह बतखो के पास पहुचती तो वे धीरे-धीरे क्वेक-क्वेक बोलने लगती, मानो उन्हे भी यह मालूम है कि वलेन्तिना क्या सोच रही है।

एक सुबह जब उसकी नीद टूटी तो उसने देखा कि सामूहिक खेतिहर लैम्प जलाकर नाश्ता कर रहे है। कमरे मे इतना अधेरा था कि उनीदी अवस्था मे उसे लगा कि अभी भी शाम है। पहली चीज, जिस पर उसकी नजर पडी, वह एक कौआ था, वह पडोस के मकान के छप्पर के नीचे सिकुडा हुआ बैठा था और कुत्ते की तरह काप रहा था। वर्षा बडे जोर से हो रही थी। घर की मालकिन बडे ताव मे सदूक से बूट और बूटो पर चढाने के लिए रबर के गोलोश निकाल रही थी। वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने जल्दी से कपडे पहने, एक छतरी खोली और किसी गीत की धुन गुनगुनाती हुई दफ्तर की तरफ चल पडी।

अध्यक्ष का दफ्तर तमाम लोगो से भरा हुआ था।

इजीनियरो को सडक सुधारने का काम दिया गया। असाधारण परिस्थिति के लिए रखे गये पेट्रोल से भरकर ट्रैक्टरो को सबसे बुरी जगहो पर रख दिया गया ताकि लारियो के फसने पर, उनके जरिए उन्हे निकाला जा

सके। पुल के खम्भो के ऊपर छप्पर बनाने और हर हालत मे कक्रीट का काम जारी रखने का हुक्म दिया गया। अध्यक्ष ने मास्को को टेलीफोन करने का प्रयत्न किया, लेकिन लाइन खराब थी। हर जगह ऐसी उथल-पुथल मच गयी- कि वलेन्तिना गिओर्गियेवना के सिर में दर्द होने लगा। अत मे अध्यक्ष उठ गया, दफ्तर खाली हो गया और वलेन्तिना गिओर्गियेवना अपने रोज के काम में जुट गयी।

घटे दो घटे मे अध्यक्ष भीगा और कीचड से लिथडा हुआ वापस आया और उसने एक बार फिर मास्को को फोन करने की कोशिश की, लेकिन सफलता न मिली। उसने हाथमुह धोया और उसी समय एक तार लिखा दिया। अध्यक्ष ने चारो तरफ पानी के छीटे छिटकाते हुए बोलना शुरू किया. "लिखो—'अत्यावश्यक। नाम।' लिख लिया? 'वलोवाया के किनारे की गिट्टी खान का नमूना भेजे हुए एक सप्ताह हो गया और अभी जवाब नही मिला।' विराम। लिख लिया? 'देखने से यह गिट्टी कक्रीट के लिए उपयुक्त मालूम होती है। विराम। विश्लेषण के परिणामो को कृपया तार द्वारा भेजिये वरना विश्लेषण के बिना ही हम वह गिट्टी इस्तेमाल करने लगेंगे। विराम।

आप की देरी अब जरा भी बरदाश्त नही की जा सकती।' "

"यह तार क्या केन्द्रीय प्रवध विभाग को भेजा जा रहा है?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने चतुराई के साथ यह बताने की कोशिश की कि इसकी भाषा बडी अशिष्ट है। लेकिन अध्यक्ष ने उसकी वात समझी ही नही।

"हा, क्या?" उसने अपने मोजे निचोडते हुए कहा।

"कोई खास वात नही," उसने कहा और मन मे सोचने लगी, "मुझे क्या चिन्ता है?" फिर जोर से उसने कहा, "मैंने लिख लिया है: 'आपकी देरी अब जरा भी बरदाश्त नही की जा सकती।' "

"ठीक। 'भविष्य मे सरकारी चिट्ठिया भेजने के बजाय, कृपया, शीघ्रतापूर्वक व्यावहारिक सहायता भेजा कीजिये। नेपैवोदा।' बस। और जरा अपने टेक्निकल विशेषज्ञ को बुलवाओ।"

"मेरा ख्याल ठीक निकला," वलेन्तिना गिओर्गियेवना अपने टाइपराइटर के सामने बैठते हुए सोचने लगी। "जरा सा पानी बरसा कि वह सौ रूबल का तार मास्को भेजने लगा।" जब तार टाइप हो गया, तो उस पर हस्तखत कराने के लिए वह अध्यक्ष के दफ़्तर मे गयी,

नेपैवोदा ने पेसिल उठायी लेकिन किसी विचार ने उनके हाथ रोक लिये और उसने टेक्निकल विशेषज्ञ से कहा

"अगर विश्लेषण करने मे उन्हे इतना ज्यादा वक्त लगा है तो यह तार भेजने मे कोई सार नही मालूम होता। हफ्ते भर मे हमे पुल के खम्भे बनाकर तैयार करने की आवश्यकता है, न कि विश्लेषण की। तुम्हे पता है कि इस खान की मिट्टी को, पहले वे लोग कब ले गये थे?"

टेक्निकल विशेषज्ञ ने बताया कि उसे पता नही है।

"तुम्हे भी पता नही है क्या?"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने बताया कि उसे भी पता नही है।

"गाव मे पूछताछ करने किसे भेजा जाय?" नेपैवोदा ने पूछा "यथा-सम्भव शीघ्र ही।"

किसे भेजा जा सकता है, इस पर वे विचार करने लगे। लेकिन बुरे मौसम के कारण सभी बहुत व्यस्त थे। दफ्तर मे सिर्फ एक टेक्नीशियन ही था, वह जुलाई के लिए नयी योजना बना रहा था, जो बहुत पहले तैयार हो जाना चाहिए थी। हर आदमी व्यस्त था। अध्यक्ष ने वलेन्तिना गिओर्गियेवना की तरफ देखा।

यकायक उसने पूछा. "तुम घोड़े पर सवारी कर लेती हो?"

"क्या?" वलेन्तिना ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं। मेरा ख्याल है, तुम नहीं जानती।" उसने निराश भाव से कहा, "मैंने सोचा, शायद तुमने फौज मे रहकर सीख लिया हो।"

"फौज में, मैंने हमेशा कार में सफर किया है। इवान सेमियोनोविच मुझे हमेशा अगली सीट पर ड्राइवर के साथ बैठाते थे।" और उसने बड़े घमण्ड के साथ अपनी आखे आधी मीच ली।

"लेकिन ऐसे मौसम में कार में सफर नही किया जा सकता' अध्यक्ष ने खिडकी से बाहर देखते हुए कहा। "क्या तुम गाव तक पैदल जा सकती हो और उस मिट्टी की खान के बारे में स्थानीय लोगो से अथवा सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष से पता लगा सकती हो?"

"कर सकती हू," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कंधे उचका कर कहा। अगर इंजीनियरो को सड़क सुधारने के लिए भेजा जा सकता है, तो उसे चपरासी क्यो नही बनाया जा सकता।

"लेकिन तुम्हे पैदल जाना होगा।"

"ज़ाहिर है।"

अपने कमरे में जाकर वह बाहर आंधी की चीख़ सुनने लगी, उसने बूट चढ़ाये और उठे हुए कधो का हल्का कोट पहना, कालर खडा कर दिया और छाता लेकर बाहर निकल पडी।

अध्यक्ष ने पुकारा, "वलेन्तिना गिओर्गियेवना!"

वह थोडा सा मुडी, मगर उसकी आखों में अपनी आखे नही मिलाना चाहती थी।

"निश्चय ही तुम इस तरह नही जाओगी?"

"किस तरह?"

"तुम सराबोर हो जाओगी। एक मिनट ठहरो।"

वह एक सख्त सी, बडी बरसाती ले आया, जिस पर फौजी बटन लगे हुए थे और अदर की तरफ बडे अक्षरो मे कोई सख्या लिखी थी। उसमें तम्बाखू की गध आ रही थी।

"इसे पहन लो," अध्यक्ष ने उसकी तरफ बढाते हुए कहा।

लम्बे कद की वलेन्तिना गिओर्गियेवना के लिए भी यह बरसाती बहुत बडी थी। अध्यक्ष ने उसके बटन लगा दिये, आस्तीने उलट दी और सिर के आवरण को उसके हैट पर लगा दिया।

"अब ठीक रहेगा। अपना छाता यहीं छोड़े जाओ। अगर इस गांव में कुछ पता न चले, तो अगले गांव चली जाना। अच्छा, मेरी शुभकामनाएं लो।

वलेन्तिना गिओर्गियेव्ना ने कागज़ में लिपटी हुई सैंडविच जेब में डाली और चल दी।

गर्जन और बिजली की चमक के बिना ही, पानी लगातार धीरे-धीरे बरस रहा था—ठोस, और अभेद्य झड़ी लगी हुई थी। सामने कठिनाई जान पड़ती थी। नदी फेन के कारण सफेद हो गई थी और खौलती-सी नजर आयी पानी सोख कर सड़क फिसलनी हो गयी थी, इस-लिए वलेन्तिना गिओर्गियेवना नाली की खाई में कूद पड़ी। वहां चलना आसान था। छोटे छोटे गीले मेंढक, जो अचारों-से दीख रहे थे, उनके पांव-तले से उछल पड़े। सिर पर बरसाती के आवरण पर बूंदें इस तरह टप-टप कर रही थीं, मानो छत पर गिर रही हों, लेकिन एक भी बूंद अन्दर नहीं घुस पाती थी और इस विराट बरसाती को ओढ़कर भीगे-भीगे खेतों के बीच चलने में वलेन्तिना गिओर्गियेवना को बड़ा मज़ा आया—"मानो मैं किसी खेमे के अंदर हूं," उसने ज़रा सा सिहरते हुए सोचा।

जिस घर में वह रहती थी, उसके मालिको को यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि वह दफ्तर के वक्त यहा आ गयी है। उस गिट्टी की खान के बारे मे उनके पास कोई सूचना नही थी—दर असल, उन्हे उसके अस्तित्व का भी कोई ज्ञान न था। जाहिर है, उस खान को बरसो पहले त्याग दिया गया होगा। उस घर के स्वामी ने उसे सलाह दी कि वह सडक बनाने वाले कारीगर के पास जायें, जो गाव के छोर पर रहता है।

यह कारीगर हसमुख नौजवान निकला। उसने एक नक्शा निकाला जिस मे एक-एक सूत का हिसाब बारीकी से दिया गया था और उस पर उस खान को अकित करने वाला निशान उसने खोज निकाला, जिसके नीचे उस खान की गिट्टी का परिमाण भी लिखा था (लगभग १७६, ५०० घन फुट)। लेकिन उसने बताया कि सडक बनाने के लिए इस खान का उपयोग कभी नही किया गया। उसे यह जानकारी भी न थी कि कब और किस उद्देश्य के लिए इस खान में काम शुरू किया गया था और उसने यह भी विश्वास दिलाया कि गाव में कि-सी को इसकी जानकारी न होगी।

"'सुनहरी बाल' नामक अगले सामूहिक फार्म मे

अब भी कुछ बूढे लोग काम करते है, जिन्हो ने क्रांति से पहले रेल बिछाने के लिए ठेकेदारो के लिए काम किया था," उसने बताया। "उन्हे शायद जानकारी हो।"

इसलिए वलेन्तिना गिओर्गियेवना 'सुनहरी बाल' नामक फार्म की ओर चल पडी।

यह सडक और भी खराब थी। यहा पहाडियो पर चढना पडा और खाइयो मे उतरना पडा। फिसलन भरी ढलवा सडक के दोनो तरफ काले-काले, जुते हुए खेत फैले थे और आधा मील पार करने के बाद तो बूट उठाना भी कठिन हो गया, क्योकि उनमे भारी गीली मिट्टी चिपक गयी थी, जो बूटो को पकड लेती थी और उन्हे खीचकर पावो से अलग कर देती थी। हवा मे बरसाती उड रही थी और कधो पर फस गयी थी। ज्यो-ज्यो वह आगे बढती, त्यो-त्यो इस निरर्थक यात्रा पर उसका गुस्सा उमडता जाता और उसके मन मे यह गम्भीर सन्देह पैदा होने लगा कि नेपैवोदा ने इस मूसलाधार वर्षा मे उसे सिर्फ सताने के उद्देश्य से भेजा है, क्योकि वह जानता है कि यह लडकी उसे पसद नही करती।

शीघ्र ही उसे भूख लग आयी। उसे अपनी सैंडविच की याद आ गयी और वह कही बैठने की जगह खोजने

लगी, मगर जुते खेतो, कुछ झाडियो और कीचड भरी सडक के अलावा कही कुछ नजर नही आता था। और उसकी सैंडविच भी पानी से भीग कर आटे की लोई जैसी गिलगिली हो गयी, जिसमें तम्बाकू के रेशे लिपट गये थे। उसने उसे फेंक ही दिया। "इस वक्त, काश, इवान सेमियोनोविच मेरी हालत देख पाते," उसने मन में कहा और रास्ते पर वढती ही गयी। उसे रास्ता अनु-मान से अधिक लम्बा जान पडने लगा। सडक बनाने वाले कारीगर ने बताया था कि 'सुनहरी बाल' नामक फार्म गाव से तीन मील दूर है, लेकिन उसको विश्वास था कि वह कम से कम पाच मील पार कर आयी है।

"मै रास्ता तो नही भूल गयी हू?" उसने सोचा, और वह यह मानने के लिए तैयार नही थी कि जब कभी उसे कोई दोराहा मिला तो उसने आसान दीख पडने वाला रास्ता ही चुना था। एक क्षण वह किसी से भेंट हो जाने की प्रतीक्षा मे खडी हो गयी, लेकिन कोई नही गुजरा और इसलिए वह बराबर चलती ही गयी और जब कभी कोई दोराहा आ जाता तो वह बायी दिशा का रास्ता पकड लेती। एक घटा वह इसी तरह चलती रही, तभी उसे किसी छप्पर की धुधली रेखाए दिखायी दी और

शीघ्र ही वह गाव के सिरे पर किसी साग-सब्जी के बागीचे मे पहुच गयी। जो पहला घर मिला, उसे उसने खटखटाया। उसे अदर आने के लिए कहा गया तो वह एक अधेरे दरवाजे मे घुस गयी, जहा मुरगी के बच्चो ने बरसात से बचने के लिए शरण ले रखी थी और इस प्रकार वह एक बडे कमरे में पहुच गयी। तीन व्यक्ति खाना खा रहे थे—एक बूढी महिला, एक जवान लडकी और एक जवान लडका जिसकी आखे बूढी महिला की तरह थी। वह उठ बैठा और उसने वलेन्तिना गिओर्गियेवना को बरसाती उतारने में मदद दी—यह बरसाती इतनी सख्त हो गयी थी कि उसे अकेले खडा किया जा सकता था। बूढी महिला उसके लिए गरम, ऊनी जूते ले आयी और रबर के जूते उतारने के लिए कहने लगी।

"बाप रे। पान्च बज गये है।" वलेन्तिना गिओर्गियेव-ना ने घडी देखकर कहा।

"तुम कहा से आयी हो?" लडकी ने पूछा, लेकिन वलेन्तिना गिओर्गियेवना के जवाब दे पाने से पहले ही, उस लडकी ने वलेन्तिना की टाई देख ली और चकित होकर कहा· "अरे, यह तो वही पुल वाली महिला है, अलेक्सेय।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उस लड़की की तरफ फिर देखा और पाया कि यह वही ब्रिगेट-लीडर है जो उस दिन काम से छुट्टी पाने के लिए आयी थी।

"पुल से आयी हो, ठीक है," ब्रिगेड-लीडर ने कहना जारी रखा। "क्या तुम फिर हमारी गाड़िया लेने आयी हो?"

"नही इस वार नही। क्या नाम है तुम्हारा? ओल्गा, क्यो?"

"ठीक है," ओल्गा ने थोडा हसकर कहा। "तुम्हारे यहा इतने आदमी है, और फिर भी तुम्हे मेरा नाम याद है। यह हमारी दादी है। और यह मेरे पति है अलेक्सेय घवराओ नही। वह देखने मे ही ऐसे है, वैसे चूहे की तरह शान्त स्वभाव के है।"

अलेक्सेय की उम्र सिर्फ बाईस साल ही होगी, लेकिन उसके आचार, परिवार के बुजुर्ग की तरह प्रभाव-पूर्ण प्रतीत हुए।

"देखती नही, ये कितनी थकी है?" उसने मेज पर साफ तश्तरी रखते हुए कहा। "कुछ खिलाओ-पिलाओ, और मनचाहे जितनी जबान चलाना।"

"ओह, मै भूखी नही हू," वलेन्तिना गिओर्गियेवना

गिओर्गियेवना ने गोभी के शोरवा मे चम्मच डुबाते हुए कहा।

"उसमे तो सदियो से काम नही हुआ," ओल्गा ने कहा। "वहा तमाम झाड-झखाड उग आये है।'

वृद्धा ने रसोई से ही चिल्लाकर कहा. "मुझे लगता है कि जब रेल की पटरी बिछायी गयी थी, तब उस खान से गिट्टी ली गयी होगी।"

"कब की बात है?"

"लडाई से पहले की।"

"कौन सी लडाई?"

"पहली लडाई। जब जार था।"

"और फिर?"

"मेरा ख्याल है कि बाद मे उन्होंने सडक बनाने के लिए इससे गिट्टी ली होगी।"

"अगर तुम नही जानती, तो बेकार टाग मत अडाओ, दादी।" अलेक्सेय ने उठते हुए कहा और कोट पहन लिया। "सडक के लिए हमने क्रिवाया की खाई से गिट्टी ली थी। जिस खान की बात यह कर रही है, वह यहा से दस मील दूर है। बात को इतनी दूर क्यो घसीटा जाय?"

"ठीक-ठीक पता मुझे किससे मिल सकता है?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने पूछा। "मुझे पता लगाना ही है।"

अलेक्सेय ने विचारलीन होकर कहा: "मेरा ख्याल है, यहा कोई ऐसा नही है, जो यह बता सके।"

ओल्गा ने बातबीच मे काट दी: " इस खान के बारे मे मुझे कुछ खान खोजनेवालो से पता चला था। वे अब ज़िला केन्द्र मे है। उनका प्रधान एक बूढा है और उसी ने मुझे इसके बारे मे बताया था।"

"वह भी क्या ज़िला केन्द्र में होगा?"

"अदाज़ तो यही है।"

"उसका नाम क्या है?"

"उसका नाम? मुझे याद नही।"

"सूखी-सूखी बाहवाला आदमी? उसका नाम मोश्करोव तो नही है?" वृद्धा ने रसोई से आवाज़ दी। "मेरा ख्याल है वह मोश्करोव था।"

"टाग मत अडाओ दादी," अलेक्सेय ने कहा। "तुम्हे नही मालूम, तो टाग मत अडाओ। तुम्हारा मतलब उस सूखी बांहवाले आदमी से है जो येवग्राफोव के यहा ठहरा था?" उसने अपनी पत्नी की तरफ मुडकर कहा।

"हा वही है।"

"जरा ठहरो, मै उन लोगो से अभी पूछ कर आता हू।"

और अलेक्सेय चला गया। दस मिनट में ही वह एक दाढी वाले व्यक्ति को लेकर वापिस आ गया जिसके कधे पर पुराना फौजी कोट पडा हुआ था।

अलेक्सेय ने वताया. "कमरोव है उसका नाम। वसीलि इग्नात्येविच कमरोव।"

"जरा ठहरो। मै खुद इन्हे वता दूगा।" उस दाढी वाले व्यक्ति ने कहा। उसने कोट उतार दिया, अपने गीले हाथ उस पर पोछ दिये और मेज पर वैठ गया। उसने आदर से कहा "आप पुल से आयी है? अच्छा, तो आप कागज का टुकडा ले लीजिये और लिख लीजिए, ताकि आप इसे भूल न जाय, कमरोव वसीलि इग्नात्येविच, सडक का इजीनियर। वडा अच्छा आदमी है। इस इलाके मे चप्पा-चप्पा उसका जाना हुआ है—वह सारी जमीन के बारे मे। सभी सडको के विषय मे और सभी पुलो के विषय मे, छोटी से छोटी वात को जानता है। आप जो कुछ भी जानना चाहे, वह वता देगा। आजकल वह शहर में रहता है, सोवियत स्क्वायर से कोई खास दूर नही।

वायर से गुजरते ही सिनेमा मिलेगा; सीधे चले जाइये और दूसरे मोड पर पहुचकर बायी तरफ चौथा या पाचवा मकान होगा। आपको बडी आसानी से मिल जायगा—उसमे सामने के सायबान पर लोहे का छप्पर पडा है।"

दाढीवाले व्यक्ति ने कमरोव का पता वताने मे इतना वक्त लगाया कि यही मालूम पडता था कि कमरोव को खोजने की आवश्यकता वलेन्तिना गिओर्गियेवना के बजाय खुद उसे है।

"यहा से शहर कितनी दूर है?" वलेन्तिना ने पुछा।

"बडी सडक से बारह मील।"

"अच्छा। अब मै चलती हू और अपने अध्यक्ष को यह बता दूगी।"

अलेक्सेय ने कहा: "मै मशीन ट्रैक्टर स्टेशन ले जा रहा हू। अगर आप चाहे, तो मै वहां पहुचा सकता हू। रास्ते मे ही तो पडेगा।"

अलेक्सेय ने घोडे जोत लिये, तो वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने विदा ली और बाहर निकल आयी। आठ से अधिक बज चुके थे। पानी की झडी अब बद हो गयी थी, लेकिन ठडी और तेज बूदे अभी भी पड रही थी और अधेरे में उनकी आवाज दिन के समय से भी अधिक स्पष्ट सुनायी

दे रही थी। वलेन्तिना गिओर्गियेवना राह टटोलती गाड़ी तक पहुच गयी और पुआल पर बैठ गयी। "पैर सिकोड़ लो, यहा एक खम्भा लगा है।" अलेक्सेय ने कहा और गाडी रुक गयी। दाढीवाला आदमी साथ चल रहा था और हालाकि वलेन्तिना गिओर्गियेवना यह कह चुकी थी कि वह कमरोव का पता पूरी तरह समझ चुकी है और उनके लिए धन्यवाद भी दे चुकी थी, फिर भी वह यह बताये जा रहा था कि कमरोव के यहा कैसे पहुचा जा सकता है। आखिर मे वह भी चला गया। अल्प भाषी अलेक्सेय के साथ वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने आधा रास्ता पार कर लिया, लेकिन उसे यह सवारी पैदल-यात्रा से भी ज्यादा थका देनेवाली महसूस हुई, क्योकि गाडी कभी इस तरफ और कभी उस तरफ उछलती हुई बढ रही और कई बार तो उलटने को हो गयी। आखिरी चार-चार पाच मील उसने पैदल ही पार किये और मन में सोचती रही कि सारा दिन खत्म हो गया और कही इस बेवकूफी के काम मे न फसी होती, तो बडे आराम से घर मे होती, जहा लोटा भर ताजा गरम दूध और उसकी चारपाई तथा चेखोव की किताब उसका इतजार कर रहे होगे।

दूर पर दफ्तर की रोशनी दिखायी पडने लगी।

कुहरा भरे अधकार मे बिजली की रोशनी सर्चलाइट की किरणो की तरह आ रही थी। दफ्तर का कमरा उसे पहली बार आरामदेह और आतिथ्यपूर्ण मालूम हुआ और उसने घुसते ही रबर के बूट उतारे, स्लीपर पहने और अध्यक्ष के दफ्तर मे घुस गयी।

"हा, तुम्हे कुछ पता लगा?" अध्यक्ष ने लिखना रोक कर बेसब्री के साथ पूछा।

"नही। किसी को कुछ नही मालूम।"

"बुरा हुआ," अध्यक्ष ने फिर लिखना शुरू करते हुए टीका की।

"शहर मे कमरोव नाम का एक व्यक्ति, एक इजीनियर है," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उसके रोम भरे हाथो की तरफ देखते हुए अपनी बात जारी रखा। "लोगो का कहना है कि वह कई वर्षो तक एक खान खोजने वाले दल का प्रधान था. .।"

"और यह कमरोव क्या कहता है?"

"मै कहती हू कि वह शहर मे रहता है।"

"यानी तुम उससे नही मिली?"

"नही। गाव मे लोगो ने सिर्फ यही बताया कि वह कहा रहता है।"

अध्यक्ष ने एक क्षण कुछ सोचा।

"तुम्हे उससे मिलना होगा," उसने अत मे कहा।

"वहुत अच्छा।"

"मै कार मगवाता हू।"

"तो क्या मुझे फौरन जाना होगा?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने चकित होकर पूछा। "मै. .।"

"क्यो नही? शहर के लिए वडी अच्छी सडक है। हलो, जरा गैरेज से मिलाइये. एक घटे में पहुच जाओगी और एक घटे में वापिस आ जाओगी। तुम सामने की सीट पर ड्राइवर के पास वैठना। हलो, कौन वोल रहा है? तिमोफेयेव? एक हल्की लारी फौरन तैयार कराओ... हा, शहर को .।" उसने टेलीफोन रख दिया। "वलेन्तिना गिओर्गियेवना, अगर तुम वढिया खवर लायी, तो पुल निर्माण के काम की गति जितनी तुम्हारी वजह से तेज़ होगी, उतनी सारी मशीनें एक साथ लगा देने से भी न हो सकेगा। समझी?"

"हा," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने जवाव दिया और स्लीपर उतार कर रवर के बूट पहनने चली गयी।

लारी का ड्राइवर असहनीय रूप में वातूनी निकला। उसने एक के बाद एक, अनेक फिल्मो की कथाए सुना

डाली। वलेन्तिना को लगा कि यह रुकेगा ही नही। पहले तो वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उसकी बाते सुनने का प्रयत्न किया, फिर वह ऊघ गयी और जब आख खुली तो फिर सुनने लगी।

और पानी बरसता रहा। हेडलाइट्स की रोशनी मे रडियेटर पर दिखनेवाली बूदे बदूक की गोली की तरह मालूम हो रही थी।

लारी तेज चल रही थी। कही कोई गढा आ जाता तो लारी के पीछे बधा हुआ फालतू पहिया शोर मचाता उछल पडता। वे शहर पहुचे तो आधी रात बीत गयी थी। सडके लगभग सुनसान थी।

"हमे किधर चलना है?" ड्राइवर ने पूछा।

"मुझे खुद नही मालूम," उनीदी वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कहा। "सोवियत स्क्वायर की तरफ कही चलना है।"

ड्राइवर ने लारी का द्वार खोला और पुकारा, "ऐ भाई।" और किसी से कुछ पूछने लगा, जो अधेरे में दिखायी नही पड रहा था। वे फिर चल दिये और एक चौराहे पर पहुचे, जहा हेडलाइट की रोशनी में एक नाई की दूकान, पसारी की दूकान, फोटोग्राफर की दूकान

और सिनेमा घर—सभी बद नजर आ रहे थे। सिनेमा के प्रवेश द्वार पर एक पोस्टर बोर्ड लगा था, जिस के नीले अक्षर पानी से धुल गये थे। तीसरी मजिल की खिडकी पर एक लैम्प का मनोहर आवरण दिखाई दे रहा था और न जाने क्यो वलेन्तिना गिओर्गियेवना के दिमाग मे यह ख्याल आया कि वहा लूटो का खेल खेला जा रहा है।

"और यहा से हमे किधर जाना है?" ड्राइवर ने फिर पूछा।

"सिनेमा से आगे दूसरे मोड पर, इजीनियर कमरोव का घर वही कही है," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने थकान-भरी आवाज मे जवाब दिया। "लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि इतनी रात गये हमे पता कैसे मिलेगा?"

"अगर उसका घर यही है, तो पता चल ही जायगा," ड्राइवर ने विश्वास के साथ कहा।

वे लोग एक अधेरी गली मे मुडे। ड्राइवर लारी से कूद पडा और पहले ही मकान पर बेतकल्लुफी के साथ दस्तक देने लगा। रोशनी हुई, खिडकी खुली और किसी ने कुछ कहा। उसके बाद खिडकी धडाक से बन्द हो गयी। ड्राइवर घर-घर गया। "वह सारी गली को ही जगा

डालेगा," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने मन ही मन कहा और फिर ऊघ गयी। जब किसी ने हिलाया, तभी उसकी नीद टूटी।

"हम लोग कहा जा रहे है?" उसने घबराकर पूछा।

"कमरोव के यहा" ड्राइवर ने जवाब दिया। "उन दो खिड़कियो में रोशनी दिखायी दे रही है? वही उसका घर है। तुम जाओ, उससे बात कर लेना, तब तक मै स्पार्क-प्लग साफ किये लेता हू।"

ड्योढी पर ही वलेन्तिना गिओर्गियेवना की एक छोटे से कद के हसमुख वृद्ध से भेट हुई, जो ड्रेसिग गाउन और टोपी पहने था। उसके पीछे-पीछे चलते हुए वलेन्तिना ने हाल पार किया, जहा उसकी सख्त बरसाती साइकिल में उलझी, फिर किसी डलिया में उलझी और आगे चलकर कपडे टागने की पेडनुमा खूटियो से उलझ गयी। दोनो ने एक कमरे मे प्रवेश किया जिसके बीचोबीच साफ कपडे से ढकी मेज पडी थी। एक दीवाल के किनारे नीचा सोफा रखा था, जिस पर कमरोव सोता था और एक तरफ एक परदा पडा था। परदे की पीछे से किसी के सास लेने की आहट सुनाई दे रही थी, जिससे पता

लगता था कि वहा कोई सो रहा है। मेज पर तश्तरी मे एक भीगी हुई ऊनी टोपी इस्तरी के लिये फैलाकर रक्खी थी।

"तो आपको वलोवाया पुल के निर्माण कर्त्ताओ ने भेजा है?" वृद्ध ने उत्साहपूर्वक फुसफुसा कर पूछा और तेज रोशनी में आखे मिचमिचायी। "आपसे मिलकर बडी खुशी हुई। बैठिये। अफसोस है, इस समय मै चाय नही पिला सकता, मकान-मालिकिन सो गयी है। मै कुछ-कुछ आप लोगो की तरह हू — खानावदोश।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने धीमे स्वर में अपने आने का उद्देश्य बताया।

"मुझे उस खान की याद जरूर है," वृद्ध ने मुसकुराकर कहा। "मैने ही तो उसे खोज निकाला था — उस समय मै विद्यार्थी था और एक दोस्त के साथ, जो आज कल लेनिनग्राड के इंजीनियरिंग विद्यालय में प्रोफेसर है, मै वलोवाया मे नहाने गया था। जो ठेकेदार रेलवे की शाखा-लाइन बना रहा था, उसने इस खादिम को इस खोज के पुरस्कार स्वरूप वोदका की एक वोतल पिलायी थी, लेकिन वर्तमान सामूहिक फार्म के पूर्वजो ने पुरस्कार स्वरूप उसकी खूब पिटायी की थी और वाह तोड

दी थी वाद में, लगभग १९२६ में, मेरी सिफारिश पर उस खान को गिट्टी को नीव वनाने के लिए इस्तेमाल किया गया था."

"क्या उसे कक्रीट वनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है?"

"खूव अच्छी तरह — जहा तक उसकी मशीनी विशेषताओ का सम्वन्ध है, वह उपयुक्त है। उस गिट्टी के दानेदार तत्व, जरूर, टेक्निकल स्तर के नही है, लेकिन यह कोई महत्व की बात नही है। आप लोग मोटे दानो को वारीक दानो से अलग कर ले और फिर उन में कुछ और मोटी सामग्री मिला दे, सुनो, इसकी मिसाल के लिए तुम्हे कुछ अधिक दूर नही जाना पडेगा — इसी सडक पर १९४ वी चौकी पर कक्रीट का पुल है — वह उतना खूवसूरत तो नही है, जैसा आप लोग वना रहे है, लेकिन १८ फुट लम्वा दोहरा पुल है और वह सव का सव उसी खान की गिट्टी से वना है — चट्टान की तरह ठोस," वृद्ध ने फुसफुसाकर कहा।

"और वह वेलिये क्रेस्ती वाला पुल भी," पर्दे के पीछे से अप्रत्यागित स्वर आया।

"विल्कुल ठीक," कमरोव ने पर्दे की तरफ सिर

हिलाकर स्वीकार करते हुए, अब अपनी स्वाभाविक आवाज में कहा। "ताईसिया इवानोवना, वह पुल २४१वी चौकी से आगे ४०वी या ५०वी पर है। मुझे ठीक याद नहीं।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उठते हुए कहा: "आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे अब जाना चाहिए। सभी लोगो को हमने जगा दिया, इसके लिए क्षमा चाहती हूँ।"

"किसी काम आ सका, इससे मुझे बडी प्रसन्नता हुई। अगर कुछ और जरूरत पडे तो फिर आइयेगा।" वृद्ध ने अनजाने ही फिर अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा। "आपसे मिलकर बडी खुशी हुई।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना बाहर निकल आयी और ड्राइवर के पास फिर जा बैठी।

झटके के साथ कार चल पडी और शीघ्र ही शहर से बाहर हो गयी, सडक को चीरते हुए, गढो का पानी उछालते हुए और अपनी हेडलाइट से सडक पर लगे चिन्हो, सफेद खम्भो और झाडियो की चमकदार पत्तियो को उजागर करते हुए बराबर बढती जा रही थी। वलेन्तिना गिओर्गियेवना सो गयी और उन पानी भरे गढो, सफेद रगे-पुते खम्भो और लारी के पहियो के नीचे पानी की तरह बहती हुई सडक को सपने में देखने लगी, और

आखिर में जब दफ्तर के सामने गाड़ी रुकी तो उसे यह पूरा विश्वास था कि उसे एक क्षण-भर के लिए झपकी नहीं आई।

लारी से उतरी तो उसके शरीर का एक-एक हिस्सा दर्द कर रहा था, कमरे में घुसकर उसने बरसाती उतारी। वह इतनी थक गयी थी कि बूट उतारने की भी हिम्मत न कर सकी और वैसे ही अध्यक्ष के कमरे में चली गयी।

वह चला गया था। पाशा उसकी कुर्सी पर बैठी हुई अखबार पढ़ रही थी।

"नेपैंवोदा कहां है?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने पूछा।

"वह खान की तरफ गये हैं। कह गये हैं कि तुमसे उनका इंतज़ार करने को कह दूं।"

"तुम यहां क्या कर रही हो?"

"वह मुझसे कह गये हैं कि अगर कहीं से फोन आये, तो उसका नाम पूछ लेना।"

"ठीक। तुम अब जा सकती हो। मैं उनका इंतज़ार करूंगी। ज़रा यह तो बताओ, अध्यक्ष का अखबार पढ़ने की इजाज़त तुम्हें किसने दी?"

"किसी ने नही। मै अगर पढ ही लूगी तो क्या उसमें आग लग जायगी, क्यो?"

"तो मामला यहा तक बिगड गया है?" थककर चूर-चूर वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने अपने कमरे में एक स्टूल पर बैठते हुए मन ही मन कहा। "अब पाशा भी मेरा रत्ती भर लिहाज नही करती। पाशा भी।" उसके हृदय में आत्म-ग्लानि का भाव उमड आया, जल्दी से उसने कागज उठाया, टाइपराइटर में सरका दिया, अपनी उगलियो पर रबर की खोले चढा ली और टाइप करने लगी

"प्रियवर इवान सेमियोनोविच,"

वह लिखना चाहती थी कि यहा की बाते अब बर्दाश्त के बाहर हो गयी है, अब कोई मेरा लिहाज नही करता, मेरे न तो कोई दोस्त है और न रिश्तेदार और अब इसी आशा में जीवित हू कि एक दिन आप बुला लेगे और मुझे विश्वास है कि किसी भी अन्य सेक्रेटरी के बजाय आपको मेरे साथ अधिक आराम मिलेगा..

लेकिन उसने लिखा यो·

"मै यह कहना चाहती हू कि अगर आपको मुझसे अधिक सतोषजनक कोई व्यक्ति न मिला हो, तो मै आज भी आने के लिए और आपके लिए काम करने को तैयार हू। लेकिन अगर मास्को में मुझे कोई कमरा नही मिलता, तो मै वहा न आ सकूगी। कृपया यथासम्भव शीघ्र ही मुझे यह सूचित कीजिये कि इस सम्बन्ध मे क्या सम्भावनाए है, क्योकि मै शरद मे यहा नही रहना चाहती, और किसी अन्य सुदृढ सगठन मे काम करने के लिए चली जाऊगी।

ताजे समाचार यह है: दूसरे और तीसरे खम्भे पर कक्रीट का काम समाप्त हो गया है और पहले पर लगभग खत्म हो गया है। कल हम पुल के लिए मचान बाधना शुरू कर देंगे। नदी किनारे की खान से गिट्टी लेने का काम भी हम जल्दी ही शुरू कर देगे। लाइन पर काम करनेवाली लारियों ने अपने लक्ष्य का ६० फीसदी काम पूरा कर दिया है।

आपकी ही,
वलेन्तिना गिओर्गियेवना"

५

तीन वजे सुवह नेपंवोदा ने विभिन्न विभागो के प्रधानो को अपने साथ लिया और १९४वी चौकी के उस पुल को देखने के लिए रवाना हो गया जिसका जिक्र कमरोव ने किया था। जेवी टार्चो की रोशनी मे उसने पुल के खम्भे को इस तरह हथौडे से पीटते हुए गले से ऐसी घर्र-घर्र आवाज की, मानो वह जन्मजात लुहार हो। कक्रीट लोहे से भी अधिक सख्त सावित हुआ। "लेवोरेटरी का विश्लेषण तो यही है," नेपंवोदा ने कहा और सभी लोग लौट आये।

छ. वजे सुवह गिट्टी तोडनेवाली मशीनो को एक ट्रैक्टर मे वाधकर नदी किनारे की खान पर भेज दिया गया। उन्होने काम शुरू कर दिया — रास्ते साफ कर दिये और गिट्टी को छानने-वीनने वाली मशीनें लगा दी गयी। दोपहर तक निर्माण-स्थल पर नयी खान से गिट्टी लेकर पहली लारी आ पहुची।

दूसरे दिन ढुलाई का काम रोजाना के निश्चित लक्ष्य से अधिक पूरा हुआ। पुल-निर्माण में देर होने का दोष अब तक जिन ड्राइवरो के मत्थे मढा जाता

था, वे अव खिल उठे, मस्त हो गये और लदाई कराने वालो से वरावर झगड उठते कि उनकी लारियो पर और अधिक लदाई की जा सकती है, वे यह हठ करते कि उनकी लारिया विल्कुल ऊपर तक भर दी जाय और दलील यह देते कि खूव लदी गाडियो के फिसलने का डर कम होता है।

इस वीच वर्षा भी जारी रही। तीन दिन से विना थमे लगातार वर्षा हो रही थी; लोग किसी कदर उसके आदी हो गये थे और अपने को परिस्थिति के अनुरूप वना चुके थे। तिमोफेयेव ने दीवार-पत्र के लिए वडी चतुराई से एक कार्टून वनाया था, जिसमें सारे निर्माण क्षेत्र को सागर-तल का लोक चित्रित किया गया था और नेपैवोदा समेत सभी कर्मचारियो को मछली वनाया गया था। एक व्यक्ति जिसे मछली नही वनाया गया था, वह थी वलेन्तिना गिओर्गियेवना; उसे मत्स्य-वाला वनाया गया था।

उसी शाम नेपैवोदा ने वलेन्तिना को वुलाया और एक कागज दिया।

उसने कहा: "कृपया इसकी तीन प्रतिया टाइप कर दीजिये। एक फायल के लिए, एक नोटिस-वोर्ड के लिए

और तीसरी हिसाव-किताव विभाग के लिए। और मेरी बधाई स्वीकार करो।"

वधाई क्यो दी जा रही है, यह जाने विना ही वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उस को अपना हाथ पकड लेने दिया, नेपँवोदा के हाथ वडे आनन्ददायक और शीतल थे, क्योकि उसने अभी ही धोये थे। फिर वह कमरे से वाहर चली गयी।

वलेन्तिना ने टाइप करने के लिए कागज़ निकाले—ऊपर वढिया कागज रखा, जिस पर अध्यक्ष के हस्ताक्षर होगे, हिसाव-किताव विभाग और नोटिस-वोर्ड के लिए घटिया कागज लगाया, पर, इसके पहले कि वह टाइप करना शुरू कर पाती, तिमोफेयेव अदर आया—गदगी में डूवा हुआ, और शोर मचाता हुआ।

"तुम्हे मालूम है कि तुम्हारी उस खान से मेरे आदमियो ने आज कितनी गिट्टी निकाली?" उसने पूछा।

"मुझे इसमे रत्ती भर भी दिलचस्पी नही है," वलेन्तिना ने आखे मिचमिचाते हुए रोप के साथ कहा और उसको यह महसूस कराया कि जव और सव को उसने मछली के रूप मे चित्रित किया है तो अकेली वलेन्तिना को मत्स्य-वाला के रूप में क्यो वनाया है।

"अच्छा, जाने दो," तिमोफेयेव ने बात वही खत्म कर दी। "तुम्हे दिलचस्पी लेने के लिए मजबूर थोड़े ही कर सकता हू।" और वह अध्यक्ष से बाते करने चला गया।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कागज़ उठाया और पढने लगी कि नेपैवोदा ने बडे-बड़े अक्षरो मे क्या लिखा है। हर अक्षर उसी तरह साफ लिखा हुआ था, जिस तरह वह एक-एक स्वर साफ-साफ बोलता है।

आदेश

"जो काम निर्दिष्ट किया गया था (यानी वलोवाया नदी के किनारे पर स्थित खान की गिट्टी की क़िस्म का पता लगाना) उसको बहुत अच्छी तरह से पूरा करने और इस प्रकार, प्रतिकूल मौसम के बावजूद गिट्टी ढुलाई के काम को लक्ष्य से अधिक पूरा करना सम्भव बनाने के पुरस्कार स्वरूप निर्माण-कार्य के अध्यक्ष की सेक्रेटरी वलेन्तिना गिओर्गियेवना ओस्त्रोवस्काया को एक मास के वेतन के बराबर रकम दी जाती है।"

उसने लापरवाही के साथ जरा सा मुस्कुरा दिया, उसने अपनी उगलियो पर रबर के खोल चढा लिये और स्टूल को तनिक आरामदेह जगह पर खिसका लिया। पुरस्कारो के प्रति अपना तिरस्कार प्रकट करने के लिए, उसने इस नोटिस को तमाम दूसरे नोटिसो की लम्बी सूची के बीच मे टाइप कर दिया, उसके ऊपर के पैरे में था कि मिकैनिक मतवेयेव फला-फला तारीख को छुट्टी से वापिस आ गया और उसके नीचे के पैरे में था कि टेक्नीशियन नतालिया रुम्यान्त्सेवा अपना नाम स्मिर्नोवा कर लेना चाहती है, क्योंकि उसके पति का नाम स्मिर्नोव है।

अध्यक्ष ने कागज पर दस्तखत कर दिये और उसने अन्य कागजात के साथ उसे भी भेज दिया।

एक दिन, जब तिमोफेयेव अध्यक्ष के दफ्तर से निकल रहा था तब वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उसे रोका।

"केन्द्रीय प्रबन्ध विभाग से तार आया है," उसने कहा, "विश्लेषण से पता चला है कि इस सान को कक्रीट बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।"

"यह तो हमे भी मालूम है," तिमोफेयेव ने जवाब दिया। "लेकिन ऐसा लगता है कि हमे फिर उलटे पैर लौटना होगा। पुरानी सान की तरफ।"

"पुरानी खान की तरफ?" वलेन्तिना ने चिढचिढाकर कहा। "इस खान को खोजने के लिए मै सारी रात इस-लिए नही भटकी थी कि तुम लोग पुरानी खान को ही इस्तेमाल करते रहोगे।"

"ठीक है, लेकिन अब हम किनारे से मिट्टी नही ढो सकते — वह सब वह गया है। वह किसी समय भी ढह सकता है। और तुम्हारी खान के लिए कोई और सडक भी तो नही है।"

"नयी सडक वना लो न"

"इसे टाइपराइटर पर टाइप कर लेना तो वडा आसान है, लेकिन वना लेना टेढी खीर है। तीन मील सडक वना लेना कोई मजाक नही है।"

"तो नदी के किनारे-किनारे ढुलाई कर लो।"

"अब इसके वाद सलाह दोगी कि हम लारियो को पानी मे चलायें।"

"मै मजाक नही कर रही हू।"

लेकिन यकायक तिमोफेयेव का चेहरा चमक उठा और वह दौडकर अध्यक्ष के कमरे मे घुस गया।

"कामरेड नेपॅवोदा।" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने उसे उत्तेजनापूर्वक चिल्लाते हुए सुना। "एक नाव। उस

खान से मिट्टी की ढुलाई करने के लिए हमें उसी की जरूरत है। हम एक साथ ३५,००० घन फुट मिट्टी ढो लेंगे।'

"क्या तुम्हारा सुझाव यह है कि पुल के लिए लोहे के मेहराब वगैरह की ढुलाई से नावों को मुक्त कर दिया जाय?" अध्यक्ष ने शान्त भाव से पूछा।

"लोहा-लक्कड चूल्हे में जाय। उन्हें हम बाद में लगा सकते हैं।"

"लेकिन नाव के बोझ को खींचने वाला इंजन कहा से मिलेगा?"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने टाइप करना बंद कर दिया और सुनने लगी। वह देख रही थी कि तिमोफेयेव के प्रस्ताव से यातायात की समस्याएं तत्काल हल हो जायगी—जल्दी और सस्ते ढंग से हल हो जायेंगी। वलेन्तिना का हृदय धक्-धक् करने लगा।

"यह सही है, हमें इंजन की जरूरत होगी," तिमोफेयेव ने निराश भाव से कहा।

"इंजन भी शायद हमें मिल जायगा। मैं काठ गोदाम को फोन करता हू और वे लोग मुझे इंजन दे देंगे। लेकिन वहा पानी कितना है? इतनी लदी हुई नाव क्या हर जगह आ-जा सकेगी?"

"जा सकेगी। आप कहे तो पानी की थाह का पता लगाने का इतजाम मैं अभी कर दू।"

"ठीक। पता लगा लो और फिर हम तय करेंगे कि उस खान का क्या करना है।"

तिमोफेयेव दफ्तर और दरवाजे का पार कर आधी की तरह चला गया।

"ठीक तो है, एक ही ढुलाई में हम इतनी गिट्टी ले जा सकेंगे, जितनी कि सारी लारिया मिलकर दस दिन में ढो पाती। क्या ही शानदार करिश्मा होगा।" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने मन ही मन कहा और उसके दिमाग की आखो के सामने उस खान की गिट्टी से लदी हुई नाव मूर्त हो गयी जो उस खान से ठीक उस पुल तक पहुच गयी, उसे तमाम कारीगरो, फोरमैनो और तिमोफेयेव के आनन्दपूर्ण चेहरे दिखायी देने लगे। "क्या यह आश्चर्य-जनक चमत्कार न होगा।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने दस मिनट तक इतजार किया। "वह भूल गया होगा," उसने सोचा। "मुझे याद दिला देना चाहिए।"

वह दफ्तर में गयी। अध्यक्ष चाय पी रहा था।

"आप काठ गोदाम को फोन करना तो नही भूल गये?" उसने पूछा।

"किस लिए?" अध्यक्ष ने एक गिलास में अपने लिए दो चायदानियो, एक छोटी और एक बडी में इस तरह चाय डाली जिस तरह लोग भगवत्पानो मे ढालते है।

"इजन के लिए" यकायक वलेन्तिना गिओर्गियेवना को यह अहसास हुआ कि इन शब्दो मे यह निद्र होता है कि वह सारी बाते सुन रही थी और वह लजा गयी।

"यह बात है।" अध्यक्ष ने उनकी तरफ देखा और थोडा सा हसा। "ज़रा पानी की गहराई का पता लग जाये, फिर देखेंगे। अगर सब कुछ सतोषजनक निकलता है तो हम फौरन इधर-उधर फोन कर लेगे। तुम्हे अपनी खान की चिन्ता है?"

"मुझे सारे निर्माण-कार्य की चिन्ता है," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने बडे स्वाभिमान के साथ उत्तर दिया। रोष के साथ उसने गर्दन को झटका दिया और अपने आप से बहुत ही असतुष्ट होकर दफ्तर से बाहर चली गयी।

और पानी बरसता रहा। हल्की-सी, जी उबानेवाली वर्षा। कमरे की एक मात्र खिडकी के शीशे पर वर्षा की

बूदे टेढे-मेढे रास्ते वना रही थी। आसमान अधकारपूर्ण और उदास था। दिन ढल रहा था और तिमोफेयेव अपनी छानवीन का नतीजा लेकर अभी तक नही लौटा था। "हे भगवान, यह पानी क्या अनन्त काल तक ऐसे ही वरसता रहेगा?" वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने सोचा।

"पाशा, तू तो यही की रहने वाली है, क्यो?" उसने पूछा।

"हू तो",पाशा ने जवाव दिया।

"नदी यहा गहरी है?"

"हू, हू। खूव गहरी। कुछ जगहों पर तो खास तौर से।"

"और कुछ छिछली जगहे भी है?"

"छिछली जगहे भी है। क्यो तैरने की सोच रही हो?"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना आह भर कर रह गयी और तिमोफेयेव की प्रतीक्षा करने लगी। लेकिन वह अपनी छानवीन के नतीजे लेकर अगली सुबह तक नही लौटा। नतीजे सतोषजनक थे, और नेपैवोदा ने वलेन्तिना गिओर्गियेवना से कहा कि वह काठ गोदाम को फोन करे। वहा से इजन के वारे मे कोई निश्चित उत्तर नही मिला,

लेकिन उन्होंने आधे घटे के अदर फोन करके जवाब देने का वायदा किया। वलेन्तिना गिओर्गियेवना लगभग एक-एक मिनट बाद घडी देखकर उनके फोन की प्रतीक्षा करने लगी।

अपना ध्यान बटाने के लिए वह डाक देखने लगी। एक लिफाफा केन्द्रीय प्रबन्ध विभाग से आया था। उसने कैंची से काट कर उसे खोला और कुरकुरा कागज निकाल कर पढने लगी

"निर्माण-कार्य के अध्यक्ष की सेक्रेटरी, वलेन्तिना गिओर्गियेवना ओस्त्रोवस्काया को अपना नया पद सभालने के लिए कर्मचारी विभाग भेजा जाय।"

तो यह बात है। आखिर इवान सेमियोनोविच उसे भूले नही है।

वलेन्तिना गिओर्गियेवना को लगा कि उसे हर्ष से नाचने लगना चाहिए। लेकिन वह आनन्दित नही हो सकी।

"अध्यक्ष को यह पत्र मै बाद मे दिखा दूगी", उसने सोचा। "अभी ही उन का दिमाग काफी उलझनो में फसा हुआ है।"

और निश्चय ही कम परेशानी न थी। काठ गोदाम वालो ने कोई इजन देने से इनकार कर दिया था और

इसलिए नेपैवोदा जिला कार्यकारिणी कमेटी को फ़ोन करने के लिये मजबूर हुआ। लेकिन इस बार वे भी कुछ मदद न कर सके।

नेपैवोदा को पत्र दिखाने के लिए वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने शाम तक इतजार किया।

"खैर," उसने कहा, "बेहतर होगा कि तुम जाने की तैयारी कर लो। अपना काम स्मिर्नोवा के सुपुर्द कर देना," और उसने अगले पत्र पर गौर करना शुरू कर दिया।

कुछ-एक क्षण वलेन्तिना गिओर्गियेवना बिना कुछ बोले मेज के पास खडी रही।

उसके स्वच्छ हाथो की तरफ देखती हुई वह सोचने लगी: "हैरान हू कि वह मेरे जाने से खुश है या दुखी।"

"स्मिर्नोवा सदा के लिए तो आपकी सेक्रेटरी न रह सकेगी, क्यो?" आखिरकार वह पूछ ही बैठी और यह न भाप सकी कि वह खुश है या दुखी।

"नही तो।"

"आप किसको नियुक्त करेगे?"

"ओह, कोई मिल ही जायगी। इस समय मै उसके बारे मे चिन्ता नही कर सकता।"

वलेन्तिना गिओर्गियेवना जरा देर और ठहरी और फिर बाहर चली गयी।

जिस ड्राइवर ने उस दिन कमरोव को खोजने में सहायता की थी, वही उसे स्टेशन छोड़ने गया। रास्ते में वह एक शब्द भी नही बोला, और वलेन्तिना गिओर्गियेवना को महसूस हुआ कि उसका यों चला जाना ड्राइवर को नापसन्द है। अध्यक्ष से विदा लेने का उसे अवसर ही नहीं मिला, क्योंकि वह एक किश्ती का इन्तजाम करने के लिए शहर गये हुए थे। जब वह उस छोटे से स्टेशन पर पहुचे, तब ड्राइवर ने अलविदा कहा और फौरन गिट्टी ढोने के लिए चला गया। मास्को की ट्रेन के लिए कुछ लोग प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन उन सभी के दोस्त उन्हे छोडने आये हुए थे। सिर्फ वलेन्तिना गिओर्गियेवना ही थी जो अपने थैले और बिस्तरे के साथ अकेली बैठी हुई थी।

ट्रेन आने के कोई पन्द्रह मिनट पहले नेपैवोदा ने मुसाफिरखाने मे प्रवेश किया और वलेन्तिना गिओर्गियेवना को खोजकर, उसके पास पहुचा।

"तुम एक मेहरबानी कर देना," उसने कहा, "ये सेब क्या तुम मेरे बच्चो तक पहुचाने की तकलीफ करोगी?" और उसने काले धागे से ढीला-पोला सिला हुआ

मझोले किस्म का पैकेट उसकी तरफ बढा दिया, जिसे शायद उसने खुद बाधा था। "मैने इसे डाक से भेजने की कोशिश की थी, लेकिन उन लोगो ने लेने से इनकार कर दिया। कहा कि यह ठीक तरह से सिला नही है।"

"जरूर, मै पहुचा दूगी," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने खडे होकर कहा।

"बैठी रहो। मै अब तुम्हारा अफसर नही हू," उसने मुसकुरा कर कहा। "और, लो, यह पोस्टकार्ड है। मैने जो खाली जगह छोड दी है, उसमे तुम अपना पता लिख देना और डिब्बे मे डाल देना। मेरी पत्नी यह पैकेट लेने आ जायगी।"

पता नही क्यो, वलेन्तिना गिओर्गियेवना को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि इस व्यक्ति के पत्नी और बच्चे भी है और वह उन्हे उपहार में सेव भेज सकता है, और उसने अपना पोस्टकार्ड इन शब्दो से प्रारम्भ किया था "मेरे प्राणो से भी प्यारे.. ।"

"क्या वे लोग आपको इजिन दे रहे है?" उसने पूछा।

"हाँ। ढुलाई की मशीने तो हमने खान पर भेज दी है। कल हम नाव भी ले आयेगे और लदाई शुरू कर देगे।"

ट्रेन आ गयी। नेपँवोदा उसका सामान उठा कर डिब्बे में ले गया और उसे सामान रखने की जगह पर लगा दिया। फिर वह डिब्बे से बाहर हो गया और पानी बरसते में ही सिगरेट सुलगा कर पीने लगा।

"अब घर जाइये," वलेन्तिना गिओर्गियेवना ने कहा।" "अब आप क्यो खड़े है और भीग रहे है?"

"सब ठीक है, मै तो इसका आदी हू।"

इस विदाई के अवसर पर वह दो-चार शब्दो मे अपने हृदय के भाव रख देना चाहती थी—अध्यक्ष की तरफ उसने जिस तरह का रूखा और रस्मी रुख अख्तियार किया था, शायद उसकी माफी मागना चाहती थी, मगर शब्द जबान पर न आये और इसलिए जब ट्रेन ने सीटी दे दी तब उसने जल्दी से यह कह डाला:

"मै अपना फोल्डर, जिस पर रिपोर्ट लिखा हुआ है, बायी तरफ की दराज़ में छोड आयी हू। आप उसे अपनी नयी सेक्रेटरी को दे सकते है।"

"धन्यवाद," नेपँवोदा ने कहा।

वह जान भी न पायी और ट्रेन रवाना हो गयी। और हालांकि विदा हो रही थी और नेपँवोदा वही ठहर रहा था, लेकिन उसे महसूस यो हुआ मानो वह खड़ी हुई

है और नेपवेत्रोवा और वह छोटा सा स्टेशन, और वह सड़क जिस पर से वह इस शहर तक आयी थी और वह चमकते हुए पेड़ और वर्षा में भीगी धरती की सोंधी सुगंध और वह हल्का-सा नीचे झुका हुआ आसमान—ये सब चीज़ें चल रही हैं और धीरे-धीरे उनसे दूर होती जा रही हैं। उसे पाशा की याद आयी, चतुर और अनगढ़ तिमो-फ़ेयेव की याद आयी, उस ब्रिगेड-लीडर ओल्गा और उस दाढ़ी वाले आदमी की याद आयी जो पुराना फ़ौजी कोट कंधे पर डाले था, इंजीनियर कमरोव की भी याद आयी और वह ड्राइवर भी, जिसने उसका जाना पसंद नहीं किया था, और यकायक उसे गहरा अफ़सोस हुआ कि ये सभी व्यक्ति, जिन्होंने उसका सम्मान करना शुरू किया था, दूर और दूरतर हटते जा रहे हैं और शायद उनमें से किसी को भी अब वह नहीं देख पायेगी।

उसे उस इंजिन का ख़याल आया, नाव और अपनी खान का ध्यान आया—उन सभी चीज़ों की याद आयी जो हाल में उसके लिए इतनी प्यारी और आवश्यक चीज़ें बन गयी थीं। लेकिन ट्रेन उसको इन सब चीज़ों से दूर करते हुए बढ़ी ही चली जा रही थी।
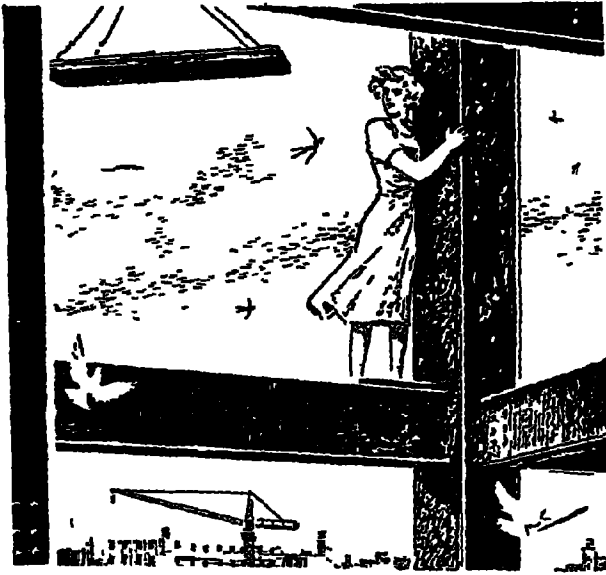
नीना क्रावत्सोवा

नीना क्रावत्सोवा ने इजीनियरिंग इस्टीटयूट मे पढाई खत्म की तो उसे कई मजिल ऊची इमारत के निर्माण-कार्य पर भेज दिया गया। नीना अपने माता-पिता के साथ मास्को की एक शान्त और फर्श-जड़ी गली मे रहती थी। डिग्री के लिए थीसिस पेश करने-के कुछ ही

दिन वाद उसने अपनी तेईसवी वर्षगाठ मनायी थी, लेकिन फिर भी जो आदमी उससे पहली वार मिलता था, वह उसको प्रथम या द्वितीय वर्ष की छात्रा ही समझ बैठता था, वह उसकी आयु वीस वर्ष होने का ही अनुमान लगा पाता था। क्यो, यह कहना कठिन है। शायद इसलिए कि इस्टीटयूट के शिक्षा काल के वर्षो मे भी वह अपनी स्कूली लडकियो जैसी आदते नही छोड पायी थी और मूछों वाले विद्यार्थियो को भी "हमारे वच्चे" ही कहा करती थी। या शायद इसलिए कि उसकी आखे वडी-वडी थी और ऊपर को मुडी हुई छोटी सी नाक पर वचपन के अवशेष के रूप मे छोटी-छोटी चित्तिया पडी हुई थी। लेकिन उसका मस्तिष्क जितनी जल्दी परिपक्व हुआ और उसमे जितनी सूक्ष्म दृष्टि और व्यवहार—कुशलता विकसित हुई, उसको देखकर उसके घनिष्ठ मित्रो को भी आश्चर्य हुआ।

जिस व्यक्ति ने नीना को निर्माण-स्थल पर भेजा था, उसने नीना से कहा "यह इमारत हमारा नया प्रयास है और हमारे पास पूरी सख्या मे इजीनियर और टेक्निकल विशेषज्ञ नही है। अव आप ही का आसरा है।" इन शव्दो में नीना ने सुपरिचित व्यग्य की ध्वनि पायी, लेकिन इस वार उसने इसका वुरा नही माना।

"ठीक है," घर जाते हुए रास्ते मे उसने सोचा, "जहा मैने काम शुरू किया, तहा मेरे साथ उन लोगो का व्यवहार भी वदल जायगा। निर्माण कार्य का अध्यक्ष यह आशा करता है कि मै एक महीने के अन्दर काम पर पहुच जाऊगी। वह आनन्द-सहित कितना चकित रह जायगा, जब वह देखेगा कि मैने विद्यार्थी की हैसियत से मिलने वाली आखिरी छुट्टी भी कुर्बान कर दी है।"

अगले दिन सुवह उसने हलकी सी रेशमी पोशाक धारण की, गर्मी की ऋतु मे पहनी जाने वाली सेंडिले पहनी, सफेद हैंड-वैग उठाया और अपने जीवन मे पहली वार टेक्सी किराये पर ली और निर्माण-स्थल की ओर रवाना हो गयी। सफेद हैंड-वैग मे उसके सारे कागजात थे एक सेलुलायड के खोल मे कोम्सोमोल की सदस्यता का कार्ड रखा था, उसका पासपोर्ट भी था जिस पर विद्यार्थी की हैसियत से उसका परिचय अकित था, और उसका डिप्लोमा भी था जिस पर लाख की सख्या मे कोई नम्बर पडा हुआ था और लाल स्याही मे लिखा था कि उसने आनर्स के साथ डिग्री प्राप्त की है।

दूर पर उस इमारत का लोहे का ढाचा आसमान को छू रहा था और कितावो की अल्मारी जैसा मालूम

होता था। रास्ता लम्बा था और जब उसकी टैक्सी सड़को को पार करती बढ रही थी, तब वह इमारत कभी नजदीक मालूम होती और कभी बड़ी दूर।

"क्या आप वहा काम करती हैं?" टैक्सी ड्राइवर ने पूछा।

"हा," नीना ने एक क्षण सोचकर उत्तर दिया।

"वह कितने मजिल ऊची होगी?"

नीना को यह पता नही था।

"छब्बीस," उसने उदासीनतापूर्वक उत्तर दिया और इस डर से कि कही ड्राइवर और कोई सवाल न पूछ बैठे, उसने शीघ्रतापूर्वक जोड दिया, "और मीनार अलग है।"

अत में वे लोग वहा पहुच गये और नीना दरवाजे में घुस गयी। बड़े बड़े ट्रक आ-जा रहे थे और जीन की पतलूनें पहने कुछ औरतें भी उसके पास से गुजर गयी। प्रवेश द्वार पर, छोटा सा कोट पहने हुए एक बूढा मिला, जिसने उसे सैल्यूट झाडा और क्षमा मागते हुए बताया कि बाहरी आदमियों को घुसने की इजाजत नही है। इस बार नीना को बुरा लग गया। उसने लपक कर अपना डिप्लोमा उसे दिखाया और बताया कि वह बाहरी व्यक्ति नही है।

"इस तरह के कागज से यहा काम नही चलता," बूढे ने सास खीच कर कहा। "रजिस्ट्रेशन आफिस मे जाओ और 'पास' लेकर आओ।"

"इतने लोग जब विना किसी पास के आ-जा रहे है तो मेरे लिए पास की क्या आवश्यकता है?" नीना ने पहले से भी अधिक अपमान महसूस करते हुए अपने मन में सोचा।

"मुझे निर्माण-कार्य के अध्यक्ष से मिलना है," उसने अनिश्चित कठोरता के साथ कहा।

"चाहे अध्यक्ष से मिलना हो, चाहे किसी और से—सब बराबर है," बूढे ने असहाय स्वर में कहा, "३७ नम्वर पर फोन कर लीजिये।"

आधे घटे बाद उसे गुलाबी रग का पास मिला और वह निर्माण-स्थल मे प्रवेश कर पायी, लेकिन तव सुबह का उत्साह समाप्त हो गया था।

इस्पात का ढाचा, जिसमे खडे और पडे गर्डर लगे हुए थे, आसमान मे और भी ऊचा लगने लगा। नीचे से देखने से वह किताबो की अल्मारी जैसा बिल्कुल नही लगता था। मस्तक ऊचा किये हुए, वह ढाचा ज्यो-ज्यो आसमान की नीलिमा मे लीन होती जाती थी, त्यो-त्यो ऐसा लगता

था मानो हवा के पटल पर किसी ने उसे अंकित कर दिया हो। निकट ही बादल तैर रहे थे और इस कारण यह धारणा पैदा होती थी मानो सारा ढाचा धीरे-धीरे ढह रहा है। धमाके और झनझनाहट के साथ बडी-बडी लारियां बालू, कक्रीट, कक्रीट की ईंटे, लोहे के नल आदि ढो कर ला रही थी। नीना के सिर के ठीक ऊपर लाउडस्पीकर खडखडया और यूक्रेनी लहजे मे एक औरत की आवाज सुनायी दी: "३ नम्बर की यूनिट के फोरमैन सुने। ३ नम्बर की यूनिट के फोरमैन सुने। इवान पावलोविच, कृपया फौरन ही चीफ इजीनियर के पास यातायात का परमिट भिजवाइये। इवान पावलोविच, कृपया फौरन ही..." इसी बीच वह आवाज शोर मे डूब गयी॰ दूर कही ऊपर, किसी ने गर्डर पर हथौडा चलाना शुरू कर दिया और लोहे का सारा ढाचा सितार की तरह झनझना उठा। नीना ने अनगिनत लोगों को काम पर लगे देखा। खतरे की लाल झण्डी लिये एक नौजवान उसके पास से ही गुजरा और उसके पीछे-पीछे बिजली का कारीगर परीक्षण लैम्प लिये आ रहा था, जिसके तार जमीन पर खडखडा रहे थे और ऐसा लगता था मानो उसमे तार समेत उस लैम्प को दीवार से निकाल लिया हो। पीतल के बुन्दे

पहने हुए एक लडकी एक वोर्ड टाग रही थी, जिस पर लिखा हुआ था "कारीगरो देख लीजिए कि आपके काम की जगह व्यवस्थित है या नही।" और "कारीगरो" के वाद कामा नही लगाया गया था। आकर्षण से भरपूर इस लडकी को ऐसा नगण्य काम करना पडता है, इस पर रहम खाते हुए, नीना केन्द्रीय दफ्तर को वढ गयी।

अध्यक्ष अन्दर नही थे। एक युवा सेक्रेटरी ने लापरवाही के साथ नीना को वायी तरफ तीसरे द्वार पर कर्मचारी विभाग मे जाने और एक प्रश्नावली भरने की सलाह दी। कर्मचारी विभाग का प्रधान भी सेक्रेटरी की ही तरह, नीना के आगमन से कोई अधिक प्रभावित नही प्रतीत हुआ। उसने एक आलमारी से प्रश्नावली निकाली और उसे चेतावनी दी कि किसी वात को रेखाकित किये या काटे विना, सभी सवालो का पूरा-पूरा उत्तर दिया जाय और कहा कि अगले दिन पूरे चेहरे के दो चित्र भी साथ में लेती आये। नीना ने अपने आपको सात्वना दी, "स्वाभाविक ही तो है। ये लोग हर रोज नये नये आदमी भरती करते है, मुझे यह आशा नही करना चाहिए कि वे लोग मेरी तरफ कोई विशेष प्रकार से ध्यान देंगे।" फिर वह वेटिंग रूम में चली गयी और उस समय तक बैठी रही, जब तक सेक्रेटरी ने यह हिदायत न दे दी कि

वह प्रधान इजीनियर रोमन गब्रीलोविच के पास जाकर, उनसे बात करे।

"क्या यह बेहतर न होगा कि आप उन्हे पहले ही यह बता दे कि मै कौन हू?" नीना ने अभिमान के साथ होठ दबाते हुए कहा।

"मै क्यो बताऊं? सीधी चली जाइये।"

प्रधान इजीनियर के कमरे मे लगभग कोई फर्नीचर नही था। उनकी मेज पर भी, एक ईट—साधारण लाल ईट, जिसमे छेद थे—के सिवाय और कुछ नही था। वहा बैठा हुआ व्यक्ति लम्बा और दुबला-पतला था, हाथ धूप से सावले पड गये थे, और वह कही टेलीफोन करने मे लगा हुआ था। उसके काले बालो मे सफेद बालो की रेखाए भूसे के तिनको की तरह उलझी मालूम होती थी। नीना ने उसकी मेज पर कुछ क्लिपो को जजीर की तरह एक दूसरे से जुडे हुए देख कर कल्पना की, "परेशान है।"

सावधानी से नीना का अध्ययन करते हुए, प्रधान इजीनियर ने टेलीफोन के चोगे मे फटी आवाज मे कहा, "और अब के० आर० २७२ नम्बर का नक़्शा निकालो। जल्दी करो। मिला कि नही? खिडकी जिस तरफ खुलती है, उस तरफ, बायी ओर तुम्हे १२—४० नम्बर दिखायी

देता है कि नही? तो बस, उसमे टेक की ऊंचाई जोड दो और उससे तुम्हे तख्तो की लम्बाई का पता लग जायगा। नही, इससे कम नही होना चाहिए। चार इंच भी नही।" प्रधान इजीनियर की नजर ज्यो ही नीना के सफेद बैग पर पडी, त्यो ही उसकी ऊबड-खाबड भौहे एक दूसरे के पास खिंच लायी। नीना ने मन ही मन अपने आप को झिडका कि वह इस बैग को लेकर क्यो आयी। "बिना टेक के, तुम उसे कैसे छोड सकते हो? तुम्हे अपनी बुद्धि से काम लेना होगा, मेरे दोस्त। अब के० आर० २२१ नम्बर का नक्शा निकालो... यही है। दीवारगीर को जरा नीचा कर दो और एक गद्दी लगा दो .."

प्रधान इजीनियर ने टेलीफोन रख दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहती है?" उसने कुछ आश्चर्य के साथ पूछा।

"हा," नीना उसका नाम और पितृनाम लेना चाहती थी, पर भूल चुकी थी। "मै यहा काम करने के लिए भेजी गयी हू।"

उसने नीना का डिप्लोमा खोला और विभिन्न विषयो में उसे जो नम्बर मिले थे, उनके अध्ययन में डूब गया।

"डिप्लोमा बिलकुल निष्कलंक मालूम होता है," उसने कहा। "और आशा है, ऐसा ही रहेगा।"

"आशा मुझे यही है," नीना ने दृढतापूर्वक कहा।

"यह इतना आसान नही है।" प्रधान इजीनियर ने प्रश्नावली पर अपनी दृष्टि दौडायी और फिर दुहराया, "यह इतना आसान नही है नीना वासिलीयेव्ना! आज कल उच्च शिक्षा प्राप्त नौजवान ठीक ही वडे वडे दावे करते है। उन्हे यह काम पसन्द नही तो वह भी पसन्द नही और इस तरह एक काम छोडकर दूसरा काम टटोलते घूमते है और अपना डिप्लोमा पेश करके कहते है कि उन्होंने विशेष योग्यता के साथ डिग्री हासिल की है। स्वाभाविक है कि इस तरह डिप्लोमा एक हाथ से दूसरे हाथ जाकर बहुत से हाथो मे पडता है और गदा हो जाता है।"

"मुझे ऐसा लगता है.. " नीना ने बात शुरू की।

"तुमने विद्यार्थी की हैसियत से काम कहा सीखा?" प्रधान इजीनियर ने उसकी बात बीच ही मे काट दी और उसके स्वर से नीना समझ गयी कि वह खुद अब उसकी मातहत बन गयी है और वह उसका प्रधान है।

"यारोस्लाव्ल मे," नीना ने जवाब दिया। "मुझे अपनी डिग्री की थीसिस के लिए आकड़े जमा करने थे और इसलिए मैंने उनसे कहा कि मुझे जिम्मेदारी की जगह पर

नियुक्त न किया जाय। इसलिए उन्होने मुझे ऐसा काम दिया जिसका निर्माण-कार्य से कोई सम्बन्ध नही था। मै शर्म भी महसूस करती हू कि.. "

"काम क्या था?"

"सुरक्षा की टेक्निक।"

टेलीफोन की घटी बज उठी।

"थोडी देर बाद फिर फोन करना। अभी मै व्यस्त हू," प्रधान इजीनियर ने फोन मे कहा और चोगा फिर लटका दिया।

"यह बडे भाग्य की बात है," उसने टीका की।

"क्या भाग्य की बात है?" नीना ने पूछा।

"बात यह है कि सुरक्षा की टेक्निक के काम पर हम लोग अक्सर अनुभवी इजीनियरो को लगाते है। सफेद बालोवाला या गजा सिर। लेकिन जो इजीनियर इस काम पर था, वह अभी उस दिन बीमार पड गया और अब तुम्हे इस काम पर रखने के अलावा और कोई चारा नही है।"

"ऐसे पोस्टर लगाने का काम दिया जायगा, जिनमे विराम-चिन्ह लगाने की गलतिया हो?"

"यह तो एक काम है। लेकिन उसमें गलतिया नही

होना चाहिए। इतनी जानकारी तो तुम्हे होना ही चाहिए कि ऐसे काम में कोई गलती बर्दाश्त नही की जा सकती।"

नीना ने सोचा, "अगर मै इस काम को अभी ही अस्वीकार नही कर दूंगी, तो बाद में असली निर्माण-कार्य पाने मे बडी कठिनाई होगी।" इसलिए उसने अपना हैडबैग उठाया और ऐसे स्वर मे बोली जिसमे अफसरियत जरा भी नही थी: "ओह, मै यह काम नही कर सकूंगी। उससे मुझे नफरत होगी।"

"क्यो?" प्रधान इजीनियर ने पूछा और उसकी भौहे एक दूसरे से लगभग मिल-सी गयी और उसकी पतली-पतली उगलिया पेपर-क्लिपो की जजीर की कडियाँ जल्दी-जल्दी गिनने लगी।

"जरा आप खुद ही ख्याल कीजिये, रोमन गव्रीलोविच" प्रधान इजीनियर का पितृनाम, नीना को यकायक याद आ गया था, हालाकि उस भावावेग में इस बात को वह समझ न पायी। "मुझे निर्माण-कला सिखायी गयी थी और मै निर्माण का काम चाहती हू। आप इस तरह का काम देकर अनेक लोगो को शत्रु ही बनाते है, और कुछ नही करते। ओह, उससे मुझे नफरत होगी।"

"तो यह तुम्हारी पहली माग है," प्रधान इजीनियर

ने थकी हुई मुसकान के साथ कहा। "मै एक वीच का रास्ता पेश करता हू इस काम को उस वक्त तक के लिए ले लो जव तक हमारा वूढा इजीनियर अस्पताल से नही लौट आता। इसी वीच तुम और कामो पर भी नजर रखो और ऐसा काम चुन लो जो तुम्हे भा जाय, और मै वायदा करता हू कि तुम्हारी इच्छा पर गौर करूगा। अभी तो हमे यह भी नही मालूम कि तुम्हारी इच्छा क्या है। मेरे लिए तो तुम वोरे में वद पशु के समान हो, जिसके वारे में मै कुछ नही जानता और सच कहू तो तुम खुद अपने लिए भी इसी तरह हो।'

"आप अपना वायदा पूरा करेगे?"

"तुम और मै, किसी किडरगार्टन स्कूल के वच्चे नही है, नीना वासिलीयेवना।"

वे दोनो वाहर निकले। प्रधान इजीनियर के पीछे-पीछे सीढियो पर चढते हुए नीना वरावर सावधान थी कि रेलिग की पट्टियो में उसके वस्त्र न उलझ जाय—वे उस वड़े हाल की तरफ वढे, जिस पर अभी छत नही वनी थी। ताजा जग चढे शहतीर हवा मे झूल रहे थे। चिपचिपे रक्षक पदार्थ मे लिपटे हुए तार चारो तरफ विखरे पडे हुए थे और यहा वहा, रेत के ढेर पडे हुए थे। एक तरफ पैकिग

का एक बड़ा भारी डिब्बा खड़ा हुआ था, जो छत पर लगाये जानेवाले कागज से ढका था और चारो तरफ इस तरह की चेतावनिया लगी हुई थी "यह सिरा ऊपर की तरफ रखो", "सावधानी से उठाओ", "नाजुक चीजे"। एक कोने मे बिना रन्दा किये तख्तो से जल्दबाजी में एक कमरा बना दिया गया था जिसके तख्तो पर खोपड़ी और गुणा के चिन्ह जैसी दो हड्डियो के चित्र बने हुए थे और एक तख्ती टगी थी "होशियार! उच्च शक्ति के तार।" एक आदमी, जिसमें अपना हैट सिर के पीछे के भाग की तरफ खिसका रखा था, प्रधान इंजीनियर के पास आया।

"रोमन गव्रीलोविच, उस कंक्रीट मिलानेवाली मशीन का क्या करूं?" उसने नीना की तरफ आश्चर्यपूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा।

"एक ठेला ले लो और उसे ले आओ," प्रधान इंजीनियर ने कहा।

"पहियो पर रखे हुए सन्दूक जैसी चीज के पास आकर नीना रुक गयी और ऊपर आसमान की तरफ देखने लगी, — जिधर देखने भर से चक्कर आने लगता है, क्योंकि वहा एक क्रेन के तारो से लटका हुआ लोहे का गर्डर धीरे-धीरे झूल रहा था। यकायक वह सन्दूक खड़खड़ाने

और कांपने लगा, मानो उसे जूडी चढ आयी हो। नीना चौंक कर अलग हट गयी।

"डरो मत," प्रधान इजीनियर ने मुसकुराकर कहा। "यह वेल्डिग ट्रान्सफोर्मर है और जब हमारे वेल्डर काम करते है, तो यह इसी तरह चलता है।"

"मै जरा भी डरी नही हू," नीना ने हठपूर्वक कहा। "मै जरा-सा हट गयी थी, बस।"

"यह भोज-समारोह का हाल होगा," प्रधान इजीनियर ने रेत के ढेर और जग खाये शहतीरो का सिंहावलोकन करते हुए कहा। "सगीतकार वहा बैठेगे। बर्फ पडी शेम्पेन शराब और खाने की दूसरी बढिया-बढिया चीजे यहा से मिला करेगी। यह यूनिट न० ३ है और आज कल यही हमारे काम का केन्द्र है।"

नीना को एक हलकी सीटी की ध्वनि सुनायी दी और फिर कोई चीज पैकिग के डिब्बो पर इतने जोर से गिरी कि वह ऊपर के सिरे को तोड कर अदर घुस गयी।

"यह क्या था?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"बिना सुरक्षा-इजीनियर के यही घपला होता है," प्रधान इजीनियर ने जवाब दिया। "उधर सोलहवी मजिल पर वह वेल्डर दिखायी दे रहा है? उसने नया इलेक्ट्रोड लगा दिया है और जला हुआ इधर फेंक दिया है।"

"लेकिन इससे तो किसी की जान चली जाती।"

"हो सकता था। एक मिनट हमें अपनी बात रोक देनी होगी, नीना वासिलीयेव्ना। ऐसी घटना को हम अनदेखा नही छोड सकते।"

"तो क्या आप वेल्डर को डाटने जा रहे है?"

"नही। इस यूनिट के फोरमैन को।"

"तो मै जाकर वेल्डर से बात करती हूं। कर सकती हू?"

नीना ने सीढिया खोज ली और ऊपर की तरफ चढ दौडी। सीढिया भारी तार की जाली की बनी थी, इसलिए उसके पैरो तले झनझना उठी और वहा से उसे वह सभी काम दिखायी दे रहा था जो नीचे हो रहा था। "मै शायद सोलहवो मजिल भी पार कर गयी हू," उसने सास लेने के लिए रुकते हुए सोचा। ताबे के कर्णफूल पहने हुए वही लडकी किसी गीत की धुन गुनगुनाती हुई ऊपर से उतर रही थी।

"यह कौन सी मजिल है?" नीना ने पूछा।

"नवी। आप कहा जाना चाहती है?"

"सोलहवी पर। क्या वहा वेल्डर लोग काम कर रहे है?"

"सोलहवी मजिल पर तो सिर्फ अर्सेन्तियेव काम कर रहा है।"

ऊपर कहीं से लाउडस्पीकर की आवाज आयी "तीसरी यूनिट के फोरमैन सुनें। तीसरी यूनिट के फोरमैन सुनें। प्रधान इजीनियर इवान पावलोविच आपके दफ्तर में बैठे आपको बुला रहे है।"

मजिलें गिनती हुई नीना सोलहवी मजिल तक पहुच गयी और तग से उतार पर पहुचकर रुक गयी।

छोटी सी वास्कट और मोटी जीन का पतलून पहने एक नौजवान बाहर निकले हुए गर्डर पर इधर-उधर पैर लटाये बैठा था। नीचे चिडिया उड रही थीं। उसका चेहरा नकाब जैसी ढाल से ढका था, जिसमें झिल्ली की खिडकी बनी थी। एक जोड पर अपने वेल्डिग के यन्त्र को लगाये हुए, वह बडी तन्मयता के साथ उस जोड पर झुका हुआ था। कमर के चारो तरफ, वह एक चौडी रक्षात्मक पेटी कसे था, जो एक गर्डर से बधी हुई थी और ऐसा मालूम होता था कि इतनी ऊचाई पर भी वह बडे चैन से बैठा है। एक खडी छड के बोल्ट पर उसकी टोपी टगी थी और एक दूसरी खडी छड पर उसका इलैक्ट्रोड का थैला टगा था।

"कहिए, क्या हाल-चाल है," नीना ने पूछा।

नौजवान ने अपना नकाब उठाया और उसकी चौंधियाई हुई भूरी आखो, अधीरता की रेखा से खिचे हुए पतले

होठ, सुकोमल नासिका छिद्र, और अस्त-व्यस्त बालो पर नीना की नज़र पडी।

"यह शुभ दिन बार-बार आये," उसने नीना की तरह उपहास भरी दृष्टि डालकर कहा। "क्या आप घूमने आयी है।"

"नही। क्या नाम है?"

"पेत्रोव।"

"पहला नाम और पितृनाम?"

"प्योत्र पेत्रोविच। जन्म १९२८। व्हाईटगार्ड्स की फौज मे कभी नही रहा। कभी जुर्माना नही हुआ .."

"लेकिन, अगर आप अपने तौर-तरीके नही बदलेगे, तो कामरेड अर्सेन्तियेव, मुझे डर है कि आप पर जुर्माना होगा," नीना ने अपनी भौंहो को प्रधान इजीनियर की भौहो की तरह भयानक बनाने की कोशिश करते हुए कहा। "फिर आप अपने जीवन-चरित्र की शान इतना न बघार सकेगे।"

"और आप कौन होती है?" अर्सेन्तियेव ने किंचित आश्चर्य के साथ पूछा और इलेक्ट्रोड-होल्डर रख दिया।

"वह .. उठा लो," नीना कुछ हिचकी, क्योंकि उसे यह नही मालूम था कि वह यत्र क्या कहलाता है। "...वह

उठा लो। अगर वह किसी के सिर पर गिर गया तो जवाबदेही कौन करेगा?"

"लेकिन आप कौन है?" अर्सेन्तियेव ने और भी अधिक कौतूहल के साथ आग्रह किया।

"इससे क्या मतलब? मैं नयी सुरक्षा इजीनियर हू।"

"ओह। अच्छा, तो, इसकी जवाबदेही आप ही करेगी," वेल्डर ने बडे शान्तिपूर्वक कहा। "आपको जाल लगवाना चाहिए।"

"अच्छा, मुझे करना चाहिए। और इसकी जिम्मेदारी मुझ पर क्यो होगी? पहली बात यह कि इस काम पर मेरा पहला दिन है," नीना ने कहना शुरू किया, लेकिन यह अनुभव करके कि वह सफाई देने लगी है, उसने फौरन अपना स्वर बदला। "और दूसरी बात यह कि जला हुआ इलेक्ट्रोड गिराने के लिए तुम्हे जवाब देना होगा।"

"आप मजाक कर रही है। है न?"

"वह तो प्रधान इजीनियर के सिर पर लगते लगते रह गया था।"

"आप जरूर मजाक कर रही है, क्यो?" अर्सेन्तियेव ने फिर कहा। "मै सारे टुकडे अपने थैले मे रखता हू।"

"तो मेरा ख्याल है कि वह आसमान से गिरा होगा।"

"बहुत मुमकिन है। मेरे सारे टुकडे थैले में है। आपको अगर मुझे पर विश्वास न हो तो खुद गिनकर देख लीजिए।"

"इसका ख्याल है कि गर्डर पार करने से मै डर जाऊगी," नीना ने गुस्से से लाल होकर सोचा। "मै अभी बता दूगी," और वह गर्डर पर चढ गयी।

सुरक्षा नियमो का इतना गम्भीर उल्लघन करने पर भी उस वेल्डर ने जो दुस्साहस दिखाया था, उसके कारण यदि नीना का क्रोध प्रज्वलित न हो उठा होता, तो नीना उस गर्डर पर कभी पैर भी न रखती, जिसके नीचे चिडिया उड रही थी। उसने एक गर्डर पार किया, और खडी घड का चक्कर लगा कर दूसरे पर चढ गयी और अगर उसे ईटो से लदी खिलौने जैसी ट्रक तथा खिलौने जैसा बूढा आदमी किसी को सलाम करता दिखायी न दे जाता, तो शायद वह भली चगी वनी रहती। लेकिन यकायक उसे चक्कर आ गया और उसने दूसरी छड को चारो तरफ से अपनी बाहो में भर लिया। "मै अब सही-सलामत न लौट पाऊगी," उसके, दिमाग में यह ख्याल चक्कर काट गया, "जब तक वे लोग यहा फर्श नही बिछा देते, तब तक मुझे यही रहना होगा।"

"उस गर्डर से मत चिपटो," नौजवान ने चेतावनी दी। "आप की पोशाक पर धब्बे पडा जायगे।"

"मेरी पोशाक की चिन्ता मत करो," नीना ने अपने को कहते सुना।

यह दृढ निश्चय करके कि ऊचाई पर चढने का आदी हो जाना चाहिए, उसने चारों तरफ नजर डालने के लिए अपने को मजबूर किया। उसे अगणित छते दिखायी दी—लाल, काली, हरी, रुपहली—हजारो कलई की हुई चिमनिया, घरो के बीच-बीच में हरी-भरी वृक्षावलि, स्वच्छ हाते और वेधशाला की टोपी-नुमा गुम्बद की रुपहली चोटी—ये सभी उसकी आखो के सामने घूम गये। पुल के पास से एक चौडी सडक फूटी नजर आ रही थी, जिस पर यातायात सम्बन्धी चिन्ह् अकित थे और नीना समझ गयी कि यह वही सडक है, जहा से वह हर सुबह डबल रोटी खरीद कर ले जाती है। पीली-पीली छत वाली ट्रालीबसें वेग से इधर-उधर आ-जा रही थी और लारियो की एक लम्बी पात शहर के बाहर की बस्ती की तरफ बढ रही थी। जब तक किसी कोने से एक ट्राम सरकती निकल आती थी, जो न जाने क्यो यहा से काली-काली नजर आती थी, और बडे धीमे-धीमे सडक पार करती थी मानो उसे कोई डोर मे बाध कर खीच रहा हो और सडको के

चौराहो पर कारो का जमघट इकट्ठा हो जाता था। पुल पर नीना को एक गाडी दिखायी दी और उसने कल्पना की कि यह वही गाडी होगी जिसे कन्क्रीट मिलाने वाले यन्त्र को लेने भेजा गया था। पुल से कुछ ही दूर पर रेलवे स्टेशन की काच की छत धूप मे दमक रही थी। स्टेशन से वहुत दूर, इमारतो और फैक्टरियो के पार। क्षितिज पर यूनिवर्सिटी की सफेद रूपरेखा उभर रही थी। यह सब जरा भी खौफनाक नही लगा—दरअसल, दूर तक नजरे फैलाने मे, एक तरह से, आनन्द ही अनुभव हुआ। लेकिन ज्यो ही उसकी दृष्टि नीचे मुख्य द्वार पर, रजिस्ट्रेशन के दफ्तर पर और उस बूढे आदमी पर पडी, त्यो ही उसका सिर फिर चक्कर खाने लगा और यकायक गिर पडने के भय से अभिभूत होकर उसने आखे वन्द कर ली।

इस वीच अर्सेन्तियेव ने अपना थैला बोल्ट पर से उतार लिया था और कई इलेक्ट्रोड निकाल लिये।

"देखिए कामरेड इजीनियर," उसने कहा। "मुझे सप्लाई दफ्तर से पच्चीस इलेक्ट्रोड दिये गये थे—आपको विश्वास न हो तो इस रसीद को देखकर जाच कर लीजिये। इतने वच गये है, जिनका इस्तेमाल नही हुआ," और यह कहकर वह गिनती करने लगा। आखें खोले विना नीना यह सोचती रही: "वापिस सीढी तक मै कैसे पहुच सकूगी?"

"देखिए, कुल उन्नीस है," अर्सेन्तियेव ने कहा, "और पाच पुराने टुकडे है। ये देखिये एक, दो, तीन, चार, पाच। एक होल्डर में लगा है। कोई गडबडझाला नही, सब चीज सही-सलामत।"

"तो वह किसने गिराया होगा?" नीना ने पूछा।

"पता नही। हो सकता है, मित्या ने गिरा दिया हो," और अर्सेन्तियेव ने ऊपर की तरफ नजर डाली।

ऊपर की मजिल पर एक लाल सिर वाला व्यक्ति भी जो टोपी उलटी पहने था, वेल्डिग कर रहा था।

"मित्या!" अर्सेन्तियेव ने पुकारा। उस व्यक्ति ने नकाब उठाया और नीचे देखा। उसका भला-सा चौडा चेहरा, चौडी नाक और थोडी सी सूजी हुई आखे जैसी कि सभी बिजली वेल्डरो की आखे होती है, दिखायी दी।

"क्या बात है?" उसने पूछा।

"क्या तुमने कोई टुकडा अध्यक्ष के सिर पर गिरा दिया है?"

"क्या?"

"उन्होने वकील भेजा है," अर्सेन्तियेव ने आखे झपकाकर नीना की तरफ इशारा करते हुए कहा। "जरा ठहरना। वह अभी ही नीचे जायगी और अधिकारियो से

तुम्हारी रिपोर्ट कर देगी और वे लोग तुम्हारी जिन्दगी के दस वर्षों की बलि चढा देंगे। फिर तुम्हे कुछ सबक मिलेगा।"

"क्षमा चाहता हू," अपने मित्र के स्वर में दिल्लगी उडाने का आभास पाकर मित्या ने कहा। "हम लोग कभी-कभी असावधान हो जाय, तो स्वाभाविक है। पिछले साल उस इमारत पर हमारे साथ एक राजगीर काम करता था, जिसे हम लोग चाचा येफिम कहते थे। वह कहा करता था कि जब वह ऊपर आसमान पर चढकर काम करता है तो हर चीज उसके हाथ से ऐसे छूट कर गिर पडती है, मानो वह निर्जीव वृक्ष हो। इसलिए, तुम विश्वास करो या न करो, वह अपनी हर चीज,—अपनी टोपी, अपनी पेंसिल, अपना रूमाल, अपनी सिगरेटे, अपनी माचिस—सभी कुछ अपने से बाध लेता था। क्रिसमस पर जो पेड बनाया जाता है, बस वह उसी तरह बन जाता था। तुम मुझे ये टुकडे गिराने के वास्ते कोस रहे हो, लेकिन जब कोई आदमी इतनी ऊचाई पर चढकर काम करता है तो उसे हर बात का ध्यान रखने का होश नही रहता। उसे ध्यान होता है तो अपने काम का और खुद अपना। अगर वह हर छोटी चीज़ का ध्यान रखने लगे, तो जल्दी ही लुढक जायगा। इसलिए तुम उनसे कहो, कि अगर

चीजो के गिरने से वे अपने सिर बचाना चाहते है, तो खुली जगहो में जाल लगाये, ऐसी चीजो के बारे में सोचना उनका काम है।"

"अब क्या आप नीचे जायगी?" अर्सेन्तियेव ने नीना से पूछा।

"मै . मै नही जानती "

"यूनिट न० तीन मे जाल लगवाने के लिए उनसे कहिए।"

"अच्छा।"

"या सीधे आप प्रधान इजीनियर के पास जाइए।"

"बहुत अच्छा, प्योत्र पेत्रोविच।"

"मेरा नाम है एन्द्री अर्सेन्तियेव। मै तो मजाक कर रहा था। और आपको मै क्या कह कर पुकारू, अगर कभी पुकारना पडा तो?"

"नीना वासिलीयेवना।"

"ठीक। और मै यह समझ रहा था कि आप महज घूमने के लिए आयी है। लेकिन जब आप गर्डर पार करने लगी, तो उसी क्षण मुझे अपनी गलती महसूस हो गयी। ऐरा-गैरा यह नही करेगा। जालो के बारे में आप नही भूलेगी, क्यो?" और उसने झिल्लीदार खिडकी वाला नकाब फिर चेहरे पर खीच लिया और काम मे जुट गया।

"अब मै क्या करू?" नीना ने विचार किया। "खैर, इजीनियर क्रावत्सोवा, तुम यहा से वापिस जा सको या न जा सको, यहा से तुम्हे टलना ही होगा। पता नही, उन्हे अभी फुर्सत मिली या नही कि तुम्हारा नाम अपने कर्मचारियो मे दर्ज कर ले।" उसने नीचे ताका और जमीन पर पैर टिकाये काम करने वाले लोगों से उसे ईर्ष्या हुई; उसने गर्डर को छोडने के लिए जबर्दस्त प्रयत्न किया। लेकिन उसका सिर फिर घूमने लगा, उसकी एडियो में गुदगुदी जैसी सनसनी पैदा हो गयी और वह समझ गयी कि एक भी कदम नही उठा पायेगी।

चारो तरफ लोग, हमेशा की तरह, शान्ति के साथ काम कर रहे थे। नीचे, कही दूर से मोटर के भोपुओ की आवाज, धातुओ की चीजो की खडखडाहट और धौकनियो से चलनेवाले हथौडो की टट्—टट्—टट् के स्वर आ रहे थे। कोई तीस फीट दूर, एक क्रेन के काच के पिजडे में नीना को नीली आखोवाली लडकी लीवर घुमाती हुई दिखायी दी, जिससे क्रेन की विराट भुजा की छाया, हवाई जहाज की छाया की तरह, पूरी इमारत के इस्पाती ढाचे के ऊपर घूम गयी।

"आप अभी भी यही है?" अर्सेन्तियेव ने नकाब उठाते हुए पूछा।

"मै बताऊ, उसे डर लग रहा है," ऊपर से मित्या चिल्लाया और जोर से हस पडा। "माफ कीजियेगा।"

"इसमें हसी की बात ही क्या है," नीना ने हताश भाव से कहा।

"सचमुच कोई बात नही है। बस, करना यह चाहिए कि अपने मन मे सोच ले कि हम जमीन पर चल रहे है और तब सब कुछ ठीक हो जाता है। एक अमरीकन था, जिसने दो गगन चुम्बी इमारतो के बीच एक तख्ता लगा दिया और यह शर्त लगायी कि वह आख मूदकर उसे पार कर सकता है। उसने कहा कि जब उसकी आखो पर पट्टी बध जायगी, तो फिर यह तख्ता चाहे जमीन पर हो चाहे आसमान, उसके लिए रत्ती भर फर्क न पडेगा। तो, उन लोगो ने उसकी आखो पर पट्टी बाध दी और वह उस तख्ते पर चल पडा। और वह धडाम से नीचे आ गिरा।"

"बात खत्म हो गयी?" अर्सेन्तियेव ने चिढकर कहा। "क्या मामला है?"

अर्सेन्तियेव ने नीना की तरफ घबरायी हुई दृष्टि डाली।

"क्या आप यही खडी रहेगी?" एक क्षण सोच-विचार कर अर्सेन्तियेव ने पूछा।

"मै नही जानती।"

"वाह, यह भी क्या बात हुई। आपको सीढियो तक क्या मै ले जाऊगा?"

"ओह, नही, लेकिन कोई और उपाय निकालिए।"

"मै आपको उठा कर ले जाता, यदि परिस्थिति इतनी गम्भीर न होती। मै ऐसी जिम्मेदारी नही ले सकता।" फिर मित्या की ओर मुडकर उसने कहा, "परियो के किस्से तुम उच्छे सुनाते हो, लेकिन कुछ सलाह तो दो।"

कुछ क्षण तक वे एक-दूसरे की तरफ देखते बैठे रहे।

"बस अगले क्षण, मै गिर ही जाऊगी," नीना ने अपनी कापती पलके बन्द करने की कोशिश करते हुए अस्फुट स्वर मे कहा।

"अगर फर्श लगा दिया जाय, तो वह पार कर लेगी।" मित्या ने अत मे कहा।

"बस, यही सोच पाये?" अर्सेन्तियेव ने चोट की, लेकिन यकायक उसे एक सूझ समझ में आयी।

"मारूस्या।" उसने क्रेन चलाने वाली नीलाक्षी लडकी को आवाज लगा दी। "सिग्नेलर से कहो कि मेरे लिए ५ नम्बर के दो तख्ते भिजवा दे। बाकी बात, मै नीचे आकर बता दूगा।"

नीना ने उस लडकी को सिर हिलाते और फिर टेलीफोन में कुछ कहते और फिर लीवर खींचकर क्रेन चलाते देखा। शीघ्र ही इस्पात की विराट भुजा हवा को चीरती हुई आयी और अर्सेन्तियेव के सिर पर कंक्रीट का चौकोर तख्ता झूलने लगा।

"नीचा करो और नीचा करो।" अर्सेन्तियेव ने हाथ हिलाते हुए आवाज लगायी।

तख्ता बडी सफाई के साथ गर्टरों पर आकर जम गया और नीना ने यकायक महसूस किया वह कंक्रीट के चौडे फर्श पर खडी है, जिसपर किसी के बडे-बडे चरण-चिन्ह हमेशा के लिए अंकित हो गये थे। पाच मिनट एक और तख्ता आकर उसके आगे बिछ गया और नीना, अर्सेन्तियेव की नजरें बचाती हुई, उन्हे पार करती भागी और तारो की बनी सीढियो मे नीचे उतर गयी।

"मै इसी क्षण प्रधान इजीनियर से बात करूगी," उसने सोचा "और इसके पहले कि अवसर चूक जाय, मै यह नौकरी स्वीकार करने से इनकार कर दूगी।"

लेकिन ठोस जमीन पर आकर उसने देखा कि सभी लोग इतने व्यस्त है कि किसी को उसकी तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही नही मालूम होती थी और ठडे बरामदे

मे एक नोटिस पहले से ही टग चुका था कि नीना वासिलीयेव्ना क्रावत्सोवा को एक महीने के परीक्षा-काल के लिए सुरक्षा-टेक्नीक के इजीनियर पद पर नियुक्त किया गया है।

* * *

नीना ने अगला दिन अपने कार्यक्रम के अध्ययन मे लगाया—इस कार्यक्रम के साथ विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणिया लगी हुई थी और दर्जनो नक़्शे जुडे हुए थे, जिन्हे खोलना तो आसान था, लेकिन मोडकर फिर रख देना लगभग असम्भव था। प्रधान इजीनियर उसके साथ बैठे थे और कमजोर मचान बनाने, असावधानी से बनाये गये पाल लगाने और नीचे जाल लगा कर तथा लट्ठो की आड लगा कर सुरक्षा किये बिना खुली जगहो के ऊपर काम करने मे क्या खतरे है। यह बता रहे थे और उन्होने किसी भी आदमी से मिलने से इनकार कर दिया था। पहले तो नीना को लगा कि वे उसके काम के महत्व को व्यर्थ बढा-चढा कर बता रहे है, लेकिन जब उनकी बात खत्म हो गयी और प्रधान इजीनियर ने उससे हाथ मिलाकर कहा: "मुझे आशा है कि तुम्हारी जॉच के कारण एक भी दुर्घटना नही होगी," तब उसे यह महसूस हुआ कि

वह सैकडो के जीवन की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होगी और इस विचार से ही वह काप गयी।

अगले दिन उसने नोट बुक और पेंसिल ली और निर्माण-स्थल की पहली जाच के लिए निकल पडी।

दूसरी मजिल पर भोज के लिए बनने वाले बड़े कमरे में उसकी नजर जल्दी मे बनाये गये मचान पर पडी। देखने से ही मालूम हो गया कि यह बिजली की वेल्डिग करने वालो के लिए बनाया गया था, क्योंकि अर्सेन्तियेव वहा पर तारो को सुलझा रहा था। विद्यार्थी-काल मे नीना ने मचान बनाने के काम का सावधानी के साथ अध्ययन किया था और उसने फौरन ही समझ लिया कि यह मचान जैसा होना चाहिए, वैसा बनाया नही गया है। ३ नम्बर की यूनिट का फोरमैन, इवान पावलोविच, बढई से बात कर रहा था, जिसने इस डावांडोल ढांचे मे आखिरी कील अभी-अभी ठोकी थी। "इनसे मै कहू या नही?" नीना ने सोचा, वह डर रही थी कि अर्सेन्तियेव सोलहवी मजिल वाली घटना पर कोई भौंडी टीप कसे बिना मानेगा नही।

"मै सदा तो उससे बचकर नही रह सकती, इसलिए अभी ही उसको निपट लू तो बेहतर है," उसने फैसला कर लिया और इवान पावलोविच के पास गयी।

"इसे आप क्या कहते है?" उसने सख्ती से पूछा।

"नीना वासिलीयेव्ना, यह अस्थायी ढाचा है जिसे मचान कहते है," फोरमैन ने घमड के साथ बतलाया, "इन्हे खडे डडे कहते है और ये आडे-तिरछे डडे "

"डडे नही, तख्ते," नीना ने अर्सेन्तियेव की नजर बचाते हुए बीच मे टोक दिया।

"निश्चय ही आप इन्हे तख्ते नही कहेगी," इवान पावलोविच ने आडे-तिरछे टुकडो मे सबसे मोटे तख्ते पर हाथ मार कर उतने ही घमण्ड के साथ कहा। "ये उतने ही चौडे है, जितने नक्शे मे बताये गये है।"

"यह तख्ता है, और यह भी वही है," नीना ने अनुपयुक्त तख्तो पर काटने का निशान बना कर कहा और उसे महसूस हुआ कि उसका गुस्सा उभड रहा है। "कृपया इन्हे बदल डालिए।"

"देखिए, देखिए, नीना वासिलीयेव्ना, अभी आप हमारे काम को पूरी तरह समझ नही पायी है।"

"और ये खडे भी सीधे नही है। सारा ढाचा ढीला पोला है।"

"यह सीधे नही है, यह आप कैसे कहती है?"

"यहा से देखो।"

"वहा से ऐसा ही लगता है। अगर आप इस जगह से देखें तो आप को ये इतने ही सीधे दिखायी देंगे, जैसे साचे में ढले हो।"

असेंन्तियेव और वढई जाने ही वाले थे, लेकिन वे यह देखने रुक गये कि यह झगडा कैसे निपटता है।

"जो जी चाहे, करो," नीना ने कहा, "लेकिन अगर किसी ने भी इस मचान पर चढने की हिम्मत की तो मै फौरन यह रिपोर्ट कर दूगी कि उसने आज्ञा का उल्लघन किया है।"

"आप यह क्या कर रही है, नीना वासिलीयेवना," इवान पावलोविच ने शीघ्रता से कहा और फौरन गम्भीर हो गया। "हम सब ठीक किये देते है। वास्या, इन तख्तो का मचान तुमने कैसे वनाया?"

"मुझे जैसे तख्ते दिये गये, वैसे मैने लगा दिये," वढई ने हठपूर्वक कहा।

"तुम्हे ऐसे सामान की माग करना चाहिए, जो नक्शे के अनुसार हो। ये डडे देखो। इन्हे तुम सीधा खडा कहते हो? देखो, एक घटे मे सब चीज वदल जाना चाहिए।"

वढई सारे आडे-तिरछे तख्तो को गिराने लगा।

"और इस एक घटे मे मुझसे किस काम की आशा की जाती है?" अर्सेन्तियेव ने उदासी के स्वर मे कहा।

नीना चली गयी। जब तक वह ओझल नही हो गयी, तब तक इवान पावलोविच उसकी तरफ देखता रहा, फिर वह बढई के पास गया।

"रुक जाओ," उसने फुसफुसा कर कहा।

बढई ने अपने कधे के ऊपर से प्रश्न-सूचक दृष्टि डाली।

"इन्हे फिर लगा दो। जभी वह छीके, तभी हम डाक्टर के पास नही दौडे जायगे। अर्सेन्तियेव, चढ तो जाओ।"

आधे घटे बाद लाउडस्पीकर ने नीना को भोज वाले बडे कमरे मे बुलाया। वहा नीना ने प्रधान इजीनियर और अर्सेन्तियेव को मचान के पास खडे पाया।

"इसे तुमने देखा था?" प्रधान इजीनियर ने नीना से पूछा।

"देखा था।"

"देखो," और प्रधान इजीनियर ने पैर रखकर बडी आसानी से एक तख्ते के दो टुकडे कर दिये।" ऐसी चीज तुम्हे अपनी नजर से नही बचने देनी चाहिए।"

"कामरेड अर्सेन्तियेव, इसकी सफाई मे आपको क्या कहना है? किकर्त्तव्यविमूढ नीना ने पूछा। वह देखती कि

जब लोग झूठ बोल रहे है या उसे धोखा देने का प्रयत्न कर रहे है, तब वह किंकर्तव्यविमूढ रह जाया करती है।

"सफाई तुम्हे देना है," प्रधान इजीनियर ने कहा। "तुम्हे और अधिक सावधान रहना है। तुम कितनी साव-धान हो, इसी पर लोगो का जीवन निर्भर करता है. समझी?"

"समझी," नीना ने धीमे से कहा।

"मै बताऊ, रोमन गव्रीलोविच," अर्मेन्तियेव ने बात शुरू की, लेकिन नीना ने उसकी बात काट दी।

"प्रधान इजीनियर को मफाई आप को नही देना है," उसने धीमे से कहा। "बात बिल्कुल साफ है। यूनिट के फोरमैन के पास जाओ और कहो कि एक घटे में, मै फिर इस मचान की जाच करने आऊगी।"

* * *

नीना को जो कठिन काम सौपा गया था, उस पर अधिकार प्राप्त करने में उसे वक्त नही लगा। निश्चय ही, वह इसे अस्थायी काम समझती थी और इसी लिए ग़ैरहाज़िर इजीनियर की मेज की एक भी चीज़ को उसने नही छुआ—यहा तक कि उसके कलैण्डर को भी नही

छुआ, जिस पर तमाम पुरानी टिप्पणिया लिखी हुई थी। उसने कोई परिवर्तन किया, तो सिर्फ इतना कि एक पानी के गिलास मे कुछ फूल सजा लिए। किन्तु इस अस्थायी स्थिति के वावजूद वह "अपने काम मे तन-मन से जुट गयी"—उसके मित्र यही कहा करते थे।

उसके पहले के इजीनियर का दफ्तर छोटा-सा था और उसमे सिर्फ एक खिडकी थी। यह खिडकी निर्माण-स्थल की ओर खुलती थी, और उसके बाहर झुक कर सारी इमारत बिल्कुल चोटी तक देखी जा सकती थी। लेकिन नीना दफ्तर मे इतना कम रहती थी कि विभिन्न सुपर-वाइजर उसे सीधे लाउडस्पीकर से वलाते थे, क्योंकि उन्हे विश्वास-सा हो गया था कि उसे टेलीफोन पर पाना असम्भव है। नीना दफ्तर में नही रहती थी, उसका एक कारण यह भी था कि वह यह खुद देखना पसद करती थी कि उसके आदेशो का पालन किस तरह किया जा रहा है और दूसरा कारण यह था कि वह सप्लाई विभाग के टेक्नीकल विशेषज्ञ अखापकिन से बचना चाहती थी क्योंकि वह अपनी रोज की शिकायतो से—कि खारकोव कारखाने ने ब्लाक ९२ के लिए अपना आर्डर अभी तक नही भेजा है—उसके कान खा जाता था। दो ही सप्ताहो

मे उसे अपने काम में इतना आनन्द मिलने लगा कि जब वह निर्माण-स्थल के ज़ीने पर ऊपर नीचे जाती तो इधर-उधर निकले हुए तारो को अनजाने में आप ही आप मोड देती थी।

फिर भी, इन दो सप्ताहो के अत मे वह उतनी ही अकेली थी जितनी कि पहले दिन जब वह आयी थी। उसने कोई मित्र नही बनाया। फोरमैन समझते थे कि यह थोडे दिनो की बला है, जो आँधी-पानी की तरह एक दिन चली जायगी। नीना गर्डरो पर जिस तरह चलती थी, उसका वे लोग मजाक बनाते थे और अपनी मीटिंगो में बडे बुजुर्गाने ढग से झिडकते थे। यह देखकर कारीगर भी उसका सम्मान नही करते थे और उसकी पीठ पीछे उसे नीना वासिलीयेब्ना कहने के बजाय "सुरक्षा टेक्नीक" के नाम से पुकारते थे। लेकिन इस सब के बावजूद, नीना खुली जगहो मे काम करने वालो के चारो तरफ घेरे लगवाने या नीचे की खुली जगह को जाल या तख्तो से पटवा डालने में सफल हो गयी थी।

फिर भी, साधारण सख्या मे छोटी-मोटी दुर्घटनाए होती ही रहती थी। सुरक्षा नियमो को समझाने के लिए बैठके करने के उद्देश्य से नीना कई बार कारीगरो के

होस्टल मे गयी, लेकिन कोम्सोमोल के समर्थन के बावजूद, इन बैठको मे कोई नही आता था। नीना को बडा गुस्सा आया। वह कह उठती थी कि नौजवानो को उनुशासन का जरा भी ध्यान नही है और होस्टल की प्रबन्धकर्त्री, क्सेनिया इवानोव्ना से वह अनुरोध करती कि इन लोगो के खिलाफ कार्रवाई की जाय। क्सेनिया इवानोव्ना सिर्फ खेदपूर्वक हस कर रह जाती और कहती कि नीना को अभी यह नही मालूम कि असली अनुशासन-हीनता क्या होती है। और तो और, कभी-कभी नौजवान लोग इस हद पर पहुच जाते कि कल्याण समिति अपराधी युवक के माता-पिता के पास शिकायत लिख कर भेजने के लिए विवश हो जाती—हालाकि नौजवान कारीगर अगर किसी बात से खौफ खाते है, तो सिर्फ इसी से। अत मे क्सेनिया इवानोव्ना ने सुझाव दिया कि एक नृत्य-कार्यक्रम सगठित किया जाय और उसको सुरक्षा विषयक वार्ता से शुरू किया जाय।

नीना का पारा चढ गया। उसने कहा कि अगर सुरक्षा नियमो को समझाने के लिए कोई प्रलोभन देना आवश्यक है, तो लानत है इस पर और यह कहकर वह घर चली गयी। चूकि क्सेनिया इवानोव्ना तनिक भी

"एक व्यक्ति की कीमत कितनी होती है?" नीना ने पूछा।

"एक व्यक्ति की कीमत? क्या मतलब?"

"हमारे देश मे एक व्यक्ति की कीमत क्या है?"

"एक आदमी की कीमत क्या होती है, यह मुझे नही मालूम, लेकिन तीन सौ पचास को तेरह से गुणा करने से पाच हजार रूवल का हिसाव आता है। ऐसी वेकार सी वात पर, इतनी बडी रकम कोई नही खर्च करने देगा।"

नीना ने उसका हिसाब-किताव उठाया और प्रधान इजीनियर से वात करने चली गयी। उन्होने उतनी रकम खर्च करने की इजाज़त दे दी, लेकिन इवारत पद्य में रखने पर ऐतराज किया। कुछ दिनो वाद, ताँबे के कर्णा-भूपण पहने वही लडकी (जिसका नाम न्यूरा था) तमाम जगह साइनवोर्ड लटकाती नजर आयी, इस वार मुडेरो पर नही, वल्कि नीना द्वारा चुने हुए स्थानों पर इन्हे लटकाया जा रहा था, क्योकि उन्ही स्थानो पर लोग काम कर रहे थे। दो रात तक नीना ने नियम-उपनियमो का मथन किया और उपयुक्त हिदायते चुनी। उसने सभी को सक्षिप्त और सार्थक रूप दिया. "अपने औजारो की मरम्मत

अच्छी तरह करा लो। टूटा औजार खतरनाक होता है, वेल्डिग की चमक की तरफ मत ताको।"

मगर शीघ्र ही सप्लाई विभाग की कजूसी प्रगट होने लगी। साढे तीन सौ साइनबोर्डो के आर्डर के बजाय उसने सिर्फ ५० के आर्डर दिये और हर साइनबोर्ड के कोने मे लिखा था "कीमत, १३ रूबल।" स्पष्ट था कि यह अखायकिन की करामात है।

अगले दिन सुबह जब साइनबोर्ड लगा दिये गये, तब नीना निरीक्षण के लिए निकली। इस समय तक वह ऊची जगहो पर चढने की आदी हो गयी थी, लेकिन गर्डरो पर पैर रखने मे उसे अभी भी डर लगता था। सातवी मजिल पर उसने देखा कि लाल सिरवाला मित्या गैस-वैल्डिग का काम कर रहा है।

"काम खत्म करने के बाद जनरेटर मे कोई कार-बाइट मत छोड देना—ध्यान रखना।" नीना ने चेतावनी दी।

"मैं कभी नही छोडता, नीना वासिलीयेव्ना।" मित्या ने मुड कर कहा।

"अरे भाई, यह तो देखो। तुम फिर बिना चश्मा लगाये काम कर रहे हो।"

"टूट गया," मित्या ने मुसकुरा कर कहा। "आज

सुबह वह चश्मा मेरी जेब में पडा था और यह मै भूल गया। मैने अपने प्लायर्स जेब मे डाल दिये। काच टूट गये। यह है।"

मित्या ने जेब से चश्मा निकाल लिया, जिसका एक कॉंच टूटा था।

"इससे तुम अभी भी काम कर सकते थे," नीना ने कहा।

"और अगर कही कॉंच का टुकडा टूट कर आख मे घुस गया तो?" मित्या ने आपत्ति की। "आप नही जानती, टूटा औजार खतरनाक होता है?"

नीना का गुस्सा भडक उठा। ये कारीगर उसके काम का सम्मान करना कब शुरू करेंगे, और उसके आदेशो का मजाक उडाना कब बन्द करेंगे?

"अगर तुम्हे अपनी आख मे काच घुसने का इतना डर था, तो तुम्हे बहुत पहले नया चश्मा लाने के लिए सप्लाई दफ्तर जाना चहिये था," नीना ने शान्ति धारण करने का प्रयत्न करते हुए कहा। "रगीन चश्मे के बिना काम करने पर मै रोक लगाती हू।"

"आप समझती है कि मेरे पास सात मजिल उतरने और सात मजिल चढने के अलावा और कोई काम

नही है? योजना की पूर्ति कैसे होगी? मेरी कमाई क्या होगी?"

"तो तुम अपने यूनिट फोरमैन को जाकर सूचित करो कि मैने तुम्हे काम से हटा दिया है," नीना ने अपना पैड निकाला और उल्लघन करने के अभियोग का नोटिस लिखने लगी।

"भूल भी जाइये, नीना वासिलीयेव्ना।"

"नही। मै नही छोडूगी। तुमने यह दूसरी वार नियमो का उल्लघन किया है। अगर तुम इस वात को जारी रखोगे—तो मै लिख दूगी और तुम्हारे माता-पिता को सूचित कर दूगी कि तुम कैसे व्यवहार करते हो।"

"मै आपको उनका पता ही नही वताऊगा।"

"तुम्हे बताना नही पडेगा, मै नियुक्ति विभाग से पता हासिल कर लूगी।"

सच यह है कि नीना को उसके माता-पिता को शिकायत लिख भेजने का कतई इरादा नही था और पता नही, क्यो वह उसे ऐसी धमकी दे बैठी, लेकिन इसके पहले कि उससे वह कुछ और कह पाती, लाउडस्पीकर से एक आकाशवाणी ने घोषणा की "१० मिनट के अन्दर एक रेडियो सम्मेलन होगा। दस मिनट के " नीना यूनिट

नम्बर ३ के दफ्तर की तरफ भागी, जहां ट्रांसमीटर था।

रास्ते में उसे एक लड़की मिली, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। यह लड़की तार की सीढ़ियों पर रेलिंग को कस कर पकड़े हुए, धीरे धीरे चढ़ रही थी और अपने चारों तरफ शीघ्रतापूर्वक नज़र डालती जा रही थी और कभी-कभी रुककर क्रेन की हवा में झूलती हुई भुजा को निरखने लग जाती थी। 'नयी आयी है,' नीना ने उसके करीब से गुज़रते हुए सोचा।

चौथी मंज़िल पर एक अस्थायी दफ्तर में नीना को इवान पावलोविच मिले। वे अपने चिर-संगी टोप को सिर पर पीठ की तरफ खिसकाये हुए थे। उनके चौड़े, रूखे और धूप खाये चेहरे पर यह टोप ज़रा भी नहीं फबता था उनके हिसाब से वह बहुत छोटा मालूम पड़ता था लेकिन वे इसे दफ्तर में भी चढ़ाये रहते थे ताकि टेली-फोन की अगली पुकार सुनने या अगले कागज़ पर हस्ताक्षर करने की बला से बचने के लिए किसी भी क्षण बाहर भाग सकें।

फोरमैन के सामने अर्सेन्तियेव खड़ा था।

नीना ने चोरी-चोरी उसकी तरफ नज़र डाली—इस भय से कि सोलहवीं मंज़िल पर जिस तरह उनका

परिचय हुआ था, उसे लेकर वह छीटा न कस दे। लेकिन इस वेल्डर का दिमाग इस समय कही और ही उलझा था।

"अगर हमारे पास चार आदमी और हो, तो सारा काम बन जाय," उसने फोरमैन से कहा।

"चार आदमी, मै कहा से लाऊगा?" इवान पावलोविच ने बडी थकी आवाज मे पूछा। "यह तो वताओ।"

"हमे आदमी नही चाहिए। चार लडकिया हमे दे दीजिये, जो हमारा ऊपरी काम को कर सके, ट्रासफार्मटो की देख-भाल कर सके और यह देख सके कि तार लगाने का काम ठीक है या नही—ताकि हम वेल्डरो को इधर-उधर भाग-दौड करने मे वक्त वरवाद न करना पडे।"

द्वार खुला और सीढियो पर नीना को जो लडकी मिली थी, उसने दफ्तर में झाका।

"अच्छा, तो आपको ऐसा जोव चाहिए जो आपके खाने के लिए सैडविचे ला सके?" इवान पावलोविच ने अर्सेन्तियेव से पूछा।

"क्यो नही? वे लोग हमारे लिए सैडविचे भी ला सकती है?" अर्सेन्तियेव ने निश्चित भाव से कहा।

"मै आ सकती हू?" उस लडकी ने दरवाजा और अधिक खोलकर पूछा और इजाजत का इतजार किये विना,

वह अन्दर चली भी आयी, और मेज के पास आकर खडी हो गयी।

"कोई आपकी सेवा मे हाजिर रहे, यही तुम चाहते हो," इवान पावलोविच ने उस लडकी की उपेक्षा करके कहा। "मै किसी को नही ला सकता।"

"तुम्हारी जगह मै होता, तो किसी न किसी को ला खडा करता।"

"अच्छा, तो मेरा आसन लीजिए। मेरी जगह ले सको तो मुझे बडी खुशी होगी।"

"मुझे पागल समझते हो?"

इस सवाल पर विचार करने में लीन होकर इवान पावलोविच अपनी ऊगलियो मे पेंसिल घुमाने लगे। स्पष्ट था कि उसके विचार कोई आनन्दजनक नही थे, इसीलिए अपने विचारों की लडी तोडने के लिए उसने उस लडकी की ओर अपनी थकी नजरें घुमायी।

"क्या चाहती है?" उसने पूछा।

"मुझे यहा काम के लिए भेजा गया है। मै क्या काम करू?"

"हू, काम के लिए। अच्छी बात है। क्या नाम है?"

"रोदिओनोवा। लीदा रोदिओनोवा।"

"अच्छा, लीदा रोदिओनोवा, आप उस सोफे पर तशरीफ रखिए और जरा आराम कर लीजिए।"

"आराम करते-करते मै थक गयी हू," लीदा ने कहा। "मै दो दिन से आराम कर रही हू—तभी से, जब से रेल से उतरी हू।"

"इसका इलाज हम लोग कर देंगे। तो आपको हमारा यह छोटा सा घरौदा कैसा लगा?"

"बुरा नही है। सिर्फ बडी बुरी तरह भारी-भरकम जगह है। गिर तो नही पडेगी?"

"रत्ती भर मुमकिन नही। हम कोई चीज बनाते है, तो हमेशा के लिए बनाते है।"

"तो, इवान पावलोविच, उन लोगो की वाबत क्या सोचा?" अर्सेन्तियेव ने फिर पूछा।

लेकिन इसी क्षण लाउडस्पीकर फिर चालू हो गया और प्रधान इजीनियर की कर्कश आवाज सुनायी दी "सम्मेलन शुरू हो रहा है। "यूनिट न० १ के फोरमैन ही सुन रहे है, न?" "जी हा," यूनिट नम्बर १ के फोरमैन ने जवाब दिया और फिर अन्य स्त्री-पुरुषो के स्वरो ने भी इसी तरह के प्रश्नो के उत्तर में "सुन रहा हू," या "मौजूद हू," कहकर जवाब दिया। प्रधान इजीनियर ने

जब इवान पावलोविच के बारे मे सवाल किया तो उसने जवाब दिया·

"मै यहा मौजूद हू और नीना वासिलीयेव्ना भी है," और उसने चोगे मे फूक मार दी।

लीदा किताबो की आलमारी तक गयी और दरवाजे के शीशे मे अपना प्रतिबिम्ब देख कर सिर से रूमाल को कस कर बाँधने लगी।

"मै खाना खाने बैठ जाऊ, तो किसी को एतराज तो नही?" उसने अर्सेन्तियेव से पूछा।

"यहा किसी को किसी बात से एतराज होता है, तो अपना फैसला देने से," अर्सेन्तियेव ने उत्तेजित होकर कह डाला और सोफे पर लीदा की बगल में बैठ गया।

लीदा ने अपने थैले से कुछ बन और पनीर निकाला, अपने घुटनो पर रूमाल बिछाकर उन्हे रख लिया और खाने लगा।

"तुम साइबेरिया की हो?" अर्सेन्तियेव ने पूछा।

"तुमने कैसे ताड लिया?"

"साइबेरिया के बन तो साफ झलकते है। साइबेरिया के किस भाग की हो?"

"ओम्स्क क्षेत्र। मैं इशिम के पास रहती हू। तुम कहा के हो?"

"नोवोसिबिर्स्क के पास का।"

नीना यह वार्तालाप सुनकर ईर्ष्या और जलन महसूस कर रही थी।

"यह लडकी कितनी जल्दी दोस्त बना लेती है," नीना सोचने लगी। "इस जमीन पर पैर रखते ही, वह यहा रम गयी। कल तक, शायद इसके दर्जनो दोस्त बन जायगे। काश, मैं भी इस मनहूस काम से छुटकारा पा सकती और कोई असली काम शुरू कर सकती।"

"लोग बताते है कि नोवोसिबिर्स्क के लोग जरा भी सावले नही होते," लीदा कह रही थी, "लेकिन तुम तो अपने टोप की तरह काले हो।"

"क्यो न होऊ? हम वेल्डर लोग, सभी की बनिस्बत धूप मे ज्यादा रहते है। बिल्कुल चोटी पर काम करते हैं। तुमने क्या कोई शिक्षा समाप्त की है?"

"नही।"

"निर्माण के किसी काम को जानती हो?"

"नही।"

"यानी कि तुम कुछ नही जानती।"

"कुछ भी नही।"

"चलो ठीक है। तुम इन लोगों से कहो कि वे तुम्हे मेरी सहायक बना दें। क्या तुम्हे यह काम पसद होगा?"

"मै क्या जानू। जो भी कहा जायगा, मै करूगी। अगर मै तुम्हारी सहायक बना दी जाऊ, तो मुझे क्या करना होगा?"

"कोई अधिक काम नही। अगर नीचे से हमें कोई चीज मगानी होगी, तो हम लोग तुम्हे अपने... अपने जिसे कहते हैं, अपने प्रतिनिधि की हैसियत से वह चीज लाने भेज देगे, हमारे लिए चीजे लाने के लिए तुम्हे इधर-उधर भाग-दौड करनी पडेगी ताकि हमे बीच में अपना काम रोकना न पडे।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ मे नही आयी। तुम्हारा मतलब है कि तुम्हे अपने काम के लिए नीचे-ऊपर दौडने के वास्ते एक दूत की जरूरत है?" लीदा ने पूछा।

"क्यो, शुरू मे ही तुम नक्शो पर दस्तखत बनाने का काम चाहती हो क्या?"

"वे लोग क्या मुझे जूते भी देगे?"

"जूते और काम के वक्त पहनने के कपडे भी।"

"खैर, होगा। तुम कह रहे थे कि तुम्हें साया

पहनने वालियो की जरूरत है और मुझे पहनना पडेगी पतलून। मै इतजार करूगी और देखूगी कि प्रधान जी मुझे कहा भेजते है।"

बाकी बाते नीना सुन नही सकी, क्योकि इसी समय इवान पावलोविच रेडियो-ट्रासमीटर के चोगे मे चिल्ला-चिल्ला कर कुछ कहने लगा।

"फिटर लोगो को गर्डरो के लिए एक-एक घटे तक इतजार करना पडता है और क्रेन ईटें ढोये चली जाती है," चोगे की तरफ उगली हिलाते हुए वह चिल्ला उठा। "यूनिट न० १ ईटो से पट गयी है, जब कि मुख्य काम पर लगे आदमी लोग हाथ पर हाथ धरे इसलिए बैठे रहते है कि उनके पास अपने काम का कोई सामान नही है। प्रधान इजीनियर क्या यह सोचते है कि काम करने का यही तरीका है?"

"क्या तुम्हारा ख्याल है कि हम लोग बिना ईटो के, काम चला सकते है?" यूनिट नम्बर १ के फोरमैन की आवाज आयी। "इवान पावलोविच का ख्याल है कि केन्द्रीय क्रेन का इजारा उन्ही के नाम लिख दिया गया है।"

"यूनिट नम्बर १, फिजूल की टीका मत करो," प्रधान इजीनियर ने कर्कश स्वर में कहा। "अपने दैनिक

काम की योजना सामने रख लो। निकाल ली?" यह बात इवान पावलोविच से नही कही गयी थी फिर भी उसने अपनी मेज में से योजना निकाल ही ली।

"सभी क्रेनो की स्थिति देखो," प्रधान इजीनियर कह रहे थे। "मिली? न० २ को देखो। इस बात की सफाई मे क्या कहना है कि क्रेन न० २ को इमारत की बायी तरफ ले जाने के लिए जगह साफ क्यों नही की गयी?"

"कोयला-भण्डार को मै कहा ले जाऊगा?" यूनिट न० १ ने पूछा। "मै इसे कोने में रखना चाहता था, लेकिन नीना वासिलीयेवना एतराज करती है। कोयला-भण्डार को उस तरफ रखने के लिए वह मना करती है।"

"हा, मै मना करती हूं," इवान पावलोविच के हाथ से चोगा लेकर नीना ने कहा। "कामरेड रेशेतोव, जरा नियम पढ लीजिए। क्रेन के नीचे काम करने पर रोक लगायी गयी है।"

"एक मिनट, नीना वासिलीयेव्ना," प्रधान इजीनियर ने बीच में टोक दिया। "इस बात की सूचना तुमने मुझे पहले क्यो नही दी, कामरेड रेशेतोव? ओ-आर १२ नम्बर का नक्शा निकालो। उसे देखो। पी-आर और १०-११ जहा एक दूसरे को काटते है, उस जगह के बीच मे, क्या

क्रेन नही लगायी जा सकती? और क्रेन किस तरह वहा लगायी जायगी, इसकी चिन्ता तुम्हे करनी होगी। और केन्द्रीय क्रेन यूनिट न० ३ के फोरमैन के सुपुर्द कर दी जानी चाहिए।"

इवान पावलोविच ने अपनी उगलिया चटखायी और लीदा की तरफ आख मारी।

"काम ऐसे होता है," वह वोला।

"और इवान पावलोविच को याद रखना चाहिए," प्रधान इजीनियर कह रहे थे, "कि सारा ढाँचा अगले वीस दिन मे तैयार हो जाना चाहिए। वात साफ हुई?"

इवान पावलोविच ने चोगे मे इस तरह फूक मारी, मानो वह चूल्हा हो।

"रोमन गव्रीलोविच, रोमन गव्रीलोविच।" वह चिल्लाया, "मै आपको पहले ही वता चुका हू कि वीस दिन मे काम खत्म होना मुश्किल है।"

"तुम्हे पक्का विश्वास है?"

"हर आदमी जानता है कि हम नही कर सकते। किसी भी कारीगर से पूछ लीजिए। यहा, इत्तफाक से अर्सेन्तियेव मौजूद है।" उसने चोगा अर्सेन्तियेव की ओर वढाया और

फुसफुसाकर कहा, "लो और प्रधान को बता दो कि तुम्हा-रा क्या ख्याल है।"

"उन्हे अपनी सच्ची राय बताऊ?"

"हा। डरो नही। अगर हम नही कर सकते, तो नही कर सकते और बस क्या कहा जा सकता है।"

"अर्सेन्तियेव, तुम्हारा क्या ख्याल है?" प्रधान इजी-नियर ने पूछा।

अर्सेन्तियेव ने चोंगा ले लिया।

"अगर जो लोग इन-चार्ज है, वे हमारे कहे के अनुसार काम करे, तो हम वक्त पर काम खत्म कर सकते है," उसने कहा।

"खूब कहता है," नीना ने सोचा। इवान पावलोविच किकर्त्तव्यविमूढ होकर धम से कुर्सी पर बैठ गया।

यह सम्मेलन खत्म हो गया तो नीना अपने दफ्तर वापिस चली गयी। वहा उसे मित्या मिला, जो उसका इतजार करता हुआ अखाप.किन से बाते कर रहा था।

"क्या मतलब, छुट्टी लोगे? सोचो तो, आज जब हम वेल्डरो की वजह से योजना पूरी नही हो पा रही है, तब अगर मै छुट्टी पर जाना चाहू, तो कैसा लगेगा? हम लोग राज्य के लिय काम कर रहे है, या नही?"

"इसकी तुम चिन्ता मत करो। तुम अपनी चिन्ता आप करो और राज्य स्वय अपनी फिक्र कर लेगा," अखापकिन वोला।

"मै चीजो को इस तरह नही देखता—मैं अपनी फिक्र करू और राज्य अपनी करे। मै तो राज्य की चिन्ता खुद करूगा और राज्य से चाहूगा कि वह मेरी चिन्ता करे।"

"तुम लोग खाना खाने क्यो नही गये?" नीना ने पूछा।

"अभी वक्त है," मित्या ने कहा। "मै आपसे कुछ वात कहना चाहता हू।"

"किस चीज के वारे मे?"

"अगर आप मेरी मा को खत लिखें, तो उसे यह न बतायें कि मै ऊचाई पर काम करता हू।"

"क्यो?"

"वस नही ही करे, यही ठीक होगा," उसने उदासी के साथ कहा। "आप कुछ भी लिख दे, तो आपके लिए क्या फर्क पडता है? मेरी मा का तो कोई दोप नही है।"

"तुम क्या चाहते हो, मित्या, यह मेरी समझ मे नही आया।"

"इसमे समझने की बात क्या है? लड़ाई के जमाने मे मेरी मा को बड़े दुर्दिन देखने पडे। तब से वह अच्छी तरह सो भी नही सकी। अगर वह यह सुनेगी कि मै इतनी ऊंचाई पर काम करता हू, तो वह बिल्कुल ही नही सो पायेगी। उसके दिमाग में तमाम ऊलजलूल ख्याल चक्कर काटने लगेगे।"

"तुम्हारे पिता नही है?" नीना ने नरमाई से पूछा।

"नही। मा को तीन बच्चो और खुद अपनी देख-भाल करनी पडती है। और वह स्वस्थ भी नही है, अब वह ज्यादा दिन काम-काज नही कर पायेगी। यह मेरे परिवार की तस्वीर है।" मित्या ने अपने थैले से एक तस्वीर निकाली, जिसके किनारे कट-फट गये थे। "यह मेरी मा है—वह सामूहिक खेत में अनाज की छटाई करती है। यह ल्युस्का है और वह वास्का है और यह सब से छोटी अल्योन्का है।" बच्चो के शरीर सूखे-से थे और इसीलिए वे सभी एक जैसे लग रहे थे।

"मै जितना भी भेज पाता हू, उन्हे भेज देता हूँ—अपने लिए, बस, खाने और सिनेमा भर के लिए पैसे रख लेता हू। कपडो के लिए कुछ नही रखता—अभी इसकी गुजाइश ही नही

है। अगली बार जब कीमतो मे कमी होगी, तब मै अपने कपडो के लिए कुछ बचाकर रखूंगा।

"मै तुम्हारी मा को कुछ भी नही लिखूगी, मित्या," नीना ने कहा। "मै तो हसी कर रही थी।"

"यह खूब है। और आपको मेरे बारे मे चिन्ता करने की जरूरत नही है। अगर कोई व्यक्ति जमीन पर दृढता-पूर्वक चल सकता है, तो आप यकीन रखिए कि जब वह ऊपर हवा मे काम करेगा, तब भी लडखडायगा नही।"

और वह चला गया। नीना ग्लास के फूलो पर आखे गडाये हुए मेज के सामने बैठी रही और मित्या के भाई और बहिनो के बारे में सोचती रही, जो शायद मित्या की ही तरह लाल-सिर वाले होगे, उसे मित्या की मा का भी ख्याल आया, जिसका पति युद्ध ने छीन लिया, और हर तनखा के दिन मित्या के पोस्ट आफिस जाने तथा मनी-आर्डर का फार्म भरने का चित्र भी नीना देखने लगी।

"और तीन सौ साइनबोर्ड, कब बनकर तैयार होगे?" उसने अखापकिन से यह सवाल इतने अकस्मात पूछा कि वह चौंक गया।

"जल्दी ही। जैसे ही कुछ टीन और मिला।"

"सुनो, कामरेड अखापकिन, यह इमारत किसके लिए बन रही है, यह जानते हो?" उसने फिर पूछा और बड़ी कठिनाई से अपना गुस्सा रोक पायी।

"मास्को सोवियत के लिए।"

"जनता के लिए, मास्को सोवियत के लिए नही। क्या तुम्हे आम लोगो से प्रेम है?"

"यह आदमी-आदमी की बात है। क्या तुम यही आशा करती हो कि मै खारकोव कारखाने के डायरेक्टर को भी प्यार करू, जो हमारे लिए नम्बर ९२ नही भेजता है?"

"मै किसी खास आदमी की बात नही कर रही हू। मै सम्पूर्ण जनता की बात—सारी मानवता की चिन्ता की बात कह रही हू—यह कि हम सब को, तुम को और मुझको और हर व्यक्ति को, जनता की भलाई की बात सोचना चाहिए।"

"मुझ पर चिल्लाओ मत।"

"मै चिल्ला नही रही हू। लेकिन वे साइनबोर्ड कब तैयार होगे"?

"मैने बताया कि जब हमे टीन मिल जायगा।"

"खैर, ठीक है। यही बात मै प्रधान इजीनियर को बता दूगी।"

इसी समय, टेलीफोन की घटी वज उठी और प्रधान इजीनियर ने नीना को अपने दफतर वुलाया।

वरामदा पार कर वह तेजी के साथ प्रधान इजी-नियर के दफ्तर की तरफ चली और निश्चय करती जाती थी कि मित्या और उसकी मा के वारे में, साइनवोर्ड तैयार करने के मामले में सप्लाई विभाग की देरी के बारे में और खुद अपने काम के विपय में अपने असतोप के बारे मे, प्रधान इजीनियर से सव कुछ कह देंगी।

प्रधान इजीनियर किसी उधेड-वुन मे उलझे हुए थे। खोये-खोये ढग से, उन्हो ने नीना से वैठने के लिए कहा और एक पत्र पढते हुए उंगलियो के वीच में रखकर रवर की मुहर को घुमाते जा रहे थे।

"मुझे पता लगा कि तुमने हमारे एक और कारीगर को काम से वैठा दिया है," उस ने उस पत्र का पढना समाप्त करके कहा। "नीना वासिलीयेवना, एक चीज तुम्हे नही भूलना चाहिए· अगर सुरक्षा-व्यवस्थापिका इजीनियर अपना काम ठीक से करती है, तो उससे मजदूरो की उत्पादन-शक्ति में वृद्धि होनी चाहिए। वृद्धि," उन्हो ने यह शब्द इस तरह दुहराया, मानो रवर की मुहर को निचोड कर उसे निकाल रहे हो।

"मेरी राय मे, उन्हे गिरने देने के बजाय, काम से बैठा देना ज्यादा अच्छा है," नीना ने उत्तेजित होकर कहा। "जहा तक उत्पादन-शक्ति का प्रश्न है—आप, सचमुच, ठीक ही कहते है, लेकिन अभी तक किसी ने मुझे सहायता नही दी है। आपने भी नही। उन साइनबोर्डो के बारे मे और सभी कारीगरो को सुरक्षा नियम समझाने के लिए उनकी सभा करने के विषय मे, मैने आप से कितनी बार कहा है? और इसके अलावा ।"

"और इसके अलावा?" उन्हो ने ध्यानपूर्वक नीना के चेहरे का अध्ययन करते हुए पूछा।

नीना की आखे भर आयी थी और वह मुह फेर कर खडी हो गयी। प्रधान इजीनियर उठे और उसके पास गये।

"काम मुश्किल मालूम होता है?" उन्हो ने पूछा।

नीना उनकी तरफ पीठ दिये खड़ी रही और कोई जवाब नही दिया।

"मेरे लिये भी यह सब आसान नही है, नीना वासिलीयेव्ना," उन्हों ने कहा। "मै अभी यह हिसाब लगा रहा था कि इस्पात के ढाँचे का निर्माण कोई संतोषजनक नही है। फिलहाल हम पूरे एक सप्ताह पीछे है। मैने नि-

मनि-विभाग के अध्यक्ष से कुछ कारीगर वढाने की प्रार्थना की थी और जवाव मे यह पत्र आया है। कोरा जवाव। और एक तुम हो कि हर रोज आदमियो को काम से वैठा देती हो।"

"मै आयदा ऐसा नही करूंगी," नीना ने कहा।

"लेकिन मेरा मतलव यह नही है। तुम्हे अपना काम ढीला नही करना है। एक वात और अगर मै तुम्हारी जगह होता, तो उन गर्डरो के ऊपर न चलता।"

"आप खुद भी तो ऐसा करते है।"

"मुझे भी नही करना चाहिए। अगली वार, यदि तुम मुझे गर्डरो पर चढते पकड लो, तो मेरे पीछे पडकर भगा देना," उन्हो ने कहा और सख्ती के साथ ये शव्द जोड दिये, "लेकिन मै तुम्हे भी मना कर रहा हू।"

नीना ने सिर हिलाया और आगे एक शव्द भी कहे बिना वह दफ्तर से वाहर चली गयी।

* * *

हाल के वर्षो में, मास्को मे ऊंची-ऊंची इमारतो के निर्माण का दृश्य शहर के सवसे अधिक आकर्षक दृश्यो मे से एक रहा है। सुवह, दोपहर और रात को, उन्हे शहर के किसी भी कोने से देखा जा सकता है। वहुत रात गये

जब काम की गुजन शान्त हो जाती है, दानवी क्रेने आराम करने लगती है और जब मोटरो के भौंपुओ के हूंको के बीच इमारत का विराट ढाँचा ऊघता सा महसूस होता है, तब अगर किसी की नजर उसकी तरफ पड जाय, तो कही ८ वी या ९ वी मजिल की खिडकी मे से भाकते हुए एक मात्र बिजली के लट्टू के प्रकाश से अवश्य उसकी कल्पना-शक्तिया जागृत हो जायँगी। खाली खिडकियो के साथ अवाक् खडी हुई और सिर पर इस्पात के पिजर का बोझ सभाले हुए, वे ईंटों की नंगी-नगी दीवारे अभी ढाँचे की आधी ऊचाई तक ही पहुच सकी हे, लेकिन वही, एक और एक मात्र खिडकी के काच लगे पट से बहुत रात बीत जाने पर भी एक रोशनी भाकती दिखायी देती है। इसका रहस्य क्या हो सकता है? क्या कोई फोरमैन घर जाने से पहले इसे बुझाना भूल गया है या कोई कारीगर अपने काम को शीघ्र समाप्त करने के लिए ओवर टाइम काम कर रहा है या कुछ अधीर कारीगर किसी एक कमरे को अन्दरूनी रूप मे पूरा करके यह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहे है कि जब पूरी इमारत बन जायेगी तो कैसी लगेगी?

एक शाम ऐसी ही रोशनी तीसरी मजिल की खिड-की मे जल रही थी, जहा नीना क्रावत्सोवा काम कर रही

थी। जव होटल वनकर खत्म हो जायगा तो यह कमरा दो-कमरे वाले निवास-गृह का भाग होगा, फिलहाल को-म्सोमोल सगठन ने इसे अपने लिए क्लब-रूम वना लिया है। निर्माण कर्त्ताओ की आदत होती है कि जब इमारत वन रही होती है, तब वे उसके कमरो की अपनी आव-श्यकताओ के अनुरूप वना लेते है और इसलिए यदि किसी कमरे के वाहर आपको नलो और पैकिग के डिब्बो का ढेर मिले और उस पर लिखा हो "भोजनालय" या "यूनिट न० ३ का दफ्तर", तो कोई आश्चर्य की वात नही। और आगे चलकर जब नीना के होटल मे कोई यात्री आकर ठहरेगा तो उसके लिये यह कल्पना भी करना कठिन होगा कि उसके कमरे मे कभी लारी ड्राइवर दूध और लेमन पीते थे, या फोरमैन अपने कारीगरो का सम्मेलन करते थे।

जिस शाम का जिक्र है, कोम्सोमोल के सदस्य अपने समाजवादी प्रतियोगिता के फैसले के वारे मे वात करने जमा हुए थे। नीना, मीटिग शुरू होने के दस मिनट पहले ही आ पहुची और एक कोने में वैठ गयी। कमरे में अभी और कोई नही था। अध्यक्ष मण्डल की मेज के लिए न्यूरा एक मेजपोश ले आयी, उसने एक ग्लास और काच

की सुराही रख दी और बाहर चली गयी। दो और तीन के दलो में वे लोग आ पहुचे। लडके अलग और लडकिया अलग—सभी शोर-गुल और आमोद-प्रमोद मे मस्त थे। लेकिन नीना पर नजर पडते ही, उन्होने अपनी आवाजे धीमी कर दी, उसको दूर से ही सलाम कर लिया और यथा-सम्भव उससे दूर जाकर बैठ गये। घायल नीना को अपने विद्यार्थी जीवन के दिन याद आ गये, जब वह भी शोरगुल मचाने वाली लडकियो मे आगे रहती थी, सभी उसके मित्र थे और सभी लोग उसके करीब बैठने के लिए उसकी चिरौरी किया करते थे।

अर्सेन्तियेव भी दरवाजे पर प्रगट हुआ, उसने कमरे में चारो ओर नजर डाली, लापरवाही से नीना की तरफ अभिवादन के लिए सिर हिलाया और अगली पात में जाकर बैठ गया। और यद्यपि कमरा भर गया था, फिर भी नीना की दायी और बायी तरफ की सीटे खाली ही रही। अत मे लीदा रोदिओनोवा भीड चीरती हुई आयी और उसके पास बैठ गयी। "हफ्ते भर के अन्दर यह भी मुझसे कतराने लगेगी," नीना ने दुखित भाव से सोचा, "दूसरे लोग इसे भी भडका देगे।"

"कारीगरो पर देख रेख करनेवाली, क्या आप ही

है?" तग बेंच पर जरा आराम से बैठते हुए लीदा ने पूछा।

"हा, क्यो?"

"आपका असली काम क्या है?"

"मेरा असली काम? क्या मतलब?"

"हुह, कैसे समझाऊं—आप करती क्या है? कक्रीट मिलाती है या ईटे बिछाती है?"

"मै सिर्फ दुर्घटनाओ की रोकथाम को देखती हूं, और कुछ नही करती," नीना ने कुछ सकुचा कर कहा। "मेरा काम यह देखना है कि किसी को चोट न लगने पाये।"

"यह काम भी क्या खूब है" लीदा ने रहम के स्वर मे कहा और फिर चुप हो गयी।

कोम्सोमोल की मत्राणी, जो यूक्रेन की लडकी है (और जो डिस्पेचर के पद पर काम करती है और लाउडस्पीकर पर हमेशा किसी न किसी को "पुकारती" रहती है), मेज के पीछे जा बैठी और सभा शुरू हो गयी। थोडी ही देर में अध्यक्ष मण्डल का चुनाव हो गया और दो नवयुवक मेज के पीछे सीट लेने दौड पडे—दोनो ही इस बात के लिए उत्सुक थे कि उनमे से एक सबसे पहले

अध्यक्ष पद ग्रहण कर ले ताकि कार्रवाई लिखने का काम दूसरे को करना पडे। उनमे से, जिस एक को, अध्यक्ष पद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया, उसने उस यूक्रेनी लडकी से घुस-फुस बाते की और फिर घोषित किया कि आज की सभा मे कुछ मेहमान भी उपस्थित है—अपनी इमारत से कुछ दूर पर एक दूसरी ऊची इमारत के कारीगर लोग। वे लोग यहा के लोगो के साथ समाजवादी होड के समझौते पर हस्ताक्षर करने आये थे। हर व्यक्ति खडा हो गया और ताली बजाने लगा, और उधर एक लजायी हुई लडकी और दो नौजवान सभा के सामने आ खडे हुए। दोनो युवक उस लडकी के अगल-बगल खडे हो गये और उस लडकी ने समझौते का मसौदा पढ़ना शुरू कर दिया, जिसमे काम की किस्म और पेश किये गये काम-सुधार सम्बन्धी सुझावो जैसी अनेक बाते थी। अंत मे काम को निश्चित कोटे से २० से ३० फीसदी तक अधिक पूरा करने का सकल्प किया गया था।

"कोई सवाल?" अध्यक्ष ने पूछा।

"मेरा एक सवाल है," मित्या ने कहा। "निश्चित चुनाई से एक फुट अधिक चुनाई करने के लिए आपको क्या मिलता है?"

उस लडकी ने वता दिया।

"हमें भी यही मिलता है," मित्या ने कुछ निराश भाव से कहा।

"और कोई सवाल?" अध्यक्ष ने पूछा। "लेकिन सवाल मतलब का हो।"

और कोई सवाल नही उठा, इसलिए वहस शुरू हुई।

सबसे पहले अर्सेन्तियेव बोला। उसने कहा कि यह समझौता स्वीकार कर लिया जाना चाहिए—खास तौर से इसलिए कि यहा के कारीगरो ने भी काम-सुधार सम्वन्धी उतने ही सुझाव पेश किये है, जितने कि इस समझौते मे लिखे है। मेहमानो पर जरा रोव जमाने के लिए, उसने सुझाव दिया कि कोटे को ४० फीसदी अधिक पूरा किया जाय। नीना को छोडकर, वाकी सभी ने इस पर हर्ष ध्वनि की।

"मुझे कामरेड अर्सेन्तियेव से एक सवाल पूछना है," जव शान्ति हो गयी, तो नीना ने अध्यक्ष से कहा। हर आदमी उसकी तरफ देखने के लिए मुडा।

"आपने ४० फी सदी ही क्यो पसन्द किया, मान लीजिये, कहे कि ६० फी सदी हो, तो क्यो नही?"

"जैसे कि हम लोग ६० फीसदी से अधिक काम

पूरा कर सकते है।" कोम्सोमोल के सदस्य चिल्लाये। "एक आंकडा बोल देना आसान है, काम करना दूसरी ही बात है।"

"ठीक है," नीना ने कहा, "तो इसे १० फी सदी क्यो न तै किया जाय?"

चकित श्रोताओ ने कुछ न कहा।

नीना कहती ही गयी, "हम बड़े शानदार वायदे करते है, लेकिन हम यह भूल जाते है कि योजना के अनुसार आखिरी गर्डर अपनी जगह पर आज से १९ वे दिन रखा जाना है। इसके पहले कि हम ४० फी सदी अधिक काम करने का वायदा करें, हमे यह हिसाब लगा लेना चाहिए कि यह काफी है या नही। सबसे महत्व की बात तो यह है कि हम निश्चित समय के अन्दर काम पूरा कर दें।"

"और मान लो कि वह काफी न हो?" अर्सेन्तियेव ने बडी ऐंठ के साथ कहा।

"अगर काफी न होगा तो हमे और भी मेहनत से काम करना होगा। आप आडम्बरपूर्वक यह घोषणा करते है कि आप अपने कोटे से ४० फी सदी अधिक काम करने के लिए राजी है। ४० फी सदी आप इस लिए चुनते है कि आप को यह विश्वास है कि इतना काम आप कर

सकेगे। लेकिन इन जिम्मेदारियो को ओढने में मुख्य तत्व यह नही है कि हम यह दिखाना चाहते है कि हम कितने वीर है, वल्कि यह है कि निर्माण-कार्य हम वक्त पर खत्म कर दे।"

"आपकी वात गलत है," एक लडकी जो क्रेन चलाती है, चिल्ला उठी। "यह हमारे प्रधानो का काम है कि वे हमें काफी कारीगर दे। तभी हम वक्त पर काम खत्म कर सकेगे।"

"हमारे यहा काफी कारीगर है," यूक्रेनी लडकी ने उठकर कहा। "अगर शुरू से ही हर व्यक्ति ने अपनी शक्ति भर सख्ती से काम किया होता तो आज हमें ४० फी सदी अधिक काम करने का सकल्प ही न करना पडता। अगर काम को वक्त से पूरा करने के लिए हमें १०० फी सदी अधिक काम करने का प्रण करना पडे, तो हमें वह भी करना पडेगा—यही मुख्य वात है। तुम्हारा क्या ख्याल है, एन्द्री अर्सेन्तियेव?"

"इस मामले पर हमें गौर करना पडेगा।"

"तुम तो कूटनीतिज्ञ की तरह वात करते हो।"

"मै अखबार क्यो खरीदता हू, आप का क्या ख्याल है? क्या पार्सले वाधने के लिए?"

"अगर हम आप का प्रस्ताव स्वीकार कर ले, तो शायद हम अपना प्रण तो पूरा कर लेगे और फिर भी

इमारत शायद वक्त से पूरी न कर पाये," नीना ने बात काट कर कहा, "यह कोरी लम्बी चौडी बात है, कामरेड अर्सेन्तियेव।"

"कोरी बात?" अर्सेन्तियेव उठ बैठा और मेज तक जा पहुचा। "तो मुझे थोडी कोरी बाते और कर लेने दी जायँ। अगर आप लोग पिछले दो हफ्तो के तनखा-रजिस्टर देखे, तो पायेगे कि कारीगरो की कमाई गिर रही है। क्या कारण है? अनेक कारण है, लेकिन मुख्य कारण जो मुझे मालूम होता है, वह यह है कि कुछ लोग, इधर कुछ दिनो से, हमारी बडी चिन्ता करने लगे है, उन्हे हमारे स्वास्थ्य का बडा ख्याल है, मानो कि हम सेनेटोरियम में रहते है।"

किसी ने एक शब्द नही कहा। नीना कुछ पीली पड गयी थी और दीवार का सहारा ले रही थी।

"अगर हम इसका हिसाब लगायें कि इस चिन्ता के कारण हमे कितनी बार नीचे उतर कर जाना पडता है और किसी मूर्खतापूर्ण काम के लिये सोलह मजिलो की सीढियो से नीचे उतरने और फिर वापिस चढने मे कितना समय बरबाद करना पडता है, तो हमें पता चलेगा कि इस तरह काम के कई दिन खत्म हो जाते है। मेरा

कहना है अगर किसी व्यक्ति मे सेनेटोरियम मे काम करने की प्रतिभा है, तो उसे वही काम करना चाहिए। तब वह इस बात की देखभाल मे समय लगा सकता है कि कोई छप्पर पर न चढ पाये। लेकिन यहा खडे होना और वक्त पर योजना पूरी करने की दलीले देना, जब कि वही व्यक्ति...ओह, इससे क्या लाभ है?" अर्सेन्तियेव बैठ गया और अपनी जगह से इतना और बोला, "मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका।"

"नुकसानदेह काम है," किसी को यह साफ साफ कहते हुए नीना ने सुना।

श्रोताओ मे एक करकर स्वर गूँज कर रह गया। मित्या ने बोलने की इजाजत माँगी।

"मुझे दूसरी इमारत से जब यहाँ भेजा गया," उसने कहना शुरू किया, "तो मै इसी कमरे मे काम करता था—उन कडियो की मै ने वेल्डिग की थी," उसने छत की तरफ इशारा किया और हर एक की नजरे ऊपर उठ गयी। "खैर, जब मै काम कर रहा था, तो जूतो पर रबर का जूता चढाये हुए एक बौना सा आदमी आया और मुझसे बोला, तुम्हारा फोरमैन कौन है? जाहिर है, मैने बता दिया। उसने अपने पैड पर कुछ

लिख लिया और चला गया। तीन घंटे बाद मुझे एक दूसरी मंज़िल पर काम करने भेज दिया गया। यह तबकी बात थी जब काम सलीके से चलना शुरू नही हुआ था, तब तो एक आदमी को दिन भर मे पाच अलग-अलग जगह भेजा जा सकता था। तो मै उस मजिल पर, जब काम कर रहा था, तभी रबर का जूता चढाये हुए वही सज्जन फिर आये। उन्हो ने मेरी तरफ देखा और कहा: तुम्हारा फोरमैन कौन है? जाहिर है, मैने बता दिया। और फिर तीसरी बार, जब कि दिन खत्म हो रहा था और मै नीचे वेल्डिग कर रहा था, तब फिर वही घटना हुई: रबर का जूता चढाये हुए वही सज्जन आये और पूछने लगे: 'तुम्हारा फोरमैन कौन है?'"

"सक्षेप में कहो," अध्यक्ष ने कहा, "बात क्यो लम्बी-चौडी बनाते हो, जब कि तुम यह कहना चाहते हो कि उसने तीसरी बार भी नही पहचाना?"

"आप विश्वास करे या न करे, आपकी मर्जी। जब दिन खत्म हुआ तो फोरमैन इवान पावलोविच मेरे पास आये और बोले, 'देखो जी, सुरक्षा-नियमो को भग करने की तीन शिकायते मेरे खिलाफ दर्ज हुई है और वे सभी तुम वेल्डरो की वजह से। तुममें से तीन व्यक्ति

* * *

एन्द्री और मित्या, इस इमारत मे काम करने वाले अन्य युवक-युवतियों की भाति, मास्को से दस या बारह मील दूर, एक होस्टल में रहते थे। हम शाम को सात और दस बजे के बीच मे ये युवक और युंवातिया, किएव स्टेशन पर विद्युत ट्रेन के किसी लम्बे-चौडे डिब्बे में घुस जाते थे। अन्य यात्रियो के क्रोधपूर्ण विरोध की उपेक्षा करते हुए, वे लोग धक्का-मुक्की के साथ खिडकियो के पास पहुंच जाते, यात्रियो का आना-जाना बन्द कर देते या बिना किसी लिहाज के, ऐसी सीटो पर बैठ जाते, जिन्हे दूसरे यात्रियो ने अपने देर से आने वाले मित्रो के लिए सुरक्षित रख छोडा होता। लडकियो के गिरोह जब जम जाते, तो वे या तो अपनी बुनाई का काम निकाल लेती, राज की बाते फुसफुसाती या घर से आये पत्र एक-दूसरे को सुनाती और आधा रास्ता तै करते-करते वे एक दूसरे के कधो पर सिर टिका कर ऊँघने लगती। लडके अट्टहास करते और लडकियो पर तीखी छीटाकशी करते, लेकिन जब आइस-क्रीम बेचने वाले की पुकार उन्हे सुनायी देती "कीमत सिर्फ सवा रूबल, और उसका दूना मजा लो। मीठी जैसे शहद हो", तो

जा बैठा, जहाँ अपनी आँखों पर टोपी रखे, एन्द्री ऊँघ रहा था। एन्द्री के सामने न्यूरा बैठी हुई थी और रूमाल पर कढाई कर रही थी। मित्या ने न्यूरा को इसी डिब्बे में, और इसी सीट पर और यही रूमाल काढते हुए अकसर देखा था।

"क्यो, क्या १९५४ तक तुम इसे खत्म कर लोगी?" उसके बगल मे बैठते हुए मित्या ने पूछा।

"अगर तुम जैसे निकम्मे लोग मुझे कढाई के फदे गिनना न भुला देगे," उसने जवाब दिया।

"लो यह सुनो। जरा दो बोल भी बरदाश्त नही कर सकती। दो शब्द कहे, तो मानो मैने इसका डोरा पकड कर तोड दिया है और यह फदे गिनना भूल गयी है।"

"आठ...नौ. .दस..." न्यूरा ने मर्मर स्वर मे गिना।

"परसो मैने बडे भोर से ही, वेल्डिग का काम शुरू कर दिया था," मित्या ने कहा। "मैने पेटो कसी। उसके छल्ले मे जजीर लगाई और वह जजीर मेरे पैरो पर इस तरह लटक आयी, मानो तलवार लटकी हो। तभी मैने किसी की आवाज सुनी: कामरेड याकोवलेव, मै पीछे

घूमा और क्या देखता हू कि वही नन्ही-मुन्नी सुरक्षा-टेकनीक जी खडी है — सिर से पैर तक नयी पोशाक से सजी हुई, मानो तस्वीर खिचाने खडी है। मैंने सोचा कि अब यह अपना सुरक्षा सम्बन्धी भाषण देना शुरू करेगी और वह ठीक ही निकला। उसने कहा, क्षमा कीजिये, कामरेड याकोवलेव, क्या आप एक मिनट के लिए यहाँ तशरीफ लाने की कृपा करेंगे? वह मुझसे इतनी दूर खडी हुई थी, जितनी दूर यहा से वह दरवाजा है। मैंने सोचा कि, 'यह मेरे रगीन चश्मे की जाच करना चाहती है'। सौभाग्य से मेरी जेब में दो चश्मे थे — एक मेरा और एक और एक एन्द्री का। उस को बनाने का यह मौका हाथ आया देखकर, मै जरा भी न रुक सका — फौरन दौड पडा, लेकिन मेरा पैर उस मनहूस जंजीर मे उलझ गया और मै साष्टाग उसके चरणो पर गिर पडा। खैर, मै उठ बैठा और उसने कहा यह कैसे हुआ कामरेड याकोवलेव? मै ने कहा, 'मेरी टॉगे छोटी है। बचपन से ही छोटी है। मेरा पेट तो साधारण गति से बढा और मेरी बाँहें भी ठीक ही बढी, लेकिन मेरे पैर नही बढ सके। मेरा ख्याल है, इसका कारण यह था कि मै हमेशा झुक कर चलता था।'"

"आठ...नौ...दस..." न्यूरा ने फिर मर्मर स्वर में गिना।

"लेकिन सुरक्षा-टेक्नीक बोली, यह बात नही है। कारण यह है कि आपने छल्ले में जंजीर उस तरह नही बाँधी, जैसे कि सुरक्षा नियमो मे लिखा है। और फिर वह मुझे उपदेश देने लगी कि अगर मै कही ऊँचाई पर होता और गर्डर पर चलता और कही मेरा पैर इस जजीर मे फस गया होता तो जमीन पर आ गिरता...वह सख्त बनने का प्रयत्न करती हुई बराबर भाषन देती रही और रत्ती भर काम बिना, समय भी बीतता गया जब तक मै सह सका, तब तक मै उसका भाषण सुनता रहा—मैने सोचा कि यह तो रुकेगी ही नही—इसलिए मैने कहा: हमारे ब्रिगेड के पीछे आप क्यो पड़ी है? अगर आप चाहे, तो हम सब यह लिख कर दे सकते है कि अगर हम मर जायँ, तो उसके लिए सुरक्षा-टेक्नीक जी जरा भी जिम्मेदार नही है। फिर क्या वह चीखती-चिल्लाती। उसने कहा, कामरेड याकोवलेव, लेकिन मैने जजीर को छल्ले में घुसेडी और मचान पर बन्दर की तरह छलाँग मार कर चढ गया... लेकिन मै तुमसे यह बात क्यो कह रहा हूँ? ओह, हाँ,

तुम अभी शिकायत कर रही थी कि मेरी बातो से तुम अपनी कढाई के फदे भूल जाती हो, लेकिन हमारी हालत भी तो देखो—वह अपने भाषणो से हमे अपना कोटा पूरा नही करने देती और बेकार खडा रखती है, मगर फिर भी हम शिकायत नही करते। यही तो कहना चाहता था।"

"तुम क्या नीना वासिलीयेव्ना का जिक्र कर रहे हो?" श्यूरा ने पूछा।

"हाँ, वही तो है। मै जानता हू, अभी वह छोटी है और उसे काम का तजुर्बा नही है। वैसे हम लोगो से उसकी अच्छी निभ रही है। जाहिर है कि हर एक को अपनी तनखा कमानी पडती है—कोई निर्माण-कार्य करके, कोई उसे गिरा कर और कोई सिर्फ दूसरो के काम में बाधक बन कर। हर आदमी अपना कर्तव्य कर रहा है। लेकिन अपनी योजना पूरी न कर पाने के अलावा, हम लोग कमा भी तो नही पा रहे है। पिछली तनखा के दिन मुझे सिर्फ तीन सौ तिरसठ रूबल मिले। और यह सब उसकी बदौलत। आखिर हम लोग क्या करे?"

"तुम उसे प्लेग समझ कर उससे दूर भागते हो लेकिन तुम्हे चाहिए तो यह कि उससे दोस्ती कर लो।

उसके सुरक्षा-भाषणो का शीघ्र अंत करने का यही रास्ता है।"

"तुम मजाक कर रही हो?"

"नही, बिल्कुल नही। तुम उसे सिनेमा या नृत्य के लिए आमन्त्रित क्यो नही करते जैसा कि शरीफ लोग करते है? तुम लोगो मे कोई अक्ल नही है, मै तो यही कहूँगी।"

"मै समझता था कि तुम कोई अच्छी सलाह दोगी," मित्या ने रुखाई से कहा। "मानो कि वह मेरे साथ चाहे जहाँ चली जायगी। पहली बात यह कि मेरा सिर लाल-लाल है। दूसरे, मेरे पैर वडे छोटे है। वह मुझसे लम्बी है। और मान लो कि वह मेरे साथ तागो नृत्य नाचना चाहे-तो क्या मै नाच सकूगा?"

"कोई जरूरी है कि तागो ही हो," न्यूरा ने कहा। "तुम उससे गप तो लडा सकते हो। जहाँ जरूरत नही होती, वहाँ तो तुम इतनी बाते करते हो कि सुननेवाले के कान पक जाय।"

"उससे बात चीत करने से भी कोई फल नही निकलेगा। वह ऐसे शब्द इस्तेमाल करती है, जिन्हे दूध-मक्खन खाये विना तो कोई समझ नही सकता। आज ही

की सभा में उसने क्या कह डाला था? आडम्बरपूर्वक। पता है इसका क्या मतल होता है?"

"आडम्बरपूर्ण—यानी कि जब कोई बेवकूफ अपने को अक्लमदो का दादा समझ कर बात करता है," एन्द्री अचानक बोल उठा।

"आदमी हो तो तुम, जिसे उससे दोस्ती करनी चाहिए," मित्या ने यकायक प्रेरित होकर कहा। "तुम सही आदमी हो, एन्द्री सेर्गेयेविच। तुम लम्बे भी हो और तमाम शब्द जानते हो।"

"यह बचकानापन अपने पास रखो। शुक्रिया।"

"ईमान से एन्द्री। सोचो तो तुम सारे ब्रिगेड की कितनी बडी सेवा कर सकोगे।"

"जाने भी दो," एन्द्री ने अपनी आँखो के ऊपर टोपी खीचते हुए बात खत्म कर दी।

लेकिन कुछ दिनो बाद, जब निर्माण-स्थल पर काम करने वाले युवक-युवतियाँ, सामूहिक रूप से सर्कस देखने गये, तो एन्द्री को यह वार्तालाप फिर याद आ गया।

नीना और एन्द्री की सीटें अगल-बगल निकली। जाहिर है, टिकट बाटने का काम मित्या ने किया था।

एन्द्री ने सोचा, "ठहरो बच्चू, कल तुम्हारी अकल ठिकाने लगा दूँगा।"

खेल शुरू हुआ। मोटे-चिकने घोडो ने घेरे के अन्दर दौड शुरू की। उन्होने अपने खुरों से रेशम के ढके घेरे पर हलकी सी चोट की और पहली पक्ति मे बैठे दर्शको पर तमाम धूल उडा दी। वाद्य-मण्डली के निर्देशक ने डडा झुलाते हुए अपने कधो के ऊपर नजर उठा कर कनखी से झाँका और खाली ताल पडने पर फ़्रांसीसी तुरही बजाने वालो ने अपने बाजे को ऊपर उठा दिया, ताकि उसमे से इकट्ठी थूक निकल जाय।

नीना की तरफ से आती हुई हल्की सी सुगध का अहसास तो एन्द्री को था। उसने बेचैनी के साथ, अपनी आखें वाद्य-मण्डली• पर से हटा कर परिचारकों पर गडा दी और फिर लाल-सिरवाले मित्या की तरफ देखा जो घेरे के दूसरी तरफ दूसरी पक्ति में बैठा था। लेकिन उससे एक शब्द भी नही बोला गया।

"तुम इस कदर उदासी में डूबे क्यो बैठे हो?" नोना ने पूछा।

"उदासी क्यो न हो? हम अपनी योजना पूरी नही कर पा रहे है। यह ऐसी बात है जो सारा जोश खत्म

कर देती है।" उसने चिढकर कहा और खामोश हो गया।

दुमदार कोट पहने एक आदमी ने घेरे में प्रवेश किया और कहा "इटरवल।" नीना फौरन उठी और वाहर चली गयी। "वह शायद घर जा रही है," एन्द्री ने सोचा। "मुझे इतनी वदतमीजी नही करनी चाहिए थी।" पाच मिनट वाद मित्या उसके पास आया।

"कहो, कैसी गुजर रही है," उसने वडी शान से कहा।

"वदस्तूर," एन्द्री ने जवाव दिया, जिसे सुनकर मित्या कुछ हसा और चला गया। पहली और दूसरी घटी वजी, मगर नीना वापिस नही आयी। जव तीसरी घटी वजी तव यकायक एक सफेद पैकेट लिये हुए नीना ने प्रवेश किया।

"हम लोग इसी पैकेट में से निकाल-निकाल कर खायें-अगर तुम्हे कोई ऐतराज न हो तो," उसने अपनी जगह पर बैठते हुए मुसकुरा कर कहा।

इस पैकेट मे मिठाई थी। एन्द्री ने कुछ मिठाइयाँ ले ली—यह दिखाने के लिए कि वह अव नाराज नही है।

"तुम भी होस्टल में रहते हो?" नीना ने पूछा।

"हाँ।"

"रात्रि-पाठशाला जाते हो?"

"पत्र-व्यवहार स्कूल मे नाम लिखा रखा है। मै इस्टीट्यूत के दूसरे वर्ष मे हूँ। शीघ्र ही हम सामग्री-तत्व का अध्ययन करेगे—कहते है यह सबसे कठिन विषय है। दूसरे विषय तो बडे आसान है।"

"जब मै इस्टीट्यूट मे थी, तब विद्यार्थी यह कहा करते थे कि जिस किसी ने सामग्री-तत्व मे पास कर लिया, बस, वह शादी के योग्य हो गया।" और, हालांकि नीना के शब्दो का कोई गहरा मतलब नही था, फिर भी एन्द्री ने देखा कि वह परेशान हो उठी है। दोनों की ही समझ मे यह नही आया कि अब क्या कहा जाय। इसलिए वे खेल के अत तक चुपचाप बैठे रहे—सिर्फ एक वार, जब जहाजी मल्लाहो के वेष मे कुछ लोग कलईदार तार पर कलाबाजियाँ दिखा रहे थे, तब नीना ने कहा था.

"ताज्जुब है, इस रस्सी की परीक्षा, ये लोग कितनी बार लेते है।" इस टिप्पणी को सुनकर एन्द्री को नीना पर बडा तरस आया।

सर्कस के खत्म होते ही वे लोग बाहर निकल आये।

"क्या मै आपको घर तक पहुँचा दूँ?" एन्द्री ने पूछा।

उन्होने त्स्वेत्नोई मार्ग पर कदम बढाये। उसने जब नीना की बाँह गही, तो आश्चर्य में पड गया कि वह इतनी नाजुक और हलकी है—वह हैरान था कि उस दिन जब नीना सँकरे गर्डर पर चढ गयी थी, तो हवा उसे क्यो नही उडा ले गयी। एक शब्द बोले बिना वे सदोवाया मार्ग की तरफ़ मुड गये। तारो-विहीन आकाश शहर पर तना हुआ था। एक मत्रालय की इमारत की सभी खिडकियो मे रोशनी थी और उसके सामने चमकीली मोटरो की पाँत लगी थी। शोफरो ने कारो के दरवाजे खोल रखे थे, रेडियो चालू कर दिये थे और उन व्यक्तियो का इतजार कर रहे थे जो आधी रात तक या उसके बाद यहाँ काम करेगे। मायाकोव्स्की स्क्वायर से थोडी ही दूर पर एक गली मे नीना रहती थी। यहा पर गली के लैम्प जलाये नही गये थे, सिर्फ घरो की रोशनिया दिखायी दे रही थी और मकान के नम्बर धातु की पट्टियो पर खुदे थे।

"वह डिब्बा-सा क्या है?"

"गश्त करने वाली पुलिस के लिए टेलीफोन है,"

एन्द्री ने उत्तर दिया। "शनिवार को हमारे होस्टल मे कोई न कोई शौकिया तमाशा जरूर होता है। क्या आप कभी आयेगी?"

"हाँ," नीना ने कहा, "लेकिन उन लोगो को टेलीफ़ोनो की जरूरत क्यो होती है?"

एन्द्री को अहसास हो गया कि वे दोनो ही खामोशी के साथ अगल-बगल चलने के अटपटेपन को छिपाने के लिए बाते बना रहे है और नीना भी समझ गयी कि वह क्या महसूस कर रहा है और इस अहसास से उनकी परेशानी और अधिक बढ गयी।

नीना एक तिमँजिले मकान में रहती थी, जिसका पलस्तर जगह-जगह उखड गया था। पहली मँजिल में एक लाण्ड्री थी।

"तुम्हारी ट्रेन कब छूटती है?" नीना ने पूछा।

एन्द्री ने अपनी घडी देखी।

"करीब डेढ घटे बाद। रात के इस पहर में ट्रेने जरा देर-देर से छूटती है।"

"तो थोडी देर के लिए घर आओ न। स्टेशन पर बैठे क्या करेगे?"

"आ सकता हूँ?"

"यदि मैं निमन्त्रित करूँ, तो निश्चय ही तुम आ सकते हो," नीना ने बुजुर्गाना अदाज़ मे कहा।

उन्हो ने जिस कमरे मे प्रवेश किया, वह काँच के झाड-फानूस के प्रकाश से उज्ज्वल था और यह झाड-फानूस भोजन की गोल मेज के ऊपर लटका हुआ था। ताज़े मेज-पोश पर तीन तश्तरिया करीने से रखी हुई थी और होल्डरो पर छुरी-काटे भी रखे थे। इन सबका केन्द्र एक बडी तश्तरी थी, जिसमे सेब रखे हुए थे। छल्लो में नेपकिन लगे हुए थे।

"तुम क्या अकेली हो नीना?" दूसरे कमरे से आवाज आयी।

"नही, मा, मेरे साथ एक मित्र आये है।"

छोटे से कद की, सफेद बालो वाली महिला दरवाज़े पर प्रगट हुई, जो आँखो की कम रोशनी लेकर अपने मेहमान को खोजने लगी और उसे देख पाने से पहले ही उसके स्वागत में मुसकुराने लगी।

"मेरा नाम है इरीना मक्सिमोव्ना," उसने उल्लास-पूर्ण स्वर में कहा। "आप हमारे साथ चाय पीने के लिए ठीक ही मौके पर आये।"

उसके पीछे, नीना के पिता, वासिली याकोवलेविच

प्रगट हुए, जो काम से अभी ही घर वापिस लौटे थे। रेलवे-कर्मचारी की पोशाक पहने हुए वे लम्बे, सख्त और अडिग व्यक्ति मालूम होते थे उन्हो ने मेज पर बैठते ही, तश्तरी और छुरी-काँटों को कुहनी से खिसका कर मेज का सुघड सौंदर्य बिगाड़ दिया।

"क्या आप इसके साथ काम करते है?" उन्हो ने एन्द्री से पूछा।

"सख्त आदमी है," एन्द्री ने सोचा। "अगर इसे पता चल जाय कि उसकी बेटी क्या कर रही है, तो क्या उसे माफ कर देगा?" बाहरी तौर से एन्द्री ने कहा, "हाँ, मै इनके साथ काम करता हू, लेकिन बराबरी के साथ नही। यह हमारे ऊपर है।"

"यह कैसा काम कर रही है? क्या यह अपना रौब-दाब मनवा लेती है?" वासिली याकोवलेविच ने इस तरह पूछा, मानो नीना वहा है ही नही।

नीना ने एन्द्री की तरफ उत्सुकतापूर्वक देखा।

"हाँ, हाँ," एन्द्री ने जवाब दिया और एक नज़र नीना पर डाल कर उसे दिलासा दे दिया। "हम साइबेरियन लोग कहा करते है, इस तरह का पेड न झुकाया जा सकता है और न तोड़ा जा सकता है।"

"सौभाग्य है कि यह अपने बाप के नाम को कलंकित नही कर रही है," वासिली याकोवलेविच ने कहा।

" पढाई मे इसे हमेशा अच्छे नम्बर मिलते रहे है," बगल के कमरे से इरीना मक्सिमोव्ना की आवाज आयी।

"बहुत हुआ मा," नीना ने कहा और एन्द्री को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि पिता की आवाज जैसी सख्ती नीना की आवाज़ मे भी है। "पढाई-लिखाई और काम दो अलग-अलग चीजे है। आपने साइबेरिया क्यो छोडा, एन्द्री सेर्गेयेविच?"

"मै पढना चाहता था, लेकिन मेरी दादी है पुराने विचारो की। उसने नही पढने दिया। वह मुझे किताबे भी नही खरीदने देती थी। यदि कोई किताब खरीद भी लेता था, तो मै उस पर एक चिप्पी लगा देता था ताकि वह लाइब्रेरी की किताब मालूम हो। तब उसे कोई ऐतराज न होता था। लेकिन ज्यो ही उसे पता लग गया, उसने एक वेल्डिग की किताब छोड कर, बाकी सब जला दी। इसलिए हमारा झगडा हो गया। मै अपने कोट के अस्तर मे कुछ रुपया सिलाकर और रसोई से रोटी चुराकर स्टेशन भाग गया।"

"तुमने ठीक किया," अपने बड़े-बडे हाथों से सेब के दो टुकड़े करते हुए वासिली याकोवलेविच ने कहा।

"जब मै स्टेशन पहुचा, तो मास्को के लिए साधारण टिकट खत्म हो गये थे—सिर्फ पहले दर्जे के टिकट बचे थे। इसलिए मैंने अस्तर फाडा और एक टिकट के लिए सारा रुपया झौंक दिया।"

"तुम दृढ सकल्पी व्यक्ति हो," नीना ने कहा। "तुम्हे ऊचाई पर काम करना पसन्द होगा।"

"आदमी किस तरह का है, इसीसे यह तै होता है कि वह किस तरह का काम कर सकता है। तुम्हे अपने काम मे मुसीबते क्यो उठानी पड रही है? क्योकि तुम इस तरह के काम के लिए बनी ही नही हो।"

"तो इसे मुसीबत पड रही है, क्यो?" वासिली याकोवलेविच ने थोडा सा हसकर कहा।

"इनमें थोडी सी कमजोरिया है, जैसी कि सभी में होती है," एन्द्री ने झटपट बात सभाल ली, "लेकिन इनका काम हमारे काम से कठिन है। वह एक बहुत खास तरह का काम है। मसलन, अभी कुछ दिन पहले हमने यह सकल्प किया था कि हम योजना को वक्त से पूरा कर देंगे—हमें चिन्ता है तो योजना को पूरा करने की—

और इन्होंने यह सकल्प कर रखा है कि हममें से कोई किसी कील-काँटे मे न फसने पाये। जरा देखो तो? कोई योजना देखता है और कोई कील-काँटे।"

"लेकिन जेब में एक भी पैसा न होते हुए तुम मास्को कैसे आ गये?" नीना ने विषय बदलने की इच्छा से पूछा।

"मै बता चुका हू कि मेरे पास एक रोटी थी ही। और फिर, कुछ मुसाफिरो ने मेरी सहायता की। उस दिन सुबह जब मेरी आख खुली तो नीचे की सीट पर मैने कुछ आदमियो को बाते करते सुना—रोजगार विभाग का एजेन्ट अपने काम के बारे में शिकायत कर रहा था। मै उतर पडा और एक सज्जन को टीन खोलते देखा। उस शाम मैने अपनी वेल्डिंग सम्बन्धी किताब निकाली और वह व्यक्ति मेरी सारी हालत भाँप गया। उसने मुझे अपने दफ्तर में काम करने के लिए राजी करने का प्रयत्न किया। उसने मुझे सोने की मुहरे दिलाने का वायदा किया। उसने मेरे लिए सैडविचो और गर्म चाय का इन्तजाम करने के लिए भाग-दौड की। मास्को तक यह खातिर जारी रखी। लेकिन मै उसके साथ काम करने के लिए तैयार न हुआ। उसने बहुत ज्यादा सुनहरा खाका खीच दिया था।

इससे मै शक में पड गया। फिर जब मै मास्को पहुंच गया...।"

"चाय तैयार है," इरीना मक्सिमोव्ना ने कहा और केतली लिये हुए कमरे मे प्रवेश किया।

तभी एन्द्री को अपनी ट्रेन का ख्याल आया। उसने घडी पर नजर डाली और उछल पडा।

नीना उसे दरवाजे तक पहुंचाने आयी।

"देहरी पर हाथ मिलाना शुभ नही होता," एन्द्री ने कहा।

"फिजूल बात," नीना ने हाथ झुलाकर कहा, "कोई अशुभ नही होगा।"

एन्द्री ने सोचा, "हालाकि यहा मेज पर छल्लो में नेपकिन रखे हुए है, फिर भी इसकी जिदगी आसान नही मालूम होती।"

"हिम्मत न हारना," एन्द्री ने कमरे में वापिस घुसते हुए कहा, "काम पर, अच्छे घोडे की तरह, काबू पाना पडता है। अच्छा, सलाम। और चिन्ता न करो, अपने साथ काम करनेवाले लडको पर मैं निगाह रखूगा।"

वह चला गया तो नीना ने द्वार बन्द कर दिया और पीर के भवर में फसी हुई वही खडी रही। जब तक सीढियो

पर पैरो की आहट खामोश नही हो गयी और बाहरी भारी दरवाज़े के बन्द होने की भडक नहीं सुनायी दे गयी, तब तक वह वही खड़ी रही। फिर जाकर उसने भोजन किया। उसके माता-पिता, जब सोने चले गये, तो वह खिडकी के पत्थर पर जा बैठी—यह स्थान सदा से उसे प्रिय है—और यहा बैठकर रगीन सितारो से जडे स्याह आसमान को ताकती हुई विचारो में खो गयी। कमरे में, यदि कोई स्वर तो घड़ी की हलकी सी गम्भीर टिक-टिक, और कभी-कभी घर के पास से लारी की गुज़र जाने पर झाड-फानूस का काच आपस में टकराकर बज उठता था। रात बहुत बीत गयी थी। दिमाग से परेशानियो का बोझा उतार फेंकने के लिए नीना ने उस रिपोर्ट का मसौदा लिख डालने का निश्चय किया, जिसे प्रधान इजीनियर ने अगले दिन पेश करने के लिए कहा था। वह उस मेज के सामने बैठ गयी, जिस पर उसने पहाडा याद किया था, गणित के कठिन सवालो को लेकर रोया था और इन्स्टीट्यूट में बताये गये नक्शो को खीचा था। उसने गुलाब के फूलो से सजे, चीनी मिट्टी के कलमदान की दावात में कलम डुबोया और लिखा· " .. इमारत के केन्द्रीय भाग में पहली मजिल का कमरा साफ करते समय एक कारीगर को चोट

लग गयी," यकायक उसे वोध हुआ कि उसकी पीर का कारण क्या है। "इसका कारण यह है कि अर्सेन्तियेव को मुझ पर इतना तरस आया कि वह मेरे पिता से झूठ वोला और उन्हे यह बताने की कोशिश करने लगा कि मै अपना काम-काज ठीक कर रही हूँ। और उसकी वात का खण्डन न करके, मैने एक तरह से यह प्रगट किया कि मै उस तरह झूठ वोलने का समर्थन करती हूँ। अव अर्सेन्तियेव सोचेगा कि मै कायर हू और उसका यह ख्याल ठीक ही होगा।" नीना ऐसी असहाय अवस्था से गुजर रही थी, जब कि इस ससार मे आशा की एक भी किरण नजर नही आती।

"वह मेरे बारे मे क्या सोचता है, इसकी चिन्ता मै क्यो करू?" वह जोर से कह बैठी। और यद्यपि यह वात उसने बडे दृढ निश्चय के साथ कही थी, फिर भी वह यह समझ रही थी कि आज से उसके तमाम पुराने मित्रो, या प्रधान इजीनियर... अथवा स्वय उसके पिता तक की राय की वनिस्वत एन्द्री की राय कही अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है।

"शनिवार की शाम को उन लोगो के होस्टल जाने मे क्या हर्ज है," उसने सोचा और रिपोर्ट के हाशिये में

बेकार के गालाकार और त्रिकोण चित्र बनाती रही। "इन लोगो के शौकिया तमाशे कैसे होते हैं, यह देखना सचमुच दिलचस्प होगा।''

* * *

होस्टल में एन्द्री के कमरे में जो लडके रहते थे, वे सर्कस से लौटने के बाद फौरन ही सोने न गये।

इस आधी रात पर थोडा सा नाश्ता करने के लिए मित्या मेज पर अखबार बिछाये, डिब्बे वाले गोश्त के टुकडे काट रहा था। एक इलैक्ट्रीशियन खिडकी के पास चारपाई, सिर के पीछे हाथ बाधे, चित लेटा था और बडी व्यथा के साथ छत की कडियो की तरफ अपलक देख रहा था।

"नही, यह बात नही है," मित्या ने रोटी और गोश्त पर सरसो लगाते हुए कहा, "आप लोगो की इत्तला के लिए, मै यह बता दूँ कि सर्कस के बाद मै दो गलियो तक उनके पीछे-पीछे गया। पहले तो वे लोग यो ही चलते रहे, फिर उसने उसकी बाँह पकड ली। फिर उसने कहा कि वह उसकी सही बाजू नही चल रहा है, इसलिए वह दूसरी बाजू चला गया और फिर उसने उसकी बाँह पकड ली।

"यह रोशनी आप लोग कितनी देर बाद बुझायेंगे," उस इलैक्ट्रीशियन ने पूछा।

"मै जरा खा-पी लूँ, फिर बुझा दूँगा। और फिर एक बात और सोचने की है: वह अभी तक वापिस क्यो नही आया? क्या ख्याल है, वह क्या कर रहा होगा—सदोवाया मार्ग पर, क्या अकेले-अकेले चक्कर लगा रहा होगा? एक तो अभी बज गया है।"

"इससे कुछ सिद्ध नही होता," इलैक्ट्रीशियन ने कहा। "अब रोशनी बुझा दो।"

"जरा ठहरो, देखा—तो। अपने यहाँ काम-काज फिर ढर्रे पर आ जायगा। उसका सारा ध्यान एन्द्री पर केन्द्रित हो जायगा। शर्त बरतते हो?"

मगर इलैक्ट्रीशियन सिर्फ गुडबुडा कर रह गया और दीवार की तरफ मुँह फेर लिया। इस सवाल पर थोडी देर और बात करने के बाद मित्या ने गोश्त का डिब्बा, रोटी और चाकू अल्मारी मे रख दिया। फिर उसने हाथ-मुँह धोया, कपडे उतारे, छोटे से शीशे में अपने दाँतो की बड़े गौर से जाच की और बिजली बुझाने वाला ही था कि बाहर हाल मे किसी के पैरो की आहट सुनकर वह बिस्तरे में घुस गया।

एन्द्री ने वड़े आहिस्ते से प्रवेश किया और चाय लेकर बैठ गया। उसके चेहरे से कुछ समझ पाना कठिन था। कुछ देर तक तो मित्या ने सोने का बहाना किया, मगर जब बरदाश्त के बाहर हो गया तो उसने कुहनी टिका कर सिर उठाया और कहा

"कहो, कैसा रहा, एन्द्री?"

"नीना वासिलीयेव्ना के बारे में, अगर तुमने एक शब्द भी कहा, तो समझ लेना, मै तुम्हे चारपाई से उठाकर फेंक दूँगा," एन्द्री ने हलका सा जोर देकर कहा "अब बेहतर होगा कि हम इस कमरे की सफाई कर डाले। और लैम्प का आवरण अगर खरीद लिया जाय तो कोई नुकसान नही होगा। अगर इत्तफाक से कोई यहा आ जाय, तो हम लोग शर्म से गड जायँगे।"

"तुम रोशनी कब वुझाओगे?" इलैक्ट्रीशियन ने फिर पूछा।

"तुम बेचारे को एक प्याला चाय भी नही पीने दोगे?" मित्या ने एन्द्री की हिमायत में कहा और कम्बल के भीतर घुसते हुए उसने फुसफुस स्वर मे कहा, "मैंने कहा था कि नही—कि अब सारी चीज ढर्रे पर आ जायगी?"

* * *

दोनो इमारतो पर काम करने वाले कारीगरो के वीच जैसे-जैसे प्रतियोगिता आगे वढी, तैसे-तैसे उत्तेजना भी वढती गयी।

एक दिन, जव नीना प्रधान कार्यालय की ओर जा रही थी, तभी उसने एक नोटिस वोर्ड के सामने भीड देखी।

"यह भीड क्यो जमा है?" उसने पूछा।

" हम लोग काम के ताजे नतीजो का इतजार कर रहे है," लीदा ने कहा। "आप अपने क्लर्को को जरा जल्दी हाथ-पैर चलाने के लिए, मजवूर नही कर सकती, नीना वासिलीयेव्ना?"

नीना ने इसके वारे मे प्रधान इजीनियर से कहा और अगले दिन से इस प्रतियोगिता के नतीजे लाउडस्पीकर से सुनाये जाने लगे। इन घोषणाओं के समय कारीगर लोग लाउडस्पीकरो के इर्द-गिर्द जमा हो जाते, ड्राइवर लोग अपनी लारियो के इजन वन्द कर देते और नतीजे सुनने के लिए दरवाजे खोलकर वैठ जाते। नीना पूरे निर्माण-स्थल पर नजर डालकर मुसकुरा उठती और मन ही मन कहती, "वाह ये लोग मानो फुटवाल के मैच का नतीजा सुन रहे है।"

इस्पात का ढाँचा खडा करने की गति दिन-प्रति-दिन बढने लगी और एक बार प्रधान इजीनियर ने नीना को चुपके से बताया कि ऐसा लगता है कि ये लोग अपने काम को निश्चित समय से एक दिन पहले ही खत्म कर लेगे।

एक सप्ताह मे ही इतना काम पूरा हो गया कि कारीगर लोग यह समझ गये कि अपना काम वक्त पर पूरा कर लेंगे। अब उनको मुख्य चिन्ता यह थी कि पडोस की इमारत पर काम करने वाले कोम्सोमोल के साथियो को वे कैसे पछाडे और कुशलता तथा कारीगरी मे उन्हे कैसे मात दे।

इन दिनो अर्सेन्तियेव और उसकी मित्र-मण्डली बडा उत्साह लेकर आती थी और न्यूरा तथा लीदा पर भी (जिन्हे प्रधान इजीनियर ने वेल्डरो की मदद पर नियत कर दिया था) उन लोगो की चित्त-वृति का असर पडता था और वे भी तारो की जाच करने, ट्रासफार्मरो को चलाने और खाने-पीने की चीजे लाने मे बडी भाग-दौड़ करती—और भोज-गृह मे काम करने वाली लडकी को जब यह पता चला कि ये लोग अर्सेन्तियेव तथा उसके मित्रो के लिए खाने-पीने की चीजें लेने आती है, तो उन्हे उनकी बारी न होने पर भी पहले ही चीजें दे देती।

नीना की यह आशका वेवुनियाद निकली कि उसके वारे मे अर्सेन्तियेव की राय विगड गयी होगी। इसके विपरीत, सर्कस-यात्रा के वाद से वह नीना की तरफ और भी ज्यादा ध्यान देने लगा। जव वह नीना से वात करता तो उसके स्वर में तिरस्कार के भाव की ज़रा भी झलक न होती, वल्कि उसने अपना यह वायदा निभाया कि उसके मित्र सभी सुरक्षा-नियमो का पालन करेगे—और नीना के लिए यही सवसे वडी प्रसन्नता की वात थी। एक दिन जव वह रास्ते पर चली जा रही थी, तव उसने सुना कि वह मित्या को टूटी सीढी काम मे लाने के वास्ते डाट रहा है। मित्या हठपूर्वक ज़ोर दे रहा था कि उस सीढी से उसका काम चल जायगा। नीना कुछ दूर जाकर खडी हो गयी और इस झगडे का अत कैसे होता है—इसको देखने का इतजार करने लगी। अर्सेन्तियेव ने ज्यादा वहस नही की। उसने कहा, "अगर दूसरी सीढी लाने मे तुम्हे वहुत तकलीफ होगी, तो मै खुद लाये देता हूँ।" और वह चला गया। परेशान हाल मित्या उसे दार्शनिक विराग के भाव से देखता रहा और अपने आप से वडवडाता रहा: "लगता है कि कुमारी सुरक्षा-टेक्निक पर विजय इसने नहीं पायी है, वल्कि इसके ऊपर कुमारी सुरक्षा-टेक्निक ने इसपर

विजय पा ली है। इससे तो मामला और भी सगीन हो गया है। ये दोनो मिलकर तो हमारी जान ही निकाल लेगे। हुँह, क्या वढिया सलाह दी है तुमने," उसने न्यूरा की तरफ मुड कर कहा।

"दूसरो के सिर दोष मढने की कोशिश न करो," न्यूरा ने जवाब दिया। "सकर्स के लिए टिकट किसने बाँट थे?"

"लेकिन यह सूझ किसकी थी? तुमने ट्रेन में जो कुछ कहा था, उसे भूल गयी हो? तुम उस मनहूस रूमाल के साथ जहन्नुम में क्यो न चली गयी और चुप रहती?"

"तुमसे जो कुछ कहा जाय, उस सबको सुनने की ज़रूरत ही क्या है?"

यह टिकटो और सलाह की चर्चा क्या है, इसका नीना को ज्ञान नही था, लेकिन उसके हृदय में अर्सेन्तियेव के प्रति कृतज्ञता का ज्वर उमड पडा और इसीलिए कुछ दिनो बाद, जब आधी और जबर्दस्त तूफान की भविष्य-वाणी के बारे मे मौसम की रिपोर्ट लेकर अर्सेन्तियेव उसके पाया और उससे अनुरोध करने लगा कि वह ऊचाई पर काम करने वालो को काम बराबर जारी रखने के लिएं

कुछ उपाय खोजे, तो उसने कहा: "मै भरसक प्रयत्न करूगी, एन्द्री। इसका तुम विश्वास रखो।"

लेकिन वायदा करने की बनिस्बत उपाय खोजना कठिन था। हिदायतो के अनुसार, जब हवा की गति एक खास हद तक पहुच जाय तो क्रेनो का काम बन्द हो जाना चाहिये था और इसका मतलब यह था कि ऊचाई पर काम करने वालो के पास गर्डर नही पहुचाये जा सकेगे। काफी देर विचार करने के बाद नीना ने कारीगरो को हिदायत दी कि वे रोज की तरह काम पर आये। अगले दिन सुबह, सचमुच हवा इतनी जोर से चलने लगी कि पडोस की इमारत पर काम बन्द हो गया और लोग घर चले गये। लेकिन नीना ने मौसम-विभाग को फोन किया और जानकारी हासिल की कि हवा की गति इतनी तेज नही है कि क्रेन का काम बन्द करने की जरूरत हो। और इसलिए, उसने कारीगरो से कहा कि अगर वे यह वायदा करे कि जिस घडी वह लाउडस्पीकर से काम बन्द करने का आदेश देगी, उसी समय काम बन्द कर दिया जायगा, तो वे लोग काम शुरू कर सकते है।

उस दिन हर पाँच मिनट पर नीना मौसम-विभाग से सम्पर्क कायम करती रही। दो बार कारीगर लोग काम

बन्द करने के लिए मजबूर हुए, लेकिन फिर भी वे काफी गर्डर चढाने मे कामयाब हुए।

उस दिन नीना को सार्वजनिक रूप से धन्यवाद दिया गया और एक के बाद एक, लोग उसे व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देने आये। उनमे अर्सेन्तियेव भी था। "धन्यवाद तो ठीक ही है," उसने थोडा सा विहँस कर कहा, "लेकिन महत्व की बात यह है कि हमने उन्हे करीब करीब पछाड दिया है।" (और उसने वर्षा में धुधली सी दिखायी पडनेवाली पडोस की इमारत की तरफ सिर हिलाकर इशारा किया।) "एक दिन और, रोज की तरह काम हो जाय, तो हम उन लोगो से आगे बढ जायँगे।"

नीना ने महसूस किया कि अर्सेन्तियेव ने "हम" कहकर उसे भी शामिल कर लिया है, और इस कल्पना से, यहा काम सभालने के बाद से शायद आज पहली बार, उसने आनन्द और मिठास का अनुभव किया।

* * *

बारिश के रुकने का इतजार किये बिना ही नीना घर की तरफ चल दी। वर्षा बडी छितरी-छितरी हो रही थी, कभी मूसलधार हो जाती, तो कभी बड़ी हलकी-

फुलकी—मानो अगले हमले के लिए तैयारी कर रही हो। शीशे की तरह चमकीले लबादे ओढे पुलिसवाले असतुष्ट भाव से सडकों के नुक्कड पर खडे भीग रहे थे और गढो में भरा पानी उछालती हुई चमचमाती मोटर-कारे उनके पास से गुजर जाती थी। बहती जल-धारा में सिगरेटो के टुकड़े और बसो के टिकट तैरते हुए नालियो की तरफ चले जा रहे थे। सार्वजनिक स्थानो के प्रवेश-द्वार पर भीड़ें जमा थी और आसमान की ओर बार-बार ताक लेती थी। लेकिन नीना, गर्मी की ऋतु की सैंडिले गीली सड़क पर फटफटाती हुई चली ही जा रही थी, ग्रीष्म पवन और वर्षा की शीतलता में तथा उससे चेहरो पर जो ताजी रौनक आ जाती है, उसमे विभोर होकर वह आनन्द अनुभव कर रही थी।

यात्रिगण, पारदर्शी लबादे ओढ कर या अखबार लपेट कर, स्थानीय ट्रेन पकड़ने दौडे जा रहे थे। यकायक नीना को याद आया कि आज शनिवार है और आज के दिन होस्टल में खेल-तमाशे किये जाते है, उसकी चाल धीमी पड गयी। शीघ्र ही उसने सडक पार कर ली और स्टेशन की तरफ भागी, इस अप्रत्याशित फ़ैसले को ठीक ठहराने के लिए उसने अपने आप से कहा कि जिन लड़कियो ने

वेल्डरो की सहायता की है, उनसे बात कर लेना जरू-री है।

वे लोग कहाँ रहते हैं—यह नीना को पता न था, लेकिन ज्यो ही वह ट्रेन से बाहर आयी, उसने लीदा को पकड लिया और कहा कि उसे न्यूरा के पास पहुँचा दे।

न्यूरा जिस कमरे मे रहती थी, वह शीशे की तरह स्वच्छ था। दीवार के सहारे चार चारपाइया लगी हुई थी और हर-एक से उस पर सोने वाले के व्यक्तित्व का प्रगट होता था। न्यूरा के विस्तरे पर रगविरगी कढाई से सजे छोटे-छोटे तकियो का ऊँचा ढेर लगा था और चारपाई में लोहे का सिरहाना तथा पायो पर, फीते की किनारी लगे मलमल के खोल चढे हुए थे। एक दूसरी चारपाई पर दफ्तर से दिये गये कम्वल के अलावा और कुछ नही था और वह भी सिपाहियाना सख्ती के साथ बिछाया गया था, तकिये पर इस चारपाई की स्वामिनी का तौलिया घरी कर के डाल दिया गया था। तीसरी पर सख्त कलफ किया हुआ कपडा, चादर की तरह, विछा था और उसके ऊपर वच्चे का झूला लटका था, जिस पर भालुओ का चित्र कढा था। चौथी पर एक भारी-भरकम कथरी विछी थी और बगल की दीवार पर छत तक इतने चित्र टगे हुए

थे कि ऊपर के चित्रो में क्या है, यह भी नही दिखायी देता था।

एक स्टूल पर बैठी हुई न्यूरा वही रूमाल काढने मे लगी थी, जिसे वह ट्रेन मे बना रही थी।

"न्यूरा क्या तुम वेल्डरो की मदद कर रही हो?" नीना ने पूछा।

"हाँ, लीदा और मै, दोनो ही कर रही है।"

"तो सुनो, ये लडके जैसे-जैसे योजना के लक्ष्य के करीब पहुंचने लगे है, वैसे ही ढीले भी पडने लगे है। यह बात आज मैंने खास तौर से देखी। अगर तुम्हे कोई वेल्डर, बिना पेटी बाँधे या बिना जजीर बाँधे, काम करे, तो तुम मुझे सूचना देना न भूलना। यह बात हमारे-तुम्हारे तक ही रहे, समझी?"

"मित्या से तो कोई कितनी भी मगजपच्ची करे, वह कोई ध्यान नही देता," न्यूरा ने कहा।

"अर्सेन्तियेव के साथ कौन काम कर रहा है?" नीना ने लगभग विना झिझक पूछ डाला।

"मै कर रही हू," लीदा ने कहा। "वह हमेशा जजीर मे अपने को बाँध लेता है। लेकिन तुम इतनी परे-

शान क्यो हो, यह मेरी जरा भी समझ में नही आता। इस सवसे तुम्हारे लिए क्या फर्क पडता है?"

"अगर न्यूरा वीसवी मंजिल से गिर पडे, तो क्या तुम्हारे लिए कोई फर्क नही पडेगा?"

"लेकिन न्यूरा की वात और है। वह मेरी सहेली है।"

"दा-एक महीने यहा काम कर लोगी, तो तुम्हारे भी, यहाँ वहुत दोस्त हो जायंगे .. वह क्या चीज़ है?" नीना ने लगभग भयभीत होकर पूछा।

"कहा? ओह, तुम नही जानती? वह वच्चे का खिलौना है। हमारे यहा एक वच्चा है।"

"वच्चा?"

न्यूरा ने एक चादर उलट दी और नीना ने वडे से तकिये पर वच्चे को सोया देखा।

"यह किसका हे?"

"हमारा," न्यूरा ने कहा और फिर अपना रूमाल लेकर वैठ गयी। "यह हमारा है। मारूस्या का वेटा है। अब तो वह काम से लौटने ही वाली होगी। गैर-शादीशुदा माताओ के वच्चो के लिए यहाँ एक शिशुगृह है, लेकिन हमने अपने वच्चे को वहाँ न रखने का फैसला किया। यह

यही पैदा हुआ था और हम सब इसका पालन करेंगे। हम चार मे से कोई न कोई घर रहता ही है। लीदा, तू जरा सँभल कर रहना। इन लडको से ज्यादा दोस्ती मत करना। दिलजोई कर लो, लेकिन बहुत ज्यादा नही।"

"यह मै बहुत सुन चुकी हूँ। अब अपनी मण्डली के जमाव का वक्त हो रहा है।"

"जरा ठहरो। मारूस्या आती ही होगी," श्यूरा ने लीदा पर एक कड़ी नजर डालकर हटा ली।

"तुम इसी तरह जाओगी?" उसने पूछा।

"हाँ, क्यो नही?"

"रूमाल, कोई आकर्षक नही है।"

इसी क्षण कमरे मे एक दुबली-पतली अठारह वर्षीय लडकी ने प्रवेश किया, उसकी आभापूर्ण नीली आँखो से, एक साथ ही, आनन्द और वेदना झलक रही थी। नीना ने फौरन पहचान लिया कि यह वही क्रेन-चालिका है, जिसने उस दिन सोलहवी मंजिल पर कन्क्रीट के पटिये पहुचा दिये थे, ताकि नीना वापिस सीढियों तक पहुँच सके। "हल्लो" कहे बिना ही, वह लडकी सीधी अपनी चारपाई पर पहुची और बच्चे पर झुक गयी।

"क्या यह अब भी खाँस रहा है?"

"नही। अब तो बेहतर मालूम होता है," न्यूरा ने कहा। "हम लोग मण्डली के लिए जा रहे है। मै तुम्हारा रूमाल ओढ लू?"

"हाँ-हाँ," मारूस्या ने कहा। "मुझे अब इसकी जरूरत नही है। इन मण्डलियो से मैने खूब मन भर लिया है।"

वह चारपाई पर बैठ गयी और बच्चे को उठा लिया। उसे थपथपाते हुए, अपनी आकर्षक नीली आखो से उस ने एकाकी वृक्ष पर टिका दी जो वर्षा मे काप रहा था। न्यूरा ने उत्सव के उल्लास मे भरकर किसी आनन्द-पूर्ण गीत की कडी गुनगुनाते हुए कपडे बदल लिये और नाक पर पाउडर लगा लिया।

"बच्चे का पिता कभी तुमसे मिलने आता है?" नीना ने डरते-डरते पूछा।

"अपनी मर्जी से नही, और मै उसे पट्टा बाध कर यहा घसीटती लाऊं, यह तुम नही देखोगी," मारूस्या ने कहा और खिडकी के बाहर ही ताकती रही। "उन लोगो से कह दीजियेगा कि वे नाच-गान में अधिक शोर-गुल न करें।"

"मै उसकी आखें निकाल लूगी," एक क्षण के बाद लीदा बोली।

"क्यो? मैंने उससे हमेशा के लिए नाता तोड लिया है," मारूस्या ने क्लब के कमरे से आती हर्ष की ध्वनि सुनते हुए कहा।

"उसकी हमे क्या पडी है," आते न्यूरा ने कहा। "हम उसके बिना भी काम चल सकती हैं। मिसाल के तौर पर, बच्चे को यहा रखने की इजाजत दिलाने में एन्द्री अर्सेन्तियेव ने हमारी सहायता की थी।"

"अर्सेन्तियेव ने सहायता की?" नीना ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, की। वह कल्याण परिषद मे चुना गया था। हम लोगो के पास कपडे-लत्ते काफी नही थे, इसलिए वह होस्टल के प्रधान के पास गया और उनसे बोला कि हमारे कमरे मे अब पाच व्यक्ति हो गये है और नये सदस्य शिशु के लिए कपडे तथा अन्य चीजो की पूरी सप्लाई होनी चाहिए। प्रधान ने हमारे लिए कुछ चादरे दे दी और हमने उनमें से कुछ कपडे-लत्ते बना डाले," न्यूरा ने धीमे स्वर मे कहा।

यकायक हंसी और अकार्डियन के स्वर तेज़ हो गये,

स्पष्ट था कि क्लब के कमरे की खिड़कियां खुली पड़ी थीं।

"तू जा न? जरा हंसी मजाक से दिल बहल जायगा," लीदा ने मारूस्या से कहा। "इसे तू मुझे दे दे। मैं उसे सुला दूंगी।"

इसी क्षण दरवाजे पर दस्तक हुई और अर्सेन्तियेव ने प्रवेश किया।

"तुम यहीं बैठी हो," उसने लीदा को देख कर कहा। "उठो, चलो। वे लोग क्या नाच रहे हैं—देखकर जी मिचलाने लगता है। उन्हें हम बता देंगे कि हमारी तरफ के लोग किस तरह नाचते हैं। आप भी यहीं हैं, नीना वासिलीयेव्ना? तो आप भी आइये, चलो, सब लोग चलें।"

अर्सेन्तियेव और लीदा के पीछे-पीछे नीना ने एक बड़े कमरे में प्रवेश किया, जहाँ खिड़कियां खुली होने के बावजूद काफी घुटन थी। लोग ठसाठस भरे थे। लीदा के साथ अर्सेन्तियेव भीड़ चीरता उस स्थल पर पहुंचा जहां दो लड़कियां अकार्डियन के साथ नाच-गा रही थीं।

"हाँ, भाई, अब हमें साइबेरियाई धुन सुनाओ," उसने बाजे की धौंकनी पर हाथ रखकर कहा।

"मुझे कोई धुन नही आती," वादक ने कहा।

"लीदा, इसे कोई धुन तो बता दो।"

लीदा सगीतकार के बगल मे बैठ गयी और उसके कान मे कोई धुन गुनगुनाने लगी, सगीतकार पर्दो पर धीरे-धीरे उगलियां फेर कर उस धुन को पकडने का प्रयत्न करने लगा।

अर्सेन्तियेव वापिस नीना के पास चला आया।

"जरा सरक कर बैठो, अधे हो क्या?" बेंच पर बैठे कुछ लडको को उसने डांट दिया।

लडके सरक गये और नीना बैठ गयी, अर्सेन्तियेव उसके पीछे खडा हो गया।

सगीतकार ने जब वह आसान-सी धुन समझ ली, तो उसने मानो मन्त्र-मुग्ध होकर, अपने बाजे को कोयल से चिपका लिया और लीदा उठकर खडी हो गयी—सगीत की ताल पर उसके कधे उछलने लगे और सारा शरीर बडे मनमोहक ढग से तन गया और सीधा रह गया। जिस स्वर का वह इतजार कर रही थी, वह भी आ गया और वह नाच उठी, लेकिन वह शुरू मे ही कुछ लडखडा गयी, इस-लिए खीझ के भाव से उसने सिर झटक कर नृत्य बन्द कर दिया और प्रारम्भिक ताल का इतजार करने लगी। फिर

वह यकायक हवा में लहराती, सुपरिचित धुन के साथ पद-निक्षेप से ताल देती, अगली ताल के बारे में चिन्ता किये विना, सिर पर ओढे गये रूमाल के दोनो छोरो को बेफिक्री के साथ मजबूती से पकडे सगीत की स्वर लहरी के जादू मे बँध सी गयी और यह स्वर-लहरी उसे दर्शको मेज़ो, कुर्सियो, और तख्तियो तथा पोस्टरो से सजी दी-वारो के बीच बहाये ले जा रही थी।

यद्यपि अर्सेन्तियेव पीछे खडा था, और नीना ने एक बार भी उसकी तरफ मुडकर नही देखा, फिर भी उसने साफ महसूस किया कि अर्सेन्तियेव नृत्य मे डूब गया है और लीदा की प्रत्येक मुद्रा का अनुसरण कर रहा है, नीना के सीने मे ईर्ष्या सी जाग गयी। वह चाहने लगी कि लीदा थक जाय, ताकि यह अनन्त नृत्य समाप्त हो जाय।

अपने प्रदेश की इस प्यारी धुन की जादुई शक्ति के इशारे पर लीदा ने अपनी भुजाएँ सुन्दरता के साथ फैला दी और समेट कर सीने पर रख लिया, साथ ही उसके चरण सगीत के चढाव के साथ हवा में लहराकर, ताल के साथ जमीन पर उठने और गिरने लगे। अकार्डियन-वादक से उसके होठ फुसफुसाकर कहने लगे—"तेज और

तेज" और ऐसा लगने लगा मानो उसके वस्त्र स्वय अपने आप नाच रहे हैं।

माधुर्य भरकर, अकार्डियन-वादक ने अतिम स्वर मोड ली और लीदा नृत्य समाप्त कर लाज से इस तरह कमरा छोड कर भागी, मानो यकायक उसे अपने सौदर्य का बोध हो गया हो।

"यह हमारा साइबेरियाई नृत्य है, नीना वासिली-येव्ना," अर्सेन्तियेव ने ऐसे गर्व से कहा, मानो यह नृत्य खुद उसने पेश किया हो। "आपको कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा है, थोडा सा एक-रस है," नीना ने कहा और खेदपूर्वक सोचने लगी, "इस आधी-पानी में, मै यहा आयी ही क्यो?"

लेकिन वाद मे जब अर्सेन्तियेव ने कही से वरसाती माग लाकर, खुद अपने हाथ से उसे पहनायी और फिर स्टेशन तक छोडने भी आया तो उसका दिल कुछ खुला।

उसने किंचित मुसकुरा कर अपने आप से कहा: "क्या मै ईर्ष्या कर रही थी? कितनी मूर्ख हूं।"

* * *

कुछ दिन बाद एक बड़े अफसोस की बात हुई। नाप-जोख करने वाले को पता चला कि तूफान के दिनो मे जो खड़े गर्डर लगाये थे, उनमें से कुछ सीधे जमे नही थे। पिछले दिनो लोगो ने जिस तेजी से काम किया था, उसे देखते हुए यह कोई ताज्जुब की बात नही थी, लेकिन फिर भी इस पर अपार चर्चा और कहा-सुनी होने लगी थी, और इसलिए यह पता लगाने का प्रयत्न होने लगा कि दोष किसका था। इन गर्डरो को सीधा करने तक सभी काम रोक देना पड़ा। काम के बाद अर्सेन्तियेव ने लड़कियो को जमा किया और अगले दिन मशीनो की जाच करने तथा यह देखने के लिए कि तार ठीक लगाये गये है और कही फर्श तो नही छू रहे है, उसने उनको काम पर जल्दी आने लिए कहा। वह अत मे बोला, "जो समय बरबाद हुआ है, उसे हमें कल पूरा करना है, हमे हर कीमत पर नुकसान भरना होगा।"

तूफान के बाद मौसम साफ हो गया, एक भी बादल न रहा। दूसरे दिन सुबह सात बजे से ही धूप महसूस होने लगी। उमस और गर्मी सुबह से जान पड़ने लगी। काम पर न्यूरा और लीदा सबसे पहले आयी। उनकी हाजिरी

खत्म हुई तो वे बाईसवी मंजिल की सीढियो पर बैठकर वेल्डरो का इतजार करने लगी।

अर्सेन्तियेव आया तो बडी कठोर और दृढ मुद्रा मे। आते ही उसने लीदा से कहा, "तुम सीटी बजा सकती हो?"

"नही। क्यो?"

"तो यह चाबी लो और जब तुम्हे नीना वासिलीयेवना आती दिखायी दें, तो इससे गर्डर बजा देना।"

"क्यो?"

"जो कहा जाय, वह करो और कोई सवाल मत पूछो। समझी?"

"ठीक। यह कोई कठिन काम नही है," लीदा ने जवाब दिया।

वह फिर सीढियो पर बैठ गयी और अर्सेन्तियेव के चारो तरफ छिटकती चिनगारियो को देखने लगी।

लीदा ने पहली बार जब यह निर्माण-स्थल देखा था, तो उसे लगा था कि अलौकिक शक्ति और बुद्धि वाले दानव ही ऐसी इमारत खडी कर सकते है। उसे यह विश्वास हो चला था कि यहा काम करने के लिए उसको भेजने में कही कोई गलती हो गयी है और हफ्ते भर के

अन्दर ही उसे कही और भेज दिया जायगा। लेकिन शीघ्र ही उसने अपनी ही तरह के दूसरे साधारण लोगो को भी देख-परख लिया जिनमें से कई लडकिया थी और कई साइबेरिया वासी भी थे। इससे वह बडी उत्साहित हुई और भोजन की छुट्टी मे वह एक मजिल से दूसरी मजिल घूमती और मित्या से पूछती कि वे नल कहा जा रहे है और कुछ दरवाज़ो पर खोपडियो और आडी तिरछी हड्डि-यो के चिन्ह क्यो बनाये गये है।

उसने ऐसी बहुत-सी मशीने देखी, जो इससे पहले उसने कभी नही देखी थी, एक पम्प था, जिससे एक बडे नल से सातवी मजिल पर कन्क्रीट जाता था और यह पम्प तेल के इजिन जैसे लीवरो से चलता था। जब यह पम्प चालू होता था तो आसपास की सारी चीजें ऐसे हिल-डुल उठती थी मानो उन्हे तूफान झकझोर रहा हो। उसने देखा कि निर्माण की सामग्री से भरे डिब्बे आसमान मे खिचे तारो के सहारे भेजे जाते है। बिजली के तारो को छुए बिना, वे डिब्बे इमारत के भीतर घुसकर गायब हो जाते है, मानो उनमे भी बुद्धि भर दी गयी हो।

एक दिन लीदा ने आठवी मजिल पर तार का पि-जडा देखा, जो लिफट के पिजडे की तरह था। जब वह

उसके करीब पहुची तो उसने देखा कि उसका दरवाज़ा खुल गया और इस्पाती भुजाओं ने बडी सावधानी के साथ उसमे से ईंटो के डिब्बे लुढकाये जो बेलन जैसी चीज पर फिसलते हुए ठीक वही जा पहुचे, जहा कारीगर उनका इतजार कर रहे थे। फिर इस्पाती भुजाएँ वापिस पिजडे मे सिमट गयी और हलकी सी सीटी बजाता हुआ वह पिजडा नीचे उतर कर गायब हो गया।

"यह क्या है?" लींदा ने पूछा।

"सामान ऊपर ले जाने वाली मशीन है," एक सगतराश ने जवाब दिया। "जरा दूर ही रहना। कही पाव फस गया तो सब मजा निकल आयगा। हमारी सुरक्षा-इजीनियर से, आभी शायद, तुम्हारी भेंट नही हुई है।"

लीदा भाग कर नीचे वहाँ पहुच गयी जहाँ सामान ऊपर ले जाने वाली मशीन चलाने के लिए स्विच बोर्ड पर बटन लगे हुए थे। मजिलों की सख्या के सामने बिजली के छोटे-छोटे बल्ब कभी जल जाते थे और कभी बुझ जाते थे, एक मुस्तैद और कम बोलने वाली औरत इस मशीन के पिजडे को भरने का हुक्म दे रही थी। ज्यो ही उसने बटन दबाया ईंटो समेत वह पिजडा तीर की तरह ऊपर लपका।

"जहा रुकना होता है, वहा यह अपने आप रुक जाता है क्या?" लीदा ने पूछा।

"ठीक वही जाकर रुक जाता है," उस औरत ने जवाब दिया। "यहा से भागो। यह जगह ऊची शक्ति की बिजली के तारो से भरी है। अगर नीना वासिलीयेव्ना ने तुम्हे यहा पकड लिया तो ऐसी डाट पिलायेगी कि तुम अपना नाम भी भूल जाओगी।"

लीदा को हर तरफ नीना वासिलीयेव्ना का नाम सुनायी देता था। उसके विषय मे भाति-भाति की बाते कही जाती थी, लेकिन अधिकाश बाते व्यग या कटाक्ष से भरी होती थी। धीरे-धीरे लीदा की यह धारणा बन गयी कि नीना वासिलीयेव्ना को हटा दिया तो अच्छा हो, क्योकि वह हमेशा दोष ही खोजती रहती है और जरा-जरा सी बात के लिए लोगो के काम मे बाधा डालती है। लेकिन उसकी समझ में एक बात नही आती थी और वह यह कि एन्द्री क्यो उसकी हिमायत करता है।

"हल्लो," लीदा ने यकायक किसी की आवाज सुनी और नजर उठायी तो नीना को खडे पाया। लीदा ने प्रेरणावश चाबी पकडी, लेकिन अब तो काफी देर हो चुकी थी।

"मैने तुमसे जो कुछ करने को कहा था, उसे तुम भूल गयी हो," नीना ने कहा। "देखो, अर्सेन्तियेव सुरक्षा-पेटी बाधे बिना ही काम कर रहा है। क्या ख्याल है, यह ठीक है?"

"नही, नही तो, लेकिन उसने मुझसे कहा था कि मै तुम्हे न बताऊँ।"

"दूसरे शब्दो मे, जो बात वह कहे, उसके तुम मेरे कहे की बनिस्बत ज्यादा वजनदार मानती हो?"

"खैर, मै सबकी बाते नही सुन सकती," लीदा ने टका-सा जवाब दे दिया।

एक शब्द कहे बिना नीना अर्सेन्तियेव के पास चली गयी। अर्सेन्तियेव ने उसे उस समय तक नही देखा, जब तक कि नया इलैक्ट्रोड लगाने के लिए उसने अपने चेहरे से नकाब नही उठाया, नीना को देखते ही उसने लीदा की तरफ क्रोध-भरी नजर डाली।

"एन्द्री सेर्गेयेविच, पेटी बाँधे बिना काम करके क्या करना चाहते हो?" उसने पूछा।

"बडी गर्मी है," अर्सेन्तियेव ने कहा। "पेटी बाँध कर मै काम नही कर सकता। फर का कोट पहनने से भी बदतर होती है।"

"तो काम वन्द कर देते।"

"लो, अब यह देखो। नीना वासिलीयेव्ना तुम खुद जानती हो कि जो वक्त बरवाद हो गया है, उसे हमें पूरा करना है।"

"जानती हूं, लेकिन तुम्हे पेटी वांधनी ही होगी, एन्द्री। तुम मुझे कुछ कहने के लिए क्यो मजबूर करते हो?"

"अच्छा भई, मैं वांधे लेता हूं। अगली मजिल पर जब पहुचूगा, तो वांध लूगा। वहाँ वह लटक तो रही है," उसने खुश करने की नियत से वायदा किया।

"नही, तुम्हे इसी क्षण वांधनी होगी," नीना ने कहा, लेकिन उसने फिर नकाव डाल लिया और वेल्डिग में जुट गया। "तुम क्या सचमुच मुझसे झगडना चाहते हो?"

नीना गर्डर पर चढ गयी और उसका वेल्डिग यन्त्र पकडने के लिए हाथ वढाया। अर्सेन्तियेव ने जल्दी से अपना नकाव हटा दिया।

"संभलो, वरना गिर पडोगी," उसने धमकाते हुए कहा। "अव कोई यहा फर्श विछाने नही आयगा।"

मित्या ने, जो ऊपर की मजिल पर काम कर रहा था, थोडा सा हस दिया।

"और तुम्हारा वह दोस्त भी बिना पेटी बाँधे काम कर रहा है," नीना ने क्रोध से कहा। "लीदा, नीचे जाओ और उनसे कहो कि मैं ने बिजली बन्द करने का हुक्म दिया है।"

लीदा ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से अर्सेन्तियेव की तरफ देखा।

"मत जाओ," उसने अपनी आँखें झुका कर कहा।

"मैं कहती हूँ, जाओ," नीना ने फिर कहा और पीली पड़ गयी।

"तुम इसे हुक्म नही दे सकती," अर्सेन्तियेव ने सामने देखे बिना कहा। "इसे हुक्म देना मेरा काम है।"

नीना को लगा कि इस संघर्ष से उस मित्रता के खत्म हो जाने की नौबत आ गयी है, जिसको पाने के लिए उसे इतनी कीमत अदा करनी पडी थी—इससे शायद और भी बडी चीज खत्म हो जाय—वह चीज़ जिसका अहसास इधर कुछ दिनो से वह बराबर कर रही थी, लेकिन उसे खुलकर स्वीकार करने की हिम्मत नही कर पा रही थी। लेकिन उसने अपने हाथ का पैंड मसल डाला और शान्तिपूर्वक फिर दुहराया

"लीदा, नीचे जाओ।"

लीदा ने फिर अर्सेन्तियेव की तरफ देखा और अर्सेन्तियेव ने कड़ी नजर से देखा।

"नही, मैं नही जाऊंगी," उसने दृढतापूर्वक कह डाला। न्यूरा, जो अभी तक यह सब सुन रही थी, हलकी सी कराह भर कर रही गयी।

"झगडो मत," वह वोली। "मैं जाती हूं।"

नीना गर्डर से वापिस आकर समतल जगह पर आ खडी हुई और कापते हाथो से पैंड मे उंगलियाँ उलझाती खडी रही।

"अगर इसने विजली वन्द करा दी, तो नुकसान इसके फरिश्तो को भी भरना पडेगा।" लीदा ने मन ही मन कहा।

दस मिनट वाद सभी वेल्डिग यत्र ठडे पड गये। अर्सेन्तियेव ने अपना यत्र फेंक दिया और नकाव हटा ली।

"ऐसी औरत से, भला, कोई क्या निपट सकता है?" नीना की नजर वचाते हुए, उसने किसी खास व्यक्ति से नही, अपने आप से ही कहा।

"मिसाल के तौर पर, पिछले साल," मित्या ने वात शुरू की, "उन लोगो ने उस दूसरी इमारत के दरवाजे

पर एक नया सतरी नियुक्त किया। अगले दिन एक भी ड्राइवार अपना कोटा नही पूरा कर सका। हर बार जब वे लोग दरवाजे पर आते थे, तो वह सतरी उनसे पास मागता था और हर बार वह इन पासो की जाच करता था। वह कहता, 'इवान इवानोविच, जरा आपका पास तो देखे। नही इधर नही होगा, पिछली बार तुमने उस जेब मे रख लिया था।' और कोई उससे कुछ कह भी नही पाता था। वह हिदायतों के अनुसार काम कर रहा था, लेकिन भलाई से ज्यादा नुकसान कर रहा था।"

"लेकिन, कामरेड याकोवलेव, क्या आप यह नही देखते कि मुझे लोगो की जिदगी की सुरक्षा का भार सौंपा गया है?" नीना ने कहा।

अर्सेन्तियेव चीख उठा, "तुमसे यह आशा नही की जाती कि लोगो की जिदगी की रक्षा करने के नाम पर तुम काम मे रोडे अटकाओगी।"

"जिदगी की सुरक्षा की चिन्ता करने से काम में कोइ बाधा नही पडती।"

लेकिन तुम तो रुकावट डाल ही रही हो। क्या यह बात तुम्हे नही दिखायी देती?"

इसी समय प्रधान इजीनियर भी वहा आ पहुचे।

वे जो भी चीज खोजते, वही न मिलती, इसलिए अपनी पत्नी को कोस उठते, जो भोजन के बाद बाजार चली गयी थी, अभी लौट कर न आयी थी। नीना ने उनकी सहायता करने की कोशिश की, लेकिन हर चीज उसके हाथ में से फिसलती जान पडने लगी। उसने जब मोजे गिने तो पहले सात निकले और फिर नौ हो गये।

"बात क्या है, बीमार हो?" वासिली याकोवलेविच ने पूछा।

"नही, पिता जी। मै थक गयी हू। काश, वह इजीनियर छुट्टी से वापिस आ जाता। यह काम अब और अधिक बरदाश्त नही होता।"

"तुम्हे कठिन मालूम होता है?"

हथेली पर ठोडी रखकर नीना मेज के सामने बैठ गयी और खामोश रह गयी।

अत मे, उसने कहा, "हा, यह मेरे बस के बाहर है।"

"आनर्स के साथ डिग्री लेने का यही मतलब है," सिर्फ इतनी ही टीका उन्हो ने की, लेकिन सख्त से सख्त से सजा की बनिस्बत इन शब्दो को बरदाश्त करना नीना के लिए कठिन था।

"कितनी आसानी से इन्हो ने कह डाला," नीना ने अपने आसू पोछ कर मन ही मन कहा। "कल से मै दूसरे इजीनियरो की तरह ही काम करूँगी, मै सिर्फ फोरमैनो और प्रधान इजीनियर से ही शिकायत किया करूगी। कारीगरो से वे लोग ही निपटे। आखिरकार, अर्सेन्तियेव या याकोवलेव या उसकी मा से मुझे क्या लेना-देना है? मै उन लोगो की चिन्ता क्यो करूँ, जिन्हे मैने पहले कभी नही देखा-जो मेरे लिए निरर्थक है? यह फिजूल की बात है।"

अगली सुबह चारपाई छोडने मे उसे विशेष प्रयत्न करना पडा और वह दिल पर बोझा ढोये काम पर पहुची। हमेशा की तरह दरवाजे पर उसे बूढा सतरी मिला जिसने "पास" दिखाने के लिए कहे बिना ही उसे सलाम किया। कडवाहट भरी मुसकान के साथ उसे याद आया कि इस दरवाजे पर पहले दिन वह कितने उल्लासपूर्वक आयी थी, उसे यह विश्वास था कि निर्माण-कार्य का प्रधान उसकी विद्वत्ता और कार्य-शक्ति से चकित रह जायगा। "और जब, मुझसे 'पास' पेश करने की आशा की गयी, तो मैने कितना अपमान महसूस किया था? कितनी बेवकूफ थी मै?" उसने थोडी सी उल्लास-शून्य

हँसी के साथ अपने आप से कहा। उसने प्रवेश किया तो एक नोटिस वोर्ड के सामने मित्या को असतोष के साथ बडवडाते देखा। मित्या नें उसे सलाम किये विना, टोपी आँखो पर खीच ली और सीढियो की तरफ वढ गया। नोटिस वोर्ड पर दो वडे आकडो से पिछले दिन की लक्ष्य-पूर्ति दिखायी गयी थी। "हम १०० फी सदी तक भी नही पहुचे है," नीना ने सोचा। "प्रतियोगिता मे हम हार गये है, निश्चय ही हार गये है।"

रोज की तरह, यह देखने कि हर चीज व्यवस्थित है, वह चोटी की मजिल की तरफ चल पडी। दूसरी मजिल पर एक वडे हॉल मे खम्भे के पीछे उसने दो कारीगरो को उत्तेजनापूर्वक वात करते सुना।

"जरूर प्रवन्धको का ही दोष है," उनमे से एक ने कहा। "उससे तुम क्या उम्मीद कर सकते हो, उस वेचारी को तो कोई तजुर्वा नही था—सीधी स्कूल की वेंच छोडकर आ रही थी। उसके लिए जरूरी यह है कि पहले किसी व्रिगेड मे काम करे।"

नीना ने भाँप लिया, "ये लोग मेरे ही वारे मे चर्चा कर रहे है" और यकायक उसे यहा के सारे वातावरण से ऐसी विरक्ति अनुभव हुई कि वह उलटे पैरो लौट

गयी, उसने निश्चय कर लिया कि सारे दिन अपने दफ्तर मे ही रहेगी।

पिछले दिन के मुकाबले आज मौसम ज्यादा गर्म था और बडी उमस थी। दमघोटू वायुमण्डल मे बारीक, गर्म धूप निश्चल भाव से लटक रही थी। महीन पोशाक पहने और सिर से रूमाल बाधे, लडकिया एक दूसरे पर पानी के नल से छिडकाव कर रही थी। मोटर-लारियो के भोपुओ की आवाज़ मानो भरी गयी थी। कई ड्राइवरो ने अपनी कारो को ठडा रखने के लिए उनके ढकने ऊपर उठा दिये थे। मास्को मे इतनी गर्मी कभी नही होती, इसलिए ऐसे वातावरण मे नीना की तबियत और भी गिर गयी थी। यहा तक कि जब अखापकिन ने भी उसे देखकर सलाम नही किया, तो इसे स्वाभाविक ही मान लिया और जरा भी अपमान नही महसूस किया।

मेज़ के पास खाली बैठना भी निरर्थक लगने लगा और तबियत ऊबने लगी।

"बाकी साइनबोर्ड कब तैयार हो जायंगे?" कोई और बात न मिलने के कारण वह यही सवाल पूछ बैठी।

"वे नही बनाये जायंगे," अखापकिन ने उत्तर दिया

और जो वीजक भर रहा था, उसपर से नजर भी न उठायी।

"मेरा ख्याल है, कि और कोई चारा नही है," नीना ने उदासीनता के साथ कहा।

तभी यकायक दरवाजा भडाक से खुल पडा और नीदा आफिस मे घुस आयी — उसके कपोलो पर आँसुओ की धार बँधी हुई थी।

"नीना वासिलीयेव्‌ना।" वह चीख उठी। "जल्दी आइये, नीना वासिलीयेव्‌ना।"

"क्या हुआ?"

"जल्दी चलिए, नीना वासिलीयेव्‌ना एन्द्री अधर में लटक रहा है।"

"लटक रहा है?"

"हाँ, लटक रहा है। वह गिर पडा है और पेटी से बँधा लटक रहा है। और यह किसी की समझ मे नही आ रहा है कि क्या किया जाय।"

नीना उछल पडी और दफ्तर से बाहर भागी — एक कुर्सी मे उसने ठोकर भी खायी। दूर कोने-कोने से कारीगर लोग दौडे चले आ रहे थे, वे हाथ हिला-डुला रहे थे और चीख़-पुकार मचा रहे थे। एक सफेद एम्बुलेस, जिसकी

खिडकियो पर रेशमी परदे पडे थे, ऊबर-खावड जगह पर उछलती-कूदती, लगातार भोपू बजाती, चली आ रही थी—निर्माण-स्थल की लारियो, कक्रीट-मिश्रण की मशीनो और क्रेनो के बीच वह बिल्कुल बेमौजूँ दिखायी दे रही थी। नीना सीढियो की तरफ दौडी और उसके पीछे-पीछे लीदा ऐसे फूट-फूट कर रो रही थी, जैसे देहात की लडकिया रोती है। लेकिन यकायक मित्या की आवाज से नीना रुक गयी।

"नीना वासिलीयेव्‌ना, दौडिये मत," उसने कहा। "सब कुशल-मगल है। उसे प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र पहुचाया जा चुका है।"

कारीगरो की भीड प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र की खिडकियो से अन्दर झाँकने का प्रयत्न कर रही थी। सफेद बालो वाली नर्स ने, जिसके हाथ भीगे थे, नीना को अन्दर आ जाने दिया।

प्रेत की तरह छायामात्र-सा अर्सेन्तियेव, खिडकी के पास चारपाई पर गीले चादर मे लिपटा पडा था।

"धूप लग गयी है," नर्स ने कहा। "बहुत ज्यादा गर्मी है।"

मूर्च्छा के कारण नीना स्टूल पर बैठ गयी। एम्बुलेस

का डाक्टर अन्दर आया, उसने छिद्रान्वेषी दृष्टि से सारा कमरा देखा और मुसकुरा कर नर्स से बोला, "मरीज कौन है—यह या वह?" और जवाब का इतजार किये बिना, वह अर्सेन्तियेव के पास बैठ गया और नब्ज देखने लगा।

"तुम्हारे यहाँ का सुरक्षा-निरीक्षक ढीला-ढाला है," उसने नर्स से कहा। "ऐसी गर्मी मे लोगो को हैट पहना कर काम कराना चाहिए। आधे घटे मे यह भला-चगा हो जायगा।" न जाने क्यो ये आखिरी शब्द उसने नीना की तरफ मुखातिब होकर कहे। फिर उसने नर्स को सलाम किया और चला गया।

"नीना वासिलीयेव्ना, जाइये, अब आराम कीजिये," नर्स ने सलाह दी। "तुम्हारी हालत खराब मालूम होती है।"

"आराम?" नीना ने अपने को झकझोर कर चेतन बनते हुए कहा। "मुझे इसी क्षण जाकर देखना चाहिए कि वहाँ हालत क्या है।"

वह प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र से निकल कर भागी तो उसे ऐसा लगा कि उसकी सारी यौवन-शक्ति वापिस लौट आयी है। दम मारे बिना वह सीढियो पर चढ गयी। "इन् लोगो से जिस तरह काम करने की आशा की जाती

है, मै उसी तरह इन्हे काम करने के लिए मजबूर करूंगी," उसने उत्तेजनापूर्वक अपने आप से कहा। "प्रधान इजीनियर मुझे झिडक ले और कारीगर लोग मेरा मजाक बना ले, लेकिन मै उनकी एक न सुनूगी-रत्ती-भर भी नही. लोगो की जिन्दगी की रक्षा करना आसान काम नही है—एक दिन एन्द्री भी इसे मानेगा . या शायद वह न भी माने, लेकिन मै फिर भी तिल भर पीछे नही हटूगी," और वह बिना रुके बराबर सीढियो पर चढते-चढते बीसवी मजिल पर पहुच गयी। वहा पहुच कर ही इसे अहसास हुआ कि वह क्या कर रही है। उसने सास सभाली और पीछे से किसी के आने की आहट सुनी। वह लीदा थी।

"कितनी तेजी से दौडती हो।" लीदा बोली। "मै तुम्हे पकड ही नही पायी। धन्यवाद, नीना वासिलीयेवना।"

"धन्यवाद किस लिए?"

"एन्द्री के लिए," और लीदा ने नीना को बाहो मे भर लिया और उसके कधो मे मुंह छिपा लिया।

"मै जानती थी," नीना ने लीदा के कधे थपथपाते हुए अचेत भाव से सोचा और एक बार फिर उसे अहसास हुआ कि दुर्बलता और उदासीनता ने उसे घर दबोचा है।

"पहले मै उससे घबराती थी, उसके साथ अकेले मे नही जाना चाहती थी," लीदा ने जल्दी से कह डाला। "दूसरी लड़कियो ने मुझे डरा दिया था। लेकिन कल मेरे बरदाश्त के बाहर हो गया और मैने तय किया कि चाहे कुछ हो, उसके साथ फिल्म देखने जाऊगी। मै उसके लिए पागल हूँ। और वह कहता है कि जिस रात उसने हमारा साइबेरियाई नृत्य देखा था, उसी रात से वह मुझे प्यार करने लगा था। वह कितना बढिया है। मै नही जानती कि अब क्या करू," और वह नीना के कधे पर सिर रख कर फिर फूट पडी।

नीना के हृदय में, इस लडकी के प्रति मातृभाव और ईर्ष्या के भाव के बीच द्वद्व छिड गया। इन दोनो भावनाओ में किसकी विजय होगी, इस कल्पना से भयभीत सी वह रेलिग पकडे खडी रही और आखे फाड़े शून्य मे देखती रही। ईर्ष्या ने जोर पकडा लेकिन तभी किसी की तेज पदचाप से तार से बनी सीढी झनझना उठी और शीघ्र ही मित्या ने प्रवेश किया।

"इजीनियर वापिस आ गया है, नीना वासिलीयेव्ना," उसने कहा।

"कौन सा इजीनियर?" नीना ने आश्चर्य से पूछा।

"वही जो अस्पताल मे था।"

"तो अब मेरी सारी मुसीबतो का खात्मा हो जायगा," नीना ने कहा, लेकिन ये शब्द उसकी चेतना को न वेध सके। "तो अब मेरी सारी मुसीबतो का अत हो जायगा," उसे फिर स्पष्ट रूप मे दुहराया। "अब मै सच्चा काम चुन सकूंगी।" लेकिन उसे यह समझकर बडा आश्चर्य हुआ कि जिस बात की प्रतीक्षा वह बहुत दिनो से कर रही थी, उसीके आज पूरी होने की सम्भावना मे उसमे कोई उल्लास नही पैदा हुआ। मित्या, एन्द्री, स्यूरा और लीदा की चिन्ता से उसका हृदय भर गया था, और उसे महसूस हुआ कि इन लापरवाह आदमियो के जीवन की सुरक्षा का भार किसी और को सौंपना असम्भव है। "तुझे शर्म नही आती?" उसने रोषपूर्वक अपने से कहा। "पिछले सप्ताहो से तू इसी बात की प्रतीक्षा कर रही थी और अब पीछे हट रही है। अब तुम बच्ची नही हो, नीना वासिलीयेव्ना।"

"तुम क्या सोच रही हो," लीदा ने पूछा।

"कुछ नही, लीदा प्यारी। अब मै दूसरे काम पर जाऊंगी, इस लिए अब तुम्हे देखना होगा. ."

"ताम्हरा मतलब है, तुम हम लोगो को छोड कर चली जाओगी?"

"नही। लेकिन जिस इजीनियर की जगह मै काम कर रही थी, वह वापिस आ गया है। वह बूढा आदमी है और उसे बडा तजुर्बा है। मेरी तरह, सीधा स्कूल से नही आया है। लेकिन वह इतना चढकर कभी ही यहा आयगा, इसलिए लीदा, मै तुमसे वचन चाहती हू कि तुम इन लडको की देखभाल रखोगी। ध्यान रखना कि जब गर्मी हो, तो ये लोग टोप पहने रहे। और तुम भी सावधान रहना। मसलन, तुम्हे रेलिग पर झुकना नही चाहिए। और तुम्हे तारो पर भी पैर नही रखना चाहिए... क्या पता कब..."

नीना ने अपने कपोलो से लीदा के बचे-खुचे आँसू पोछ डाले और दफ्तर लौट गयी।

दफ्तर मे उसने अपनी कुर्सी पर एक चिड़चिड़े बूढे को बैठे देखा जो अपने कोट पर काली साटिन की आस्तीने पहने था। गुलदस्तावाला गिलास खिडकी के पत्थर पर रख दिया गया था। वह उन सभी कागजो को उलट-पुलट कर देख रहा था, जिन पर उसकी गैर हाजिरी मे दस्तखत किये गये थे। जब नीना ने प्रवेश किया तो उसने

अपनी वुझी-वुझी आँखें उठायी और वडी आलोचनात्मक दृष्टि से उसका अध्ययन करने लगा। जव मूल्याकन कर चुका तो वह वडी कठिनाई से अपनी कुर्सी से उठा, उससे हाथ मिलाया और उसे अपना अपना नाम वताया।

"लेकिन, नीना वासिलीयेव्ना, अपने ये प्रस्ताव सही फाइल मे नही रखे है," उसने कहा।

नीना उसे वताना चाहती थी कि निर्माण-स्थल की परिस्थिति वडी उलझ गयी है, यहाँ स्वयसेवक सुरक्षा-निरीक्षक नियुक्त किये जाने चाहिए यहाँ के मचानो के रस्से आदि बदलने की आवश्यकता है और अनेक साइन-वोर्डो की जरूरत है। लेकिन यह सव कहने के वजाय, उसे खुद आश्चर्य हुआ कि वह यह कह वैठी

"मुझे यह काम छोडने से सख्त नफरत महसूस हो रही है।"

"तो कृपा कर मत छोडिये," गर्व से सिर उठाकर उस बूढे व्यक्ति ने कहा। "अगर आप प्रधान इजीनियर को राजी कर सकती है कि इस पद पर वे आपको ही रखे, तो मुझे वडी प्रसन्नता होगी—मै दो वार दरखास्त भेज चुका हू कि मेरा टेक्निकल विभाग के लिए तबादला कर दिया जाय।"

वे दोनों साथ-साथ प्रधान इजीनियर से बात करने गये, लेकिन सेक्रटरी ने बताया कि प्रधान इजीनियर एक सम्मेलन मे गये है और रात को ८ बजे से पहले नही लौटेगे। नीना ने घर टेलीफोन किया और कह दिया कि उसके लिए भोजन न रखा जाय, क्योकि वह यहा दूसरी पाली में भी रहेगी।

नीना ने डिस्पैचर से कह दिया कि प्रधान इजीनियर ज्यो ही वापिस आये, उसे लाउडस्पीकर से बुला लिया जाय और फिर वह बाईसवी मजिल पर चढ गयी। "पता नही, वे लोग मुझे इसी काम पर रखेगे भी या नही," झन-झन बोलती सीढियो पर चढते हुए वह यही सोचती जा रही थी। "अगर प्रधान इजीनियर ने आपत्ति की, तो मै बता दूगी कि जब से मैने काम सभाला है तब से एक भी असली दुर्घटना नही हुई है। अगर वे यह कहेगे कि उनके पास यह शिकायते आयी है कि मै काम मे रुकावट पैदा करती हूं, तो मै कह दूगी कि यह सही नही है और खुद प्रधान इजीनियर ने यह हिदायत दी थी कि मै कारीगरो के साथ सख्ती बरतूं। वे यह कह सकते है कि मै नातजुर्बेकार हूं, तो मै जवाब दूगी कि जब से यहा काम किया है, तब से मैने बहुत कुछ सीखा है, मै

कारीगरो को समझ गयी हू, मै उनसे परिचित हो गयी हू और आगे मुझे काम करने मे और भी आसानी होगी। और फिर मै यह भी बता दूगी कि अगर मुझे दूसरे काम पर भेजा गया तो मुझे हर समय अपने इन कारीगरो की चिन्ता बनी रहेगी—इनका ख्याल मै कभी दिमाग से नही उतार सकूगी।"

और अकस्मात नीना को अपने ऊपर आश्चर्य भी हुआ कि जिस काम ने इतनी बदमजगी पैदा की, जो काम उसके प्यार के मार्ग मे रोडा भी बना, उस पर वह क्यो टिकना चाहती है।

"शायद यह अच्छा ही हुआ कि सब मामला खत्म हो गया," इमारत की चोटी पर पहुच कर उसने अपने आप से कहा।

यहा से उसे मास्को की रात का दृश्य भली भाँति दिखायी दे रहा था।

छोटी और बडी बत्तियाँ, दूर क्षितिज तक जगमगा रही थी। ऐसा लगता था मानो सितारो भरा आसमान सारी पृथ्वी पर फैल गया हो और ज्यो-ज्यो वह गौर से देखती गयी उसने पुश्किन-चौराहे और रेलवे स्टेशनो के नक्षत्र-समूहो, ट्रालियो के तार से टूट कर गिरते हुए सितारो

संस्कृति और विश्राम उद्यान की आकाशगगा, ऊंची-ऊंची इमारतो पर लगे लाल सितारे, क्रेमलिन पर लगे लाल नक्षत्र, आदी को स्पष्ट पहचान लिया। विभिन्न रोशनियो के कारण क्षितिज नीले प्रकाश से आलोकित था। और धरातल का यह तारा-मण्डल अनन्त-सा प्रतीत हो रहा था।

घरो की खिडकियो से आमत्रण करने वाली रोशनियाँ नन्हे-नन्हे सितारो-सी चमक रही थी और उन्हे देख कर नीना की अतर-दृष्टि के सामने सारा शहर घूम गया: सस्कृति और विश्राम उद्यान के फूलो के बगीचो मे किनारे-किनारे पडी बैचे, पुश्किन-चौराहे पर "हम शाति के समर्थक है" नामक फिल्म के विज्ञापन, कई मजिल ऊंची खूबसूरत इमारते जो कालीनो और फर्नीचर से सजी खडी है,—यह सारा नगर जो अपने नागरिको के कल्याण की इतनी चिन्ता करता है। और यकायक उसने महसूस किया कि अभी कुछ खत्म नही हुआ है—उसके जीवन का सर्व श्रेष्ठ अध्याय तो अभी आगे है।

१९५२